

પ્રસ્તાવના

શ્રી શાસ્ત્રીનાથ પ્રતેનમસ્કાર કરિને સજ્જન લોકો પ્રતે વિનતી
કસ્તુરુ કે ચોવીસમા તીર્થંકર શ્રી મહાવીર સ્વામીના શીષ્ય શ્રી
ધર્મદાસગણી અવધીજ્ઞાની જે તેમણે પોતાના પુત્રને ઉપગાર કરવા-
ને તથા સર્વ ભવ્યજીવને ઉપગાર કરવાને સર્વસીધાતોનો સાર લેદ્ને
આ ઉપદેશમાલા પ્રક્રણ રચ્યુ છે તે પ્રક્રણ વાચવાથી સસાર
ની અસારતા માલુમ પડશે તથા મુનીના ગુણની તથા શ્રાવકના
ગુણની માલુમ પડશે, તથા શુભપ્રરૂપક પુરૂષોની માલુમ પડશે
માટે આ પુસ્તક આલસ પ્રમાદ છોડીને વાચવા મળવાનો ઉદ્યમ
કરવો એ વીશે આલસ વીલકુલ રાખવું નહીં આ પ્રક્રણ વાચ-
વાથી જૈન શાસનના રહસ્યની સ્વરૂપ પડશે અને તે પ્રક્રણની ટીકા
વનેલી છે પણ ટીકાથી વાલજીવને બોધ થવો દુરલ્ભ છે એવું જ્ઞા-
નીને ભવ્યજીવોના ઉપગારને અર્થે ટીકાને અનુસારે તથા વીના
સીધાતોને અનુસારે તેનો વાલાવબોધ અન્વય સહીત એટલે જ્ઞાપી
અરથ મલતો આવે ત્યાથી તે પદ લેદ્ને અનુક્રમે જૈમ વાલજીવને
શીઘ્ર બોધ થાય તેમ કર્યો છે તે ઘણો વાચવા લાયક છે તે વા-
ચવાથી માલુમ પડશે



स्याद्वादोवर्ततेयस्मिन्॥पक्षपातो न विद्यते॥
नास्त्यन्यपीडनकिंचि ॥ जैनधर्मस उच्यते॥





स्याद्वादोवर्ततेयस्मिन्॥पक्षपातो न विद्यते॥
नास्त्यन्यपीडना किंचि ॥ ज्ञेयधर्मस उच्यते॥



| | |
|-----------------------------------------------------|-----|
| स्त्रीया ससगंधी यता दुरगुणो | ६३ |
| गुणवंत पुरुषोना अनुरागनु फल | ६७ |
| पीठ ग्राहापीठनुं द्रष्टात | ६८ |
| अवर्णवाद बोलनार पुरुषनी गती | ७० |
| गुरुने उदवेगनु स्थानक | ७३ |
| बालतप उपर तामलीतापसनो द्रष्टात | ८१ |
| शालीभद्र तथा मेतारज मुनीनो द्रष्टात | ८७ |
| गुरुना वचननु बहु मान्यपणु | ९५ |
| धर्माचारजनी सेवा तथा सूत्र अनुसारे भाषानु बोलनु. | १०१ |
| धर्म कर्षो-कराव्यो तथा अनुमोदना करवा माड्यो एवो स- | |
| रखा ठतम फलप्रते आपेछे ते उपर द्रष्टात | १०५ |
| ज्ञानपणा सहीत धर्मनु अगीकार करवु | १०९ |
| एक स्थानकेव्यारेरहेवु ते उपर सगमनामाआचारजनोद्रष्टात | ११० |
| पाप साधुना लक्षण | ११२ |
| समत्तानु फल | ११९ |
| आशक्ती सहीत भोगनु भोगववु | १२२ |
| प्रमादनु नीरगुणपणु | १३५ |
| मुनीमाहाराजनी आचरणा | १३६ |
| ससारमा कुटुंबी लोकधी उत्पन्न यता दु ख | १४६ |
| मुनीओनु नीरालवनपणु | १५२ |
| मेधकुमारनो द्रष्टात. | १५४ |
| स्वच्छदपणानु दु ख. | १५५ |
| साधु मुनीराजनो विनय | १६५ |

| | |
|--------------------------------------|----|
| जगतने विषे शोच करवा जोग्य पुरुषो | २६ |
| समकीर्तदायक पुरुषनो बहु मान | २६ |
| श्रेणीक राजानो द्रष्टा | २६ |
| प्रमादे करीने समकीर्तनुं मलीन थवु. | २७ |
| परभाव रहीत वीतराग धर्मेनु सेववु | २७ |
| नरक चीजचना दुखनो वर्णन. | २७ |
| देवलोकना सुखनु असारणुं | २८ |
| आसन्न भवी जीवोनु लक्षण | २९ |
| क्रोध मान माया वीगरेनुं स्वरूप. | ३० |
| रीधी, रस तथा शातागारवनु स्वरूप. | ३२ |
| जाती मदने विशे मेतारज मुनीनो द्रष्टा | ३३ |
| साधु पुरुषोने उपदेश | ३२ |
| पासप्यादीकना लक्षण. | ३० |
| पासप्यादीक दोषनी वृद्धीना भागा. | ३१ |
| आराधक पुरुषोनु स्वरूप. | ३८ |
| वीनराजनी आज्ञाना भगना वीपाक. | ४१ |
| आत्महीत वंछक पुरुषोनु लक्षण | ४१ |
| आत्मार्थी पुरुषो प्रते गुरुनो उपदेश | ४८ |
| मुनीना लक्षण. | ४१ |
| भारे कामि जीवनु लक्षण | ४८ |
| साधु-श्रावक तथा सवेगपक्षीनो स्वरूप. | ४९ |
| भाव तथा द्रव्य पूजानो लक्षण | ४९ |
| द्रव्य पूजा पकी भाव पूजानु अधीकरणु | ४९ |

५२५

मुं पत्र धायते ने ५००

तेने भविष्यद्वारणु अगी-

५०१

कापु ते पवी आरुन ग्रे-

५०२

कम न राखवो ते बीडो. ५०३

गण ५०५

मेनु रक्षण करे तो तेने-

५०६

उत्तर ५०७

फल्लपणु थाय ते बीडो ५०८

गाडी बीजा तरादीक करे-

५०९

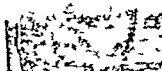
आत्मरारम साथी न द्य-

५१०

नाम धरावेछे तने उपदेश ५११

नाश पये झापादीक ग-

॥



મોક્ષતા ત્રણ મારગ

સસારના ત્રણ મારગ

દ્રવ્યલિંગીનું લક્ષણ

સાધુનું લક્ષણ

સવેગપક્ષપણાનું દુર્લભપણું

શુભ પ્રરૂપકપણાનો ગુણ

આત્માર્થિ પુરુષ લાભ સ્વરાજાતનો વીચાર કરે

સવેગપક્ષીની જતનાનું પ્રમાણપણું

ભારે કર્મોપણાનો સ્વરૂપ

આ ઉપદેશમાલા ગુ ળીજનને હીતકારીને

વૈરાગ્યની વાર્તા સર્વને સારી નથી લાગતી તે વીશે

આ ઉપદેશમાલા ભણવાનો ગુણ

આ ઉપદેશમાલાના કર્તા પુરુષનું નામ આ ગાથામા ગર્ભિત

રીતે સુચવ્યુછે તે કહેછે

ભીનરાજના વચનનું મહાતમ્ય

આ ઉપદેશમાલા જોગ્ય પુરુષને આપવી

આ ઉપદેશમાલાનું મહાતમ્ય

કા ઉપદેશમાલા ભણવાથી શુ ગુણ નીવ્વન થાયછે તે

આ ઉપદેશમાલાની ગાથાની સંખ્યા

આ ઉપદેશમાલા પ્રતે આશીશ

આ યથમા જે ઓછું અધીકું કહ્યું હોય તે વીશે કર્તા

રુશ સમાવતા સતા કહેછે તે

उपदेशमाला

बालवबोध.

श्रीगुरुभ्योनम



मिअण धनिण वरिंदे ॥ इदनि रिदाचिण तिलोअगु
॥ १ ॥ उणसमाल भिणमो ॥ वुच्छामि गुरुवणसेण ॥ २ ॥
॥ १ ॥ इद्र एटलें देवताओना इद्र जे तेमणे ॥ नरेद्र
ने रना इद्र एटलें चक्रवर्त्यादिक जे तेमणे श्ररपित
पूजेला एहवा ॥ २ ॥ त्रण लोकना गुरू एटलो त्रण
ना जीवोने हितकारि उपदेशना दातार एहवा
॥ जिन वरेद्र प्रते जिन एटलें श्रवधिज्ञानि मन पर्य-
॥ नि तेंमनि नध्ये वर एटले श्रेष्ठ एटले सामान्य
॥ लि तेंमनि मध्ये इद्र समान एटलें तीर्थकर प्रते ॥ ३ ॥
॥ स्कार करिने ॥ ५ ॥ अने गुरूना उपदेशे करिने एटलें
॥ पर गण वरना उपदेशे करिने पण पोतानि बुद्धि ए
॥ रेने नहि ॥ ६ ॥ आ उपदेशमाला प्रते एटलें उपदे-
॥ ने श्रेणि प्रते ॥ ७ ॥ हु धर्मदासगणि क्षमा श्रमण एवे
॥ ८ ॥ कहिश आ प्रथम गाथाए करिने मंगला-
॥ ण जणाव्यु छे अने वळी स्वछदपणु टाळ्यु छे ॥ ९ ॥

जगचूडामणिभूडे ॥ उमभो ॥ पीरो ॥ तिलो ॥ अमिगति
 लठे ॥ एगो ॥ लोगाइचो ॥ एगो ॥ चरत्र ॥ तिहुअणम्म ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जगतनि मध्ये चूडामणितुल्य एटले मु
 सदृश एहवा ॥ २ ॥ श्रीरुपभदेवस्वामि ॥ ३ ॥ त्रण लोक
 मस्तकनें विशे तिलक समान एहवा ॥ ४ ॥ श्रीवीरस्वा
 एटले जेम तिलके करिने मुख दोने छे तेम वीरस्वामि
 करिने जगत शोभेछे ॥ ५ ॥ ए वे तीर्थकरनि मध्ये
 श्री रुपभदेवा ॥ ६ ॥ लोकनि मध्ये सूर्य समान जाए
 केमजे समस्त मारगना देखाडनारा छे ए कारण
 ॥ ७ ॥ एकअन्य श्री वीरस्वामि ॥ ८ ॥ त्रिण भुवनना ए
 त्रिण भुवनना रेहेनार लोकोने ॥ ९ ॥ नेत्र तुल्य जाए
 केमजे जव्य प्राणियोने ज्ञानरूप नेत्रना दातारछे
 कारण माटे ॥ २ ॥

सवन्तर ॥ मुसभजिणो ॥ १ ॥ न्ठम्मासे ॥ वदुमा ॥ जणिचदो ॥

॥ इय ॥ विहरिया ॥ निरसणा ॥ ५ ॥ जइज्जए ॥ उमाणेण ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ रुपभजिन एटले श्री प्रथम तीर्थकर
 संवत्सर सुद्धि एटले एक वरप सुद्धि ॥ ३ ॥ अर्थमाना
 चद्र एटले सामान्य केवल्लिनि मध्ये चद्रमा स
 एहवा अर्थमानस्वामि चोवीसमातीर्थकर सब गुणक
 थोपछे ए कारण माटे चद्रमानु उपमान दिनुछे ॥ ४ ॥

एहवा॥३॥अने सम्यक् प्रकारे पाम्योछे श्रुत ज्ञाननो
 पार ते जेणे एटले सर्व शास्त्रना पारगामि एटले श्रुत
 केवली एहवा॥४॥ प्रथम गणधर एटले श्री गौतम
 स्वामी एहवे नामे मुख्य गणधारी॥५॥ ते एटले पूर्वे
 पुछेलो पछी नगवते कहेलो एहवो॥६॥जे अर्थ ते प्रते
 ॥७॥ जाणतो सतो पण ८॥विस्मितछे हृदय ते जेहनु
 एटले साजलवानी उतावले करिने विकस्वर थया छे
 लोचन ते जेहना एहवो सतो॥९॥सर्व अर्थ प्रते॥१०॥
 सांभलेछे गौतम स्वांमीनिपठम बीजाये पण विनये क-
 रिने पुछवु अने विनये करिने साजलवु ए उपदेश ॥६॥

॥ विनय विशे लौकिक दृष्टात. ॥

न^१आणावेइ^२ राया^३॥पगइउं^४त सिरें^५इच्छाते^६॥

इय^७गुरुजणमुहभाणिय^८॥ कयजालिउडोहिं^९सोयव^{१०}॥७॥

अर्थ ॥१॥ राजा ॥२॥ जे कार्य प्रते ॥३॥आज्ञा करे
 छे एटले बतावेछे ॥४॥ते राजाना अनुधर एटले सेवक
 लोक ॥५॥ ते कार्य प्रते ॥६॥ मस्तके करिने ॥७॥
 करवाने इच्छेछे एटले हाथ जोडिने ते कारज प्रते प्र-
 माण करेछे ॥८॥ए प्रकारे एटले राजाना दृष्टाते करिने
 ॥९॥गुरुजनना मुखे कहेलु एटले गुरु महाराजे बतावेलु ॥१०॥

अर्थ ॥१॥ प्रजा एटले नगरना रेहेनार लोका॥२॥
 अने राजा एटले पृथविपाल॥३॥ बालकछे ए प्रका-
 रनि बुद्धियेकरिने ॥४॥ ना॥५॥ पराज्व करे एटले ती-
 रस्कार करे नहि बालक एहवो पण राजा प्रजा लोकने
 मानवा जोग्य होय॥६॥ आ॥ ७॥ आचारजने विशेष॥८॥
 उपमा देवि एटले श्रवस्ताये करिने तथा चारित्र परजा
 ये करिने नाहाना पण ज्ञान गुणे करिने मोटा एहवा जेह
 गुरु ते राजा मिपठम मानवा जोग्यछे॥९॥ बलि॥१०॥ जे
 गीतार्थ प्रते॥११॥ मुनि जे ते॥१२॥ अग्रेसर करिने एटले
 गुरुपणे अगिकार करिने॥१३॥ विचरेछे॥१४॥ तेमज ए
 टले गुरुनि पठम॥१५॥ ते पुरुष पण मानवा जोग्यछे॥१॥

पाद्विस्वो^१ तेयस्सी^२॥ जुगपहाणागमो^३ महुरवको^४॥

गभीरो^५ धिदमतो^६॥ उवएसपरो^७ य^८ आयरिर्ड^९ ॥२०॥

अर्थ ॥१॥ प्रतिरूप एटले तीर्थकर गणधरादिकने
 तुल्य एहवा॥२॥ तेजस्वी एटले देदिप्पमान एहवा॥३॥
 जुग एटले वर्तमान कालने विशेष प्रधान एटले अन्य
 लोकनि अपेक्षायें करिने उत्कृष्ट एहवुं आगम एटले
 श्रुतछे जेहने एटले वर्तमान कालने विशेष वर्ततुं जे आ-
 गम तेना पारगामि एहवा ॥४॥ मधुरछे वाक्य ते जे

अर्थ ॥१॥ प्रजा एटले नगरना रेहेनार लोक॥२॥
 अने राजा एटले पृथविपाल॥३॥ बालकछे ए प्रका-
 रनि बुद्धियेकरिने ॥४॥ न॥५॥ पराजव करे एटले ती-
 रस्कार करे नहि बालक एहवो पण राजा प्रजा लोकने
 मानवा जोग्य होय॥६॥ आ॥ ७॥ आचारजने विशेष॥८॥
 उपमा देवि एटले अवस्ताये करिने तथा चारित्र परजा
 ये करिने नाहाना पण ज्ञान गुणे करिने मोटा एहवा जेह
 गुरु ते राजानि पठम मानवा जोग्यछे॥९॥ बलि॥ १०॥ जे
 गीतार्थ प्रते॥११॥ मुनि जे ते॥१२॥ अग्रेसर करिने एटले
 गुरुपणे अगिकार करिने॥१३॥ विचरेछे॥ १४॥ तेमज ए
 टले गुरुनि पठम॥१५॥ ते पुरुष पण मानवा जोग्यछे॥१६॥

पाद्विस्वो तेयस्सी१॥ जुगपहाणागमो महुरवको१॥

गभीरो धिदमतो१॥ उवएसपरो व्य आयारिर्त्त१ ॥२०॥

अर्थ ॥१॥ प्रतिरूप एटले तीर्थकर गणधरादिकने
 तुल्य एहवा॥२॥ तेजस्वी एटले देदिप्पमान एहवा॥३॥
 जुग एटलें वर्तमान कालने विशेष प्रधान एटलें अन्य
 लोकनि अपेक्षायें करिने उत्कृष्ट एहवुं आगम एटले
 श्रुतछे जेहने एटले वर्तमान कालने विशेष वर्ततु जे आ-
 गम तेना पारगामि एहवा ॥४॥ मधुरछे वाक्य ते जे

हनुं एटले सुंदर वचनना बोलना एहवा ॥५॥ गजरी
 एटले अतुच्छ एटले बिजा लोकां नथि जाणु हट्ट
 ते जेहनुं एहवा ॥६॥ धीरजवत एटले मंतोपपत एटले
 स्थिर चित्त वाला एहवा ॥७॥ बलि ॥८॥ उपदेश देवा
 ने तत्पर एटले सत्य वचनोये करिने जट्ट प्राणियोने
 मारगने विंशे प्रवर्तावनार एहवा ॥९॥ आचारज होय
 एटले पचाचार पालवाने विंशे तर्था पलाववाने विंशे
 तत्पर होय ॥१०॥

॥ आचारजना गुण ॥

अप्परिसावी सोमो १ सगहसीलो २ अभिगंढमइ य

॥ अविश्रुधनो ३ अचबलो ४ पसतहियट्टे गुग्गुहोइ ॥११॥

अर्थ ॥१॥ अप्रतिस्त्रावी एटले तिष्ठ रहित पथ्यरना
 नाजननि पठम बीजा पुरुषोये कहेलुं पोतलुं गुप्त ते रूप
 पाणिते नस्त्रवे एटले परनिछानि वात बीजानि आग
 ल न कहे ॥२॥ सोम्य एटले प्रथम देखवे करिने ज
 आनंद उपजावनारा एहवा ॥३॥ शिंपादिकने अर्थ
 वस्त्र पात्र पुस्तकादिकनो संग्रह करनारा एहवा ॥४॥
 बलि ॥ ५ ॥ अग्निग्रह करवानिछे मति ते जेहनि
 एटले द्रव्य क्षेत्रकालने जावे करिने अग्निग्रह करनार

एहवा॥६॥ अने बहु न बोले अथवा पोतानि प्रसशा करे
नहि एहवा॥७॥ अने अचपल एटले चचल परिणाम रहित
एहवा॥८॥ अने वली प्रशात छे हृदय ते जे हनु एटले क्रोधा
दिके करिने रहित छे चित्त ते जे हनु एटले शात मूराति एहवा
अने गुरुना गुणे करिने सहित एहवा गुरु॥९॥ होय ए
कारण माटे एहवा जे गुरु ते विगं पे करिने मानवा
जोग्य जाणवा ए उपदेश॥११॥

कहयावि^१निणवरिंदा^२॥१॥ तत्ता^३अयरामर^४पह^५दाउ^६॥

आपरिएहि^७पवयण^८॥ धारिज्जइ^९सपय^{१०}सयल^{११}॥२॥

अर्थ ॥१॥ जिनवरेद्र एटले तीर्थकर जिनशासननि म
जोदाना करनारा एहवा॥२॥ कोइ कालने विशेषे पण॥३॥
मार्ग एटले सम्यक ज्ञान दर्शन चारित्र रूप मोक्ष मा
र्ग प्रते॥४॥ भव्य प्राणियोने आपिने एटले पमाडिने॥५॥
अजरामर प्रते एटले मोक्ष प्रते ॥६॥ पाम्या॥७॥ त्वार
पछि एटले तीर्थकरना मोक्ष गया पछि आचारज जे ते
मणे॥८॥ प्रवचन एटले चतुरविध सध अथवा द्वादशा
गिरूप॥९॥ आ कालने विशेषे॥१०॥ समस्त प्रकारे॥११॥
धारण करिएछीए एटले हमणा आ कालने विशेषे तीर्थ
करना विरह थये सते समस्त शासन आचार जोये करिने

चालेछे एटले तीर्थकरनोअनाव सते आचारज आसन
चलावेछे ए नाव ॥१२॥

अणुगमई^१ भगवई^२ ॥ रायमु^३ अज्जा^४ सहस्सविदेहि^५ ॥ तह
वि^६ न करेइ^७ माण^८ ॥ परियन्डई^९ त^{१०} तहा^{११} नुण^{१२} ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ राजानि पुत्रि एटले दधिवाहनराजानि वेटी
एहवि ॥ २ ॥ आर्या एटले साध्वी चंदन वाला नामे ॥ ३ ॥
सहस्रवृद्धे करिने एटले हज्जारो गमे लोकना टोलाए
करिने ॥ ४ ॥ अनुसरेलि एटले परिवरेलि एहवि ॥ ५ ॥
पूज्य एटले पूजवालायक अने सौभाग्यादि गुणवालि
एहवि सति ६ ॥ तोये पण ते साध्वि चंदनवाला जे ते ७ ॥
मानप्रते एटले अहंकार अतिमान प्रते ॥ ८ ॥ १ ॥ करे
एटले आहवि पूजनिक थइने पण गर्व नथि करति ते
आश्चर्यछे ते स्युं जाणिने अहकार नथि करति ते कहेछे
॥ १० ॥ ते पूजनिकपणाना माहात्म्य प्रते ॥ ११ ॥ ते प्रकारे
॥ १२ ॥ निश्चे ॥ १३ ॥ जाणेछे एटले जे आ पूजनिकपण
छे ते ज्ञान दर्शन चारित्रादि गुणोनु माहात्म्यछे पण
माहरु माहात्म्य नथि ए प्रकारे जाणेछे ते माटे अह
कार नथि करति तेहनि पठम बीजि साध्विओए तथा
आविकाओए अहंकार न करवो ए उपदेश ॥ १३ ॥

॥ विनयनो स्वरूप ॥

दिणादिगुरुयस्स'दुमगरस'॥ अभिमुहा'अन्नचदणा'अब्जा'॥

॥ ने'च्छद'आसनग्रहण'॥ सो'विणर्त्त'सव्वअब्जाण'॥१४॥

अर्थ॥१॥ एक दिवसनो दिक्षित एटले तेज दिवसे प्रवर्जित थएलो एहवो॥२॥ द्रुमक एटले निक्षु एटले निखारि, गीतार्थनि पासे साधुनो वेप लेइने पोतानि समिपे आव्यो तेहना विनयने अर्थ॥३॥ सन्मुख आवि एहवि॥४॥ डाहि एहवि चदना एटले चदनवाला नामे ॥५॥ साध्वी॥६॥ आसन ग्रहण करवा प्रते पण॥७॥ न ॥८॥ इच्छे एटले जिहा सुधि साधु पोताना सन्मुख उजा रह्या तिहा सुधि आसन छेटे मुकीने उजि रहि पण वेठी नहि॥९॥ ते ॥१०॥ विनया॥११॥ सर्व साध्वी योने जाणवो एटले सर्व साध्वीयोये चदनवालानि पठेम साधु मुनिराजनो विनय करवो ए उपदेश॥१४॥

वरिससयादिखियाए'।अब्जाए'अब्जादिखिखर्त्तसाहु'

अभिगमणवदननमसणेण'॥ विणएण'सो'पुब्बो'॥१५॥

अर्थ॥१॥ सोवरसनि दिक्षा वालि एटले जेने दिक्षा लिवा पछि सो वरम यएला एहवी॥२॥ साध्वी जे तेणिए॥३॥ जे आजनो दिक्षित साधु एटले एक दिवसनो

दक्षित जे साधु॥४॥ अभिगम एटले सामु जवु-वदन
 एटले द्वादशवृत्तवदन करवु-नमसण एटले अंतरप्रीति
 ए करिने नमस्कार करवो ते पूर्वोक्तरूप ॥५॥ विनये
 करिने एटले आसनादि आपवे करिने एटले आचारज
 ने तुल्य नक्ति करवे करिने ॥६॥ ते मुनि॥७॥ पूजवा
 जोग्यछे एटले एक दिवसनो प्रवर्जित एहवोय पण
 मुनि, साध्विओने पूजनिक जाणवो ए जाव ॥१५॥

धम्मो^१पुरिसण्णभवो^२॥पुरिसवरदेसिउ^३पुरिसनिटो^४॥

लोण^५वि^६पहू^७पुरिसो^८किं^९पुण^{१०}लो^{११}गुत्तमे^{१२}धम्मे^{१३}॥१६॥

अर्थ॥१॥धर्म एटले दुरगतिमा पडता जीवने राखे
 एहवो जे धर्म ॥ २ ॥ पुरुषथकि उत्पन्न थएलो ए
 हवो॥३॥पुरुष एटले गणधर तेमनि मध्ये वर एटले
 थेट एटले तीर्थकर तेगणे देसाडेलो एटले कहेलो ए
 हवो॥४॥पुरुषछे जेष्ट एटले उत्तम ते जेहने विशे ए
 टले श्रुत चारित्र रूप धर्मनो.पालनार पुरुषज प्राये
 होया॥५॥ अने लोकने विशे॥६॥पण॥७॥पुरुष॥८॥प्रभु
 एटले स्वामी होय पण स्त्रि स्वामि न होय॥९॥तेथी
 लोकने विशे उत्तमएहवो॥१०॥धर्म तेहने विशे॥११॥
 वली॥१२॥अमु केहवुण्टले जो लोकने विशे पण पुरुष

स्वामिछे तारे लोकने विशे श्रेष्ठ एहवा धर्मने विशे वलि
स्यु केहवुतेम धर्मने विशेतो विशेषे करिने पुरुषज श्रेष्ठ
होय केमके पुरुषविना धर्म चाली शके नहि ए जावा १६।

सवाहनस्स १२ नो ॥ तइया १ वाणारसीयनयारि १ ॥

कन्नासहस्स ७ माहिय ५ ॥ आसी ८ किर ९ रूपवतीण १ ॥ १७ ॥

तहवि १५ १ सा १ रायसिरी ५ ॥ उल्लटती १ न १ ताइया ८ वा

हिं ५ ॥ उयरट्टिण्ण ९ द्दकेण १० ॥ ताइया १२ अगवीरेण ११ ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ १॥ ते कालने विशे ॥ २॥ वाणारसी नगरिने
विशे ॥ ३॥ सवाहननामे ॥ ४॥ राजा तेहने ॥ ५॥ रूपनि
शोभाए करिने अधिक एहवि ॥ ६॥ रूपवती एटले सोजा
ग्यपणाए करिने सहित एहवि ॥ ७॥ कन्याओनु सहस्र
एटले घणि रूपवति अने सोजाग्यवति एहवि हजार
कन्याओ ॥ ८॥ हती ॥ ९॥ एहविरिते साजली एछीए १७ ॥

अर्थ ॥ १॥ तोये पण ॥ २॥ वलि ॥ ३॥ नाश पामति एटले
बीजा राजाए लुटवा माडेलि एहवि ॥ ४॥ ते ॥ ५॥ राज्यनी
लक्ष्मी ॥ ६॥ ते कन्याओए ॥ ७॥ न ॥ ८॥ राखी एटले
हजार कन्याओ पण राज्यनि सपदा प्रते न राखी श
कि ॥ ९॥ अने गरजनने विशे रहेलो एहवो ॥ १०॥ एक ॥ ११ ॥

अगवीरजनामा पूत्र जे तेणो १२ ॥ राखी ए कारण माटे १३ ॥

लोकने विशे पण पुरुषज प्रधानछे. आ वे गाथानो जेगो
संवध जाणवो ॥१८॥

महिलाण^४ सुबहुयाण^१ वि^१ ॥ मझाउं^५ इह^१ समत्तघरसारो^५ ॥
रायपुरिसेहिं^१ निमज्जई^८ ॥ जणे^१ वि^१ पुरिसे^{१२} जहिं^{११} नथि^{११२९}

अर्थ ॥१॥ आ लोकने विशे पण ॥२॥ अतिशे घणि ए
हवि ॥३॥ पण ॥४॥ स्त्रीयो तेमनि ॥५॥ मध्येथी एटले
तेमने देखते ॥६॥ समस्त घरनु सार एटले सर्व द्रव्यनो
समूह ॥७॥ राजाना पुरुषोयें एटलें राजाना सेवको ॥८॥
लेइ जई एछीए एटले अपूत्रीयानु धन राजा लेछे ॥९॥
लोकने विशे ॥१०॥ पण ॥११॥ जे घरने विशे एटले जे
हने घेरा ॥१२॥ पुरुष ॥१३॥ नथि तेहना घरनु समस्त धन
राजा लेइ जायछे ए कारण माटे पुरुषनु ज प्रधान पणुछे
तेमज धर्मने विशे पुरुषनु ज अग्रेसर पणुछे एजाव ॥१९॥
॥ आत्म साखे धर्म करवो ते कहेछे ॥

किं^१ परतणबहुनाणाहि^१ ॥ गर^५ मणसखिय^१ सुकय^५

॥ इह^५ भरहचक्रशी^५ ॥ सन्नचदो^५ य^५ दिइवा^{१०} ॥ २० ॥

अर्थ ॥१॥ हे आत्मन् बीजा लोकोने घणु जणाववे क
रिने एटले आज मे तप करचांछे ए प्रकारे बीजा लोको
नि आगल केहवे करिने ॥२॥ स्यु होय अपितु काइफल

न थाय ए कारण माटे॥३॥हे आत्मन् पोतानि साखे
॥४॥जे सुकृत करयु ते॥५॥श्रेष्ठे एटले रुडुछे॥६॥आ
श्रथने विशे॥७॥जरत चक्रवर्तिनु॥८॥अने वलि॥९॥
प्रसन्न चद्र राजरूपिनु॥१०॥दृष्टात जाणवु एटले जेम
जरत राजाए तथा प्रसन्न चद्र राजरूपिये पोतानि सा
खे आतम धरम प्रगट करिने मोक्ष पाण्या तेंम बीजा
नव्य प्राणिश्रोए पण लोक सजा मुकिने पोतानि साखे
आतम धरम प्रगट करवाने विशे उद्यम करयो केमके
आत्मधरम प्रगट थया विना सर्व व्यर्थछे ए जाया॥२०॥

बेसो॥वि॥अणमाणो॥॥असत्तमपहेमु॥बद्धमाणस॥॥
किं॥परिवर्त्तियवेस॥॥विष॥न॥॥मारिद॥॥खज्जत॥॥२१॥

अर्थ ॥१॥असजममारगने विशे एटले उकाय जीवन
आरजादिकने विशे॥२॥वर्ततो एहवो जें साधु तेहने
॥३॥वेप जेते॥४॥पण एटले रजोहरणादि रूपलि
जेते पण॥५॥अप्रमाणछे एटले गुणविना एकला
करिने आत्मानि शुद्धि न थाय, इहा दृष्टात कहेछो
फेरव्योछे वेप ते जेणे एटले एक वेप मुकिने बीजो
जेणे ग्रहण कर्योछे एहया पुरुष प्रते॥७॥खावाम
एहया॥८॥विप एटले काल कुटादिक जेहेरा॥९॥

॥१०॥ न ॥११॥ मारे, अपितु मारेज ते प्रकारे मलिन
चित्तरूपविषे असजमनेविशे वर्ततो जे पुरुष तेहने मा
रेछे एटले च्यार गतिमां नमावेछे ॥२१॥

तारे इहा कोइ कहेशे जे एक जावनि शुद्धिज
करवी वेपे करिने शु कामछे तेहने आगलि
गाथाए करि गुरु उत्तर कहेछे.

धम्म^१ रखवइ^२ वेसो^३ ॥ सकइ^४ वेसेण^५ दिखिखडि^६ मि^७ अह^८

॥ उमग्गेण^९ पडत^{१०} रखवइ^{११} ॥ राया^{१२} नणपड^{१३} व^{१४} ॥ २२ ॥

अर्थ ॥१॥ वेप जेते एटले ज्ञानादिक गुणे करिने सहि
त वेप जेते ॥२॥ धर्मप्रते एटले चारित्ररूप धर्मप्रते ॥३॥
रक्षाकरेछे ॥४॥ अने वेपे करिने ॥५॥ शका पामेछे एटले
पाप करता लज्या पामेछे ॥६॥ हु ॥७॥ दिक्षितछु एट
ले मुनिना वेपनो धरनारछु ए कारण माटे मने आ
करवु न घटे एम विचारेछे ॥८॥ आउपर द्रष्टात, जेम
॥९॥ उन्मारगने विशे ॥१०॥ पडतो एहवो जे ॥११॥
देश एटले देशने विशे रहेलो एहवो लोकनो समुह
ते प्रते १२ ॥ राजा ॥१३॥ रक्षा करेछे एटले निवारण करेछे
तेम उनमारगमा पडतो एहवो जे साधु तेहने वेप वारेछे
एटले कोइ वखत कर्मना उदये करिने ज्ञानादिक गुण

सहित साधुनु चित्त असजमादिकने विशे प्रवर्तन क-
रेछे, तो तेवा साधुने स्थीर करवानु निमित्त वेश थाय
ठे, एटले रजोहरण मुखवस्त्रीकारुप वेश देखीने चित्त
ढेकाणे आवेछे ए माटे गुण सहीत पुरुशनो वेश गु-
णकारीछे अने गुण रहीत पुरुशनो वेश विटवना रुप
छे ए भाव ॥२२॥

अप्पा १ जाणइ १ अप्पा १ ॥ महक्किउं १ अप्पसम्बिवउ १ धम्मो १ ॥

अप्पा १ करेइ १ १ त १ तह १ ॥ सह १ १ अप्पमुहावह १ १ होइ १ ॥ २३ ॥

अर्थ ॥१॥ आत्मा जे ते ॥२॥ यथास्थित एटले आ आ-
त्मा शुभ परिणाम वालोछे अथवा अशुभ परिणाम वा-
लोछे ए प्रकारे ॥३॥ आत्मा प्रते ॥४॥ जाणेछे एटले आ
माहरो आत्मा शुभछे वा अथवा अशुभछे ए प्रकारे पो-
ताना आत्मा प्रते पोते जाणेछे केमजे बीजाना चित्तने
बीजो जाणि सके नहि ए कारण माटे ॥५॥ जे कारण माटे
आत्मा साक्षिक एटले पोतानि साखे ॥६॥ जे धर्मछे ए
टले जे धर्म करवो ते प्रमाणछे ॥७॥ ते कारण माटे हे
आत्मन् ॥८॥ ते एटले सत् अनुष्ठानादिक प्रते ॥९॥ ते
प्रकारे ॥१०॥ करचा ॥११॥ जे प्रकारे ॥१२॥ आत्माने सुखनु
करनार एहयु ॥१३॥ थाय एटले जे क्रिया अनुष्ठान आ

त्माने परभवने विशेषसुखकारि थाय, तेज अनुष्ठान प्रते
तुं करय. ए भाव ॥२३॥

ज^१ज^२समय^३जीवो^४॥भावसद^५नेण^६नेण^७भावेण^८॥सो^९

तम्मि^{१०}तम्मि^{११}समये^{१२}॥सुहासुह^{१३}वण^{१४}कम्म^{१५}॥२४॥

अर्थ ॥१॥जीव एटले आ आत्मा जे ते ॥२॥जे ३ जे ॥४॥

समयने विशेष ॥५॥जे ॥६॥ जे ॥७॥भावे करिने एटले जेह
वा जेहवा प्रणामे करिने ॥८॥वर्तेछे एटले आसक्त थाय
छे ॥९॥ ते आत्मा ॥१०॥ ते ॥११॥ ते ॥१२॥ समयने
विशे तद्रूप पणे प्रणमतो सतो ॥१३॥ शुभाशुभ एह
वु ॥१४॥ कर्म प्रते ॥१५॥ बाधेछे एटले शुभ परिणामने
विशे वरततो सतो, शुभ कर्म प्रते बाधेछे अने अशुभ
परिणामने विशे वरततो सतो अशुभ कर्म प्रते बाधेछे
ए भाव ॥२४॥

धम्मो^१मएण^२जतो^३॥तो^४नवि^५सीउजवायविहामिउ^६॥

सवछर^७मणसिउ^८॥ बाहुबळि^९तह^{१०}किलिस्सतो^{११}॥२५॥

अर्थ ॥१॥जो, मदे करिने एटले अहकारे करिने ॥२॥

धर्म एटले श्रुत चारित्र रूप वर्म ॥३॥होत ॥४॥तो ॥५॥

शीत अने उष्ण एटले टाढा हुना वायरायें करिने वि

शेषे करिने हणायो एटले पराजव पाम्यो एटले शीत

एण परीसह सहन करतो एहवो॥६॥ एक वरप शुधि
॥७॥ आहार रहित एटले वरप शुधि उपवास सहित
एहवो॥८॥ बाहूबलीनामामुनि “नाहाना जाईयोनेकेम
दन करु” ए प्रकारे रहेलो सतो॥९॥ ते प्रकारे॥१०॥
महिज ॥११॥ केश पामत एटले पिड्या प्रतेपामत,
तो अहकारेकरिने धर्म होततोवरप शुधि बाहूबलजि
केवल ज्ञान पाम्या विना रहत नहि अने जे वखत अ
कार भुक्यो तेज वखत केवल ज्ञान पाम्या, ए कार
माटे सम्यक् ज्ञान पूर्वक अहकारादिकनु छोडवु ते
वर्मछे ए उपदेश ॥२५॥

नियगमद्रविगापियाचिंतिण्ण^१ ॥ सछंदबुद्धिरइएण^१

॥ कत्तो^१ पारत्तहिय^१ ॥ कीग्इ^१ गुरुअणुवएसेण^१ ॥२६॥

अर्थ॥१॥ गुरुना उपदेशने अजोग्य एटले गुरुना उ
पदेशने न ग्रहण करतो एटले भारे करमी जे जीव
तेणे ॥२॥ पोतानि मातिए करिने एटले पोतानि बु
द्धिए करिने स्थूल विचारवु तथा सुक्ष्म विचारवु ए
टले पोतानि माते कल्पनाए नाहनो मोहटो विचार
करवे करिने ॥३॥ स्वच्छ बुद्धिए आचरण करवे क
रिने ॥४॥ परलोकने विशे हित जे ते एटले परभवने

विष्णुरिसा ॥ सणकुमारुव केरु बुझति ॥
 वणपरिहाणी ॥ तक्रि ॥ देवेहि ॥ सेकहिय ॥ २८ ॥
 ॥ १ ॥ केटलाएक ॥ २ ॥ सत्पुरुष एटले सुलभवोधि
 ॥ ३ ॥ थोडास्या निमित्ते करिने ॥ ४ ॥ पण ॥ ५ ॥
 कुमार चक्रवर्तिनि पठमा ॥ ६ ॥ नोधप्रते पामेटो ॥ ७ ॥
 रण माटे ॥ ८ ॥ देहने विशे ॥ ९ ॥ क्षण मात्रमा
 ने थोडा काले करिने परिहाणी एटले रूपनि हा
 एटले नाश थायछे ए प्रकारे ॥ १० ॥ ते सनत कुमार
 ॥ ११ ॥ देवता जे तेमणे ॥ १२ ॥ कहयु ॥ १३ ॥ एम
 जलिलेछी एतेज तेने बोधनु कारण थयु ए जावा ॥ १४ ॥
 बहता ॥ लवसत्तमसुरा ॥ विमाणवासी ॥ विष्णुबिहति ॥
 सुरा ॥ १५ ॥ बिति ॥ त ॥ सेस ॥ १६ ॥ ससारे ॥ सासय ॥ कयर ॥ १७ ॥
 अर्थ ॥ १८ ॥ जो ॥ १९ ॥ प्रथमा ॥ २० ॥ सात लवनुछे आउपु ते
 जेमनु एहवा जे देव तेमना विमानना रहेनारा एटले
 अनुत्तर विमानना रहेनारा एहवा ॥ २१ ॥ पण ॥ २२ ॥ देव
 ॥ २३ ॥ समस्त प्रकारे पडेछे एटले आउपानो क्षय थ
 ये सते ते देवलोक थकि चवेछे एटले देवलोकना
 पण आउपा पुरा थायछे ॥ २४ ॥ त्वारे ॥ २५ ॥ विचारवा
 माडयु एहवु ॥ २६ ॥ ससारने विशे ॥ २७ ॥ बाकि रहेलु

बीजु ॥११॥ स्यु वस्तु एटले कियु पदार्थ ॥१२॥ शा
स्वतुछे अपितु काइ पण शास्वतु नथी, ए कारण माटे
धर्म एज नित्यछे ए जावा ॥२९॥

कह^१त^१भन्नइ^२सुखकं^३॥सुचिरेण^४वि^५जस्स^६दुख्क^७मुल्लिअ
इ^८॥जं^९०च^{१०}मरणावसाणे^{११}॥भवससारणुवध^{१२}च^{१३}॥३०॥

अर्थ ॥१॥ ते ॥२॥ सुख ॥३॥ शी रिते ॥४॥ कहिये
॥५॥ बहुकाले करिने एटले पल्योपम सागरोपम शुधि
सुख जोगविने ॥६॥ पण ॥७॥ जे सुखने अंते ॥८॥
दुःख ॥९॥ ग्रहण करिइं एटले पामिये एटले जे सुख
जोगव्या पछि दुख उपजे ते सुख दुखरुपज जाणवुं
॥१०॥ जे कारण माटे ॥११॥ यलि ॥१२॥ मरवानि
अवस्थाने विशे एटले मरवाने अवसरे ॥१३॥ जब ए
टले नारकादिकनो अवतार तेहने विशे ससार एटले
परिभ्रमण करवु तेहनो अनुवध एटले ससारमा न
मयानु करम बगयछे एटले जे सुखना पछवाडे गर
जावासादिकना दुख पामिये ते कारण माटे देवताउने
पण शिरिते सुख कहिये ॥१४॥ निश्चे ॥३०॥

उव^१ममहस्मोहि^२वि^३॥योहिज्जतो^४न^५भुइइ^६कोइं^७॥

तह^८अभदत्तगया^९॥उदायिनिवमारु^{१०}चेव^{११}॥३१॥

अर्थ ॥१॥ कोई पण जारे कर्म जीव ॥२॥ उपदेशना
सहस्रे करिने एटले हज्जारो उपदेश देवे करिने ॥३॥
पण ॥४॥ प्रतिबोध करवा माड्यो एटले प्रतिबोधवा
माड्यो सतो पण ॥५॥ न ॥६॥ प्रतिबोध पामे एटले
प्रतिबोध नथि पामतो ॥७॥ जेम ॥८॥ ब्रह्मदत्त राजा
एटले ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति अने बलि ॥९॥ उदाइ राजानो
मारनार ते वेजण हज्जारो उपदेश करिने पण प्रतिबो
ध न पाम्या तेम बीजाय पण प्रतिबोध नयी पामता
॥१०॥ निश्चे ए जाव ॥३१॥

गय कन्नचचला ॥ अपरिचत्ता ॥ रायलल्लिए ॥

बीव ॥ सकम्भ कलिमल ॥ भरिय भरतो पडति ॥ अहे ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ हाथीना काननि पठम चचल एटले चपल
एहवि ॥ २ ॥ अने वली न त्याग करेलि एहवि ॥ ३ ॥ राज्य
लक्ष्मी तेणिये करिने ॥ ४ ॥ पोताना कर्मरूप कलिमल
एटले मलिनपणु तेहनो जरचोछे एटले पूरण करचो
छे जर एटले जारे ते जेमणे एटले पोताना कर्मना
जारे करिने निचि गतिमा जयानुछे शील ते जेमनु ए
हवा ॥ ५ ॥ जीव एटले प्राणि ॥ ६ ॥ अधोगतिने विगे
एटले नरक भूमिने विगे ॥ ७ ॥ पडेछे एटले जायडे

माटे पापना आचरण करवा नहि ए उपदेश॥३३॥

पडिवडिजऊण० दोसे॥नियए० सम्म० च० पायवडिआ

ए०॥तो०॥किर०॥मिगावइए०॥उपन्न०॥केवल०नाण०॥३४॥

अर्थ ॥१॥पोताना॥२॥ढोप प्रते एटले पोताना अप
राध प्रते॥३॥ सम्यक् प्रकारे एटले मन वचन काया
नि शुद्धि करिने ॥४॥ अंगीकार करिने श्रेटले माह
रोज आ ढोपछे श्रे प्रकारे ग्रहण करिने॥५॥निश्चे॥६॥
पगने विशे पडति श्रेटले गुरूना घरण कमल सेवति
ऐहवि ॥७॥ मृगावति नामा साध्वी तेहने ॥८॥ केव
ल श्रेटले सपूर्ण ऐहवु ॥९॥ ज्ञान ॥१०॥ उत्पन्न थ
यु श्रेटले आवरण रहित पाचमु ज्ञान प्रगट्यु ॥११॥
सत्य ॥१२॥ ते कारण माटे विनय ओज सर्व गुणनो
निवासछे ॥३४॥

किं०सक्का०बुत्तुजेथ॥सरागधम्ममि०कोइ०अकसारु०॥

सो०पुण०धरिबत्त०॥धणिअ०॥दुवयणुनालिए०स०मुणी०॥३५॥

अर्थ॥१॥ सराग धर्मने विशे श्रेटले कपाय सहित
चारित्रने विशे, केज्जे दशमा गुणठाणा सुधि कपा
यनो सभवछे, श्रे कारण माटे॥२॥ कोइ पण साधु
॥ ३ ॥ सर्वथा कपाए रहित ऐहवो ॥ ४ ॥ कहेवा

ने ॥ ५ ॥ शिरिते ॥ ६ ॥ समर्थ थईए अटले सराग
 धर्मने विशे सर्व प्रकारे कपायनो अज्ञाव अटले कपा
 यें करिने रहितपणुं कयांथी होय ॥ ७ ॥ वलि ॥ ८ ॥ जे
 साधु ॥ ९ ॥ अतिशे करिने ॥ १० ॥ माठा वचनरूप
 लाकडाना समुहे करिने देदिप्यमान करचा अहवा
 जे कपाय ते प्रते ॥ ११ ॥ धरि राखे अटले उदयमां
 आवेला एहवाय पण कपाय प्रते प्रगट करे नहि, ए
 टले निष्फल करे ॥ १२ ॥ ते ॥ १३ ॥ मुनि कहीए एटले
 माहापुरुष कहीए सर्वथा प्रकारे कपायनो त्याग करवो
 वहु दुर्लभछे ए कारण माटे ए जावा ॥ १४ ॥

कडुअकसायतरुणं ॥ पुफ १ च १ फल १ च १ दोवि १ विरसाई ॥

पुष्केण ८ नाइ १० जविउ ९ ॥ फलेण ११ पाव १२ समायरई १२ ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ कडुआ, केमजे सजमना सुखनो जग
 करनारछे; ए कारण माटे एहवा जे कपायरूप वृक्ष
 तेमनु ॥ २ ॥ फुल ॥ ३ ॥ वलि ॥ ४ ॥ फल ॥ ५ ॥ निश्चे ॥ ६ ॥
 वे पण एटले फुल तथा फल एछे पण ॥ ७ ॥ रस रहि
 तछे एटले कपायरूप वृक्षना फुल तथा फल निस्सा
 र जाणवा ॥ ८ ॥ फुल रूप कारणे करिने ॥ ९ ॥ को
 प्यो सतो ॥ १० ॥ विच्यारेछे एटले बीजा पुरुषोने मा

रवादिकना उपाय प्रते चितवेछे एटलेजे मने करिने परनु
अनर्थ चितववु तेज कपायनु फुल जाणवुं ॥११॥ फ
ले करिने ॥१२॥ पाप प्रते ॥१३॥ आचरेछे एटलेजे परने
ताडना तर्जनादिक एटले मारवु कुटवु तेज कपायनु
फल जाणवुं ए कारण माटे कपायरुप वृक्षनु फुल प
ण कडवुछे अने फल पण कडवुछे एटले फुले करिने
पण अने फले करिने पण नरकनि गति थाय ए का
रण माटे कपाय त्यागवा ज्योग्यछे ए उपदेश ॥३६॥

सते १ वि० को १ वि० उ० अर्द्ध १ ॥ को ५ वि० असते ८ वि०

अहिंस ११ भो १० ॥ चय ११ परपञ्च १२

वि ११ ॥ पभो १ ८ दृण १ ॥ जह १ ॥ मं १ ॥

॥३७॥

अर्थ ॥१॥ कोइ ॥२॥ पण महापुरुष ॥३॥ सता एह
वा ॥४॥ पण एटले पोताने मिलेला एहवा पण भोग
प्रते ॥५॥ त्याग करेछे एटले द्रव्य जाव वे प्रकारे त
जेछे ॥६॥ कोइ ॥७॥ पण नीच कर्मी जीव ॥८॥ अस
ता एहवा ॥९॥ पण ॥१०॥ जोग एटले ससारिक
सुख ते प्रते ॥११॥ अनिलाप करेछे एटले वाच्छा
करेछे ॥१२॥ कोइक जीव परना निमित्ते करिने एटले
बीजा जीवनो वैराग्य देपाने ॥१३॥ पण ॥१४॥ जोग प्र

ते त्याग करेछे एटले भोग प्रते त्याग करतो एहवो
बीजो पुरुष देखीने पोते प्रतिबोध पामेछे इहां द्रष्टात
कहेछे ॥१५॥ जेम ॥१६॥ जंबू कुमार प्रते ॥१७॥ दे
खीने ॥१८॥ पांचसे चोरे करिने सहित एहवो प्रभवो
नामे चोर प्रतिबोध पाम्यो ॥३७॥

दीसति परमघोरा वि॥ पवरधम्मपभावपाडिबुद्धा ॥

ब्रह्मसो चिलाद्रपुत्तो ॥ पाडिबुद्धो सुसुमाणाए ॥३८॥

अर्थ ॥१॥ अतिशय रौद्र ध्याने करिने सहित एह
वा ॥२॥ पण घणा प्राणि ॥३॥ विशेष एहवो जे धर्म
नो प्रभाव तेणे करिने प्रतिबोध पाम्या एटले अरह
त् दर्शनना माहात्म्ययकि नाश पामीछे मिथ्यात्व
रूप निद्रा ते जेमनि, एहवा थया सता ॥४॥ देखीए
छीए ॥५॥ जेम ॥६॥ ते ॥७॥ चिलाति पुत्रनामा रौद्र
कर्मनो करनारो एटले घनावाह सेठनी दासीनो मार
नारो एहवो सतो ॥८॥ सुसुमानामा कन्याए करिने ॥
॥९॥ प्रतिबोध पाम्यो एटले मुनिने देखवे करिने प्र
तिबोध पाम्यो तेहनो विस्तार कथाथकि जाणवो ॥३८॥

पुष्पिण फलिण वह पिउघरमि ॥ तद्वा छुहा समणुवद्धा ॥

टटेण वह विवसदा ॥ विवसदा वह सफलाभाया ॥३९॥

अर्थ ॥१॥ पुष्पे करिने सहित एहवु ॥२॥ अने फले क
रिने सहित एटले धन धान्यादिके करिने सहित एहवु
॥३॥ अने वली प्रसिद्ध एहवु ॥४॥ पितानु घर सते एटले
वासुदेवनु घर सते पण ॥५॥ निरतर ॥६॥ त्रपा ॥७॥
क्षुधा ॥८॥ ते प्रकारे करिने ॥९॥ ढढण कुमार माहा
पुरुष जे तेणे ॥१०॥ विशेषे करिने सहन करी एटले
अलान परीसह सहन करवे करिने त्रपा क्षुधा सह
न करि ॥११॥ जे प्रकारे करिने ॥१२॥ सफल थड ए
टले केवल ज्ञान उत्पन्न थवानु कारण थड ए प्रकारे
॥१३॥ त्रपा क्षुधा अनुभवि एम बीजाओ ए पण सम
भावे करिने परिसह सहन करवा ए उपदेश ॥३९॥

आहारसु^१ सुहेसु^१ अ^१ ॥ रम्मावसेसु^१ काणणेसु^१ च^१ ॥

साहुण^१ ना^१ हिगारो^१ ॥ अहिगारो^१ धम्मरुद्धेसु^१ ॥ ४० ॥

अर्थ ॥१॥ साधू मुनिराजनो ॥२॥ शुन एटले अतिशे
रसे करिने सहित एहवा ॥३॥ आहारने विशे एटले
अशन पान खादिम स्वादिम ए चार प्रकारना आहार
ने विशे ॥४॥ अने वलि ॥५॥ मनोहर वस्तिने विशे एटले
उपाश्रयने विशे ॥६॥ अने वलि ॥७॥ वनने विशे एटले
नाना प्रकारना उद्यानने विशे ॥८॥ अधिकार ॥९॥

न होय एटले ए पूर्वे कहेला स्थांनकोने विशे सा।
 अधिकार न होय एटले आसक्ती न होय, ममता
 हितछे ए कारण माटे. त्यारे साधुनो अधिकार
 विशे होय ते कहेछे॥१०॥धर्मकार्यने विशे एटले आ
 त्म स्वरूपनुं चित्वन करवुं तेहने विशे ॥११॥साधु मु
 निराजनो अधिकारछे इन्द्रियोने सुखकारि एहवा बाह्य
 पदारथने विशे आसक्त न थाय एहवा साधु होय॥१२॥
 साहू^१कंठारमह^२भएसु^३॥अवि^४जणवए^५वि^६मुद्रयमि^७॥
 अवि^८ते^९शरीरपीड^{१०}॥सहति^{११}न^{१२}छहाति^{१३}अ^{१४}विरुद्ध^{१५}॥१४॥
 अर्थ ॥१॥मोहोटी अटविने विशे मोहोटा भयसते ए
 ले राजादिकनो जयसते ॥२॥ पण ॥३॥ साधू एटले
 मोहटा मुनिराज ॥४॥ रिद्धिये करिने निश्चल एटले
 जय रहित एहवा ॥५॥ जनपद एटले देश तेहने विशे
 ॥६॥ जेंम वरतता ॥७॥ निश्चे ॥८॥ ते साधु ॥९॥
 शरीरनी पीडाप्रते ॥१०॥सहनकरेछे एटले समेछे ॥११॥
 बलि पण ॥१२॥विरुद्ध एटले बेहेतालिस दोष सहित
 पाणिप्रते ॥१३॥ न ॥१४॥ग्रहण करे; कदापि
 करयु होय तोपण वावरे नहि जेंम भय रहित
 दणे^{१५}बढो निर्जपपणे वरतता होय तेहनि रिते मोहटि

अटविने विशे तथा मोहटा भयोने विशे जय रहित
पणे वर्त्तता जे मुनिराज ते कोइ उपसर्ग आवेसते
पण शरिरनि पिडाप्रते समताये करिने सहन करेछे
पण अशुद्ध आहार पाणि वस्त्र पात्रादिक लेतानथि
आ वात केहवे करिने मुनिराजने आहारादिकने वि
शे प्रतिबध न होय एम जणाव्यु ॥४१॥

जतेहि पीलिया विहु ॥ खदगसीसा नचेव परिकुविया •

॥ विद्वयपरमथसारा ॥ खंमति १ ॥ ने पाडिया १ ॥ हुति १ ॥ ॥४२॥

अर्थ ॥ १ ॥ खंधक नामे आचारजना पाचसे चेला ॥ २ ॥

पालक नामे दुष्ट पुरुष जे तेणे घाणिये करिने एटले
घाणिमा नाखिने ॥ ३ ॥ पील्या एटले पिड्याप्रते पा
माड्या सता ॥ ४ ॥ पण ॥ ५ ॥ निश्चे ॥ ६ ॥ नहिज ॥ ७ ॥
कोप पांम्या एटले क्रोधने बश थया नहि, केमजे ॥ ८ ॥
जाण्योछे परमार्थ एटले सार तेजेमणे एटले तत्व ज्ञान
वत एहवा ॥ ९ ॥ जे ॥ १० ॥ पडित एटले पापथि ढर
नारा ॥ ११ ॥ होय ॥ १२ ॥ ते ज्ञानि पुरुषो पीड्या प्र
ते सहन करेछे एटले पोताना प्राणनो नास थये सते
पण बीतरागनो कहेलो द्रव्य जाव बे प्रकारनो जे
मार्ग ते थाके चलायमान थता नथी ए जाव ॥ १२ ॥

निणवयणशुद्धसंकर्ता ॥ अनगयमंसारघोरपेयाळा ॥

वालाण ० स्वमंति ० नड ॥ नडात्ति ० किं ० इत्थ ० अच्चेर ० ॥ ४३ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जो ॥ २ ॥ जिनराजनं वचन साज्जलवे करिने
कान सहित केमजे लोक रुढियें करिने तो कान सहित
सर्व होयछे, ते परमारथे कान सहित केहेवाय नहि ए
कारणमाटे एहवा ॥ ३ ॥ अने जाण्योछे जयंकर संसारनो
विचार ते जेमणे एटले आ ससार असारछे ए प्रकारे
विचारवत एहवा ॥ ४ ॥ जति एटले साधु ॥ ५ ॥ बाल
एटले अज्ञानि मिथ्या द्रष्टि तेमना सवधि माठां चेष्टि
त एटले माठा अपराध जते ॥ ६ ॥ खधक आचारजना
शिष्यनि पठम समजावे सहन करेछे ॥ ७ ॥ एहमां ॥ ८ ॥
स्यु ॥ ९ ॥ आश्चर्यछे एटले साधु मुनिराजने दुष्ट लोकोना
करेला अपराध तेहनुं सहन करवु ते घटीतछे ॥ ४३ ॥

१ न १ कुल १ इत्थ १ पहाण ॥ हरि एसिबलस्स ० किं ० कुलं ० आसि ०

॥ आकपिया ० तवेण १ ॥ सुरा १ १ वि १ १ न १ १ पब्जुवासति १ ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ इहां धर्म विचारने विशे ॥ २ ॥ कुल उग्रजोगा
दि ३ ॥ नथी ॥ ४ ॥ प्रधान एटले मुख्य नथि एटले
उग्रजोगादिक कुल विना धर्म न होय. ए प्रकारे नि
अय नथि हवे द्रष्टांत कहेछे ॥ ५ ॥ हरिकेसिवल एहवे

जिणवयणशुद्धसंकन्ना१॥ अवगयसंसारघोरपेयाला१॥

वालाण१खमंति१नइ१॥ नइति१किं१इत्थ१अच्छे१॥

अर्थ ॥१॥ जो ॥२॥ जिनराजनं वचन साजलवे
कांन सहित केमजे लोक रुढियें करिने तो कान
सर्व होयछे, ते परमारथे कान सहित केहेवाय नहि
कारणमाटे एहवा ॥३॥ अने जाण्योछे जयंकर
विचार ते जेमणे एटले आ ससार असारछे ए
विचारवत एहवा ॥४॥ जति एटले साधु ॥५॥
एटले अज्ञानि मिथ्या द्रष्टि तेमना सबधि
त एटले माठा अपराध प्रते ॥६॥ ख
शिष्यनि पठम समजावे सहन करेछे ॥७॥
स्युं ॥९॥ आश्चर्यछे एटले साधु मुनिराजने दुष्ट
करेला अपराध तेहनुं सहन करवुं ते घटीतछे.

न१कुलं१इत्थ१पहाणं१॥ हरि एसिबलस्स१किं१कुलं१आसि१

॥ आकपिया१० तवेण१॥ मुरा११ वि१२ न११ पज्जुवासति१॥ १४॥

अर्थ ॥१॥ इहा धर्म विचारने विशेष ॥२॥ कुल उग्रनोग

दिक ॥३॥ नेथी ॥४॥ प्रधान एटले मुख्य नथि एटले

उग्रनोगादिक कुल विना धर्म न होय. ए प्रकारे नि

अथ नथि हवे द्रष्टात कहेछो ॥५॥ हरिकेसिवल एहवे

नामे महापुरुष जे तेनु॥६॥स्यु॥७॥कुल॥८॥हतु एटले
चढालकुलनेविशे श्रवतरेलाछे,ए कारण माटे उत्तम
कुल नथि तोये पण॥९॥तपे करिने ॥१०॥ वश करयु
छे हृदय ते जेमनु एहवा॥११॥ देवता जे ते ॥१२॥पण
॥१३॥जे हरिकेसि नामे साधु प्रते ॥१४॥ पर्युपासना
करेछे एटले सेवेछे तारे मनुष्यनु स्यु केहवु,ए कारण
माटे धर्म विचारने विशे कुलनु प्रधानपणु नथि॥१४॥

देवो'नेरइउ'त्ति१५॥ कीड'पयगु'पत्ति'माणुसोवेसो॥स्व
स्मिअ'विस्वो१०॥सुहभागी११दुखभागी१२अ१२॥४५॥

अर्थ ॥१॥ आ जीव देवता थयो॥२॥ ए प्रकारे॥३॥
वलि॥४॥ नाराकि थयो॥५॥ कीडो थयो एटले कृमिया
टिक थयो॥६॥पतगियो थयो॥७॥ वलि ए प्रकारे॥८॥
रूपछे वेप ते जेहनो एहवो थयो एटलेले नि

पवालो थयो एटले सुदर ॐ एटले स
रूप रहित थयो ॥११॥ सुर

खी थयो ॥१२॥ वलि॥१३॥भवस्सहा

थयो एहवि रिते ससाग्गति॥४९॥

। करतो सतो परिभ्रमण समुह ॥ नगर से
।दमगुत्ति१५॥गस'कारिने ॥२॥ प्रधान ए

॥४९॥

निगवयणशुद्धसंक्रान्ते ॥ अवगयसंसारघोरपेयाला ॥

वालाण ॥ स्वमंति ॥ नइ ॥ नइत्ति ॥ किं ॥ इत्थ ॥ अच्छेर ॥ ॥ ४३ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जो ॥ २ ॥ जिनराजनं वचन सांजलवे करिने
कान सहित केमजे लोक रुढियें करिने तो कान सहित
सर्व होयछे, ते परमारथे कान सहित केहेवाय नहि ए
कारणमाटे एहवा ॥ ३ ॥ अने जाण्योछे जयंकर ससारनो
विचार ते जेमणे एटले आ ससार असारछे ए प्रकारे
विचारवत एहवा ॥ ४ ॥ जति एटले साधु ॥ ५ ॥ बाल
एटले अज्ञानि मिथ्या द्रष्टि तेमना सबधि माठा चेष्टि
त एटले माठा अपराध जते ॥ ६ ॥ खधक आचारजना
शिष्यनि पठम समजावे सहन करेछे ॥ ७ ॥ एहमा ॥ ८ ॥
स्युं ॥ ९ ॥ आश्रयछे एटले साधु मुनिराजने दुष्ट लोकोना
करेला अपराध तेहनं सहन करवु ते घटीतछे ॥ ४३ ॥

॥ १ ॥ कुल ॥ इत्थ ॥ पहानं ॥ ॥ हरिणसिबलस ॥ किं ॥ कुल ॥ आसि ॥

॥ आकुरिया ॥ तवेणं ॥ मुरा ॥ वि ॥ न ॥ पञ्जुवासति ॥ ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ इहा धर्म विचारने विशे ॥ २ ॥ कुल उग्रजोगा
दि ॥ ३ ॥ नथी ॥ ४ ॥ प्रधान एटले मुख्य नथि एटले
उग्रजोगादिक कुल बिना धर्म न होय. ए प्रकारे नि
अय नथि ह्ये द्रष्टांत कहेछे ॥ ५ ॥ हरिकेसिबल एहये

नामे महापुरुष जे तेनु॥६॥स्यु॥७॥कुला॥८॥हतु एटले
चडालकुलनेविशे श्रवतरेलाछे,ए कारण माटे उत्तम
कुल नथि तोये पण॥९॥तपे करिने ॥१०॥ वश करघु
छे हृदय ते जेमनु एहवा॥११॥ देवता जे ते ॥१२॥पण
॥१३॥जे हरिकेसि नामे साधु प्रते ॥१४॥ पर्युपासना
करेछे एटले सेवेछे तारे मनुष्यनु स्यु केहवु,ए कारण
माटे धर्म विचारने विशे कुलनु प्रधानपणु नथि॥१५॥

देवो^१नेरइउ^२त्ति^३थ^४॥ कीड^५पयगु^६त्ति^७माणुसोवेसो^८॥स्व

स्तिअ^९विस्वो^{१०}॥सुहभागी^{११}दुखभागी^{१२}अ^{१३}॥४५॥

अर्थ ॥१॥ आ जीव देवता थयो॥२॥ ए प्रकारे॥३॥
वलि॥४॥ नारकि थयो॥५॥ कीडों थयो एटले कृमिया
टिक थयो॥६॥पतगियो थयो॥७॥ वलि ए प्रकारे॥८॥
मनुष्य रूपछे वेप ते जेहनो एहवो थयो एटलेले नि
थयो ॥९॥ रूपवालो थयो एटले सुंदर उ एटले स
थयो ॥१०॥ रूप रहित थयो ॥११॥ सुर
यो एटले सुखी थयो ॥१२॥ वलि॥१३॥परसहा^१
एटले दुखि थयो एहवि रिते ससागर्त^२॥४५॥

परना रूप करतो सतो परिभ्रमण समुह ॥ नगर मे
ना ॥ हा॥५॥दमगुत्ति^३थ^४॥जस^५करिने ॥२॥ प्रधान ए

हवा लक्ष्मीना नडारे करिने ॥३॥ बहू प्रकारना ए
 टले नाना प्रकारना ॥४॥ कामे करिने एटले शब्दा
 दिक विषयोश्रे करिने ॥५॥ निमंत्रण कर्या सतापण
 एटले प्रार्थना कर्या सतापण ॥६॥ श्रेष्ठ मुनियो जे ते
 ॥७॥ नथि इच्छता एटले पूर्वे कहेला अत पूर बल वाह
 नादिक प्रते नथि अभिलाप करता ॥८॥ निश्चये ॥ ए जाव

॥ परिग्रह अनर्थनु मूलछे ते कहेछे ॥

छेउ^१भेउ^२वसण^३ ॥ आयास^४किलेस^५भय^६विवागो^७अ^८ ॥

मरण^९धम्मभंसो^{१०} ॥ अरइ^{११}अथाउ^{१२}सवाइ^{१३} ॥ १० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ छेउ एटले नाक अने काननु कातरवु ॥ २ ॥ अने
 नेट एटले करवतादिके करिने चीरवु वा अथवा स्वजना
 दिक नि साथे टुटक पाडवि ॥ ३ ॥ अने कठ एटले आपति
 ॥ ४ ॥ अने आयास एटले द्रव्य उपार्जन करवाने अर्थ पो
 तानि मेलेशरिने प्रयास पमाडवो ॥ ५ ॥ अने किलेस एट
 ले पीडा ॥ ६ ॥ अने भय एटले त्रास ॥ ७ ॥ वलि ॥ ८ ॥ विवाद
 एटले कलह ॥ ९ ॥ अने मरण एटले प्राण त्याग ॥ १० ॥ अने
 भयंभी धष्ट थवु एटले श्रुत चारित्ररूप धर्म या कि चूकनु
 एटले रुडा आचारनो नाश करवो ॥ ११ ॥ अरति एट
 ले चित्तने विशेष उद्वेग ॥ १२ ॥ ए पूर्वे कहा सर्व ए

टला वाना ॥१३॥ धनथकि थायछे एटले परिग्रहछे
ते अनर्थनु मूलछे ए कारण माटे साधुमुनिराजने स
र्वथा प्रकारे परिग्रह त्याग करवो ए श्रेयछे ॥१०॥

दोससयमूल १ माल १ ॥ पुर्वोक्तिसिविविन्नय १ नद १ वत् १ ॥ अध ०

वहासि १ अणध १ ॥ कीस १ अणध १ ० वव १ १ चरासि १ ॥ ११ ॥

अर्थ ॥१॥ जो हे साधु ॥२॥ राग द्वेषादिक सेकडो दोषनु
कारण एहवु ॥३॥ जाल सरखु एटले मछनि जाल सर
खु कर्मवधननु कारण एहवु ॥४॥ पूर्वना रिपियोयें एटले
वयरस्वाम्यादिक मूनिओये त्याग करेलु एहवु अने ह-
मणाना नामधारि साधुओ कर्मना वश थकि तथा दश
मा अच्छेराता प्रजावथकि हाथी घोडाने विशे तत्पर
एटले हाथी घोडाना राखनारा एहवा अने आचारज
नुनाम धरावनारा अने केटला एक पीला कपडा करिने
तेमना सेवक थइने रहेला एहवा पाखडि जैना जास
हमणा आ पचमकालमा घणा वर्ते छे ते विवेकी पुरुषोये
आश्रय करवा जोग्य नथि ॥५॥ गली दिक्षा ग्रहणने अ
वसरे त्याग करेलु एहवु ॥६॥ अने अनर्थनु मूल एहवु ॥७॥
अर्थ एटले धन ते प्रते ॥८॥ धारण करेछे तो ॥९॥ स्या वा
स्ते ॥१०॥ नि प्रयोजन एटले फोगटा ॥११॥ नप प्रते ॥१२॥

करेछे एटले जे 'साधु' नाम धरावेछे अने धन राखेछे ते
ना तप जप कष्ट क्रिया सर्व फोगट छे ए परमार्थ

॥ बहवधनमारणसेहणाउ ॥ काउ^१परिग्रहे^२नाथि^३ ॥ त^४जइ^५
परिग्रहु^६धिय^७जइ^८धम्मो^९तो^{१०}नणु^{११}पचो^{१२} ॥ ५२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ परिग्रह सते एटले परिग्रह राखे सते ॥ २ ॥

वध एटले लाकडियादिके करिने ताडण करवु । वध

एटले दोरडादिके करिने बांधवुं । मारण एटले प्राण

थकि जुदुकरवुए रीते नाना प्रकारनि कदर्थनाओ ॥ ३ ॥

केइ ॥ ४ ॥ नाथि अपीतु सर्वेछे एटले परिग्रहनो संग्रह

करे सते केइ पीडाओ न थाय ॥ ५ ॥ ते कारण माटे ॥ ६ ॥

जो ए प्रकारे जाणिने पण ॥ ७ ॥ परिग्रह राखिये एटले

परिग्रह राखे ते ॥ ८ ॥ निश्चे ॥ ९ ॥ ते परिग्रहराखवा थवि

॥ १० ॥ जति धर्म एटले साधुनो धर्म ॥ ११ ॥ निश्चे ॥ १२ ॥

पडपंच रूपछे एटले विटवना तुल्यते ए कारण मां

साधुने परिग्रह राखवा जुक्त नाथि । ए भाव ॥ ५२ ॥

विज्जाहगिहि^१सहारि^२नरिदुहियाइ^३अहमहतीहि^४ ॥

न^५पथि^६जइ^७तइया^८वमुदेवो^९त^{१०}तवस्स^{११}फल^{१२} ॥ ५३ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ ने कालने विशेष ॥ २ ॥ माहो माहे स्पर्धा एटले

एटले करति एटले एक जाणे हु पेहलि परणु बीजि ज

ले चित्तडेलि परणु, ए प्रकारे इपां करति एहवि ॥ ३ ॥

वि विद्याधरिओ एटले विद्याधरना कुलमा उत्पन्न थये
 तीयो एहवि जे कन्याओ तेमणियो ॥४॥ अने राजानि पुत्रि
 तेमणियो ए ॥५॥ हरपे करिने सहिता ॥६॥ जे ॥७॥ वसु
 वनामा कुमार ॥८॥ प्रार्थना करि एछी ए एटले विद्याध
 नि पुत्रियो तथा राजानि पुत्रियो जे वासुदेव कुमार
 ते हर्ष सहित पोतानि मेले बछेछे ॥९॥ तेसर्व ॥१०॥ त
 नु ॥११॥ फल जाणवु एटले पुर्व स्वमा स्वमा म्हना
 यावचादिक तपनु फल जाणु ते जाण माटे परि
 त्याग करिने एहनाजनि स्वमा स्वमा तपन दिने
 यम करवो ए स्वमा ॥२३॥

किं आसि नदिसेणस्त ॥१॥ परिमुक्तसि विदग्ध ॥
 आसी ॥२॥ विषामहो ॥ सुचा ॥ रिण ॥ वसुदेवना मुक्ति ॥ ॥३॥
 अर्थ ॥१॥ नदिसेण जे तेमनु ॥२॥ स्यु ॥३॥ सुद
 कुल ॥४॥ हतु अपितु काइरुडु कुल न हतु क्येमजे
 आहण जातिमा अवतरया हता ए कारण माटे, तोये
 ॥५॥ जे कारण माटे ॥६॥ सारा अनुष्ठानो करवे
 करिने आ नदिसेणनो जीव ॥७॥ वसुदेव एहवे नामे
 ॥८॥ विस्तारवत एहवो ॥९॥ जादववश जे तेहना एट
 जे जादवकुलमा उत्पन्न थएला लोकोना ॥१०॥

द्व एटले पूजनिक ॥११॥ थया ते नला - १०८।
 माहात्म्यछे तेकारणमाटे ॥ ११॥ लसु
 निइहा रहित रूडा अनुष्ठानसेववा ए उपदेश॥११॥
 सपरक्रमउलवाइएण॥सीसेपलाविए॥निअण॥गय
 सुकुमालेण॥खमा॥तहा॥कया॥जह॥सिपत्तो॥॥५५॥
 अर्थ॥१॥पराक्रम साहितएहवोअने वली राजानो व
 धव एहवो सतोयपण॥२॥गजसुकुमालमुनिस्वरजेते
 ए॥३॥पोतानु॥४॥मस्तका॥५॥बले सते एटले सोमल
 ससरे मस्तकने विष्टे चेरनाअगाराअरे सते ॥६॥ ते
 प्रकारे॥७॥क्षमा॥८॥करि॥९॥जेम॥१०॥ मोक्ष पांम्यो
 त माटे उत्तम प्राणीयोयेक्षमा करवि एजसारछे॥५५॥

रायकुलेमु॥वि॥जाया॥भीया॥जरमरणगभवसहीण॥

साधु॥सहति॥सव॥नीयाणवी॥पेसपेसाण॥५६॥

अर्थ ॥१॥ राज कुलने विशे एटले उत्तमकुलने वि
 शे ॥२॥ उत्पन्न थया एहवा ॥३॥ पण ॥४॥ साधु मु
 निराज एटले उत्तमकुलने विशे उत्पन्न थइने साधु थ
 एला एहवासतापण॥५॥जरण एटले वयनिहानिअने
 मरण एटले प्राणनोविजोगअने गर्भवसती एटलेगर्जा

अर्थ ॥१॥ जेम ॥२॥ चक्रवर्त्ति साधु सरलपणे करि
ने प्रथम मोटा साधु प्रते नमस्कार न करतो हवो तेने
॥३॥ सामान्य साधु एटले दिक्षा प्रजाये करिने नाह
ना एहवा साधु जे तेणें ॥४॥ निष्ठुर वचने करिने एट
ले टुंकारो करिने ॥५॥ कह्युं के तुं आ साधु प्रते वदन क
र्य? एहवि रिते कह्यु, तोये पण ॥६॥ न ॥७॥ निश्चे
॥८॥ कोप्या ॥९॥ ज्ञानादिक गुणना एटले ज्ञान दर्शन
चरित्रना ॥१०॥ बहु पणे करिने एटले ज्ञानादिक गुणे
करिने अधिक एहवा साधुओ प्रते ॥११॥ नम्या ॥५८॥

ते १ धन्ना १ ते १ साहु १ ते १ नमो १ ते १ अकब्ज परिविरया १

॥ धीरा १ वय १ मसिहार १ चरंति १ नह १ थूलि भद्र मुणी ॥ ५९ ॥

अर्थ ॥१॥ जे पुरुष ॥२॥ अकारज थकि वीराम पाम्या ए
हवा ॥३॥ धीर एटले धीरजवत एहवा सता ॥४॥ खडग
सदृश ॥५॥ चोथा व्रत प्रते ॥६॥ पालेछे कोनी पठमा ॥७॥ जि
मा ॥८॥ थूलि चद्र मुनी अत्रे पाल्युं तिमा ॥९॥ ते पुरुष ॥१०॥
घन्य छे ॥११॥ ते पुरुष ॥१२॥ उत्तम छे ॥१३॥ ते पुरुषोने
॥१४॥ नमस्कार थाओ ॥५९॥

विसया सिपजरामिव ॥ ओण १ असिपजरामि १ तित्त्वमि १ ॥

सिंहा १ व १ पनरगया १ ॥ वसंति १ तवपनरे १ साहू १ ॥ ६० ॥

अर्थ॥१॥लोकनि मध्ये॥२॥तिक्ष्ण एटले आकरु एह
 वा॥३॥असिनु पाजरु एटले तरवारनो समूह ते थकि वि
 न्हा एहवा॥४॥सिंह॥५॥जेम॥६॥लाकडाना पाजरामा
 पेठा सता॥७॥अरहेछे एटले जेम सुजट लोकोए उगाम्या
 एहवा तरवारना समूह ते थकि विन्हा सता सिंह लाक
 डाना पाजरामा वसेछे ते प्रकारे॥८॥विषय एटले शब्दा
 दिक पाच विषय ते रूप खडगनु पाजरु तेहने तुल्य स्त्रि
 लोक ते थकि नय पाम्या एहवा॥९॥साधु मुनिराज जे
 ते पण॥१०॥तपरुप पाजराने विशेष वसेछे एटले गुरु
 नि आज्ञा लेइने वारे जे ते तपने विशेष ते छे एजावा॥६०॥

जो १. कुण्ड २. अपमाण ३. गुरुवयण ४. न. लहेइ ५. उवएस ६. सो ७.
 पञ्चा ८. तह ९. सोअइ १०. अबकोसघरे ११. तह १२. तवरसी १३. ६. १॥
 अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥गुरुनु वचना॥३॥अप्रमाण॥४॥
 करेछे एटले गुरुनु वचन प्रमाण करतो नथी॥५॥ते पु
 रुषा॥६॥उपदेश प्रते एटले गुरुनि आज्ञा प्रते॥७॥ना॥८॥
 पामे एटले न अगिकार करे॥९॥पट्टि॥१०॥ते प्रकारे
 ॥११॥शोक करे॥१२॥जेम॥१३॥उपकोशाने घरे एट
 ले कोशानि बेहेनने घेरं गुरुनि आज्ञा चिना आव्यो ए
 हवो॥१४॥तपरुषी एटले सिंह गुफावासि साधु शोच

प्रते पाम्या.तेम ते माटे गुरुनि आज्ञामा वर्तवुं॥६१॥

जिह्वयपद्मयभर॥समुग्रहणववसिअस्स१अद्यत१॥

जुवइ नणसंवइयरे३॥नइत्तण१उभउभइ०॥६२॥

अर्थ॥१॥अतिशय करीने॥२॥पर्वतना चार सदग म
हाव्रत धारण करवाने विपे उद्यमवत एहवो जे साधु
तेहने॥३॥स्त्रीजननो संसर्ग करेसते॥४॥जतीपणु एट
ले साधुपणु॥५॥द्रव्यजाव वे प्रकारे नाश पामे एटले
स्त्रीना ससर्ग करिने जतिपणुं रहे नहि. ए जाव॥६२॥

नइ१ठाणि१जइ१मोणी१॥नइ१भुडी१वकली१तवस्सी१वा१पथ
तो१२अ१२अवम११॥वभावि१०न११रोवए११मझ११॥६३॥

अर्थ॥१॥जो॥२॥कायोत्सर्ग करेछे॥३॥जो॥४॥मौनप
णु धारण करेछे॥५॥जो॥६॥मस्तक मुडावेछे॥७॥अथ
वा॥८॥छालना वस्त्र पेहरेछे॥९॥तपस्या करेछे एहवो
॥१०॥ब्रह्मा जे ते पिण॥११॥मैथुनजाव प्रते॥१२॥वा
छतोसतो॥१३॥बलि॥१४॥मने॥१५॥नथी॥१६॥रुचतो
एटले मैथुननो अजिलापी सतो जे कष्टक्रिया करेछे
ते सर्वे फोगटछे. जाव मिथ्यात आवेछे माटे॥६३॥

तो१पदिय१तो१गुणिय१॥तो११गुणिय१२तो११अ११चेईउ११अणा

११॥आवडिअपलियामतिउ१॥वि१नइ१न१कुणइ१अकन्न१॥६४॥

अर्थ॥१॥ जं॥२॥ आपदाने विगे पढ्यो एहवो पण
 मने म्नीयोये निमत्रण करघो सतो॥३॥पिण॥४॥मैधुन
 मेयनादि॥५॥नधी॥६॥रुततो॥७॥त्यारे॥८॥ भणेलु
 प्रमाणा॥९॥यारे॥१०॥गुणेलु प्रमाणा॥११॥त्यारे॥१२॥
 जाणपणु प्रमाण एटले शास्त्रना अर्थनु जाणपणु प्रमाण
 टे॥१३॥त्यारे॥१४॥रली॥१५॥आत्मा॥१६॥चेताव्यो
 एटले आत्म स्वरूपनु चित्वन करवुं एटले आत्मा अने
 पुढगलनी येहेचण करवी ते प्रमाण छे॥६४॥

पगोइयसबस्तो॥गुरुपादमूलामे॥लहइ॥साटुपय॥३॥

विशुद्धरस॥न॥बदइ॥गुणसेदि॥तत्तिपा॥ठाइ॥॥६५॥

अर्थ॥१॥गुरु महाराजनी समीपे॥२॥प्रगट करघुछे
 एटले आलोयुछे सर्वशलय एटले पाप तेजेणे एहवो जे
 पुरुषा॥३॥माधुपणा प्रते॥४॥पामेछे॥५॥अने नधी आलो
 व्यु पाप तेजेणे एहवो जे पुरुष तेहने॥६॥गुणनी श्रेणी
 ॥७॥न॥८॥ब्रहि पामे॥९॥नेटलीज॥१०॥रहे॥६५॥

नइ॥दुकरदुकरकारउ॥ति॥भाणउ॥नहइउ॥साहू॥तो॥

कीस॥अवगसभूआवगयसीसेहि॥न॥वि॥स्वमिय॥॥६६॥

अर्थ॥१॥जो॥२॥अतिपयदुकरदुकरनो करनारा॥३॥

५ प्रकार बहु मानपूर्वका॥४॥यथार्थ॥५॥धुलिजत्र नामे

साधुछे एहवी रीते सभूतबीजय गुरु माहाराजे॥६॥
 ह्यु॥७॥ त्वारे॥८॥ स्यामाटे॥९॥ आचारज संभूतबीज
 ना शिष्योये॥१०॥११॥ नहीजते गुरुवचन॥१२॥ सह
 करघु१ एनी विवेकी पणुंछे; ते माटेयथार्थ गुणवंत पुरुषों
 देखीने तथा सांजलीने ते गुणवंत पुरुषोने विषे अनुरा
 करवो केमके तेथी समकित निरमळ थायछे॥६६॥

नइ१ ताव१ सबड१ सुंदर१ ति१॥ कम्मण१ उवसमेण१ नइ० ॥

धम्म१ वियाणमाणे१॥ इयरो१ कि१ मच्छर१ वहइ१॥६७॥

अर्थ॥१॥ जो॥२॥ प्रथम लोकनी मध्ये॥३॥ कर्मना॥४॥
 (क्षय उपसमे करीने)॥५॥ धर्मनी जाण॥६॥ एहवो॥७॥

साधु॥८॥ सर्व प्रकारे करीने॥९॥ रुडोछे. ए प्रकारे लोक
 नी मध्ये प्रसीद्ध तेनी उपरा॥१०॥ बीजो पुरुष॥११॥ किम

॥१२॥ मच्छर प्रते॥१३॥ वहन करेछे? निर्गुणी थइने
 गुणवत उपर मच्छर धारण करवो ते फोगटछे॥६७॥

अइमुटिउत्ति१ गुणममुटिउत्ति१॥ नो१ न१ सहइ१ जइपसम१॥

सो१ गटिइ१ परभवे१॥ जहा१ महापीढीढरिसी१॥६८॥

अर्थ॥१॥ जे पुरुष॥२॥ आ अनिपये करीने चारित्रने
 विषे द्रष्टछे अने॥३॥ गली वैयावचादिक गुणे करीने जरे
 छेछे ए प्रकारनी॥४॥ साधुनी प्रससा प्रते॥५॥ नर्या॥६॥

रहन करतो॥७॥ते पुरुषा॥८॥परजवने विपे॥९॥पुरुष
दि मूकीने स्त्री वेद पामेछे॥१०॥जेम॥११॥पीठमहापीठ
राधु मच्छरना प्रजावथकी स्त्री वेदपणु पाम्या॥६८॥
परपरिवायगिण्हइ^१॥अठमयविरलणे^२सया^३रमइ^४ ॥

डग्रइ^५य^६परसिरि^७॥सकसाउ^८दुखिवउ^९निघ^{१०}॥६९॥
अर्थ॥१॥ जे पुरुष पारका अवर्णवाद बोलेछे अने
॥२॥आठमदना विस्तारने विपे एटले आठमद क
त्वाने विपे॥३॥नीरतरा॥४॥आसक्त थायछे॥५॥बली
॥६॥परनी लक्ष्मी देखवे करीने॥७॥बलेछे॥८॥एह
तो कपाय सहीत॥९॥नीत्या॥१०॥दुखि जाणवो ते मा
॥ पारका अवर्णवाद बोलवा नहीं॥६९॥

विग्गहविवायरुइणो^१॥कुलगणसघेण^२बाहिरकयस्स^३॥न
धि^४किर^५देवलो^६ए^७वि^८॥देवसमिइसु^९अवगासो^{१०}॥७०॥

अर्थ॥१॥जुद्ध करवानि तथा विवाद करवानीछे रुची
॥ जेहेनी एहवो अने॥२॥कुल ते नागेद्रादी गण ते कु
न समुदाय सघते चतुर्विधसघ तेमणे॥३॥बाहिर करे
नो एटले काहाडी मुकेलो एहवो जे पुरुष तेहनो॥४॥
नेवलोकने विपे॥५॥पण॥६॥देव सजाने विपे॥७॥प्रवे
॥८॥नर्थी॥९॥निश्चे जे कारण माटे अवर्णवादनो वो

लनारो तथा कलेश करनारो किलविखिया देवता
विपे अवतरेछे एटले ढेड देवता थायछे ॥७०॥

नइ^१ता^२नणसववहार^३॥वडिनय^४भकडन^५

मायरइ^६अन्नो^७॥जो^८त^९पुणोवि^{१०}कथइ^{११}

॥परस्स^{१२}वसणेण^{१३}सो^{१४}दुहिउ^{१५}॥७१॥

अर्थ॥१॥अन्य जे पुरुष एटले बीजो कोइ पुरुषा
जो॥३॥प्रथमा॥४॥लोक व्यवहारने विपे॥५॥निषेध
रेलु एहवु॥६॥अकार्ज प्रते॥७॥करेछे॥८॥जे पुरुषा
तेना पाप कर्म प्रते॥१०॥वली॥११॥बीजानी आग
कहेछे॥१२॥ते पुरुषा॥१३॥पारका ॥१४॥दुखे करी
॥१५॥दुखीओ थायछे ते बापडो फोगट पारकी निद
करवे करीने पाप सहीत थायछे॥७१॥

मुटु^१वि^२उज्ज्वलमाण^३॥पचेव^४कराति^५रित्तिय^६समण^७॥अ

णधूइ^८परनिंदा^९॥निशो^{१०}वत्छा^{११}रुसाया^{१२}य^{१३}॥७२॥

अर्थ॥१॥सम्यक् प्रकारे करीने तप संजमने विपे॥
उद्यम करतो एहवो॥३॥पिए॥४॥साधु प्रते॥५॥पा
वस्तुहीजा॥६॥खाली॥७॥करेछे ते पाच वस्तु केइ
कहेछे॥८॥पोतानी स्तुती॥९॥परनिंदा॥१०॥रस इद्रि
ने विपे ग्रथीलपणु॥११॥पुरुष स्त्रीना चिनने विपे

पयनो अजिलापा॥१२॥वली॥१३॥चार कसाया॥७२॥

परपरिवायमइउ॥दूसइ॥वयणेहि॥जेहि॥जेहि॥पर॥ते॥

ते॥पावइ॥दोसे॥परपरिवायइय॥अपिच्छो॥॥७३॥

अर्थ॥१॥ पारको अवर्णवाढ बोलवानीछे मती ते जे
हनी एहवो जे पुरुषा॥२॥जे॥३॥जे॥४॥वचनोये करीने
॥५॥बीजापुरुष प्रते॥६॥दुपीत करेछे॥७॥ते॥८॥ते॥९॥

दोपो प्रते॥१०॥पोते पामेछे ए कारण माटे॥११॥पर अ
पवादनो बोलनारो पुरुषा॥१२॥नथी देखवा जोग्या॥७३॥

पदा॥छिद्रपेही॥अवन्नवाइ॥सयमई॥चवला॥॥

का॥कोहणसीला॥सीसा॥उबेअगा॥गुरुणो॥॥७४॥

अर्थ॥१॥अहकारी एहवा॥२॥छिद्रना खोलनारा ए
हवा॥३॥अवर्णवाढ बोलवाने तत्पर एहवा॥४॥ पोता
नी मतीए चालनारा एहवा॥५॥चपल स्वभाववाला
एहवा॥६॥राका॥७॥क्रोधी एहवा॥८॥जे शीप्य॥९॥गु
रु माहाराजने॥१०॥उदवेगना करावनारा थायछे॥७४॥

वस्स॥गुरुमे॥न॥भत्ती॥॥न॥य॥यहुमाणो॥न॥

गडरव॥न॥भय॥॥नवि॥लब्जा॥नवि॥

नेहो॥॥गुरुकुलवासेण॥कि॥तस्स॥॥७५॥

अर्थ॥१॥जे शिष्यने॥२॥गुरु माहाराजने विजे॥३॥

नक्की एटले गुरु माहाराजने देखीने उच्चा थवु ना
 न आपवादीक विनया॥४॥नथी॥५॥वर्ल
 ति॥७॥नथी॥८॥मोटाइपणु॥९॥नथी॥१०॥गुरुयकी
 या॥११॥नथी॥१२॥गुरुनी लज्या॥१३॥नथी॥१४॥गुरु
 उपर स्नेह॥१५॥नथीज॥१६॥जे शिष्यने पूर्वे कहा ए
 टलां वांना गुरु संवधी नथी ते शिष्यने॥१७॥गुरुना
 समीप रेहवे करीने॥१८॥स्युं॥७५॥

रुसइ^१चाई^२बततो^३॥वहइ^४हियएण^५अणुसय^६भाणउ^७॥न^८य^९
 कम्म^{१०}करणिझे^{११}॥गुरुस्स^{१२}आलो^{१३}न^{१४}सो^{१५}सीसो^{१६}॥७६॥

अर्थ॥१॥जे शिष्य गुरु माहाराजे प्रेरणा करचोसतो
 ॥२॥रोप करेछे ॥३॥बोलाव्योसतो॥४॥हृदयने विषे
 ॥५॥क्रोध प्रते॥६॥गारण करेछे॥७॥वली॥८॥करवा जो
 ग्य एहवु॥९॥कार्ज॥१०॥न करे॥११॥ते शिष्या॥१२॥
 गुरुने॥१३॥आलरूपजाणवो॥१४॥शिष्य एटले सिखा
 मणनो माननारो॥१५॥न जाणवो ते माटे दुर्विनितप
 णु त्याग करवु ए श्रेयछे॥७६॥

ठविल्लणसूअणपरिभवेहिं^१॥अइभणिय^२टुइभणिएहिं^३॥

सत्ताहिया^४सुविहिया^५॥न^६चेव^७भिदाते^८मुहराग^९॥७७॥

अर्थ॥१॥प्राक्रमे करीने अधिक एटले क्रोधादिक जि

तवाने समयं एहवा॥२॥ जला शिष्य ते जे ते॥३॥ उद
वेग पमाडवे करीने तथा दोष प्रगट करवे करीने त
था तर्जनाए करीने॥४॥ अति सिपामण देवे करीने॥५॥
अति आकरां वचन केहेवे करीने॥६॥ न॥७॥ हीजा॥८॥
मुखना रग प्रते॥९॥ पालटे एटले जे सुशिष्य होयछे
ते गुरु माहाराजना उपदेशे करीने काला मुखवाला थ
ता नथी अपीतु खुसी थायछे॥७७॥

माणखिणो^१ वि^२ अवमाण^३ वचना^४ ते^५ परस्स^६ ते^७ न^८ क
रति^९ ॥ मुहदुस्स^{१०} गेरण^{११} ॥ साहुउ^{१२} अहिगभीर^{१३} ॥७८॥

अर्थ॥१॥ इन्द्रादिके मान्या सता एहवा॥२॥ पिण॥३॥
समुद्रनी पेठे गजीर एहवा॥४॥ प्रसीद्ध एहवा॥५॥ ते॥६॥
साधु॥७॥ सुख दुःख एटले पुन्य पाप क्षय करवाने अ
र्थ॥८॥ परथकी अपमान थए सते॥९॥ अपराधना कर
नार पर पुरुषने॥१०॥ ठगवु एटले पीडा॥११॥ नथी॥१२॥
करता॥७८॥

मउआ^१ निहुअसटावा^२ ॥ हासदहाविवन्निथा^३ विगहमुका^४ ॥ अ
समनस^५ मइवहुअ^६ ॥ न^७ भणति^८ ॥ अणुचक्रया^९ साह^{१०} ॥७९॥

अर्थ॥१॥ अहकार रहित एहवा॥२॥ शात सजाववाला
॥३॥ सामान्य प्रकारे हसवु पर उपर ईर्ष्यादिकनु करवु

टे॥८॥फल रहित जाणवु॥८१॥

छद्मजीव कायवहगा॥हिंसकसंथाइ॥उवइसति॥पुणो॥

सुग्रहपित्तवाकिलेसो॥बालतवस्सीण॥अणफगे॥८२॥

अर्थ॥१॥उजीव कायना वध करनारा एहवा॥२॥बली
॥३॥लोकोनी आगल हिंसकशास्त्र प्रते॥४॥प्रकाश क
रेछे एहवा जे॥५॥गाल तपस्वी एटले अज्ञानी पूरुपो
नो॥६॥अतिपय करीने घणो एहवोय पण॥७॥तपे क
रीने जे केश एटले जे कटा॥८॥फल रहित जाणवु ते
माटे द्रव्यभाव वे प्रकारे हिंसा त्याग करीने तप कर
वो ते मोहोटा फलवालोछे॥८२॥

परियच्छति॥सर्व॥महाद्वि॥अवितट॥असदिष्ट॥तो॥

जिणवयणाविहिनु॥सहति॥वट्टअरस॥बहुआण॥८३॥

अर्थ॥१॥जे साधु जथार्थ एहवा॥२॥सत्य एहवा॥३॥मं
देह रहित एहवा॥४॥सर्व जीवाजीवादी पदार्थना समु
ह प्रते॥५॥जाणोछे॥६॥ते कारण माटे॥७॥जिन वचननी
विधिना जाण एटले सिद्धान्त मार्गना जाण एहवा स
ता॥८॥गहू सामान्य एटले नीच लोकोना॥९॥वणा दु
र्वचनादी प्रते॥१०॥समजावे करीने सहन करेछे ते मा
टे एहवा मुनीराजनु जे तप ते माटा फलने अर्थ एट

લે મોક્ષ ફલને અર્થે થાયછે॥૮૩॥

લો' વરસ' વરુણ' હિયર' ॥ સો' ત' ઠાવે' સુદરસહાવં' ॥

વ' રી' ઘાવ' ॥ જાળી' ॥ ॥ મદ' ॥ સોમ' ॥ ૪ ॥ મને' ॥ ॥ ૮૪ ॥

અર્થા ૧ ॥ જે ॥ ૨ ॥ જેહના ॥ ૩ ॥ ચિતને વિષે ॥ ૪ ॥ પ્રત્તેછે ॥ ૫ ॥

તે પુરુષા ૬ ॥ તે પ્રતે ॥ ૭ ॥ સુદર સજાવવાલો ॥ ૮ ॥ માનેછે

૧૧ ॥ જેમ વાવેણ ॥ ૧૦ ॥ માતા ॥ ૧૧ ॥ પોતાના વાતક ૧

તે ॥ ૧૨ ॥ જાનદા ॥ ૧૩ ॥ રાણી ॥ ૧૪ ॥ શાત એહવું ૧૫ ॥ માનેછે એ

ટલે જેમ વાવેણ અજ્ઞાનપણાથી અજન્મ અને અજ્ઞાત

અને પતા જીવોનું જાણ કરનારું એહવું જે પોતાનું વા

તક તે પ્રો જન્મ અને શાત અને જીવ રક્ષણનું કરનારું

પરંતુ માનેછે તેહની પટમ અજ્ઞાંતી જીવ કુમુરું ગુપ્ત

ક રહીને માનેછે અને પોતાના અજ્ઞાંત તપ પ્રતે રહી

જાણે માનેછે માટે પ્રીતી પુરુષોં પેરીધાંત ઉપર ઉપયોગ

પરંતુ અજ્ઞાનનું જયાવ જાણાવણું કરવું જાવ ॥ ૮૪ ॥

અ' ૧૬ ૧૭ ૧૮ ૧૯ ૨૦ ૨૧ ૨૨ ૨૩ ૨૪ ૨૫ ૨૬ ૨૭ ૨૮ ૨૯ ૩૦ ૩૧ ૩૨ ૩૩ ૩૪ ૩૫ ૩૬ ૩૭ ૩૮ ૩૯ ૪૦ ૪૧ ૪૨ ૪૩ ૪૪ ૪૫ ૪૬ ૪૭ ૪૮ ૪૯ ૫૦ ૫૧ ૫૨ ૫૩ ૫૪ ૫૫ ૫૬ ૫૭ ૫૮ ૫૯ ૬૦ ૬૧ ૬૨ ૬૩ ૬૪ ૬૫ ૬૬ ૬૭ ૬૮ ૬૯ ૭૦ ૭૧ ૭૨ ૭૩ ૭૪ ૭૫ ૭૬ ૭૭ ૭૮ ૭૯ ૮૦ ૮૧ ૮૨ ૮૩ ૮૪ ૮૫ ૮૬ ૮૭ ૮૮ ૮૯ ૯૦ ૯૧ ૯૨ ૯૩ ૯૪ ૯૫ ૯૬ ૯૭ ૯૮ ૯૯ ૧૦૦

૧૦૧ ૧૦૨ ૧૦૩ ૧૦૪ ૧૦૫ ૧૦૬ ૧૦૭ ૧૦૮ ૧૦૯ ૧૧૦ ૧૧૧ ૧૧૨ ૧૧૩ ૧૧૪ ૧૧૫ ૧૧૬ ૧૧૭ ૧૧૮ ૧૧૯ ૧૨૦ ૧૨૧ ૧૨૨ ૧૨૩ ૧૨૪ ૧૨૫ ૧૨૬ ૧૨૭ ૧૨૮ ૧૨૯ ૧૩૦ ૧૩૧ ૧૩૨ ૧૩૩ ૧૩૪ ૧૩૫ ૧૩૬ ૧૩૭ ૧૩૮ ૧૩૯ ૧૪૦ ૧૪૧ ૧૪૨ ૧૪૩ ૧૪૪ ૧૪૫ ૧૪૬ ૧૪૭ ૧૪૮ ૧૪૯ ૧૫૦ ૧૫૧ ૧૫૨ ૧૫૩ ૧૫૪ ૧૫૫ ૧૫૬ ૧૫૭ ૧૫૮ ૧૫૯ ૧૬૦ ૧૬૧ ૧૬૨ ૧૬૩ ૧૬૪ ૧૬૫ ૧૬૬ ૧૬૭ ૧૬૮ ૧૬૯ ૧૭૦ ૧૭૧ ૧૭૨ ૧૭૩ ૧૭૪ ૧૭૫ ૧૭૬ ૧૭૭ ૧૭૮ ૧૭૯ ૧૮૦ ૧૮૧ ૧૮૨ ૧૮૩ ૧૮૪ ૧૮૫ ૧૮૬ ૧૮૭ ૧૮૮ ૧૮૯ ૧૯૦ ૧૯૧ ૧૯૨ ૧૯૩ ૧૯૪ ૧૯૫ ૧૯૬ ૧૯૭ ૧૯૮ ૧૯૯ ૨૦૦

અ' ૧૧ ૧૨ ૧૩ ૧૪ ૧૫ ૧૬ ૧૭ ૧૮ ૧૯ ૨૦ ૨૧ ૨૨ ૨૩ ૨૪ ૨૫ ૨૬ ૨૭ ૨૮ ૨૯ ૩૦ ૩૧ ૩૨ ૩૩ ૩૪ ૩૫ ૩૬ ૩૭ ૩૮ ૩૯ ૪૦ ૪૧ ૪૨ ૪૩ ૪૪ ૪૫ ૪૬ ૪૭ ૪૮ ૪૯ ૫૦ ૫૧ ૫૨ ૫૩ ૫૪ ૫૫ ૫૬ ૫૭ ૫૮ ૫૯ ૬૦ ૬૧ ૬૨ ૬૩ ૬૪ ૬૫ ૬૬ ૬૭ ૬૮ ૬૯ ૭૦ ૭૧ ૭૨ ૭૩ ૭૪ ૭૫ ૭૬ ૭૭ ૭૮ ૭૯ ૮૦ ૮૧ ૮૨ ૮૩ ૮૪ ૮૫ ૮૬ ૮૭ ૮૮ ૮૯ ૯૦ ૯૧ ૯૨ ૯૩ ૯૪ ૯૫ ૯૬ ૯૭ ૯૮ ૯૯ ૧૦૦

૧૦૧ ૧૦૨ ૧૦૩ ૧૦૪ ૧૦૫ ૧૦૬ ૧૦૭ ૧૦૮ ૧૦૯ ૧૧૦ ૧૧૧ ૧૧૨ ૧૧૩ ૧૧૪ ૧૧૫ ૧૧૬ ૧૧૭ ૧૧૮ ૧૧૯ ૧૨૦ ૧૨૧ ૧૨૨ ૧૨૩ ૧૨૪ ૧૨૫ ૧૨૬ ૧૨૭ ૧૨૮ ૧૨૯ ૧૩૦ ૧૩૧ ૧૩૨ ૧૩૩ ૧૩૪ ૧૩૫ ૧૩૬ ૧૩૭ ૧૩૮ ૧૩૯ ૧૪૦ ૧૪૧ ૧૪૨ ૧૪૩ ૧૪૪ ૧૪૫ ૧૪૬ ૧૪૭ ૧૪૮ ૧૪૯ ૧૫૦ ૧૫૧ ૧૫૨ ૧૫૩ ૧૫૪ ૧૫૫ ૧૫૬ ૧૫૭ ૧૫૮ ૧૫૯ ૧૬૦ ૧૬૧ ૧૬૨ ૧૬૩ ૧૬૪ ૧૬૫ ૧૬૬ ૧૬૭ ૧૬૮ ૧૬૯ ૧૭૦ ૧૭૧ ૧૭૨ ૧૭૩ ૧૭૪ ૧૭૫ ૧૭૬ ૧૭૭ ૧૭૮ ૧૭૯ ૧૮૦ ૧૮૧ ૧૮૨ ૧૮૩ ૧૮૪ ૧૮૫ ૧૮૬ ૧૮૭ ૧૮૮ ૧૮૯ ૧૯૦ ૧૯૧ ૧૯૨ ૧૯૩ ૧૯૪ ૧૯૫ ૧૯૬ ૧૯૭ ૧૯૮ ૧૯૯ ૨૦૦

૨૦૧ ૨૦૨ ૨૦૩ ૨૦૪ ૨૦૫ ૨૦૬ ૨૦૭ ૨૦૮ ૨૦૯ ૨૧૦ ૨૧૧ ૨૧૨ ૨૧૩ ૨૧૪ ૨૧૫ ૨૧૬ ૨૧૭ ૨૧૮ ૨૧૯ ૨૨૦ ૨૨૧ ૨૨૨ ૨૨૩ ૨૨૪ ૨૨૫ ૨૨૬ ૨૨૭ ૨૨૮ ૨૨૯ ૨૩૦ ૨૩૧ ૨૩૨ ૨૩૩ ૨૩૪ ૨૩૫ ૨૩૬ ૨૩૭ ૨૩૮ ૨૩૯ ૨૪૦ ૨૪૧ ૨૪૨ ૨૪૩ ૨૪૪ ૨૪૫ ૨૪૬ ૨૪૭ ૨૪૮ ૨૪૯ ૨૫૦ ૨૫૧ ૨૫૨ ૨૫૩ ૨૫૪ ૨૫૫ ૨૫૬ ૨૫૭ ૨૫૮ ૨૫૯ ૨૬૦ ૨૬૧ ૨૬૨ ૨૬૩ ૨૬૪ ૨૬૫ ૨૬૬ ૨૬૭ ૨૬૮ ૨૬૯ ૨૭૦ ૨૭૧ ૨૭૨ ૨૭૩ ૨૭૪ ૨૭૫ ૨૭૬ ૨૭૭ ૨૭૮ ૨૭૯ ૨૮૦ ૨૮૧ ૨૮૨ ૨૮૩ ૨૮૪ ૨૮૫ ૨૮૬ ૨૮૭ ૨૮૮ ૨૮૯ ૨૯૦ ૨૯૧ ૨૯૨ ૨૯૩ ૨૯૪ ૨૯૫ ૨૯૬ ૨૯૭ ૨૯૮ ૨૯૯ ૩૦૦

૩૦૧ ૩૦૨ ૩૦૩ ૩૦૪ ૩૦૫ ૩૦૬ ૩૦૭ ૩૦૮ ૩૦૯ ૩૧૦ ૩૧૧ ૩૧૨ ૩૧૩ ૩૧૪ ૩૧૫ ૩૧૬ ૩૧૭ ૩૧૮ ૩૧૯ ૩૨૦ ૩૨૧ ૩૨૨ ૩૨૩ ૩૨૪ ૩૨૫ ૩૨૬ ૩૨૭ ૩૨૮ ૩૨૯ ૩૩૦ ૩૩૧ ૩૩૨ ૩૩૩ ૩૩૪ ૩૩૫ ૩૩૬ ૩૩૭ ૩૩૮ ૩૩૯ ૩૪૦ ૩૪૧ ૩૪૨ ૩૪૩ ૩૪૪ ૩૪૫ ૩૪૬ ૩૪૭ ૩૪૮ ૩૪૯ ૩૫૦ ૩૫૧ ૩૫૨ ૩૫૩ ૩૫૪ ૩૫૫ ૩૫૬ ૩૫૭ ૩૫૮ ૩૫૯ ૩૬૦ ૩૬૧ ૩૬૨ ૩૬૩ ૩૬૪ ૩૬૫ ૩૬૬ ૩૬૭ ૩૬૮ ૩૬૯ ૩૭૦ ૩૭૧ ૩૭૨ ૩૭૩ ૩૭૪ ૩૭૫ ૩૭૬ ૩૭૭ ૩૭૮ ૩૭૯ ૩૮૦ ૩૮૧ ૩૮૨ ૩૮૩ ૩૮૪ ૩૮૫ ૩૮૬ ૩૮૭ ૩૮૮ ૩૮૯ ૩૯૦ ૩૯૧ ૩૯૨ ૩૯૩ ૩૯૪ ૩૯૫ ૩૯૬ ૩૯૭ ૩૯૮ ૩૯૯ ૪૦૦

मी॥८॥वर्तेंछे ए प्रकारे विचारतो सतो॥९॥विषयना अ
भिलाप रहित एहवो॥१०॥थयो ते माटे सम्यक् वि
चार करवो ए श्रेष्ठछो॥८५॥

न० करति० ने० तव० सनम० च०॥ते० तुल्यपाणिपायार्ण०॥पुरि
सा० समपुरिषाण०॥अवस्स० वेसुत्तण०॥मुर्विति०॥८६॥

अर्थ॥१॥जे पुरुष॥२॥तप वार प्रकारे॥३॥वली॥४॥
सजम सत्तर प्रकारे ते प्रते॥५॥नथी॥६॥करता॥७॥ते
॥८॥पुरुषा॥९॥सरखाछे हाथ पग ते जेमना एहवा अ
ने॥१०॥वरोवर आकारना धारण करनार एहवा पूरु
पोना॥११॥डासपणा प्रते॥१२॥निश्चे॥१३॥यामेछे ते
माटे विवेकी पुरुषोये समकित पूर्वक तप सजमने वि
पे उद्यम करवो ए कल्याणकारिछे ए उपदेश॥८६॥

सुदरसुकुमालसुहोदेएण०॥विविहेहि० तवविसेसेहि०॥तह०
सोसविठ० अण्णा० नह० नवि० नाउ०॥सभवणे० वि०॥८७॥

अर्थ॥१॥रूपवान एहवो कोमलशरीरवालो एहवो॥२॥
सुखने उचीत एहवो जे गालिजद्र ते नाना प्रकारना
छठ अठमादिका॥३॥तप विशेषे करिने॥४॥ते प्रकारे॥५॥
आत्मा प्रते॥६॥सुकवतो हवो एटले बाह्यथकी शरीर
अभ्यतरथकी कर्म दुर्बल करतो हवो॥७॥जेम॥८॥पोता

ना घरने विशेष॥१॥पण॥३॥नहिजा॥३॥ उलप्या ५०
ले पोताने घेरे जे अवसरे गोचरी आठ्या ते अवसरे
पोताना सेवक लोकोए पण उलप्या नही एहवी री
ते तपे करीने सरीर सुकव्युठे. अहो! एहवा अतिपे सु
कुमाल थडने पण एहवो कठण तप आचरच्यो॥८७॥

दुकर^१ मुद्रो^२ सकर^३॥ अवति सुकुमाल महरीसी चरीय^४॥

अण्णावि^५ नाम^६ तह^७ तब्ज^८ डात^९॥ अन्डेरय^{१०} एय^{११}॥८८॥

अर्थ॥१॥ दुप्कर एटले दुखें करीने करवा जोग्या॥२॥
एहवु अवति सुकुमाल नामे माहारूपीनु जे आचरण
प्रते साजलनारा पुरुषोने पण॥३॥ रोमात्कप एटले
रोमराय विकस्वर करनारछे॥४॥ ते अवति सुकुमालमु
निराज जे तेमणे पण पोतानो आत्मा जे ते॥५॥ निश्च
॥६॥ तेज प्रकारे॥७॥ दम्यो॥८॥ ए हेतु माटे॥९॥ आ अव
ती सुकुमालनु चरीत्रा॥१०॥ आश्चर्यकारीछे॥८८॥

आच्छुटसरीरघरा^१॥ अन्नो^२ न्वि^३ सरीर^४ मन्नाति^५॥ ध

मस्स^६ कारणे^७ सुविहिया॥ सरीर^८ एपि^९ च्छडुति^{१०}॥८९॥

अर्थ॥१॥ त्याग करचोछे शरीरनो मोह ते जेमणे ए

हवा॥२॥ शुविहितगीतार्थ महाराजा॥३॥ धर्मने॥४॥ अ

र्थे॥५॥ आ जीवा॥६॥ जुदोछे॥७॥ अने आ शरीरा॥८॥ जु

दुछे. ए प्रकारे वीचारीने॥९॥शरीर प्रते॥१०॥पण॥११॥
त्यागकरेछे, केमजे धर्म त्यागकर्यो सतो फरीनेते पा
मवो दुर्लज्जे द्रव्य प्राणतो बीजा जन्मने विपे पण
मीलेछे. ए हेतु माटे प्राणनो जग थये सते पण धर्म
न त्याग करवो ए श्रेयते॥८९॥

एकदिवसं^१पि^२सीवो^३॥पव^४ज^५मुवागओ^६अनन्नमणो^७॥जड
वि^८न^९पावड^{१०}मुग्घ^{११}अवस्सं^{१२}वेमाणो^{१३}होइ^{१४}॥२०॥
अर्थ॥१॥एकाग्रचित्तवालो एहवो॥२॥जीव जे ते॥३॥
एक दिवस॥४॥पण॥५॥प्रवर्ज्या एटले चारित्र प्रते॥६॥
पान्यो सतो॥७॥जो पण॥८॥मोक्ष प्रते॥९॥न॥१०॥
पामे तोए पण॥११॥निश्चै॥१२॥वैमानिका॥१३॥धाय॥१४॥
सीसावेढेण^१सिरिमि^२वेदि^३॥निग्गयाणि^४अचिग्रिणि^५मेय
वजस्स^६भगवडं^७नय^८सो^९मणसावि^{१०}परिकुविडं^{११}॥२१॥
अर्थ॥१॥पूज्य एहवा॥२॥मेतार्जनामे मुनीना॥३॥लो
ला चामडानी बाधरडीए करीने॥४॥मस्तक जे ते॥५॥
वेंटे सते ते लीलु चामडु सुकाया पडी॥६॥आर्यो जे
ते॥७॥निकलि पडी॥८॥तोपिण ते मेतार्जमुनि महारा
ज॥९॥मने करिने पण॥१०॥नहिज॥११॥कोप्या ते
माटे आत्मायी पुरुषोए लमा करवी ए श्रेष्ठे॥१२॥

जो १ चढ़ने ग १ ब्राहु ॥ प्राणि मइ १ वासिणा वि १ तच्छेइ १ ॥ मधुणइ १

जो ८ अ १ निंदइ १ ॥ महारिमिणो १ त १ थ १ समभावा १ ॥ ९२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जे कोइ पुरुष ॥ २ ॥ वावना चढ़ने करिने जकी
लावीने ॥ ३ ॥ भुजा प्रते ॥ ४ ॥ विलेपन करेछे अने ॥ ५ ॥ कोइ
पुरुष वासलारूप शस्त्रे करीने ॥ ६ ॥ छेदन करेछे ॥ ७ ॥ वली
॥ ८ ॥ कोइ पुरुष ॥ ९ ॥ स्तवना करेछे अने ॥ १० ॥ कोइ पु
रुष निदा करेछे ॥ ११ ॥ तोय पण ते ठेकाणे ॥ १२ ॥ मोटारि
पि एटले मोटा पुरुष ॥ १३ ॥ सम्भाववाला थायछे एटले
शत्रु मित्र उपर समचितवाला थायछे ए जावा ॥ १४ ॥

सीहगिरिसुसीसाण भद्र १ गुरुवयणसद्वहताण । वइगे १ कि

र १ दाही १ वायण १ त्ति १ ॥ नवि १ कोविअ १ १ वयण १ ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ आ वज्रनामा शिष्य ॥ २ ॥ निश्चय ॥ ३ ॥ वाचना
एटले सिद्धातना पाठ प्रते ॥ ४ ॥ तमने आपशे ॥ ५ ॥ ए
प्रकारनी ॥ ६ ॥ गुरु महाराजना वचन प्रते श्रद्धा करता
एहवा ॥ ७ ॥ सीहगीरी आचारज महाराजना भला एट
ले विनीत शिष्य तेमनु ॥ ८ ॥ कल्याण थाओ ॥ ९ ॥ ते शि
ष्योयेनहिजा ॥ १० ॥ गुरु महार जनु वचना ॥ ११ ॥ असत्य
करयु एटले आ वालक अमने उपुवाचना आपशे एम
न विचारयु ते माटे ॥ १२ ॥

मिणं गोणस गुलीहिं ॥ गणेहिं वा दत च कलाइ ॥ से ॥
 चंति भाणिऊण ॥ कब्जनु ॥ त ॥ एव ॥ नाणति ॥ १॥ १॥ १॥
 अर्थ ॥ २ ॥ हे शिष्यो आगलियो ए करिने ॥ २ ॥ आसर्प
 प्रते ॥ ३ ॥ माप करो ॥ ४ ॥ अथवा ॥ ५ ॥ ते सर्पना ॥ ६ ॥ दांतना
 स्थानक प्रते ॥ ७ ॥ गणो एवि रिते गुरु महाराजे कहे सते
 ते सुशिष्यो जेते ॥ ८ ॥ 'तहत्ति' एप्रकारे बोलीने ॥ ९ ॥ ते गुरु
 महाराजना वचन प्रते करवाने इच्छेछे अने मनमा एम
 विचारेछेजे ॥ १० ॥ कारजते ॥ ११ ॥ ते गुरु महाराज ॥ १२ ॥
 हीज ॥ १३ ॥ जाणेछे ते माटे जला शिष्योये गुरु महारा
 जनु वचन करवाने वीलव न करवो ए भाव ॥ १४ ॥
 कारणविड ॥ कयाई ॥ १५ ॥ सैय ॥ काय ॥ वयाति ॥ आयरिया ॥
 त ॥ तह ॥ सदाहियव ॥ भवियव ॥ काग्णेण ॥ ताहिं ॥ १६ ॥
 अर्थ ॥ १ ॥ कारणना जाण एहवा ॥ २ ॥ आचारज महारा
 ज ॥ ३ ॥ कोईक अवसरे ॥ ४ ॥ कागडा प्रते ॥ ५ ॥ उजलोछे
 ॥ ६ ॥ एम बोलेछे ॥ ७ ॥ ते गुरुना वचन प्रते ॥ ८ ॥ ने प्रका
 रेज ॥ ९ ॥ सदहवु एटले मानवु ॥ १० ॥ ने ठेकाणे ॥ ११ ॥
 कारण विपेसे करीने ॥ १२ ॥ थवा जोग्यछे एटले कारण
 विना आचारज महाराजनहिज बोले एम विचारवु ॥ १५ ॥
 तो ॥ गिन्हद ॥ गुरुवयण ॥ भणत ॥ भावउ ॥ विगुदुमणो ॥ उस
 हमिव ॥ पीडित ॥ न ॥ तस ॥ मुहावह ॥ हेइ ॥ १६ ॥

अर्थ॥१॥जावे करिने॥२॥विरुद्ध मनछे जेहनु एहवो
।३॥जे शिष्य॥४॥केहेवामाडेलु एहवु॥५॥गुरुमहाराजनुं
वचन ते प्रते॥६॥अगिकार करेछे॥७॥ते गुरु महारा
जनुंवचन॥८॥औपधनी पठमा॥९॥पीवा माडयुंसतु॥१०॥
ते शिष्यने॥११॥सुखनु आवहन करनार एहवु॥१२॥
थायछे आ शब्दार्थनो उडी रीते विचार करवो॥१६॥

अणुवत्तगा विणिया ॥ ब्रह्मखमा निच्चभस्तिमता ॥ य ॥ गुरु
कुलवासी ॥ अमुई ॥ धन्ना ॥ सीसा ॥ इह ॥ सुसीला ॥ ९ ॥

अर्थ॥१॥गुरु महाराजना वचन प्रमाणे चालता एह
वा॥२॥द्रव्यज्ञाव वे प्रकारे विनय सहित एहवा॥३॥
बहु क्षमावंत एहवा॥४॥निरंतर भक्तिवंत एहवा॥५॥
वली॥६॥गुरु महाराजनी समीपे रेहेता पण पोतानी
इच्छायेन चालता एहवा॥७॥ज्ञानादीक कारज सीद्ध
थये सते पण गुरुना समीपपणा प्रते नमुकता एहवा
॥८॥जला आचारवंत एहवा॥९॥आजगतने विपे॥१०॥
जे शिष्यछे॥११॥ते धन्यछे, ते माटे आत्मार्थी पुरुषोये
एहवोज गुणश्रंगीकार करवो एपरमार्थ॥१२॥

यः निगुणस्त्वं यः १२॥ अयसो ११ कीर्त्ति १२ अहम्मो १३ यः १४॥ ९८॥

अर्थ॥१॥भलो गुणवत एहवो जे॥२॥जीवतो जे पुरु
प तेहनी॥३॥आ लोकने विपे॥४॥जस अने॥५॥बली॥६॥
किंति थायछे॥७॥अने मरण पाम्यो एहवो जे गुणवत पु
रुप तेहने परभवने विपे॥८॥धर्म निष्पन्न थायछे॥९॥अने
बली॥१०॥गुण रहित एहवो जे पुरुषा॥११॥आ लोकने
विपे अपजसा॥१२॥अने बली॥१३॥अकीर्ति पामेछे॥१४॥
बली॥१५॥परभवने विपे अधर्म थायछे; ते माटे गुण
निष्पन्न करवो ए उपदेशा॥१८॥

बुद्धावासेवि॥ठिय॥अहव॥गिलाण॥गुरु॥परिभवाति॥

दनुव॥धम्मविमसएण॥दुरिसखिय॥तापि॥१॥१९॥

अर्थ॥१॥बुद्धा अवस्थाने विपे पण चालवाना असक्त
पणे करीने विधिपूर्वक एक क्षेत्रने विपे॥२॥रहेला ए
हवा॥३॥अववा॥४॥मटवाड सहित एहवा॥५॥गुरु मा
हाराज प्रते॥६॥दत्तनामा शिष्यनी पठमा॥७॥जे परा
भव करेछे एटले अवगणना करेछे॥८॥धर्म विचारवे क
रीने॥९॥ने पण॥१०॥कुचेष्टिते एटले माठु आचरणछे मा
टे गुरु माहाराजनी हीलना न करवी एही ज धर्मछे॥१९॥

आपरिअभस्तिरागो॥॥करस॥मुनखत्तमहरिसोसरिसो॥अ

वि॥जीविअ॥ववांसअ॥नधेव गुरपरिभवो॥सटिउ॥१०॥

अर्थ॥१॥सुनक्षत्र नामे मोटा रुपिना सरखो॥२॥आ
चारज उपर भक्तिराग एटले अभ्यतर स्नेह॥३॥विजा
कोइने नथी॥४॥नीश्वे॥५॥जेणे जीवीत॥६॥त्याग क
रचुं पण॥७॥गुरु महाराजनो पराजव एटले गोसाले
करचो जेतिरस्कारा॥८॥नहीज॥९॥सहन करचो॥१०॥

पुन्नेहिं चोइआ पुरकडेहि॥सिरिभायणं भविअसत्ता॥

गुरु मागमेसि भदा देवयामिव पञ्जवासंति॥१०॥१०॥

अर्थ॥१॥पुरवजवने विपे करेला एहवा॥२॥पुन्य जे
तेमणे॥३॥प्रेरणा करचा एटले शुच पुण्यना उदयने
एहवा॥४॥लक्ष्मीनुजाजन एटले लक्ष्मीवंत एहवा॥५॥
नागामिकालने विपे॥६॥छे कल्याण ते जेमेने एहवा
॥७॥जव्य प्राणीयो॥८॥पोताना धर्माचारज प्रते॥९॥
देवनी पटमा॥१०॥मेवा करेछे एटले जेम देवनी सेवा
करीए तेम गुरुनी सेवा करीए ए उपदेश॥१०॥

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ दायगा मो भगा दहमयाण ॥

अर्थ॥१॥सुद्ध मेअ॥२॥मेनि गणमिअ ॥ तेहेऊ ॥१०॥१०॥

एहवये॥१॥पणा लगयो गमे मृगना॥२॥दातार एहवा
॥३॥मदकडो गमे दुग्ध थकी॥४॥मुकापनाग एहवा॥५॥
॥६॥माहागनाडे॥७॥प वान ॥८॥प्रगटछे पमा

सदेह नथी॥८॥जेम प्रदेसि राजाने॥९॥केसि कुमार
आचारज महाराज॥१०॥ते सुखना कारणिक थया ते
म॥११॥नीश्वे॥१०२॥

नरयगद्गमणपाडिह^१ए^२ए^३तह^४ए^५सिणा^६रन्ना^७॥

अमरविमाण^८पत्त^९त^{१०}आयरियप्पभावेण॥१०३॥

अर्थ॥१॥तेमज॥२॥॥३॥प्रदेसि राजा जे तेणे॥४॥
नरक गतिने विपे गमन एटले जवु तेने विपे परतानु
करचे सते एटले जवानी तइयारी करचे सते॥५॥जे अमर
विमान॥६॥पाम्यु एटले प्रदेशी राजा देवलोक गया॥
७॥ते॥८॥आचारज महाराजना प्रजावेकरीने॥१०३॥

धम्ममइएहि^१अइ सुदरेहि^२॥कारणगुणोवणीएहि^३॥

पल्हापंतो^४प^५मण सीस^६चोएइ^७आयरिउ^८॥१०४॥

अर्थ॥१॥हितना वछक एहवा आचारज महाराज जे
ते॥२॥धर्म सहित एहवो॥३॥अति शुदर एटले दोष
रहित एहवा॥४॥ज्ञान दर्शन चारित्ररूप जे कारण ते
हना जे गुण तेहणे करिने सहित एहवा वचनोए करि
ने॥५॥शिष्यना मन प्रते॥६॥आनद उपजावता सता
॥७॥शीष्य प्रते॥८॥शिखामण देछे॥९॥नीश्वे॥१०४॥

जीअ^१काउण^२पण ॥नुरमाण^३दत्तस्स^४कालिअब्बेण^५॥अवि

१०५० सरीरं चत्तं १॥ नय १३ भणिअ १३ महम्मसंजुत्तं ११॥ १०५॥

अर्थ ॥ १॥ तुरमणि नामें नगरने विपे ॥ २॥ कालका आ
चारज जे तेमणे ॥ ३॥ दत्तनामा राजानी आगला ॥ ४॥ पो
तानुं जीवीत ॥ ५॥ पण प्रते ॥ ६॥ करीने ॥ ७॥ वली ॥ ८॥ शरीर
जे ते ॥ ९॥ त्याग करचु एटले मने करीने पोतानो देह
त्याग करचो ॥ १०॥ पण ॥ ११॥ अधर्म सहीत वचना १२॥
नहिजा ॥ १३॥ कह्युं एटले राजाना जये करीने सूत्रथकी
उलटु न बोल्या ते माटे आत्मारथी पुरुषोये सूत्र विरु
द्ध न बोलवु ए उपदेश ॥ १०५॥

फुटपागड १ मरुहतो १॥ जहटिअं १ बोहिलाभ १ मुव १ हणइ १॥ ज
ह १ भगवड १ विसालो १॥ जरमरणमहोअही १ आसि १०॥ १०६॥

अर्थ ॥ १॥ फुट प्रगट एटले अतिशय प्रगट एहवुं ॥ २॥
अने जयार्थ एहवु वचन प्रते ॥ ३॥ न केहतो एहवो जे पुरुष
॥ ४॥ सम्यक्त्व प्रते ॥ ५॥ नास करेछे ॥ ६॥ जेमा ॥ ७॥ जगवं
त श्री महावीरस्वामीने मरीची भवने विपे ॥ ८॥ विस्ता
रयत एहवो ॥ ९॥ जरा मरणरूप मोटो समूद्र ॥ १०॥ हो
तो हवो ते माटे जयार्थ मदेह रहात बोलवु ॥ १०६॥

कारुण्यं नमिगारा ॥ भावभयनी १ अनकरणेहि १॥ गाहु १

अरि १ अ १ मरनी १ नय १ निअनिअम १ विराहनि १॥ १०७॥

अर्थ॥१॥साधु मुनीराज जे ते॥२॥दीनपणु, रुदन क
रवु, सणगार, हाव जाव, राजादीकनो जय श्रने जीवितनु
नास करनार एटलावाना ए करीने एटले श्रनुकुल प्रति
कुल उपसर्गो ए करीने॥३॥वली॥४॥कदाचीत जीवित
नो त्याग करेछे॥५॥पण॥६॥पोताना व्रत प्रते॥७॥नहिज
॥८॥विराधे एटले खडित करे॥१०७॥

अण्हिय १ मायरतो १॥ अणुमोअतो १ अ १ सुग्गइ १ लहइ १॥ रह
कारदाण अणुमोअगो ॥ मिगो १ नह १ य १ वलदेवो १॥ १०८॥

अर्थ॥१॥आत्माने हितकारी एहवा तप सजम प्रते
॥२॥आचरतो सतो एहवो॥३॥वली॥४॥दानादीक ध
र्म प्रते श्रनुमोदना करतो सतो एहवो जे पुरुषा॥५॥ज
ली गति प्रते॥६॥पामे॥७॥जेमा॥८॥मुनिने दाननो दे
नार एहवो सुतार श्रने दाननी श्रनुमोदना करनार ए
हवो॥९॥मृगलो॥१०॥वली॥११॥वलदेव नामा मुनी
ए त्रणे जण पाचमे देवलोके गया तेम धर्म करचो क
राव्यो अने श्रनुमोदना करचो सतो बहु फल श्राप
नारो थायछे ए जाव॥१०८॥

नत १ कय १ पुग १ प्रणेन १॥ अइट्ट कर १ चिरकाल १॥ नह १ त १
दयावरो १ इह १ करिनु १ तो १ सफळ्य १ हुन १॥ १०९॥

पडिहति कलिकलुम ॥ रोसदोसाण आवए ॥ १११ ॥
 अर्थ ॥ १ ॥ जो ॥ २ ॥ रोगादिक कारणवीना एकाते करीने
 क स्थान के रेहे नारो एहवो ॥ ३ ॥ अने ग्रहादीकनु समरा
 वु तेने विगो ॥ ४ ॥ ममतपणा प्रते धारण करतो एहवो
 ॥ ५ ॥ क्यम ॥ ६ ॥ कलह मलिन आचरणा क्रोध तेमना
 पनी ॥ ७ ॥ आपदाने विपे एटले कपायाटिकटोपथकी
 पन्यो जे कष्ट तेने विगो ॥ ८ ॥ १ ॥ पडे अपितु पडेज
 माटे मुनीराजने कारणविना एक स्थान के रेहेवु न
 ए श्रेयछे ॥ १११ ॥

अविकित्तिऊण नीवे कत्तो धरसरणगुत्तिसंठण ॥ अवि
 कित्तिआइ व सह ॥ पडिआ असमयाण पहे ॥ ११२ ॥
 अर्थ ॥ १ ॥ घरनु सोच कराववु अने वाड्यादिके करी
 घरनी रक्षानु करवु ते जेते ॥ २ ॥ जीवो प्रते ॥ ३ ॥ हण्या
 ना एटले जीवहिंसा करया विना ॥ ४ ॥ क्यार्थी थाय
 टले घरादिकनु सोच कराववु ते जिवहिंसाएज करी
 थायछे ॥ ५ ॥ ते माटे ॥ ६ ॥ ते प्रकारे साधु वेपना धरवा
 ला एहवा सता ॥ ७ ॥ जिव घातनाकरनारा एहवा धया
 ता ॥ ८ ॥ असजतना ॥ ९ ॥ मारगने विगो ॥ १० ॥ पड्या ए
 वा जाणवा एटले साधु यइने जिवहिंसा करेछे अने

पोताने विशे साधुपणु मानेछे ते असजत जाणवा
ले पाप साधु जाणवा॥११२॥

धोवो^१वि^२गिहि^३संगो^४॥नइणो^५सुदुस्स^६पं^७क^८मानहइ^९॥नह
सो^{१०}वारत्तिरिसि^{११}॥हसीउ^{१२}पज्जोयनरनयणा^{१३}॥११३॥

अर्थ॥१॥शुद्ध एहवा॥२॥मुनिराज महाराजने॥३॥यो
डोया॥४॥पणा॥५॥ग्रहस्थनो प्रसग जे तो॥६॥पापरूपी
कादव प्रते॥७॥वहन करेछे॥८॥जेम॥९॥चंडप्रद्योतन
राजा जे तेंणे॥१०॥ते॥११॥वार्त्तक नामा रिसि जे ते
॥१२॥हस्या एटले वार्त्तकनामा रुपीनी चंडप्रद्योतन
राजाए जेम हासी करी केहे नैमीत्तिक तमने वदन कर
छु ए प्रकारे हासी करी ते माटे थोडोशोय ग्रहस्थनी
प्रसग हतो त्यारे हांसीथइ ते माटे मुनीराज जे तेंणे
ग्रहस्थनीनो प्रसग त्यागवाजोग्यछे ए उपदेश॥११३॥

सभावो^१वीसंभो^२॥नेहो^३रइवइयरो^४जुवइजणे^५॥

सयणघर^६संपसारो^७॥तवसीलवयाइ^८फेडिज्जा^९॥११४॥

अर्थ॥१॥स्त्रीयोनी आगल छानी वार्त्तानु केहवु॥२॥

स्त्रीयोनी वीस्वास राखवो॥३॥स्त्रीयोनी साथे स्नेह क
रवो॥४॥स्त्रीयोनी आगल॥५॥काम कथानु केहवु॥६॥

संगत कुटंब घर तेमनु वारवार सजारवु एटला वाना

७॥ तपसील व्रतादीक प्रते॥८॥ नास करेछे ते माटे
राग द्रष्टोए करीने मुनीराजने स्त्री तथा घर कुटुंब
पर राग करवो नहि॥११४॥

जोइसोनिमित्तअखखर॥ सोउआएसभूइकम्मोहिं॥ करणा
पुमोअणाहि॥ अ॥ साहुस्स॥ तवखउ॥ होई॥ ॥११५॥

थो॥१॥ जोतिपशास्त्रनु केहवु, होरादिकानिमित्तनु केहवु,
क्षर अनुजोगनु केहवु एटले मन्त्रादीकनु केहवु, कौतु
एटले समस्यादिकनु केहवु, आदेश एटले फलाणी
त फलाणे दीवशे थशेए प्रकारे केहवु अने भूतीकर्म
एटले मन्त्रेली रक्षादीकनु आपवु एटला वानाए करीने
॥ वली॥ ३॥ एटलां वानाना करनारनी अनुमोदनाक
री करीने॥ ४॥ साधु मुनीराजना॥ ५॥ तपनो क्षय एटले
॥ ६॥ थायछे ते माटे पूर्वे कहेला पदार्थ भनाववा
नाववानी इच्छाए करीने करवा कराववा अनुमोद
घटीत नथी॥ ११५॥

तह२॥ कीरइ॥ सगो॥ नह२॥ पसरो खणे२॥ होई॥ ॥ थोवो
वे॥ होई॥ बहुउ॥ नय॥ लहइ॥ धिइ॥ निरुभतो॥ ॥ ११६॥

अर्थ॥१॥ जेम जेम॥ २॥ ग्रहस्थादीकनो सग एटले स
या॥ ३॥ करीए छाँए एटले जेम जेम साधुमुनीराज अ

1

1

अर्थ॥१॥जे साधु॥२॥निश्चय करिने एटले स्थिरताए
 ॥रिने॥३॥व्रत प्रते ग्रहण करेछे॥४॥ते साधु॥५॥देहनो
 राग धये सते॥६॥पिण॥७॥धीरज प्रते॥८॥नहिज॥९॥
 के अने॥१०॥पोताना कारज प्रते॥११॥साधेछे॥१२॥
 मा॥१३॥चद्रावतसक॥१४॥राजा एटले चद्रावतंसक
 राजा जे तेणे ग्रहणकरयो एहवो जे अजिग्रह न मुक्यो
 म बिजाये पण एम वर्तवु॥१५॥

सीउण्हखुपिवास १॥ दुस्सिद्धजपरिसह किलेसं १॥ जो १ सह
 द १ तस्स १ धम्मो १ ॥ जो १ धिदम १ ॥ सो १ तव १ चरद १ ॥ ११२१॥
 अर्थ॥१॥जे साधु॥२॥शीत, उष्ण अने क्षुधापिसासादिक
 प्रते॥३॥बली॥४॥दुष्टसव्या, त्रण सस्तारक रूप परीस
 प्रते॥५॥अने लोचादिक कष्ट प्रते॥६॥समताए करिने
 सहन करेछे॥७॥ने साधुने॥८॥धर्म निष्पन्न थायछे ॥९॥
 जे साधु॥१०॥निश्चल चित्तवालो होयछे॥११॥ते सा
 धु॥१२॥तप प्रते॥१३॥आचरेछे॥१४॥

धम्म १ मिण १ जाणता १ ॥ गिहिणो १ वि १ दढवया १ किमु १ अ १ साहु १ ॥
 कमलामेलाहरणे १ ॥ सागरचदेण १ १ द्रथु १ १ वमा १ ॥ ११२०॥
 अर्थ॥१॥आ जिनराजे कहेलो एहवो॥२॥धर्म प्रते॥३॥
 जाणता सता एहवा॥४॥आवक जेते॥५॥पण॥६॥द्रढ

व्रतवाला एटले व्रत धारण करवाने विशे द्रढ
 होयछे॥७॥वली॥८॥क्यम॥९॥साधू मुनीराज जे ते
 ढ व्रतवाला न होय अपितु होयज॥१॥मलामे
 नामनी कन्या तेहना सबधने विपे॥११॥इहा॥१२॥साग
 रचद्रनामाकुमारनी॥१३॥उपमा एटलेदृष्टांतछे॥१४॥

देवेहि^१कामदेवो^२॥गिही^३वि^४नय^५चालिउ^६तवगुणेहि^७

॥मत्तगद्गदभुयंगम॥रखसचोरद्रहासेहि^८॥१२१॥

अर्थ॥१॥काम देव नामा॥२॥आवक जे ते॥३॥
 ॥४॥देवता जे तेमणे॥५॥मदोन्मत्त गजेद्र,सर्प,^६राक्षस
 तेमना जयंकर अट्टहाहास एटले घणु हसवु तेणे क
 रीने॥६॥तपरूपगुणोथकि॥७॥नहिजे॥८॥चलाव्या
 माटे व्रतने विशे दृढपणु करवु ए श्रेयछे॥१२१॥

भोगेअ^१भुंजमाणा^२वि^३किइ^४मोहा^५पडति^६अहरगद^७॥

कविउ^८आहारथी^९जत्ताइ^{१०}जणस्स^{११}दमगव^{१२}॥१२२॥

ए छं॥१॥फेटलाएक परुषा॥२॥जोगो प्रते॥३॥न जो

४॥पण

जोगोनी इच्छा कर

न के ॥अधीग

ने अरथ लुका

लो ॥१॥

રાગ દ્વેષ તે ત્યાગવા જોગ્યછે ॥૧૨૪॥

તો ૧૬૭ ગુણના સાળ ૧ ॥ સમ્મત્તચરિત્તગુણવિના સાળ ૧ ॥

ન ૧૬૮ વસ ૧ માગત ૪ ॥ રાગદોસાળ પાવાળ ૪ ॥ ૧૨૫ ॥

અર્થ ॥૧॥ તે કારણ માટે ॥૨॥ ઘણા ગુણને નાશ
કરનાર એહવા ॥૩॥ સમ્યક્ત્વ એટલે શુદ્ધ શ્રદ્ધાંન અને ચા
રિત્ર એટલે પાંચ આશ્રવનુ રોકવુ તે રૂપ ॥ ગુણ એટલે
ઉત્તર ગુણ તેમનો વિનાશ કરનારા એહવા ॥૪॥ રાગ દ્વેષ
રૂપ જે પાપ તેમને ॥૫॥ નહિ ॥૬॥ નિશ્ચે ॥૭॥ વશ પ્રતે ॥૮॥
થવું એટલે રાગ દ્વેષને વસ્ય નહિજ પડવું એ સાર છે ૧૨૫ ॥

ના ૧૬૯ કુણદ ૪ અમિત્તો ૧ ॥ સુઠુ વિ ૧ સુવિરાહિ

૪ ૧૬૯ મધ્યો ૧ વિ ૧ ॥ નં ૧ ૧ દો વિ ૧ ૧ અણિગાહિયા ૧

॥ કરતિ ૧ ૧ યગો ૧ ૧ ય ૧ ૧ દો સો ૧ ૧ અ ૧ ૧ ॥ ૧૨૬ ॥

અર્થ ॥૧॥ અતિશય કરિને ॥૨॥ વિરાધ્યો એટલે રોદ પ
માડ્યો એહવો ॥૩॥ મમર્ય એહવો ॥૪॥ પણ ૧ ૧ ૧ શત્રુ ૧ ૧ ને
અનર્થ પ્રતે ॥૭॥ નહિજ ॥૮॥ કરે ॥૯॥ ન નિગ્રહ કરેલા એ
ટલે ન રોકેલા એહવા ॥૧૦॥ ને જણ પણ ૧ ૧ ૧ ને અન
ર્થ પ્રતે ॥૧૨॥ કરે છે તે વે કોણ ॥૧૩॥ એક તો રાગ ૧ ૧ ૧
વલી ૧ ૧ ૧ ॥ ચાંજો દ્વેષ એતાવતા એટલે આ કેવે કરીને
ન્યુ વહુ તે કેહે છે યોગધના કર્યો એહવો જે શત્રુ તે

एक भवतु मरण आपेछे अने राग द्वेशतो अनता ज
न्म जरा अने मरण प्रते आपेछे ते माटे राग द्वेष त्या
गवा जोग्यछे॥१६॥पाद पूर्ण॥१२६॥

इह लोए आयस भनस करति गुणविणास ॥

पसवति परलोए ॥ सारीरमणो गएदुखे ॥ १२७ ॥

अर्थ॥१॥आ॥२॥लोकने विशे राग द्वेषजेते॥३॥शरिर
अनेमन सबधि छेद प्रतेअने॥४॥अपजस प्रतेअने॥५॥
बली॥६॥ज्ञानदर्शनचारित्रादिकगुणोनोविनाश प्रते॥७॥
करेछे॥८॥परलोकने विशे॥९॥सरीर अने मन सबधि
॥१०॥दुखो प्रते॥११॥उत्पन्न करेछे ते माटे राग द्वेष
अनर्थनाज करनारछे॥१२७॥

द्विती अहो अकन्त ॥ ज जाणतो वि रागदोसहि ॥ फल

मउल कहु भरस ॥ त चेव निसेव ॥ मीवो ॥ १२८ ॥

अर्थ॥१॥अहो इति आश्चर्यनी वारताछे ॥२॥आ जी
वने द्विकार द्विकार पडो॥३॥जे कारण माटे॥४॥राग
द्वेषे करिने उत्पन्न थयु एहवुं जे॥५॥अकारज प्रते अने व
ली॥६॥अतुल एटलेविस्तारवतएहवु अने॥७॥कडवो
रसछेजेहनो एहवु॥८॥राग द्वेषनु जे फल ते प्रते॥९॥
जाणतो सतो॥१०॥पण॥११॥ ॥१२॥तेहिज राग द्वेषनु

फल जे अकारज ते प्रते अमृत रसनी बुद्धीए करीने॥
ससारी जीव जे ते॥१४॥अतिशये करिने सेवेछे ते
टे आ जीवने दीकार दीकार पडो॥१२८॥

को'दुख'णाविज्जा'॥कस्स'वि'सुखेहि'०'वि

क्षिउ'हु'ब्बा'११॥को'१'न'१'वि'१'अभिज्ञ'०

मुख'१॥रागदोषा'१'जइ'१'न'हु'ब्बा'१॥१२९॥

अर्थ॥१॥जो॥२॥राग द्वेष जे ते॥३॥नही॥४॥होतते

कोण पुरुषा॥६॥दुख प्रते॥७॥पांमत अपितु कोइ न पां

मता॥८॥कोण पुरुषने॥९॥निश्चे॥१०॥सुखेकरिने॥११॥

आअर्थ॥१२॥यात॥१३॥कोण पुरुषा॥१४॥॥१५॥न

हिज॥१६॥मोक्ष प्रते॥१७॥पांमता॥१२९॥

मागी'गु'ण'दु'र्गा'उ'१॥अण'अ'भारि'उ'१'अमग्गचारिय'१॥

मं'१'हि'उ'प'ता'उ'१॥मो'१'अ'इ'१'सहे'१'गो'सा'लो'१॥१३०॥

अर्थ॥१॥जे शिष्य अहकारी॥२॥गुरुनो प्रत्यर्नाक

दले गुणनो अणंवाद बोलनारो एहवो॥३॥पोताना

न्दनाने करिने अनर्थनो जरेखो॥४॥उत्सूत्रनी प्ररुपण

१५ उन्मागंने विशेष चालनारो एहवोछे॥५॥ने शिष्य

१६॥गो'ग'ट' ए'द'ले' नि'ष्'फ'ला॥आमन्तक मुढावतुं,लो

१७॥'क'र'वो',मु'ड' मु'ड' रे'हे'तुं,बी'हार' कर'वो' इ'त्या'दिक' छे'दा' ते

हना समुह प्रते॥८॥ जोगवेछे॥९॥ जेम॥१०॥ गोशालो
फोगट छेश सहन करतो हवो तेम॥१३०॥

कलहणकोहणसीलो॥१॥ भंडणसीलो॥ विवायसीलो॥५॥

बीवो॥ निचुन्नलिठ॥१॥ निरथय॥ सनम॥ चरद॥१॥१३१॥

अर्थ॥१॥ बुम पाडवी क्रोध ते बुम पाडवानो तथा क्रो
ध करवानोछे स्वचाव ते जेहनो एहवो॥२॥ लाकडी मु
ष्ठीयादिके करीने जुद्ध करवानो स्वचावछे जेहनो ए
हवो॥३॥ वचने करीने विवाद करवानो स्वचावछे जेह
नो एहवो॥४॥ वली॥५॥ निरतर क्रोधरूपि अग्निये क
रीने बलेलो एहवो जे॥६॥ जीवा॥७॥ सजम प्रते॥८॥
फोगटा॥९॥ आचरेछे ए कारण माटे क्रोध त्याग करीने
चारित्र अगीकार करवु केमजे क्रोधथकी चारित्र नास
पामेछे॥१३१॥

बह॥ वणदवो॥ वण॥१॥ दबदवस्स॥ नलिठ॥ खणेण॥ निदहइ॥१॥

एव॥ कसायपरिणड॥१॥ बीवो॥ तपसजम॥१॥ दहइ॥१॥१३२॥

अर्थ॥१॥ जेम॥२॥ थोडिसि बेलामा॥३॥ देदिप्यमान
थयो एहवो॥४॥ वनथकी उग्यो एहवो जे दावानल ते
जे ते॥५॥ वन प्रते॥६॥ शीघ्र एटले जलदी॥७॥ अतिश
यें करीने बालेछे॥८॥ ए प्रकारे॥९॥ कपाए करीने सहित

एहवो जे॥१०॥जीवा॥११॥तप सजम प्रते॥१२॥मालें
तेमाटे समता एहिज चारित्र धर्मनू मूल जाणवु॥१३॥

परिणामवसेण पुणो॥१॥अहिउ॥ऊणयउव॥हुन्त॥सउ॥॥त
हवि॥ववहारमिक्तेण॥॥भनइ॥१३म॥॥जहा॥पूळ॥॥॥१३३॥

अर्थ॥१॥१ली॥२॥तिव्रमद अध्यवसायना वगे करी
ने एटले तीव्रकपायना परिणामे करीने अने मटकपाय
ना प्रणामे करीने॥३॥अधिक एहवो॥४॥अत्तिगे ऊन ए
टले ओछो एहवो॥५॥तपसजमनो नाश जेते॥६॥होय
छे एटले निश्चय नय मते करीने जेवा जेवा कपायना
परिणाम थायछे ते ते प्रमाणे तपसजमनो क्षय ॥५७॥
एटले आकरो कपाय थाय तो तपसजमनो घणो ॥
थाय अने थोडो कपाय थाय तो थोडो तपस ॥
क्षय थाय ए रहस्या॥७॥तोय पण॥८॥व्यवहार नयें
रिने॥९॥जेमा॥१०॥आ तपसजमनो क्षय॥११॥॥१॥
होयछे तेम॥१२॥कहिये छीये एटले व्यवहारमा
ये करिने तपसजमनो क्षय थायछे एम सामान्य
रे केहेवामा आवेछे॥१३३॥

फरुसवपणेण दिणतव॥॥अहिखावतो॥हणइ॥मासतव॥॥वरि
सतव॥सवमाणो॥॥हणइ॥हणतो॥॥अ॥सामन्न॥॥॥१३४॥

र्थ॥१॥कठोर वचन बोलवे करीने॥२॥एक दिवसना
प्रते नाश करेछे॥३॥अतिशये क्रोधे करिने लोकोना
ति कुलना मरम प्रते बोलतो सतो॥४॥एक मासना
प्रते॥५॥क्षय करेछे॥६॥सराप देतो सतो एटले
रु असुभ थइ जाओ एमबोलतो सतो॥७॥एक व
ना तप प्रते॥८॥नाश करेछे॥९॥वली॥१०॥लाकडी
गादीके करीने परजीवनो घात करतो सतो॥११॥
धुपणा प्रते नास करेछे आ सर्व व्यवहारीक वचन
णवा॥१३४॥

ह॥नीविअ॥१॥निकित्तइ॥१॥दूण॥य॥सजम॥मळ॥१॥विणइ॥१॥

नीवि॥१॥पमायउहुलो॥१॥परिमइ॥१॥नेण॥१॥ससारे॥१॥१३५॥

र्थ॥१॥हवे प्रमादनु निर्गुणपणुकेहेछे॥२॥प्रमाद छे
तो ते जेने एटले प्रमादने वस्य पडेजो एहवो॥३॥एह
जीव जेते॥४॥प्रमादे करीने॥५॥ससारने विओ॥६॥
भ्रमण करेछे॥७॥वली ते जीव शु करेछे॥८॥सत्तर
गरे सजम प्रते॥९॥नाश करिने॥१०॥पापकर्म प्रते
१॥एकटुं करेछे एटले पुष्ट करेछे वली॥१२॥सजम
वित प्रते॥१३॥छेदन करेछे माटे प्रमाद त्याग कर
ए श्रेयछे॥१३५॥

1000

3

1



स्र मल साधु जे तेणे समताए करीने जेम कष्टप्रते
हनकरयु तेम बीजाए पण सहन करवुए अर्थ॥१३७॥

दुर्जनमुह सोदडा॥ वयण सरा पुत्र कम्मनिम्माया॥

साहूण ते न लग्गा॥ खाति फालिय वहताण॥१३८॥

अर्थ॥१॥ क्षमारूपी वकतर धारण करता एहवा॥२॥

धुमुनीराज जे तेमने॥३॥ ते॥४॥ प्रथम कर्मे करीने नि

पन्न करेला एहवा॥५॥ दुर्जनना मुखरूप धनूपथकी नी

ल्या एहवा वचनरूपी वाण॥६॥ नही॥७॥ लाग्या१३८

पथरेणा१ हउ१ कीवो१॥ पथर१ डकु१ मिच्छई१॥

मिगारिउ१ सर१ पण१॥ सरुपत्ति१ विमग्गइ१॥१३९॥

अर्थ॥१॥ कुतरो जे ते॥२॥ पथराए करीने॥३॥ मारयो

तो॥४॥ पथरा प्रते॥५॥ करडवाने॥६॥ इच्छेछे अने॥७॥

नह जे ते॥८॥ वाण प्रते॥९॥ पामीने॥१०॥ वाणनी उतप

ि प्रते॥११॥ विचारिछे के आ वाण क्याथी आव्यु तेमज

धुमुनीराज जे ते पण दुर वचनरूप वाण पामीने मारे

वे कर्मे करीने उपार्जन करेलो एहवो आवचननो प्रहार

टले घातछे ए प्रकारे विचारिछे पण वचनना बोलनार

पर द्वेष नथी करता ए मुनीनु लक्षण जाणवु॥१३९॥

तह पुर्वि१ किं१ न१ कय१॥ न१ वाहए१ जेण१

मे० समर्थो वि० ॥ इण्डि० १३ कि० १३ कस्त० १४ वि० १४

कुपिमु० १५ ति० १५ ॥ गीरा० १५ अणुपिन्डा० १५ ॥ १४० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ हे जिव ते ते प्रकारे ॥ २ ॥ पूर्व जवने विपेश
क्येम सुकृत ॥ ४ ॥ नही ॥ ५ ॥ करयु ॥ ६ ॥ जे सुकृतवडे करीने
॥ ७ ॥ मने ॥ ८ ॥ समर्थ एहवोय ॥ ९ ॥ पण ॥ १० ॥ नही ॥ ११ ॥
पीड्या करत एटले हे जीव जो पूर्व जवने विपे सुकृत
करयुं होततो तने कोण पीडत ए जावा १२ ॥ हमणा १३ ॥
आस्यु अने ॥ १४ ॥ १५ ॥ कोनि उपरा ॥ १६ ॥ कोप करुछु
॥ १७ ॥ ए प्रकारे ॥ १८ ॥ धीर पुरुषा ॥ १९ ॥ विचारते एटले
पूर्वे करेलां कर्म उदय आवेछे ते वखते परनी उपर
कोप करवो ते फोगट छे एम विचारीने कोप नथी
करता ए रहस्य ॥ १४० ॥ सहस्समल

अणुराण० जइस्सवि० ॥ सियाय० जे ते ॥ धरावेइ ॥

तहवि० अ० ११ खडकुमारो ॥ न० वधुणासेहि ॥ पडिवधो ० ॥ १४१ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जति थएलो एहवो पोतानो पुत्र तेनी उप
रा ॥ २ ॥ पुत्रपणाना अनुरागे करीने एटले स्नेहे करीने
॥ ३ ॥ पिता जेते ॥ ४ ॥ सपेत छत्र प्रते ॥ ५ ॥ पोताना सेवको

नी पासे धरावे छे ॥ ६ ॥ तोयपण ॥ ७ ॥ खडक कुमार

मुनी जे ते एहवो पोताना पीतानो स्नेह सतेपीणा ॥ ८ ॥

बधव रूप पासलाये करिने ॥९॥ नहि ॥१०॥ वधाया
ते माटे बीजाये पण कुटवना स्नेहने विशे न मुजाववु
॥११॥ निश्चे ॥१४१॥

गुरुगुरुनरो अङ्गगुरु ॥॥पियमाद अवघापियनणसिणेहो ॥
चित्तिवमाणगुविन्दो ॥॥चत्तो अङ्गधम्मसिंह ॥॥१४२॥

अर्थ ॥१॥ गुरु अने ॥२॥ ते थकी घणो बहु अने ॥३॥ ते थकी
पण अतिशे बहु एहवो ॥४॥ विचारवा माड्यो सतो घह
न एटले अनत नवनो कारण एहवो ॥५॥ पितानो, मा
तानो, पुत्रादिकनो अने वल्लभ लोकनो स्नेह जे ते ॥६॥
अतिशे समस्त प्रकारे धर्मना वाछक पुरुषोये ॥७॥ त्याग
कर्यो तेम बीजाये पण त्याग करवो ॥१४२॥

अमुणिअररमथाण ॥॥बधुनणसिणेहवदयरो होइ ॥

अवगयससारसहाव ॥॥निच्छयाण सम हियय ॥॥१४३॥

अर्थ ॥१॥ तथी जाण्या परमार्थ ते जेमणे एहवा जे पु
रुष तेमने ॥२॥ बधुजननो जे स्नेह तेहनो जे व्यतिकर
एटले सबध जे ते ॥३॥ थायछे एटले अज्ञांनी जीवोने
कुटबादिकना स्नेहे करिने वधाववु थायछे अने ॥४॥ जा
ण्योछे समारना स्वरूपनो निश्चय ते जेमणे एहवा जे
पडीत पुरुषो तेमनु ॥५॥ हृदय एटले मन जे ते ॥६॥ समजाव

कासी ॥ १२ ॥ वनातिसेउ ॥ पुत्ताण ॥ पिया ॥ कणयकेउ ॥ १४६ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ राजनी तृष्णा वालो एहवो ॥ २ ॥ पिता ॥ ३ ॥
कनक केतुराजा जे ते ॥ ४ ॥ पोताना पुत्रोना ॥ ५ ॥ सर्व अं
ग उपांगनु छेदन करतो हवो ॥ ६ ॥ वली ॥ ७ ॥ कदर्थनाओ
प्रते अने नाना प्रकारनी पीडाओ प्रते ॥ ८ ॥ करतो हवो
॥ ९ ॥ नीश्चे ते माटे मातापितादिकनो जे स्नेह ते कृत्रि
म एटले स्वार्थ सरे त्यासुधी जाणवो ॥ १४६ ॥

विषयसुहरागवसउ ॥ घोरो ॥ भाया ॥ वि ॥ भायर ॥ हणइ ॥

आहविउ ॥ बहथ ॥ जह ॥ बाहुवलस्स ॥ भरहवइ ॥ १४७ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ विषयसुखनो राग तेने वस्य थयो सतो एह
वो अने ॥ २ ॥ जयकर शस्त्र ग्रहण करचाछे एहेतु माटे ॥ ३ ॥
वध करवाने अर्थ ॥ ४ ॥ सनमुख आव्यो एहवो ॥ ५ ॥ भाइ
जे ते ॥ ६ ॥ पिण ॥ ७ ॥ जाइ प्रते ॥ ८ ॥ हणेछे एटले मारेछे
॥ ९ ॥ जेम ॥ १० ॥ बाहुवलजिनो वध करवाने अर्थ ॥ ११ ॥
चरतचक्रवर्ति जे ते सन्मुख आव्या ते माटे जाइनो
स्नेह पण तेमज कृत्रिम जाणवो ॥ १४७ ॥

भक्ता ॥ वि ॥ इदियविगार ॥ शंसनडिया ॥ करेइ ॥ परणव ॥

जह ॥ सो ॥ एमिराया ॥ सूरियकताइ ॥ तह ॥ बटिउ ॥ १४८ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ इद्रियोनो जे विकार तेहनो जे

तणेक

રીને પીડાઈ સતી એટલે ઇન્દ્રિયોના વિષયને વસ્તુ
 સતી એહવી॥૨॥ એમ પોતાની સ્ત્રી જે તે॥૩॥ પોતાના
 પોતાના પતિનુ જે પાપ એટલે પોતાના સ્વામિની હિં
 પ્રતે॥૪॥ કરેછે એટલે વિષયને લિધે પોતાના સ્વામિની
 મારી નાંચેછે॥૬॥ જેમ॥૭॥ સૂરિકતા જે સ્ત્રી તેણી
 તે પ્રકારે એટલે વિષય દેવાદિ પ્રકારે કરિને॥૯॥ તે
 પ્રદેશિ રાજા જે તે॥૧૧॥ હણ્યો એટલે મારિ નાંચ્યો
 ગજાનિગંળી સરસી વિષયને અર્થે નીચ કાંમ કરેછે
 નાંચ સ્ત્રી પોનુ મ્યુ કેહેવુ માટે સ્ત્રીનો સ્નેહ જુઠોછે॥૧૪॥

૧૫ ૧૬ ૧૭ ૧૮ ૧૯ ૨૦ ૨૧ ૨૨ ૨૩ ૨૪ ૨૫ ૨૬ ૨૭ ૨૮ ૨૯ ૩૦ ૩૧ ૩૨ ૩૩ ૩૪ ૩૫ ૩૬ ૩૭ ૩૮ ૩૯ ૪૦ ૪૧ ૪૨ ૪૩ ૪૪ ૪૫ ૪૬ ૪૭ ૪૮ ૪૯ ૫૦ ૫૧ ૫૨ ૫૩ ૫૪ ૫૫ ૫૬ ૫૭ ૫૮ ૫૯ ૬૦ ૬૧ ૬૨ ૬૩ ૬૪ ૬૫ ૬૬ ૬૭ ૬૮ ૬૯ ૭૦ ૭૧ ૭૨ ૭૩ ૭૪ ૭૫ ૭૬ ૭૭ ૭૮ ૭૯ ૮૦ ૮૧ ૮૨ ૮૩ ૮૪ ૮૫ ૮૬ ૮૭ ૮૮ ૮૯ ૯૦ ૯૧ ૯૨ ૯૩ ૯૪ ૯૫ ૯૬ ૯૭ ૯૮ ૯૯ ૧૦૦

૧૦૧ ૧૦૨ ૧૦૩ ૧૦૪ ૧૦૫ ૧૦૬ ૧૦૭ ૧૦૮ ૧૦૯ ૧૧૦ ૧૧૧ ૧૧૨ ૧૧૩ ૧૧૪ ૧૧૫ ૧૧૬ ૧૧૭ ૧૧૮ ૧૧૯ ૧૨૦ ૧૨૧ ૧૨૨ ૧૨૩ ૧૨૪ ૧૨૫ ૧૨૬ ૧૨૭ ૧૨૮ ૧૨૯ ૧૩૦ ૧૩૧ ૧૩૨ ૧૩૩ ૧૩૪ ૧૩૫ ૧૩૬ ૧૩૭ ૧૩૮ ૧૩૯ ૧૪૦ ૧૪૧ ૧૪૨ ૧૪૩ ૧૪૪ ૧૪૫ ૧૪૬ ૧૪૭ ૧૪૮ ૧૪૯ ૧૫૦ ૧૫૧ ૧૫૨ ૧૫૩ ૧૫૪ ૧૫૫ ૧૫૬ ૧૫૭ ૧૫૮ ૧૫૯ ૧૬૦ ૧૬૧ ૧૬૨ ૧૬૩ ૧૬૪ ૧૬૫ ૧૬૬ ૧૬૭ ૧૬૮ ૧૬૯ ૧૭૦ ૧૭૧ ૧૭૨ ૧૭૩ ૧૭૪ ૧૭૫ ૧૭૬ ૧૭૭ ૧૭૮ ૧૭૯ ૧૮૦ ૧૮૧ ૧૮૨ ૧૮૩ ૧૮૪ ૧૮૫ ૧૮૬ ૧૮૭ ૧૮૮ ૧૮૯ ૧૯૦ ૧૯૧ ૧૯૨ ૧૯૩ ૧૯૪ ૧૯૫ ૧૯૬ ૧૯૭ ૧૯૮ ૧૯૯ ૨૦૦

૨૦૧ ૨૦૨ ૨૦૩ ૨૦૪ ૨૦૫ ૨૦૬ ૨૦૭ ૨૦૮ ૨૦૯ ૨૧૦ ૨૧૧ ૨૧૨ ૨૧૩ ૨૧૪ ૨૧૫ ૨૧૬ ૨૧૭ ૨૧૮ ૨૧૯ ૨૨૦ ૨૨૧ ૨૨૨ ૨૨૩ ૨૨૪ ૨૨૫ ૨૨૬ ૨૨૭ ૨૨૮ ૨૨૯ ૨૩૦ ૨૩૧ ૨૩૨ ૨૩૩ ૨૩૪ ૨૩૫ ૨૩૬ ૨૩૭ ૨૩૮ ૨૩૯ ૨૪૦ ૨૪૧ ૨૪૨ ૨૪૩ ૨૪૪ ૨૪૫ ૨૪૬ ૨૪૭ ૨૪૮ ૨૪૯ ૨૫૦ ૨૫૧ ૨૫૨ ૨૫૩ ૨૫૪ ૨૫૫ ૨૫૬ ૨૫૭ ૨૫૮ ૨૫૯ ૨૬૦ ૨૬૧ ૨૬૨ ૨૬૩ ૨૬૪ ૨૬૫ ૨૬૬ ૨૬૭ ૨૬૮ ૨૬૯ ૨૭૦ ૨૭૧ ૨૭૨ ૨૭૩ ૨૭૪ ૨૭૫ ૨૭૬ ૨૭૭ ૨૭૮ ૨૭૯ ૨૮૦ ૨૮૧ ૨૮૨ ૨૮૩ ૨૮૪ ૨૮૫ ૨૮૬ ૨૮૭ ૨૮૮ ૨૮૯ ૨૯૦ ૨૯૧ ૨૯૨ ૨૯૩ ૨૯૪ ૨૯૫ ૨૯૬ ૨૯૭ ૨૯૮ ૨૯૯ ૩૦૦

૩૦૧ ૩૦૨ ૩૦૩ ૩૦૪ ૩૦૫ ૩૦૬ ૩૦૭ ૩૦૮ ૩૦૯ ૩૧૦ ૩૧૧ ૩૧૨ ૩૧૩ ૩૧૪ ૩૧૫ ૩૧૬ ૩૧૭ ૩૧૮ ૩૧૯ ૩૨૦ ૩૨૧ ૩૨૨ ૩૨૩ ૩૨૪ ૩૨૫ ૩૨૬ ૩૨૭ ૩૨૮ ૩૨૯ ૩૩૦ ૩૩૧ ૩૩૨ ૩૩૩ ૩૩૪ ૩૩૫ ૩૩૬ ૩૩૭ ૩૩૮ ૩૩૯ ૩૪૦ ૩૪૧ ૩૪૨ ૩૪૩ ૩૪૪ ૩૪૫ ૩૪૬ ૩૪૭ ૩૪૮ ૩૪૯ ૩૫૦ ૩૫૧ ૩૫૨ ૩૫૩ ૩૫૪ ૩૫૫ ૩૫૬ ૩૫૭ ૩૫૮ ૩૫૯ ૩૬૦ ૩૬૧ ૩૬૨ ૩૬૩ ૩૬૪ ૩૬૫ ૩૬૬ ૩૬૭ ૩૬૮ ૩૬૯ ૩૭૦ ૩૭૧ ૩૭૨ ૩૭૩ ૩૭૪ ૩૭૫ ૩૭૬ ૩૭૭ ૩૭૮ ૩૭૯ ૩૮૦ ૩૮૧ ૩૮૨ ૩૮૩ ૩૮૪ ૩૮૫ ૩૮૬ ૩૮૭ ૩૮૮ ૩૮૯ ૩૯૦ ૩૯૧ ૩૯૨ ૩૯૩ ૩૯૪ ૩૯૫ ૩૯૬ ૩૯૭ ૩૯૮ ૩૯૯ ૪૦૦



॥ चद्रगुप्तगुरुणा ॥ पद्मद्वय ॥ राधा ॥ १५० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ लोलपि एहवा ॥ २ ॥ पोतानु कारज करवाने
उतायली आ एहवा अने ॥ ३ ॥ करघुछे पोतानु कारज ते जेम
णे एहवा जे पुरुष ते जे ते ॥ ४ ॥ मित्र प्रते पिण ॥ ५ ॥
विपरित बोलेछे ॥ ६ ॥ जेम ॥ ७ ॥ चद्र गुप्त गुरु एटले चा
णाक्य जे तेणे ॥ ८ ॥ पर्वत नामा ॥ ९ ॥ राजा ॥ १० ॥ मारुचो
एटले जेम राजनो लोलपि एहवो चाणाक्य जे तेणे
पोतानो मित्र एहवो पर्वतनामा राजा मारी नारुचो तेम
बीजायपण पोताना स्वारथने लीधे मित्र प्रते मारी नाखे
छे ते माटे समारमा सो स्वारथनुं सगुछे एम जाणवु १५०

नियमा विनियम कर्मो ॥ विसंवयतमि ॥ हुंति ॥ खरफरसा ॥

जट ॥ रामभूमकड ॥ बभ्रवत्तस्स ॥ आसि ॥ खड ॥ १५१ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ पोताना सवधि एहवाय पण पुरुषो
जे ते ॥ ३ ॥ पोतानु कारज जे ते ॥ ४ ॥ न थये सते ॥ ५ ॥ रु
द्र करम करनारा एहवा अने कठोर वचनना बोळना
रा एहवा ॥ ६ ॥ थायछे ॥ ७ ॥ जेम ॥ ८ ॥ परसुराम अने आठ
मा सुभुमनामा चक्रवर्ति ते वे जणोए करचो एहवो
॥ ९ ॥ ब्राह्मणनो अने क्षत्रीयोनो ॥ १० ॥ नाश एटले क्षय
॥ ११ ॥ होतो हवो एटले जेम परसुरामे अने सुभुम च

॥ १५१ ॥

क्रवर्तिये पोताना स्वारथने श्रयें ब्राह्मणनो तथा
 योनो क्षय करयो तेम बीजाए पण स्वारथने लोपे
 इ नल्लु बुरुं जोता नथी ए जाया॥१५३॥

कुत्तरानिपयमुहेमु^१अ^१॥सयने^१य^१नने^१

अ० 'निष्कमुनिवमहा' ॥ विहरति० अग्निरसा

८॥ जह११ अक्षमहागिरि११ भयं११ ॥ २५२ ॥

अर्थ॥१॥महत मुनि महाराज जे तो॥२॥कुट्य घरपे
 ताना संवधि गांम देशयकी उत्पन्न थयु जे सुर ए
 लानी मध्ये॥३॥रली॥४॥बधु वर्गनी मध्ये॥५॥गले
 ॥६॥गामान्य लोहनी मध्ये॥७॥निश्चा रहित एतने
 रोशना पण आटावन विना॥८॥निरतर॥९॥विचरेण
 दरे विचार करेहे॥१०॥नीश्वे॥११॥जेमा॥१२॥ग्यांनो
 न एव॥१३॥आर्जमाटागिरिनामा आचारज निश्चा
 विराविरगता ह्या तेम विजाण पण एम विचरवु॥१४॥

ॐ नमः शिवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

• दू-वे' • मु-वेया' | नि-रमण' • ग-नमि' | ॥२५३॥

अ. १३। सुविहित सुनिगत महगज जं ताशास्त्रपद

विने भव्योत्पत्तिं कर्मानि गुणयान पदवी॥४॥कल्प

जो- करिने । अथर्ववेदः । यथाशक्ति भुंजे करिने ॥ शु

प्रधान लक्ष्मीए करीने॥८॥पत्नी॥९॥नहीज॥१०॥लो
 नाय एटले लोचन प्रते न पामे॥११॥इहा जवूकुमार
 नामा महा मुनिनु ए प्रकारे॥१२॥इष्टात जाणवु एटले
 जेम जवूकुमारनामा मुनी जे ते कन्याटीके करीने न लो
 नाया तेम बीजाय जे मुनीछे तेन लोनाय ए जाया॥१५॥३॥

उत्तमकुलपमूया॥रायकुलवाडसगा॥वि॥मुनिवसहा॥

बहुजनमदसधृ॥मिहकुमारव॥विसहति॥१५॥४॥

अर्थ॥१॥उत्तम कुलने विपे उत्पन्न थएला एहवा॥२॥
 राजकुलने विपे मुगट समान एहवा॥३॥पिण॥४॥मुनि
 पोनिमध्ये थोष्ट एहवा मुनिराज जे ते॥५॥न्यारा न्या
 रा कुलमा उत्पन्न थया एहवा घणा जतीजन एटले
 साधुजन तेमनु संघट्टं एटले पगनी ठीकरनु यागपुते
 प्रते॥६॥विशेषे करीने समता सहित सहन करेछा॥७॥
 मेघ कुमारनी पठम॥१५॥४॥

अवरुणरसबाह॥मुख्य॥तुच्छ॥सरीरपीछा॥य॥मारण॥

वारण॥धीयण॥गुरुजनआयत्तया॥ध॥गणे॥१५॥५॥

अर्थ॥१॥गच्छने विपे वस्तो एहयो जे साधु तेहने घ
 णा गुण निरुपन्न धायछे ते कहिएछिए॥२॥परस्पर ए
 टले माहोमाहि मघट्टन एटले मिलवु धाय॥३॥पीता

धाय अपितु न धाय ते माटे गुरुनी समीपे रहेवु ॥ ५६ ॥

कत्तो सुतधागम ॥ पडिपुच्छणा चोयणा य ॥ इक्कस्स ॥

विणभो वेयावच्च ॥ आराहणया ॥ य मरणते ॥ ॥ २५७ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ एकलो रहेतो एहवो जे साधु तेने ॥ २ ॥

सूत्र अने अर्थ तेनी प्राप्ति ॥ ३ ॥ सदेहनु वली पुछवु ॥

॥ ४ ॥ वली ॥ ५ ॥ प्रमादमां पडेलाने शिक्षानु देवु ॥ एटले

सिखामणनु पामवु ॥ ६ ॥ क्याथी होया ॥ पुंवे कह्या एटला

वाना एकला साधुने नहिज सजवे ॥ ७ ॥ एकला साधुने

विनय क्याथी होया ॥ ८ ॥ वेयावच्च क्याथी होय, एटले

एकलो रहेतो एहवो जे साधु विनय वेयावच कोनो

करे ॥ ९ ॥ वली ॥ १० ॥ मरणने अवसरे ॥ ११ ॥ आरा

धना क्याथी होय, एटले एकला साधुने, आराधना

कोण करावे ते माटे, साधुना समुदायने विषे वसवु १५७

पिलिङ्गे सणमि ॥ को ॥ पइवपमयानणा उ ॥ निच्चभय ॥ काउ

मणो वि ॥ अक ॥ न ॥ तरइ ॥ काकण ॥ बहुमझे ॥ ॥ २५८ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ उत्तम साधुना समुदायने छोटीने एकलो

रहेतो एहवो जे साधु ॥ २ ॥ एपणा एटले हारादिकनी

शुद्धि प्रते ॥ ३ ॥ उलघन करे एटले कदाचित् अशुद्ध

आहारादिक प्रते ग्रहण करे ॥ ४ ॥ एकला साधुने एकली

ફરતી એહવીજે પ્રમદાઓ એટલે સ્ત્રીયો તે રૂપ જન એટલે
 લોક એટલે સ્ત્રી લોક તે થકી એટલે ફરતો એહવાં સ્ત્રી લોક
 કથકી ॥૫॥ નિરતર જય હોય એટલે ઉપવાત હોય ॥૬॥
 અઠાર્જ પ્રતે ॥૭॥ કરવાનુ છે મન તે જેહનું એહવો હોય ॥૮॥
 પિણ ॥૯॥ ઘણા સાધુઓની મધ્યે રહેતો સતો ॥૧૦॥ અકાર
 જ કરવાને ॥૧૧॥ નહીં ॥૧૨॥ સામર્થ થાય એટલે અકાર જ
 ન કરી શકે એ માટે સ્થીવર કલ્પીને ગણમા રહેવું ॥૧૫૮

ઉચ્ચારણ સવળવત પિત્ત ॥ મુન્ડાદમોહિઓ ૧૬ કો ૧ ॥ સદ્વર્મા
 યણ વિહથ્થો ૧ ॥ નિરિસવદ્ ૪ કુળદ્ ૫ હ્રાહ ૧ ॥ ૧૫૯ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ ઠડીલ એટલે વડીનીત, લઘુનીત, વમનપિત
 મુર્છાદિકે કરિને મુજાઓ એહવો ॥ ૨ ॥ પાણિ સહિત એહવું
 જે જાજના તેણે કરીને વ્યગ્ર છે હાથ તે જેહનો એટલે પા
 ણી એ કરીને જરેલું એહવું જે જાજન તેણે કરિને દુસ્વો
 છે હાથ તે જેહનો એહવો ॥ ૩ ॥ એકલો સાધુ ગૌચરીયા
 દિકને વિશે ફરતો સતો ॥ ૪ ॥ તે પાત્ર પ્રતે નાસ્તીદે એટલે
 હાથ માથી પડી જાય ત્યારે સજમ વિરાધના પ્રતે ॥ ૫ ॥ કરે
 અને તે પાત્ર પડ્યા પછી જો ઠડીલાદિક કરેતો ॥ ૬ ॥ જિન
 શાસનની લઘુતા થાય તે કારણ માટે એકલા સાધુને
 ઘણા જ ડોપ નિષ્પન્ન તે માટે એકલા ન રહેવું ॥ ૧૫૯ ॥

एकादिवसेण बहुया ॥ सुताय अमुहाय सीवपरिणामा ॥

इको अमुतापरिणामो ॥ पदवत् ॥ आलवण ॥ लब्धु ॥ १६० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ एक दिवसनी मध्ये ॥ २ ॥ नीविना परिणाम

एटले अध्यवसायना स्थानक ॥ ३ ॥ घणा ॥ ४ ॥ शुन एटले

उत्तम ॥ ५ ॥ गजो ॥ ६ ॥ अशुभ एटले मध्यम थायछे ॥ ७ ॥

निश्चो ॥ ८ ॥ अशुभ परिणामे करीने सहित एटले अशु

न परिणामने विषे वर्ततो सतो एहवो जे ॥ ९ ॥ एकलो

साधु ॥ १० ॥ आलवण एटले कारण प्रते ॥ ११ ॥ पामीने

॥ १२ ॥ सजम प्रते त्याग करेछे एटले एकलो साधु का

इक बाहानु काढीने सजम प्रते वीराधे छे ॥ १६० ॥

सहाजिणवडि रुद्र ॥ अणवस्था ॥ घेरकापमे उ ॥ अ ॥

इको अ ॥ मुहाउत्तोवि ॥ हणद ॥ नवसजम अदरा ॥ १६१ ॥

एकाकिपणु सर्व तिर्थकर महाराजाये निषेध कह्युछे ते

माटे एकाकि विहार करये सते ॥ २ ॥ अनवस्था एटले एके

करघुदेपीने बीजो पण करे बीजानु देखीने बीजो पण

करे एवी रीते मर्जादानो जग थाय ॥ ३ ॥ गजो ॥ ४ ॥ स्थवीर

कल्पनो नेद थाय एटले गच्छवासी साधुओना आचार

नो नाश थाय ॥ ५ ॥ जो पिण शुन अध्यवसाय सहित एह

वोय पिण ॥ ६ ॥ एकलो साधु ॥ ७ ॥ शीघ्र एटले थोडा का

લમા ॥૮॥ તપ સજમ પ્રતે ॥૧॥ નાશ કરે ॥૧૦॥ નીશ્રે ॥૧૧॥

વેસ ૧ નુત્રકુમારિ ૧ ॥ પડથવદ્ અ ૧ ચ ૧ વાલવિહવ ૧ ચ ૧ ॥

પાસંડરોહ ૧ મસદં ૧ ॥ નવતરુણિ ૧ થેરમજ્જં ૧ ૧ ચ ૧ ॥ ૧૬૨ ॥

અર્થ ૧ ૧ વેશ્યા પ્રતે ૨ ॥ ન પરણેલી એહવિ વૃદ્ધ કુમારિ ૧ ॥

પ્રતે ૩ ॥ પ્રદેશ ગયોછે પતિ તે જેહનો એહવિ સ્ત્રી પ્રત્યે ૧ ॥

વલી ॥ ૫ ॥ વાલ વિધવા એટલે વાલપણમા ૨ ૧ ડેલી ૧ ॥

સ્ત્રી પ્રતે ॥ ૬ ॥ વલી ॥ ૭ ॥ પાસડ વ્રતે કરીને એટલે જ્ઞાન

તપે કરીને રોક્ષ્યોછે વિષય તે જેણીયે એહવી જે સ્ત્રી તે

પ્રતે ॥ ૮ ॥ અસતી એટલે વ્યજીચારીણી પ્રતે ॥ ૯ ॥ નવપા

યના સ્ત્રી એટલે નરજુવાન સ્ત્રી પ્રતે ॥ ૧૦ ॥ વલી ॥ ૧૧ ॥

વૃદ્ધ પૂરુષની સ્ત્રી પ્રતે આત્માર્થી પૂરુષ જે તે ત્યાગ કર

રે એ પ્રકારે શ્રાગલી ગાથાની સાથે સવધ જાણવો ॥ ૧૬૨ ॥

મારે હું મુખડના' દિશા' મોહેદ' જા' મળ' દુષ્થી ૧ ॥

આમોઢપચિનના' ધ્યયેળે વપરિહમતિ ॥ ૧૬૩ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ વિકાર સહિત ઉદ્ભવ એટલે મનોહર પદ્મ

રૂપ છે જેહનુ એટલે વિકાર સહિત મનોહર રૂપ ગણિ

પદ્મવી ॥ ૨ ॥ ને ॥ ૩ ॥ સ્ત્રી ॥ ૪ ॥ દિઠિ સતી ॥ ૫ ॥ મન પ્રતે ॥ ૬ ॥

મોહીનકરેછે એટલે મોહમહિત કરેછે તે માટિ ૭ ॥ પોતાના

આનાનું દીન વડના પદ્મવા જે પૂરુષ તે જે તે પૂર્વકરી પદ્મ

वी स्त्री ते प्रते॥८॥ अतिशे दूरथकी॥९॥ त्याग करेछे १६३

सम्मोहिनीवि१ कयागमोवि१॥ अहविषयरागमुहवसउ१॥

भवसकडंमि१ पविस्व१ इत्थ१ तुह१ सघडनाय१॥ १६४॥

अर्थ॥१॥ जाण्युछे आगम एटले सिद्धात ते जेणे एह
वोय पण॥२॥ सम्यग् दृष्टि जे ते पण॥३॥ अतिशे वि
पयनो जे राग तेहनु जे सुख तेहना वशयकि एटले
परवशपणाथकी॥४॥ नव सकटने विपे एटले मंसारमा
अवतरवारूप जे कष्ट तेहने विपे॥५॥ प्रवेश करेछे एट
ले बहु भव भ्रमण करेछे ॥६॥ आ अर्थने विपे॥७॥ हे
शिष्य तारो॥८॥ सत्यकी विद्याधरनू दृष्टात जाणवा १६४

मृनरस्मियाणपूया१॥ पणामसकाराविणयकडनपरो१॥

वडापि१ कम्म१ ममुह१॥ सिढिलेइ१ दसारनेयवा॥ १६५॥

अर्थ॥१॥ नला तपस्वी एहवामाहामूनि जे तेमनी॥२॥
पूजा एटले वस्त्रादिकनू आपवु प्रणाम एटले मस्तके
करीने वदनकरवू सत्कार एटले तेमना गुणनी प्रशसा
करवी विनय एटले गुरुमाहाराज आवेसते उजा थवु
इत्यादिक कारज करवाने तत्पर एहवो जे पूरूपा३॥ वा
धेलु एटले आत्म प्रवेशनी साथे मिलाणकरेलु एहवु पण
॥४॥ अशुचा॥५॥ कर्म प्रते॥६॥ सिथल करेछे कोनि पठेम

॥७॥दसार स्वामी एटले क्रण वासुदेवनी पठम१६.

अभिगमणवदननमसणेण१॥पडिपुच्छणेण१साहूण१॥

चिरसचियंपि१कम्म१॥खणेण१विरलत्तण१मुवेइ॥१६६॥

अर्थ॥१॥साधु मुनीराजने॥२॥सनमुखजवे करीने १

न करवे करीने सामान्य नमस्कार करवे करीने॥३॥

गरीरनी शातादिक पूछवे करिने॥४॥घणाकालनु सवे

हुं एहवुं पण॥५॥कर्म जे ते॥६॥क्षण मात्रमां॥७॥नाश

णा प्रते॥८॥पामेछे॥१६६॥

इ१सुसीला१सुहम्माइ१सड्ढणा१गुरुजणस्स१वि१सुसीसा१॥

उल१जणति१०सद्ध१॥नह११सीसो११चड्सुहस्स११॥१६७॥

अर्थ॥१॥केटलाएक॥२॥रूडा स्वभाव १॥१६१॥

मतिशय धरमवत एहवा॥४॥सज्जन एटले सर्व लोक

पर मैत्रिजाववाला एहवा॥५॥भला शिष्य ते जे ते

६॥गुरु महाराजने॥७॥पिण॥८॥विस्तारवत एहवी१॥

मदा एटले आस्तीकतारूपा॥१०॥उपजावेछे॥१०॥

२॥चद्ररुद्र आचारजनो॥२३॥शीष्य एटले जेम च

रुद्र आचारजने विनीत शिष्य हतो तो केवल ज्ञान

कारण थयु ए माटे गुरु महाराजना विनयने विपे

त्पर थवुं पण गुरु महाराजने कोइ प्रकारनो सेद उ

अर्थ॥

ने १०

ने १०

एहवो

केहेवि

ने ५१

ना ८०

१३

१३

१३

१३

१३

१३

१३

१३

पजाववो नहि ए उपदेश॥१६७॥

अगारजीववहगो॥१॥कोइकुगुरुसुसीसपरिवारो॥सुमे
नेनइहिदिहो॥कोलो१गयकुलहपारोकेवो॥१६८॥

अर्थ॥१॥कोइका॥२॥अगारारूप जीवोनो वध करना
रो एहवो अने॥३॥जला शिष्योनोछे परिवार ते जेहने
एहवो॥४॥कुगुरु एटले माठी वासनाए करीने सहित
एहवो आचार्यएटले वस्तुगत आचार्यना गुणैकरिने र
हित एहवो॥५॥साधु जे तेमणे॥६॥स्वप्नने विपे॥७॥देरयो
केहेवि रीते देरयो॥८॥त्रीश वरपना हस्तोयोये करी
ने परवरेंलो एहवो॥९॥भुडसरियो एटले जेम हस्ती
ना टोलामां भुडसरियो तेम सुसाधुना टोलामा कुगुरु
साधुओए स्वप्नने विपे दीठो आ गाथामा निश्चयनय
व्यवहारनय विचारयो॥१६८॥

सो१उगभवसमुदे॥सयवरमुवागएहि१राएहि॥

करहो१वरत्वभरिओ॥दिहो१योगनसीरोहि॥१६९॥

अर्थ ॥१॥ पूर्व जवना शिष्य एहवाते॥२॥स्व-
यंवर मडपने विपे आवेला एहवा ॥ ३ ॥ राजा
एटले पूर्वजवने विपे पाचमे अगार मर्दक आचार-
जना शिष्य हता ते मरिने राजकुलने विपे उत्पन्न

हवी तेम बीजाय पण उत्तम प्राणियो थोडाशा वैराग्य
ना कारणे करीने प्रतिबोध पामेछे ए उपदेश॥१७०॥

जो^१अविकल^२तवसयम^३च^४॥साहू^५करिअ^६पच्छावि^७॥

अनिपसुअर^१सो^२नियग^३मह^४माचिरेण^५साहेइ^६॥१७१॥

अर्थ॥१॥जे॥२॥साधू॥३॥अतकालने विशे पण॥४॥स
पूरण एहवा॥५॥तप सयम प्रते-तप ते बार प्रकारे, स
यम ते सतर प्रकारे॥६॥करे एटले पाले॥७॥ते साधू
॥८॥पोताना अर्थ प्रते एटले परलोकना साधन प्रते
॥९॥थोडा कालमा॥१०॥साधेछे॥११॥निश्चे कोनी पठ
मा॥१२॥अणिका पुत्र आचारजनी पठेमा॥१७१॥

सुहिओ^१न^२चयइ^३भोग^४॥चयइ^५नहा^६दुखिखड^७त्ति^८अलिय^९
मिण^{१०}चिकणकम्मोलित्तो^{११}न^{१२}इमो^{१३}इमो^{१४}परिचयई^{१५}॥१७२॥

अर्थ॥१॥जेमा॥२॥दुखि पुरुष जे ते॥३॥भोगो प्रते॥४॥
त्याग करेछे॥५॥तेम सुखि पुरुष जे ते भोगो प्रते॥६॥
नधि॥७॥त्याग करतो॥८॥ए प्रकारे लोक बोलेछे ते
॥९॥आ लोकनु वचन॥१०॥जुठुछे केम जुठुछे ते केहेछे
॥११॥चिकणा कर्म करिने व्याप्त एहवो॥१२॥आ दुखि
पुरुष जे ते भोगो प्रते॥१३॥नयी॥१४॥त्याग करतो
॥१५॥चिकणा कर्म करीने सहित एहवो आ सुखि पु

થણા એહવા જે તેમણે ॥ ૪ ॥ જયકર
 સાર સમુદ્રને વિષે પારિભ્રમણ કરતો એહવો
 કુગુરુ એટલે પૂર્વજવના અગારમર્દક ॥
 વ એહવો ॥ ૬ ॥ ભારે કરિને જરેલો એહવો ॥ ૭ ॥ ઊડ
 લો ॥ ૮ ॥ દેસ્યો અને દેસ્યા પછી મુકાવ્યો ॥ ૯ ॥

સંસારવચના નવિ ગણતિ ॥ સંસારસૂઅરા નીવા ॥

સુમેળગણ વિલેકેઈ ॥ બુદ્ધતી પુષ્પચૂલા ૧૦વા ૧ ॥ ૧૨ ॥ ૭૦ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ સંસારને વિશે મુહસરીઆ સમાન
 સંસારને વિશે પાંચ ઇન્દ્રિયોના વિષય તેને વિશે
 આશક્ત એહવા ॥ ૨ ॥ જે જીવ તે જેતે ॥ ૩ ॥ સંસારની
 વિષયના જોગે કરિને જે ઠગાવુ તે પ્રતે ॥
 ગણતા એટલે વિષય એજ સાર ગણેછે પણ એમ નથી
 ણતા જે પૂર્વજવનુ ચાધેલુ જે પુન્ય તે હારિ જડે
 ॥ ૬ ॥ કેટલા એક હલુઆ કર્મ જે જીવ તે જે
 સ્વપ્નને વિશે પામ્યુ એટલે દેસ્યુ એહવુ જે નાર
 કનુ સ્વરૂપ તેણે કરિને ॥ ૮ ॥ પણ ॥ ૯ ॥ બુદ્ધેછે એટલે
 તિવોધ પ્રતે પામેછે કોની પઠમા ॥ ૧૦ ॥ પુષ્પચૂલા જે
 ॥ ૧૧ ॥ જેમ એટલે જેમ પુષ્પચૂલાનામે રાણી સ્વપ્ન
 ધ્યે નારકાદિક સ્વરૂપ પ્રતે દેસીને પ્રતિવોધ પામતા

हवी तेम बीजाय पण उत्तम प्राणियो थोडाशा वैराग्य
ना कारणे करीने प्रतिबोध पामेछे ए उपदेश॥१७०॥

जो भविकल तवसयम च ॥ साहू करि शपचावि ॥

अन्नियसुअव सो नियग ॥ मष्टमाचिरेण साहेइ ॥ १७१ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ ने ॥ २ ॥ साधू ॥ ३ ॥ अतकालने विशे पण ॥ ४ ॥ स
पूरण एहवा ॥ ५ ॥ तप सयम प्रते-तप ते बार प्रकारे, स
यम ते सतर प्रकारे ॥ ६ ॥ करे एटले पाले ॥ ७ ॥ ते साधू
॥ ८ ॥ पोताना अर्थ प्रते एटले परलोकना साधन प्रते
॥ ९ ॥ थोडा कालमा ॥ १० ॥ साधेछे ॥ ११ ॥ निश्चे कोनी पठ
मा ॥ १२ ॥ अणिका पुत्र आचारजनी पठेमा ॥ १७१ ॥

सुहिओ न चयइ भोग ॥ चयइ बहा दुखिखड ॥ तिअलिय ॥
मिण चिकण कम्मो लिच्छो ॥ न ॥ इमो ॥ इमो ॥ पस्चियई ॥ १७२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जेमा ॥ २ ॥ दुखि पुरुष जे ते ॥ ३ ॥ नोगो प्रते ॥ ४ ॥
त्याग करेछे ॥ ५ ॥ तेम सुखि पुरुष जे ते नोगो प्रते ॥ ६ ॥
नथि ॥ ७ ॥ त्याग करतो ॥ ८ ॥ ए प्रकारे लोक बोलेछे ते
॥ ९ ॥ आ लोकनु वचना ॥ १० ॥ जुठुछे केम जुठुछे ते केहेछे
॥ ११ ॥ चिकणा कर्म करिने व्याप्त एहवो ॥ १२ ॥ आ दुखि
पुरुष जे ते भोगो प्रते ॥ १३ ॥ नथी ॥ १४ ॥ त्याग करतो
॥ १५ ॥ चिकणा कर्म करीने सहित एहवो आ सुखि पु

॥६॥करचो॥७॥तोएपण ते चेलाति पुत्र जे तेणे॥८॥ने
केडियोनी उपर ॥९॥ थोडोय पण॥१०॥ मनने विशे
एटले अंप्रीति मात्र पण॥११॥न॥१२॥चलाव्यो ए
टले न उत्पन्न करचो॥१३॥

पाणघए^१वि^२पाव^३॥पिविलिया^४वि^५ते^६न^७इच्छनि^८॥ते^९
कह^{१०}जइ^{११}अपावा^{१२}॥पावाइ^{१३}कराते^{१४}अत्रस्त^{१५}॥१३५॥
अर्थ ॥१॥जे॥२॥पाप कर्म करीने रहीत एहया॥३॥सा
धु मुनिराज जे ते॥४॥पोताना प्राणनो नाश थये सते
॥५॥पण॥६॥किडियोनी उपर ॥७॥ पापकर्म प्रते॥८॥
नही॥९॥वाछे एटले ते कीडियोनु पण माटु न इच्छे
॥१०॥निश्चे॥११॥ते साधु मुनिराज जे ते॥१२॥ क्यम
॥१३॥विजानि उपरा॥१४॥पापकर्म प्रते॥१५॥करे एट
ले अन्यनि उपर सर्वथा प्रकारे प्रतिकुल नहिज क
रे ते माटे आत्मारथि पुरुषोये परजीवने पीड्या मात्र
न उपजावयी ए उपदेश॥१३५॥

मिणरहअणडेआण^१॥पाणहराण^२वि^३पहरमाणण^४॥न^५
कराते^६प^७गनाइ^८॥गवरस^९फल^{१०}वियाणता^{११}॥१३६॥
अर्थ ॥१॥पापना॥२॥फल एटले नरकादिक रूप वि
पाक प्रते॥३॥विशेषे करिने जाणता सता एहया सा

बु आ सामान्य थकि व्यवहार नयनी अपेक्षाये करी
ने कह्यु छे॥१७७॥

तिन्वपरे^१पउत्ते^२॥सयगुणिउं^३सयसहस्स^४कोडिगुणो॥

कोडाकोडिगुणो^५चा^६॥हुत्त^७विवागो^८बहुनगो^९वा^{१०}॥१७८॥

अर्थ ॥१॥ अतिशे आकरो एहवो ॥२॥ द्वेप सते एट
ले अतिशय क्रोधे करीने बधादीक प्रते करनारां जे
पुरुष तेहने॥३॥सी गुणो अने॥४॥ लाख गुणो, कोडि
गुणो॥५॥बली॥६॥कोडाकोडि गुणो॥७॥ अथवा॥८॥
अतिशय बहु एटले जेवे कपाये करीने कर्म बांध्यु
होय तेहवो॥९॥विपाक एटले कर्मनो उदया॥१०॥हो
यछे एटले थाय छे॥१७८॥

के^१इय^२करेती^३आलंघन^४॥इम^५तिहुयणस्स^६छेर^७॥

बह^८नियमाखवियगी^९॥मरुदेवी^{१०}भगवद^{११}सिद्धा^{१२}॥१७९॥

अर्थ ॥१॥केटलाएक पुरुषा॥२॥आवधादि विपाक रु
प अर्थने विपे॥३॥आ॥४॥त्रिण भुवनना रहेनारा एह
वा जे लोक तेमने॥५॥आअर्थ भुत एहवा॥६॥आलव
न एटले ओठा प्रते॥७॥ग्रहण करेछे अने केहेछेजे॥८॥
जेमा॥९॥निमे करिने एटले तप सजमादिके करिने न
थी खपाव्यु अग एटले शरीर ते जेणीये एटले पू

वै धर्म न पामेली एहवी अने॥१०॥ पूजवा जोग्य एह
वी॥११॥ मरुदेवी श्री ऋषभदेवनी माता॥१२॥ सिद्धीप
दने वरी एटले मोक्षे गइ तेम हमे पण कर्मनो विपाक
भोगव्याविना अने तपसंजमकरचा विना हीज मोक्ष प्र
ते जइशु-ए प्रकारना आलवन प्रते ग्रहण करेछे पण
एवा पडता आलवन न ग्रहण करवा ए जावा॥१७९॥

किपि^१ कहिपि^२ कयाई^३॥ एगे^४ लट्ठीहिं^५ केहिबि^६ निभेहि॥

पत्तेअनुदुलाभा^७॥ हवति^८ अछेरयभूया^९॥१८०॥

अर्थ ॥१॥ केटला एक करकडवादीक उत्तम पुरुषो
जे ते॥२॥ कोइ कालने विषे॥३॥ कोइ क्षेत्रने विषे॥४॥
काइक वृषजादि वस्तु एटले जीरण बलध प्रते॥५॥
पामिने अने॥६॥ केटला एक॥७॥ कारणो ए करिने॥८॥
आश्चर्य भूत एटले थोडा एहवा॥९॥ प्रतेक बुधना स
रखाछे लाज एटले सम्यक दर्शन चारित्रादि रूप ते
जेमने एहवा एटले प्रत्येक बुद्ध एहवा॥१०॥ थायछे
एटले करकडवादीक उत्तम पुरुष गुरुना उपदेश वि
नाय पण, परिपाकपणा अने करिने, काइक निमित्त पा
मीने, आवरणना क्षय उपशमे करिने प्रतेक बुद्ध थाय
छे, तेपण आश्चर्य भूत एटले थोडा, पण सर्व थतानथी-

अर्थ॥१॥निरंतरा॥२॥द्वेषसहितथएलाअनेरागद्वेषस
हित एहवोअने॥३॥निरतरा॥४॥अशुच परिणामवाले
एहवो॥५॥जीवजे ते वर्तेछे॥६॥एटलु विशेष जो॥७॥
अवकाश॥८॥पमाडिये एटले जो आत्माने मोकलो मु
किये॥९॥त्यारे॥१०॥संसार समुद्रनी मध्ये लोक वी
रुध तथा आगम वीरुद्ध एहवा कारजोने विपे॥११॥
विशय कशायादि रूप प्रमाद प्रते॥१२॥पमाडेछे ते का
रण माटे अनादि कालनो राग द्वेष सहित एहवो जे
जीव मोकलो मुक्यो सतो राग द्वेषना कारण पामि
ने पोते ते रूप थायछे माटे आत्मारथी पूरुपोये पुष्ट
अवलंबन सेववू एज सारछे॥१८६॥

अध्वियवदियपूइया।सत्कारियपणमिउमहग्धविउ॥

તતહ કરેઈ જીવો॥પાડેઈ નહ અપ્પણો ઠાણ॥૧૮૭॥

अर्थ॥१॥सुगंधादिके करीने अरचेलो एहवो अने अनेक
लोफ जे तेमणे गुणनी स्तवनाए करीने वढे लो एटले स्त
वेलो एहवो अने वस्त्रादिके करिने पूजे लो एहवो अने उजा
थवे करीने. सत्कार करे लो एहवो अने आचारज पददेवे
करीने मोहोटाइपणा अते पमाडे लो एहवो जे॥२॥जीव
अहकारि थयो सतो॥३॥ते प्रमादादि रूप अकारज

प्रते॥४॥ते प्रकारे॥५॥करेछे॥६॥जे प्रकारे॥७॥पोतानु
॥८॥मोहोटाइपणारूप स्थानक प्रते॥९॥नास करेछे ए
कारणमाटेजे जीय पूजावामनावाढिके करिने अहकारि
धायछे ते जीव पूज्यपणाना स्थानक प्रते नाश करिने
निचि गतिने विशेष जायछे ते माटे अहकार न करवो १८७

साल्वयाए १ मो १ बहुफलाए १ हनूण १ मुख्य १ महि १ सद ॥

धीरदुब्बलो तवस्सी १ कोडी १ कागिणि १ किण्ड १ ॥१८८॥

अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥धीरजे करिने एटले सतोपे क
रिने दुर्वल एटले असमर्थ एटले सतोप रहित एहयो
॥३॥तपसी एटले राक थयो सतो॥४॥बहुछे स्वर्ग मो
क्षादिरूप फल ते जेमना थकि एहवा॥५॥जला आचा
र अने महाव्रतादिक प्रते ॥६॥हणीने एटले लोपिन
॥७॥विषय सुख प्रते॥८॥वाछेछे ते केवो न्याय करेछे के
॥९॥कोटी मूल्य आपवे करिने॥१०॥एक रुपियाना ए
सिमो जाग रूप कागिणी प्रते॥११॥वेचाथी लेछे एट
ले पुरुष महाव्रतादि रूप कोटि मूल्ये करिने विषय
सुखरूप कागिणी प्रते अर्गाकार करेछे विषय सुख
अने महाव्रत तेवेनी मध्ये मोहोटी अनरछे पण बाल
समझाववावास्ते आ पूर्व कह्यु जे द्रष्टा ते प्रकारे करेछे

અર્થા॥૧॥નિરંતરા॥૨॥દ્વેપસહિતથએલાઅનેરાગદ્વેપ
 હિત એહવોઅને॥૩॥નિરંતરા॥૪॥અશુચિ એહવો
 એહવો॥૫॥જીવજે તે વર્તેછે॥૬॥એટલુ વિશેષ જો
 અવકાશ॥૮॥પમાડિયે એટલે જો આત્માને મોકલો
 કિયે॥૯॥ત્યારે॥૧૦॥સસાર સમુદ્રની મધ્યે લોક વી
 રુધ તથા આગમ વીરુદ્ધ એહવા કારજોને વિષે॥૧૧॥
 વિશય કશાયાદિ રુપ પ્રમાદ પ્રતે॥૧૨॥પમાડેછે તે કાર
 રણ માટે અનાદિ કાલનો રાગ દ્વેપ સહિત એહવો જે
 જીવ મોકલો મુક્યો સતો રાગ દ્વેપના કારણ પામિ
 ને પોતે તે રુપ થાયછે માટે આત્માર્થી પૂરુષોયે પુદ્ગ
 અવલબન સેવવૂ એજ સારછે॥૧૮૬॥

અધિયવદિયપૂડ્યા।સત્કારિયપણમિડમહઘવિડ૧॥

તત્તહકરેદ્જીવો૧।પાડેદ્જહઅપ્પણોઠાળ૧।૧૮૭॥

અર્થા॥૧॥સુગંધાદિકેકરીને અરચેલો એહવો અને અનેક
 લોક જે તેમણે ગુણની સ્તવનાએકરીને વડેલો એટલે સ્ત
 વેલો એહવો અને વસ્ત્રાદિકેકરિને પૂજેલો એહવો અને ઝના
 થવે કરીને સત્કાર કરેલો એહવો અને આચારજ પદદેવે
 કરીને મોહોટાઇપણા પ્રતે પમાડેલો એહવો જે॥૨॥નીવ
 અહકારિ થયો સતો॥૩॥તે પ્રમાદાદિ રુપ અકારજ

प्रते॥४॥ते प्रकारे॥५॥करेछे॥६॥जे प्रकारे॥७॥पोतानु
॥८॥मोहोटाइपणारूप स्थानक प्रते॥९॥नास करेछे ए
कारणमाटेजे जीव पूजावामनावदिके करिने अहकारि
थायछे ते जीव पूज्यपणाना स्थानक प्रते नाश करिने
निचिगतिनेविशे जायछे ते माटे अहकार नकरवो १८७

सोलवयाए 'मो' बहुफलाए 'हरूण' सुख 'महिलसइ' ॥

धीइदुव्वलो तवस्सी 'कोडीए' कागिणि 'किणइ' ॥१८८॥

अर्थ॥१॥जे पूरुपा॥२॥धीरजे करिने एटले सतोपे क
रिने दुर्वल एटले असमर्थ एटले सतोप रहित एहवो
॥३॥तपसी एटले राक थयो सतो॥४॥बहुछे स्वर्ग मो
क्षादिरूप फल ते जेमना थकि एहवा॥५॥जला आचा
र अने महाव्रतादिक प्रते ॥६॥हणीने एटले लोपिने
॥७॥विषय सुख प्रते॥८॥वाछेछे ते केवो न्याय करेछे के
॥९॥कोटी मूल्य आपवे करिने॥१०॥एक रुपियानो ए
सिमो जाग रूप कागिणी प्रते॥११॥वेचार्थी लेछे एट
ले पूरुप महाव्रतादि रूप कोटि मूल्ये करिने विषय
सुखरूप कागिणी प्रते अगीकार करेछे विषय सुख
अने महाव्रत तेवेनी मध्ये मोहोटा अतरछे पण बालो
समझाववावास्ते आ पूर्व कह्यु जे द्रष्टा ते प्रकारे करेछे

તે મૂર્ખ દગાનુંકામ આચરેછે માટે શ્રેમ ન કરવું ૮૮

જીવો 'જહામણસિય' ॥ હિયદાચિઝયપાન્ઝિગહિ 'મુલ્લોહિ' ॥

તોમેઝળ 'ન'તી ૮૬ ॥ જાવજીવેણ 'સવેણ' ॥ ૮૭ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ આ સસારિ જીવ જે તે ॥ ૨ ॥ જે પ્રકારે કરિને
મનનેવિશે ચિતવનકર્યા એટલે મનને અનુકુલ એહવા
અને ૩ ॥ હિતકારી એહવા, અને દહેલા એહવા, અને પ્રાર્થના
કરેલા એહવા ॥ ૪ ॥ સુખોયે કરીને અને ॥ સર્મગ્રા ॥ ૬ ॥ આ ઉપા
ય કરિને પણ એટલે નિરતર અનુજવ્યાં એહવા વિશય
સુખે કરિને ॥ ૭ ॥ સતોપ પામવાને ॥ ૮ ॥ નથી ॥ ૯ ॥
તો એટલે સુખ પ્રતે નથી પામતો ॥ ૧૦ ॥

સુમિણતરાણુભ્ય ૧ ॥ મુલ્લવ ૨ ॥ સમદ્વિધિય ૩ ॥ જહા ૪ ॥ નધિ ૫ ॥

એવ ૬ ॥ મિમપિ ૭ ॥ અર્થ ૮ ॥ સુલ્લવં ૯ ॥ સુમિણોવમ ૧૦ ॥ હોર્ડ ૧૧ ॥ ૧૨ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ જેમા ॥ ૨ ॥ સ્વપ્રાંતરને વિશે એટલે
મધ્યે અનુજવ્યુ એટલે જોગવ્યું એહવું જે ॥ ૩ ॥ સુખ તે
જાગ્યા પછી ॥ ૪ ॥ નહોય એટલે નથી
આવતુ ॥ ૬ ॥ એ પ્રકારે ॥ ૭ ॥ આ વિદ્યમાન એહવૂય પણ
સુખ ॥ ૯ ॥ અતિત થયુ સતું એટલે જોગવાઈ ગયુ સતું
કરીને મોની ઉપમા સરીખુ ॥ ૧૧ ॥ થાયછે એટલે ॥
અહકારિ થઈવું જે સુખ તે જોગવ્યા પછી સ્વપ્ર

बुज होयछे ए कारण माटे ते पुद्गलिक सुखने विशे
आदर न करवो ए जाव॥१९०॥

पुरानिदुमणे १ जखलो ४॥ महुरामगू ३ तेहवसुयनिहसो १॥
बोहेइ ५ सुविहियजण ५॥ विसूरइ १० बहु ९ घ ५ हियएण ५॥ १९१॥

अर्थ॥१॥ ते प्रकारेहीज एटले प्रसीद्ध एहवो सिद्धा
तनी कसोटी एटले बहू श्रुति एहवो॥२॥ मथुरा नगरी
ने विशे मगु एहवे नामे आचारज रिद्धि गारव रस
गारवने विशे लंपट थइने तिहाथी काल करीने॥३॥
नगरना खालनि सामिपे जक्षना प्रसादने विशे॥४॥
जक्ष थयो सतो॥५॥ सुविहीत जन प्रते एटले पोताना
शिष्यना समुह प्रते॥६॥ बोध करावेछे एटले जणावेछे॥७॥
बली॥८॥ हृदये करीने॥९॥ बहु प्रकारे॥१०॥ सोच करेछे
एटले पश्चाताप करेछे ते आगलि गाथाए कहेछे१९१

निगगतूण १ घराओ १॥ न ० कड ५ धम्मो ५ मण १ निणखवाओ १॥
इदिरससायगुरुत्तणेण १॥ नय १० चेइओ ११ अण्णा १॥ १९२॥

अर्थ॥१॥ मे जे तेणे एटले मे॥२॥ घर थकि॥३॥ निक
लिने एटले चारित्र अगिकार करीने॥४॥ रिद्धि एटले
शिष्यादिकने विशे ममत्व जाव, रस एटले मिठा आ
हारादिकने विशे आशक्तिपणु, साता एटले सुहालि

अर्थ॥१॥हा इति खेदे॥२॥हे जीव॥३॥लखो गमे न
 वोए करीने दुर्लज एटले दुखे पामवा जोग्य एहवोय
 पणअने॥५॥अचित्यचितामणि तुल्य एहवो अने॥६॥जिन
 राजे कहेलो एहवो जे धर्म ते प्रते॥७॥पामीने ते धर्म
 न आराधवे करीने॥८॥घणा॥९॥एकद्रियादिक जाति
 जोनि एटले शित उष्णादिक जोनि तेमना सइकडो
 तेने विपे एटले घणि जाति जोनियोने विपे॥१०॥ज
 मिश एटले जिनेंद्र नाखित धर्मने न आराधवे करि
 ने हे जीव तु च्यार गतिने विपेपरिभ्रमण करिश माटे
 जिनेश्वर जापित धर्मने विशे उद्यमकरवो एजाव१९४

पावो१पमायवसउ१॥सीवो१०ससारकढनमुझुस्त१॥

दुखखेहि१न१नीविन्नो१॥सुखखेहि१नचेव१परितुडो१॥१९५॥

अर्थ॥१॥अतिशे करिने पापिएहवो अने॥२॥प्रमादने
 वश थयोएहवो अने॥३॥ससारना कारजने विशे उद्यम
 वत एहेवोअने॥४॥दु खोए करिने॥५॥ना॥६॥खेद पामेलो
 एहवो एटले जे थकीदुख प्रते पामेछे तेहीज पापप्र
 ते करेछे ते हेतु माटे॥७॥सुखोए करिने॥८॥नहिज॥९॥
 सतोप पामेलो एहवो एटले जे कारण माटे नविन
 सुख प्रते वाछेछे एहवो॥१०॥आससारीजीवछो॥१९५॥

जराय तो समस्त शरीरोनु तो शु केहवु एटला आ
ससारी जीवे पूर्वे शरीर ग्रहण करीने मुक्या तोपण शं
तोप प्रतेन पाम्यो माटे सतोश करवो ए जावा ॥१९७॥

नहदत्तमसकेसटिण्मु^१। जीवेण^१ विष्णुमुक्केमु^२ ॥

तेसु^३ वि^४ हविर्ना^५ कइलासमेरुगिरिसन्निभा^६ कृडा^७ ॥१९८॥

अर्थ ॥१॥ जीव जे तेणे ॥२॥ पूर्व ज्योने विजे ग्रहण
करि करिने मुकेला एहवा ॥३॥ नख दात मास केश हा
डका इत्यादिक शरीरना अवयव भूत, ते जो सर्व ए
कठा करीए तो ॥४॥ ते नख दात मास हाडकादिके क
रीने ॥५॥ पण ॥६॥ रुइलास पर्वत एटले हिमगिरी प
र्वत मामान्य पर्वत नेमने तुल्य एटले ते सरखा ए
हवा ॥७॥ दगला ॥८॥ वाय एटला शरीरना अवयव जी
वे ग्रहण करिने मुक्या तोपण सतोप न पाम्यो ए वा
रण माटे शरीरना अवयवोने विषे प्रतिबध न करवो

हिमवतमपत्तमदरदियोदहिधराणि सरिसरामिड^१ ॥

अहीअयो^२ आहारो^३ ॥ इहिण्ण^४ हारिड^५ हुम्भ^६ ॥१९९॥

अर्थ ॥१॥ भुर्यो धएला एहवो जे आ जीव तेणे ॥२॥

हिमवत पर्वत, मलयाचल पर्वत, मदर एटले नेरु प
र्वत, द्विप एटले असस्याता, द्वीप उदाधि एटले अम

વિદ્મૂઢમૂઢહિયયો ૮ ॥ પાવે ૧૦ કમ્મે ૧૧ જ્ઞાનો ૧૨ મદ્ ૧૧ ॥ ૨૦૩ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ જેમ ॥ ૨ ॥ જોગ એટલે ઇન્દ્રિયો થકિ ઉત્પન્ન થયા જે સુખ રિદ્ધિ એટલે રાજ્ય લક્ષ્મી, સપદા એટલે ધન ધાન્યાદિક એ સર્વ ॥ ૩ ॥ ૪ ॥ ધર્મનુ ફલ છે એમ ॥ ૫ ॥ આ જીવ જાણે છે ॥ ૬ ॥ નિશ્ચે ॥ ૭ ॥ તોયે પણ ॥ ૮ ॥ અતિશય મુઢ એટલે અજ્ઞાને કરિને ઢકાયુ છે હૃદય તે જેહનુ એહવો જે ॥ ૯ ॥ જન એટલે લોક ॥ ૧૦ ॥ પાપ એટલે અશુભ એહવો જે ॥ ૧૧ ॥ કર્મ તેને વિષે ॥ ૧૨ ॥ રમે છે એટલે ક્રીડા કરે છે, એટલે પાપ કર્મ કરવાને વિશે ઉચ્છાહવત થાય છે ૨૦૩

જાણિજ્ઞદ્ ૧ ચિંતિદ્ ૪ ॥ જન્મજરામરણસંભવ ૧ દુઃસ્વ ૧ ॥ નય ૧

વિસયેમુ ૧ વિરજ્ઞદ્ ૪ ॥ અહો ૧ સુવદ્ ૧ રુવડગઠી ૧ ॥ ૨૦૪ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ જન્મ એટલે શ્રવતરવુ । જરા એટલે વયની હાનિ । મરણ એટલે પ્રાણનો ત્યાગ કરવો । તે જન્મ જરાને મરણ થકી । ઉત્પન્ન થયુ એહવુ જે ॥ ૨ ॥ દુઃખ જે તે ॥ ૩ ॥ જીવ જે તેણે ગુરુના ઉપદેશે કરિને જાણીએ છીએ ॥ ૪ ॥ અને મનને વિશે વિચારીએ છીએ એટલે જીવ જે તે જન્મ જરા મરણ થકિ ઉત્પન્ન થયુ એહવુ જે દુઃખ તે

જે ગુરુ મહારાજનો ઉપદેશ સાંજલયે કરીને જાણે છે અને મનને વિષે વિચારે છે તોયે પણ ॥ ૫ ॥ પાંચ ઇન્દ્રિયો

ના વિષય થકી ॥૬॥ નથી જ ॥ ૭ ॥ વિરામ પામતો એટલે પા
છો વલતો ॥ ૮ ॥ અહો ઇતિ આ મોહટુ અચરિજતે ॥ ૯ ॥
॥ ૧ ॥ અતિશે નિવડ વાધેલો એહવો શ્રને ॥ ૧૦ ॥ કપટની
ગાઠ એટલે મોહની ગાઠ તે કોઈપણ નિવારણ કર
વાને સમર્થ થતો નથી તે મોહકર્મના વશ થકિ આજી
વજે તે વિષયાટિકને વિષે આશક્ત થાયછે તે માટે જેમ
મોહકર્મ દૂર જાય તેમ ઉદયમ કરવો એઉપદેશ ॥ ૨૦ ॥

જાણદુ^૧ય^૨જહ^૩મરિજ્જ^૪ ॥ અમરન^૫પિ^૬હુ^૭જરા^૮વિનાસેદ^૯ ॥
નય^{૧૦}ઝવિગો^{૧૧}લોડ^{૧૨} ॥ અહો^{૧૩}રહસ્ય^{૧૪}સુનિમ્માય^{૧૫} ॥ ૨૦ ॥
શ્રય^{૧૬} ॥ ૧ ॥ જેમ એટલે જે પ્રકારે સર્વલોક ॥ ૨ ॥ આઠઠા
નો ક્ષય થયે સતે મરણ પામેછે તે પ્રકારે ॥ ૩ ॥ આજી
વ જે તે ગુરુના ઉપદેશ થકિ જાણેછે ॥ ૪ ॥ નિશ્ચે ॥ ૫ ॥ ન
મરતો એટલે જીવતો એહવોય ॥ ૬ ॥ પણ જે પુરુષ તે પ્ર
ત્યે ॥ ૭ ॥ જરા જે તે ॥ ૮ ॥ વિનાશ કરેછે એટલે નાશ પમા
ડેછે ॥ ૯ ॥ નિશ્ચે ॥ ૧૦ ॥ તોયપણ આલોક જે તે સસારથ
કિ ॥ ૧૧ ॥ નથી જ ॥ ૧૨ ॥ ઉદવેગ પામતો એટલે જય પામ
તો ॥ ૧૩ ॥ અહો ઇતિ આ મોટુ અચરિજ ॥ ૧૪ ॥ હે જીવ્ય
જીવો અતિશય નિપજાવેલુ એટલે નિવડ વાધેલુ એહવુ
॥ ૧૫ ॥ કર્મનુ રહસ્ય એટલે સાર પ્રત્યે જુવો એટલે આ

॥ विषयथकी॥६॥नयीज॥७॥विराम पामतो एटले पा
 ॥ वलतो॥८॥अहो इति आ मोहटु अचरिजठे॥८॥
 ॥१॥अतिशे निवड बाधेलो एहवो अने॥१०॥कपटनी
 ॥८॥एटले मोहनी गाठ ते कोइपण निवारण कर
 ॥ने समर्थ थतो नथी ते मोहकर्मना वशथकि आजी
 ॥जे ते विषयादिकने विषे आशक्त थायछे ते माटे जेम
 ॥मोहकर्म दूर जाय तेम उद्यम करवो एउपदेश॥२०॥

जाणइ^१य^२नह^३मरिबड^४॥अमरन^५पि^६हु^७नरा^८विणासेइ^९॥
 नय^{१०}विगो^{११}लोउ^{१२}॥अहो^{१३}रहस्य^{१४}सुनिम्माय^{१५}॥२०॥

अर्थ॥१॥जेंम एटले जे प्रकारे सर्वलोका॥२॥आउखा
 ॥ने क्षय थये सते मरण पामेछे ते प्रकारे॥३॥आजी
 ॥जे ते गुरुना उपदेश थकि जाणेछे॥४॥निश्चे॥५॥न
 ॥मरतो एटले जीवतो एहवोय॥६॥पण जे पुरुष ते प्र
 ॥ये॥७॥जरा जे ते॥८॥विनाश करेछे एटले नाश पमा
 ॥डेछे॥९॥निश्चे॥१०॥तोयपण आलोक जे ते ससारथ
 ॥कि॥११॥नयीज॥१२॥उदवेग पामतो एटले नय पाम
 ॥तो॥१३॥अहो इति आ मोहटु अचरिज ॥१४॥हे नव्य
 ॥जीवो अतिशय निपजावेलु एटले निवड बाधेलु एह
 ॥१५॥कर्मनु रहस्य एटले मार प्रत्ये जुवो एटले

मोहकर्मनुं माहात्म्य जाणो ए अर्थ ॥२०५॥

दुष्पय^१ चउष्पय^२ ॥ बहुपय^३ च अपय^४ समिद्ध^५ महण^६ वा^७ ॥
अणवकए^८ वि^९ कयतो^{१०} ॥ हरइ^{११} हयासो^{१२} अपरितंतो^{१३} ॥२०६॥

अर्थ ॥१॥ हणीछे एटले नाश करीछे आशा ते जे
ए एटले आशा रहित करनारो एहवो ॥२॥ खेद रहित
एटले न थाकेलो एहवो ॥३॥ क्रतात एटले मरण जे ते
॥४॥ वे पगवाला एटले मनुष्यादिक ॥५॥
एटले गाय, जेस, घोडा प्रमुख ॥६॥ बहू पगवाला ए
ले भ्रमरादिक ॥७॥ वली ॥८॥ पग रहित एटले स
टिक ॥९॥ धनाढ्य एटले धनवत ॥१०॥ वली व सद्ध
करिने पडित मुख सर्व ग्रहण करवा ॥११॥ धन
रहित एटले दरिद्र ते पुर्वे कह्या जे सर्व ते प्रत्ये ॥१२॥
अपराध कर्या विनाय ॥१३॥ पण एटले ते जीवोये स
त्युनुं काइ बगाड्यु नथी तोये पण ते जीवो प्रते मर
ण जे ते ॥१४॥ हरेछे एटले मारेछे ॥२०६॥

नय^१ नबजइ^२ सो^३ दियहो^४ ॥ मरियव^५ वा^६ वसेण^७ सवेण^८ ॥
आसापासपरदो^९ ॥ न^{१०} करेइ^{११} ज^{१२} हिय^{१३} वजो^{१४} ॥२०७॥

अर्थ ॥१॥ ते ॥२॥ दिवस एटले मरणनो दिवस ॥३॥
नहिज ॥४॥ जाणिए एटले छदमस्थ जीव मरणना दि

वसनो निश्चय जाएतो नथी॥१॥वली॥६॥सर्व जीवोये
॥७॥अवश्यपणे करिनेज एटले जरुरा॥८॥मरबुछे ए
वातमा काइ सशयनथी तोये पण॥९॥आशा एटले पुद्ग
लीक भावना मनोरथ ते रूप पाशा एटले पासलो ते
ऐ करीने व्याप्त एटले सहित एहवो अने॥१०॥वध
करवा जोग्य एटले मरणना मुखने विशे रहेलो एह
वो सतो॥११॥जे॥१२॥हितकरि एटले धर्म अनुष्ठाना
दि प्रत्ये॥१३॥ नथी॥१४॥करतो ते माटे आगलि गा
थामा उपदेश केछे॥२०७॥

सझरागजलबुनुउवमे॥नीविए॥अ॥जलविंदु॥चचलेजुवणे॥
य॥नद्वेगसन्निभे॥पावनीव॥कि॥मय॥न॥बुझासि॥२०८
अर्थ॥१॥हे पापि जीवा॥२॥सध्याने विपे जे राग ए
टले लीलो पिलो रग जलने विशे जे बुबुद एटले प
रपोटा तेमना सरखिछे उपमा ते जेहनी एटले सध्या
राग समान अने जलना परपोटा समान एहवु॥३॥
वली॥४॥डाजनी अणि उपर रहेलो एहवो जलविंदु
एटले पाणिनो विंदुयो तेना सरखु चचल एटले चप
ल एहवु॥५॥प्राणिनु जीवित एटले आउखुं॥६॥वली
॥७॥नदिना वेग सरखु एटले नदिना पुर सरखु एह

बुं॥८॥प्राणिनुं जवांनीपणुंछे॥९॥क्येमा॥१०॥आ पूर्वे क
 ह्युं ए प्रकारे जाणिने पण॥११॥नथी॥१२॥बुझतो ए
 ले हे अज्ञानी जीव आ जीवीत अने जवानीपणु
 थीर जांणीने पण केम प्रतिबोध नथी पामतो माटे प्र
 तिबोध पांमयो ए जाणपणानु सारछे॥२०८॥

सं१ सं१ नद्वद् अमुद् ॥ अद्वद् ॥ कुच्छणिय मेयाते ॥ तत् १
 मग्गद् ११ अग १ ॥ नवर ११ मण ११ गुथ ११ पडिकूलो १ ॥ २०९ ॥

अर्थ॥१॥ ॥२॥हे जिव जे जे ॥३॥असुची एटले अप
 वित्र एहवा शरीरादिक प्रत्ये॥४॥तु जाणेछे अने॥५॥
 जे अपवित्र शरिरादिक देखवे करीने तु लाज पामे
 छे॥६॥निंदवा जोग्य एहवु॥७॥आ स्त्रियादिकनु जयना
 दि एटले अधो जाग शरिरादिकछे तोये पण॥८॥ते
 ॥९॥ते॥१०॥अंग एटले अपवित्र शरिरादिक प्रत्ये
 ॥११॥तु अनिलाप करेछे एटले मूढ थयो सतो वांछे
 छे ते माटे॥१२॥इहा॥१३॥केवला॥१४॥मदन एटले
 कंदर्प जे तेज ताहरो॥१५॥प्रतिकूल एटले शत्रुरूप
 वनेछे एटले शत्रुरूप कंदर्पना वशयकि आ निंदवा
 जोग्य एहवुं जे शरिरादिक ते प्रत्ये अनिराग मनोहा
 एहवुं तूं मानेछे माटे ए मूढपणू एटले विषयांसपणु

दूर करवा जोग्यछे ए उपदेश॥२०९॥

सबगहाणपभवो१॥महागहो१सबदोसपायदी१॥

कामगहो१दुरप्पा१॥मेण१भिभूय१जग१सब॥२१०॥

अर्थ॥१॥सर्व ग्रहोनो एटले सर्व उनमादोनो प्रभव
एटले उत्पत्तिछे जेहथकी एटले सर्व उनमादोनो उ
त्पन्न करनार एहवो अने॥२॥मोटो ग्रह एटले मोटो
उन्माद एहवो अने॥३॥सर्व दोष पर स्त्रि गमनादिक
तेमनो प्रवर्त्तावनारो एटले सर्व दोषनो उत्पन्न करना
रो एहवो॥४॥दुष्ट आत्मा एटले दुष्ट एहवो॥५॥काम
रूप ग्रह एटले काम समूद्रने विशे उत्पन्न थयो एहवो
चित्तनो विभ्रमछे ते केवोछे ते केहेछे॥६॥जे काम ग्रह
जे तेणे॥७॥सर्व एहवु॥८॥जगत एटले जगतना रहे
नार लोक जाणवा॥९॥पराजय पमाडयोछे एटले सर्व
जगतना लोक काम कटर्पने वश थयाछे ए कारणमा
टे कामरूपिग्रहजेतेजदुःखे त्यागवा जोग्यछे॥२१०॥

मो१सेवद१किं१लहद१॥धामं१हारेद१दुःखलो१होद१॥

पावेद१वेमणस्स१॥दुष्पयाणि११४१॥अत्तदोसेण१॥२११॥

अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥पोताना दोषे करिने एटले,वि
ताना अज्ञाने करिने॥३॥ने काम प्रत्ये सेवेछे॥४॥२११॥

स्वाइयस्वदे१॥ काहिते१॥ अणतए१॥ अकयमुना॥॥

१॥ न॥ मुक्तने१॥ धम्म॥ सोउण१॥ य॥ मे॥ पमापति१॥ ॥२॥ ॥५॥

प्रथे॥१॥ जे॥ २॥ पुन्यानुबंधि पुन्य रहित एहवा

॥ ३॥ दुर्गतिमां पडता जे प्राणि तेने धारण करी ।

एहवा प्रने जिनराजे कहेलो एवो जे धर्म ते प्रती

नरी॥ ५॥ सांजलता॥ ६॥ निश्चे॥ ७॥ गयी॥ ८॥ जे पू

धर्म सांजलीने पण॥ १०॥ प्रमाद करेछे एटले

प्रो साचरेछे ते पुरुष॥ ११॥ प्रंत रहित एटले

ने सिने॥ १२॥ गरी गतिषोने विषे भ्रमण प्रती॥ १३॥

शे एटले जे प्रमादि पुरुष प्रति श्रोत रूप जे धर्म

प॥ १४॥ गमयक पुरुषनी समीपे निरंतर सांजलीने

प्रमाद प्रती नरी॥ लोडनाते अनंति वार न्यार

१५॥ नमं डे माटे प्रमाद व्यागसा जांमयते॥ उपदेशा॥

१॥ १॥ १॥ १॥ ॥ मिमादिगी१॥ य॥ मे॥ नरा१॥ अणत॥

१॥ १॥ १॥ १॥ ॥ मुक्तने१॥ धर्म॥ नय१॥ करी॥ ॥ १॥ ॥

अरे॥ १॥ एवट्ट प्रकाश करिने॥ २॥ ॥ यमोपदेशादिक

१॥ १॥ प्रमाद करीने एटला॥ ३॥ गयी॥ ४॥ मिमादिगी

१॥ १॥ नय१॥ करीने गरीने एटला॥ ५॥ गतिषोने

१॥ १॥ एटला॥ ६॥ अने वायुडे निहाय कर्म

ज्ञाना वरणादि ते जेमणे एटले ज्ञाना वरणादि कर्मे
 करीने सहीत एहवा॥८॥जे॥९॥पूरुपा॥१०॥धर्म प्रते॥११॥
 कदाचित स्वजनादिकनी प्रेरणाये करीने साजलेछे तो
 ये पणा॥१२॥नथी॥१३॥करता एटले शुद्ध धर्म प्रत्ये
 नथी आदरता ए कारण माटे लघु एटले हलुवा कर्मि
 जीवोने आ प्रतिश्रोत रूप धर्म सुखे पामवा जोग्य
 थायछे ए उपदेश॥२॥ ६१

पंचेव॥उद्दिउण॥॥पंचेव॥य॥रखिउण॥भावेण॥ ॥

कम्मरयनिष्पमुक्ता॥॥सिद्धिगद्द॥मणुसर॥पत्ता॥० ॥२१७॥

अर्थ॥१॥जे प्राणि पाच हिंसादिक आश्रव प्रतेज
 ॥२॥त्याग करिने एटले छोडिने॥३॥वली॥४॥जावे क
 रिने एटले सम्यक्त्व सहित शुद्ध पोताना परिणामे क
 रिने॥५॥पाच महा व्रतादिक प्रतेज॥६॥पालवे करिने
 ॥७॥कर्म रूप रजे करिने रहित थया एटले आठ कर्म
 रूप रज मल दूर करवे करिने निर्मल थया सता॥८॥
 सर्वनी मध्ये उत्कृष्ट एहवी॥९॥सिद्ध गति एटले मोक्ष
 प्रते॥१०॥पाम्या ए कारण माटे हिंसादिक त्यागवे क
 रिने महा व्रतादिकनू जे पालवु ते मोक्षनु कारण
 जाणवु ॥२१७॥

सबगइ पख्खंदे ११॥ काहिंति ११ अणंतए ११ अकय पुत्रा १॥ जे १
 य १ न १ सुणाते १ धम्म १ ॥ सोडण १ य १ जे १ पमायति १ ॥ २१५॥

अर्थ ॥ १॥ जे ॥ २॥ पुन्यानुंबधि पुन्य रहित एहवा पूरुप
 ॥ ३॥ दुर्गतिमां पडता जे प्राणि तेने धारण करी राखनारो
 एहवो अने जिनराजे कहेलो एवो जे धर्म ते प्रते ॥ ४॥
 नथी ॥ ५॥ साजलता ॥ ६॥ निश्चे ॥ ७॥ वली ॥ ८॥ जे पूरुपा १
 धर्म साजलीने पण ॥ १०॥ प्रमाद करेछे एटले प्रमाद
 प्रते आचरेछे ते पूरुपा ॥ ११॥ अत रहित एटले संसार
 ने विपे ॥ १२॥ सर्व गतियोने विपे भ्रमण प्रते ॥ १३॥ अर
 शे एटले जे प्रमादि पूरुप प्रति श्रोत रुप जे धर्म ते
 प्रते शुध परुपक पूरुपनी समीपे निरंतर साजलीने प
 ण प्रमाद प्रते नथी छोडता ते अनति वार च्यार गतिनेपि
 पे नमेछे माटे प्रमाद त्यागवा जोग्यछे एउपदेश ॥ २१५॥

अणुमिदा १ य १ बहुविह १ ॥ मिथादिठी १ य १ जे १ नरा १ अहमा १ ॥

बडनिवाइय कम्मा १ ॥ मुणति १ १ धम्म १ १ नय १ १ कराति १ ॥ २१६॥

अर्थ ॥ १॥ बहु प्रकारे करिने ॥ २॥ धर्मोपदेशादिक देव
 करिने प्रेरणा करचा एहवा ॥ ३॥ वली ॥ ४॥ मिथ्याद्वि
 एटले सम्यक ज्ञाने करीने रहीत एहवा ॥ ५॥ वली ॥ ६॥
 अवन एहवा ॥ ७॥ अने बांध्युछे निकचित कर्म एटले

ज्ञाना वरणादि ते जेमणे एटले ज्ञाना वरणादि कर्म
 करीने सहीत एहवा॥८॥जे॥१॥पूरुपा॥१०॥धर्म प्रते॥११॥
 कदाचित स्वजनादिकनी प्रेरणाये करीने साजलेछे तो
 ये पणा॥१२॥नथी॥१३॥करता एटले शुद्ध धर्म प्रत्ये
 नथी आदरता ए कारण माटे लघु एटले हलुवा कर्मि
 जीवोने आ प्रतिश्रोत रूप धर्म सुखे पामवा जोग्य
 थायछे ए उपदेश॥२॥ ६१

पचेव॥उमिउण॥॥पचेव॥य॥रखिबउण॥भावेण॥ ॥

कम्मरयनिष्पमुक्ता॥॥सिद्धिगद॥मणुत्तर॥पत्ता॥॥२१७॥

अर्थ॥१॥जे प्राणि पाच हिंसादिक आश्रव न्हें
 ॥२॥त्याग करिने एटले छोडिने॥३॥वली॥४॥नदें
 रिने एटले सम्यक्त्व सहित शुद्ध पोताना परिणने
 रिने॥५॥पाच महा व्रतादिक प्रतेज॥६॥नालवे करिने
 ॥७॥कर्म रूप रजे करिने रहित यया एटले आठ कर्म
 रूप रज मल दूर करवे करिने निर्मल यया लता
 सर्वती मध्ये उत्कृष्ट एहवी॥८॥निद गति एटले नेत
 प्रते॥१०॥पाम्या ए कारण माटे हिंसादिआगवे क
 रिने महा व्रतादिकनू जे पाळवूं न्हें न्हेंनुं कारा
 जाणवु ॥२१७॥

नाणे^१दसण^२चरणे^३॥तव समयमसामेइगुत्ति^४पाछित्ते^५॥

दम^६उत्सग्ग^७ववाए^८॥इहाइअभिग्गहे^९वेव^{१०}॥२१८॥

अर्थ॥१॥ज्ञानने विशेष एटले सम्यक् जाणपणा रूप
ज्ञानने विषे ॥२॥दर्शन एटले तत्त्वश्रद्धान रूप तेहने
विषे॥३॥चारित्र एटले आश्रवणु रोकवु ते रूप तेहने
विषे॥४॥तपवार प्रकारे संजम सत्तर प्रकारे समिति
एटले सम्यक् प्रवर्ति रूप इयां समित्यादिक पावगु
प्ति एटले मन वचन कायाने अशु प्रवर्ति थकि पाडा
वालया ते रूप त्रण ते पूर्वे कहा तप सजमादिक ने
विषे॥५॥प्रायश्चित्तने विषे एटले पाप क्रिया थकि पा
डा यलया रूप दश प्रकारनी आलोचनाने विषे॥६॥
दम एटले पाच इन्द्रियोनु दमवूं एटले बडा करवु ते
हेने विषे॥७॥उत्सर्ग एटले शुद्ध मार्गनु आचरण रूप
तेने विषे॥८॥अपयाद एटले रोगादिक कारण उपस
यये मने त्याग करेली वस्तूनु ग्रहण करवु ते रूप ते
हेने विषे॥९॥द्रव्यादिक अजिग्रह एटले द्रव्य थकि
मेत्र थकि^२ काल थकि^३ जाव थकि^४ ए च्यार ग्रह
रना अजिग्रहने विषे॥१०॥निश्चे॥२१८॥

मदङ्गम^१रणये^२॥निध^३उत्तुत्त^४मणादित्ते^५॥

तस्स भवो अहितरण ॥ १० ॥ पवब्जा ए ॥ य ॥ ११ जम्म ॥ १२ ॥ २१९ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ ए पूर्वे कल्या ज्ञान दर्शनादिक पदार्थेने वि
पे श्रद्धा सहित ॥ २ ॥ आचरणा ए करिने ॥ ३ ॥ निरतरा ॥ ४ ॥
उद्यमवत एहवो ॥ ५ ॥ वेहेतालीस दोष रहित आहार
नी शुद्धिने विपे रहेलो एटले दोष रहित आहार ग्र
हण करतो एहवो जे साधु ॥ ६ ॥ ते ज्ञानादिक गुणे क
रिने सहित एहवा साधुने ॥ ७ ॥ प्रवर्ज्या एटले दिक्षानु
ग्रहण करवु एटले दिक्षा लेगी ॥ ८ ॥ वली ॥ ९ ॥ जन्म एट
ले पूर्वे कल्या एहवा जे श्रद्धा सहित गुणोये करिने स
हित एहवु मनुष्यपणु ए प्रवर्ज्या अने मनुष्य जन्म ए
वेवाना ॥ १० ॥ ससार समुद्र थकी तारनार थायछे एट
ले श्रद्धा सहित शुद्ध सजम पालवे करिने ससार समु
द्र प्रते तरेछे केमजे श्रद्धा विनानुचारित्र मोक्षनु कार
ण थाय नहिं अने फोगट थाय अने गुण विनानु मनु
ष्यपणु फोगटछे ते कारण माटे प्रथम समकितनो उ
द्यम करवो ए उपदेश ॥ ११ ॥ निश्चे ॥ २१९ ॥

वे ॥ घरसरणपसत्ता ॥ १ ॥ उक्कायरिउ ॥ सकिचणा ॥ अजया ॥ १ ॥

नवर ॥ भुत्तुण ॥ घर ॥ १ ॥ घरसकमण ॥ १ ॥ कय ॥ १ ॥ तेहि ॥ १ ॥ २२० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ घर उपाश्रादीकनु सोच कराववु तेहेने विशे

नाने१दंसन१चरणे॥तव रूपमसामिदृगुत्ति१पाठिते॥

दम१डरसग१ववाए॥इवाइअभिगाहे१चेव१॥२१॥

अर्था॥१॥ज्ञानने विशेष एटले सम्यक् जाणपणा रूप
ज्ञानने विषे ॥२॥दर्शन एटले तत्त्वश्रद्धान रूप तेहने
विषे॥३॥चारित्र एटले आश्रवनुं रोकवुं ते रूप तेहने
विषे॥४॥आनपचार प्रकारे संजम सत्तर प्रकारे समिति
एटले सम्यक् प्रवर्ति रूप इयां समित्यादिक पांच गु
णि एटले मन वचन कायाने अशु प्रवर्ति धकि पापा
नाशना ते रूप अण ते पूर्वे कल्या तप सजमादिक ने
विषे॥५॥आश्रयभित्तने विषे एटले पाप क्रिया धकि पा
पा दण्डा रूप दश प्रकारनी आलोचनाने विषे॥६॥
दम एटले पाप इंद्रियोनु दमवुं एटले बश करवुं ते
देने विषे॥७॥आत्ममं एटले शुद्ध मार्गनुं आचरण रूप
ने विषे॥८॥आत्मपाद एटले रोगादिक कारणा उप
दरे सने त्याग केली वस्तुनुं ग्रहण करवुं ते रूप
ने विषे॥९॥आत्म्यादिक अनिग्रह एटले द्रव्य धकि
नेत्र दक्षिण कालाधकि३ जाव धकि४ एव्यार प्रा
वन्त अनिग्रहने विषे॥१०॥निश्चे॥२१॥

अथ एवम एव ३॥ वि० १॥ द्रव्यपुत्र ॥ समगाडि ३॥

नने दम्भ चरने ॥ वाक्यमगमिदमासे ॥ १२० ॥

दम्भ उन्मत्त गत ॥ साहचर्यमगरे चरे ॥ १२१ ॥

अने ॥ ज्ञानने विशेषे एटले सम्पत्त जाणवता
 ज्ञानने विरे ॥ २॥ दर्शन एटले तत्त्वभ्रमन रूप ते
 विरे ॥ चरित एटले साधनं रोक्तु ते रूप ते
 विरे ॥ साधन प्रकारे संजम सत्तर प्रकारे साधन
 ॥ ३ ॥ सम्पत्त चरित रूप द्वयो समिमादिक पा
 ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

तस्स भवो अहितरण १०॥ पवब्बा ए ११ जम्म १२ तु ॥ २१९ ॥

अर्थ ॥ १॥ ए पूर्वे कहा ज्ञान दर्शनादिक पदार्थेने वि
पे श्रद्धा सहित ॥ २॥ आचरणाए करिने ॥ ३॥ निरतरा ॥ ४॥
उद्यमवत एहवो ॥ ५॥ वेहेतालीस दोष रहित आहार
नी शुद्धिने विपे रहेलो एटले दोष रहित आहार ग्र
हण करतो एहवो जे साधु ॥ ६॥ ते ज्ञानादिक गुणे क
रिने सहित एहवा साधुने ॥ ७॥ प्रवर्ज्या एटले दिक्षानु
ग्रहण करवु एटले दिक्षा लेवी ॥ ८॥ वली ॥ ९॥ जन्म एट
ले पूर्वे कहा एहवा जे श्रद्धा सहित गुणोये करिने स
हित एहवु मनुष्यपणु ए प्रवर्ज्या अने मनुष्य जन्म ए
वेवाना ॥ १०॥ मसार समुद्र थकी तारनार थायछे एट
ले श्रद्धा सहित शुद्ध सजम पालवे करिने ससार समु
द्र प्रते तरेछे केमजे श्रद्धा विनानुचारित्र मोक्षनु कार
ण थाय नहिं अने फोगट थाय अने गुण विनानु मनु
ष्यपणु फोगटछे ते कारण माटे प्रथम समकितनो उ
द्यम करवो ए उपदेश ॥ ११॥ निश्चे ॥ २१९ ॥

जे घरसरण पसत्ता १॥ उक्कायरिउ २॥ सकिंचणा ३॥ अजया ४॥

नवर ५॥ मुत्तुण ६॥ घरसकमण ७॥ कय ८॥ तेहि ९॥ २२० ॥

अर्थ ॥ १॥ घर उपाश्रादीकनु सोच कराववु तेहेने विशे

आशक्त एटले ते घरादिकना आरजे करिने सहित ए
 हवा॥२॥छकायना शत्रु एटले प्रयन्यादिकना विराय
 क एहवा॥३॥धन धान्यादिक परिग्रहे करिने सहित
 एहवा॥४॥असजत एटले नथी वश करचा मन वक्न
 कायाना जोग ते जेमणे एहवा॥५॥जे जती एटले ना
 म मात्र साधु॥६॥ते नाम मात्र साधु वेश धारण कर
 नारा जे तेमणे॥७॥केवला॥८॥प्रथमना घर प्रते॥९॥
 मुकिने वेशना मिपे करिने ॥१०॥ घर सक्रमण एटले
 नविन घरने विपे प्रवेश॥११॥ करघो एटले एक घर
 मुकिने बिजुं घर माड्यु पण बिजु काई नवु निपज्यु
 नहि ए उपदेश॥२२०॥

उत्सुत्त१मायरंतो१॥बंध१कम्म१सुचिकण१जीवो१॥

संसार१०च११पवदृ११॥मायामोस१०च१कुवड्य१॥२२१॥

अर्थ॥१॥आ जिव जे ते॥२॥उत्सूत्र एटले सूत्र थकि
 ३॥आचरतो सतो॥४॥अतिशे चीकणु एटले नि
 एहवु॥५॥ज्ञानावरणादि कर्म प्रते॥६॥वाधेछे

मेलांण करेछे॥७॥वली

करिने सहित मृपावा

सतो बोळतो स

तो॥१०॥ससार प्रते॥११॥वधारेछे एटले जे पुरुष आ
रक्षादिकनो काम करतो सतो पोताने विपे साधु पद
मानतो सतो तथा विजानी पासे मनावतो सतो ते
रूप उत्सूत्र बोलवे करिने अनत संसार वधारेछे
॥१२॥निश्चे ए जाव॥२२१॥

मद१गिन्हद१वपलोवो१॥अहव१न१गिन्हद१ससिबुच्छेउ०॥
पास१सगमोवि१अ१वयलोवो१०तो११वर११मसंगो११॥२२२॥
अर्थ॥१॥जो पासथ्यादिकना आणेला आहारादिक
प्रते॥२॥साधु जे ते ग्रहण करेतो॥३॥व्रतनो लोप थाय
एटले महाव्रतनो नाश थाय॥४॥अथवा ॥५॥न ॥६॥ते
आहारादिक ग्रहण करेतो॥७॥शरीरनो व्युछेद एटले
नाश थाय एटले ए पासथ्यादिक बे प्रकारे साधुने उ
पघात करनारा थायछे॥८॥वली॥९॥पासथ्यादिकनो
सगम जे ते पण॥१०॥व्रतनो लोपनारो एटले महाव्र
तनो लुटनारोछे॥११॥ते कारण माटे॥१२॥पासथ्यादि
कनो सग न करवो ते॥१३॥श्रेष्ठे ते आगल गाथा
मा देखाडेछे॥२२२॥

आलावो१सवासो१वीसभो१सपवो१पसंगो१अ०

हीणायारेहि१सम१॥सवतिणदाहि१पाडिकुष्टो१॥२२३॥

आशक्त एटले ते घरादिकना आरजे करिने सहित ए
 हवा॥२॥छकायना शत्रु एटले प्रयव्यादिकना पिराव
 क एहवा॥३॥धन धान्यादिक परिग्रहे करिने सहित
 एहवा॥४॥असजत एटले नथी वश करया मन वचन
 कायाना जोग ते जेमणे एहवा॥५॥जे जती एटले ना
 म मात्र साधु॥६॥ते नाम मात्र साधु वेश धारण कर
 नारा जे तेमणे॥७॥केवला॥८॥प्रथमना घर प्रते॥९॥
 मुकिने वेशना मिपे करिने ॥१०॥ घर सक्रमण एटले
 नविन घरने विपे प्रवेश॥११॥ करयो एटले एक घर
 मुकिने बिजु घर मांड्यु पण बिजु काई नवु निपज्यु
 नहि ए उपदेश॥२२०॥

उत्सुत्तमायरंतो॥१॥ब्रह्मकम्मसुचिकणजीवो॥

ससार०च०पवदृष्ट०॥मायामोक्षच०कुवृद्धय०॥२२१॥

अर्थ॥१॥आ जिव जे तो॥२॥उत्सूत्र एटले सूत्र थकि
 उलटुं॥३॥आचरतो सतो॥४॥अतिशे चीकणुं एटले नि
 काचित एहवा॥५॥ज्ञानावरणादि कर्म प्रते॥६॥वाधेछे
 एटले आत्म प्रदेशनी साथे मेलण करेछे॥७॥वली
 रता आण मृखा एटले मायाए करिने सहित मृपावा
 सहहणायते प्रते॥८॥करतो सतो एटले बोलतो स

तो॥१०॥ससार प्रते॥११॥वधारेछे एटले जे पुरुष आ
रजादिकनो काम करतो सतो पोताने विपे साधु पद
मानतो सतो तथा विजानी पासे मनावतो सतो ते
रूप उत्सूत्र बोलवे करिने अनंत संसार वधारेछे
॥१२॥निश्चे ए नाव॥२२१॥

मद॥गिन्हद॥वयलोवो॥॥अहव॥न॥गिन्हद॥ससिबुच्छेउ॥
पासथसगमोवि॥अ॥वयलोवो॥तो॥वर॥मसंगो॥॥२२२॥
अर्थ॥१॥जो पासथ्यादिकना आणेला आहारादिक
प्रते॥२॥माधु जे ते ग्रहण करेतो॥३॥व्रतनो लोप थाय
एटले महाव्रतनो नाश थाय॥४॥अथवा ॥५॥न ॥६॥ते
आहारादिक ग्रहण करेतो॥७॥शरीरनो व्युछेद एटले
नाश थाय एटले ए पासथ्यादिक बे प्रकारे साधुने उ
पघात करनारा थायछे ॥८॥वली॥९॥पासथ्यादिकनो
सगम जे ते पण॥१०॥व्रतनो लोपनारो एटले महाव्र
तनो लुटनारोछे॥११॥ते कारण माटे॥१२॥पासथ्यादि
कनो सग न करवो ते॥१३॥श्रेष्ठछे ते आगल गाथा
मा देखाडेछे॥२२२॥

आलावो॥सवासो॥वीमभो॥संपवो॥पसंगो॥अ॥

हीणायारेहि॥सम॥सबनिणदाहि॥पडिकुष्टो॥॥२२३॥

अर्थ॥१॥हीणाचारि एटले पासथ्यादिकनी॥२॥ साथे
 ॥३॥आलाप एटले पासथ्यादिकनी साथे बोलु॥४॥
 अने पासथ्यादिकनी साथे एकठा रेहेवु वली॥५॥तेम
 नो विश्वास करवो अने वली॥६॥तेमनो परिचय करवो
 ॥७॥वली॥८॥तेमनो प्रसंग एटले वस्त्रादिक लेवा, आ
 पवादिक व्यवहारनु करवुं एटला वाना॥९॥सर्व जिन
 द्र जे तेमणे॥१०॥निषेध करयुछे एटले पासथ्यादिक
 एटले ज्ञान दर्शन चारित्र रहित फकत एक साधु वेष
 धारण करनारा एहवा पुरुषोनी साथे काई पण सबधरा
 खवोनहि एउपदेश वली आगली गाथामा कहेछे॥२२॥

अनुब्रजं पिएहि॥१॥हसिउदुसिएहि॥२॥खिण्णमाणो॥३॥अ

पासथ्यमज्ञयारे॥४॥बलावि॥५॥नई॥वाउली॥होइ॥६॥२२॥

। अर्थ॥१॥माहोमां हि बोलवें करिने एटले विकथादिक
 करवे करिने अने॥२॥हसवे करिने रोमरायनु विकस्व
 र थवु तेणे करिने एटले परस्पर हासि विनोदादिक
 करवे करिने॥३॥पासथ्याओनी मध्ये॥४॥बलात्कारे
 करिने एटले हठे करिने॥५॥प्रेरणा करवा माड्यो एट
 ले हास्यादिक कराववा माड्यो एहवो॥६॥जति एटले
 साधु॥७॥व्याकुल एटले पोताना धर्म थकि भ्रष्ट॥८॥

उपदेशमाला

थाय ए कारण माटे ज्ञानादिक गुणे करिने रहित
वा पासध्यादिकनो ससर्ग साधु तथा श्रावक त
म्यगूढाष्टि जीवोये जरुर त्यागवा जोग्यछे ए जाव
यलो ॥ २२४ ॥

लोण १५ वि १ कुससगी प्रापीयज्ञण १ दुन्नियथ १ मद्रवसण १ ॥ निदइ
निरुब्जम १ पिअकुसीलजण १ ॥ मेव १ ॥ साहुजणो १ ॥ २२५ ॥
अर्थ ॥ १ ॥ नेमलोकनी मध्ये ॥ २ ॥ पण ॥ ३ ॥ कुसगति एट
ले माठा पुरुषनो ससर्गछे प्रीय एटले वल्लभ ते जेहने
एटले माठा पुरुषना ससर्ग सहित एहवो ॥ ४ ॥ दुष्ट एटले
विपरित वेपनो धारण करनार एहवो ॥ ५ ॥ अतिशय जु
गटादिक सातवसने करिने सहित एहवो ॥ ६ ॥ जन ए
टले पुरुष ते प्रते ॥ ७ ॥ लोक जे ते निंदेछे एटले निदा
करेछे ॥ ८ ॥ नेम साधु जन एटले रुडो पुरुष जे ते ॥ ९ ॥ उ
पम रहित एटले पोताना आत्माने साधु पदने विशे
१ ॥ १० ॥ प्रिय एटले वल्लभछे कुसिलिया जन एटले लो
ते जेहने एटले ज्ञान दर्शन चारित्रे करिने रहित ए
लोकनी उपर प्रितिनो करनार एहवो नाम मात्र
वेपनो धारण करनार जे पुरुष ते प्रते निंदेछे ए

टले साधु मुनिराज तथा सम्यक् दृष्टि श्रावक तेहनो
ससर्ग करता नथी ते निदा कहिये ए भाव॥११॥एव
तिनिश्चे॥२२५॥

निचं^१संक्रिअ^२भीउ^३॥गम्मा^४सवस्स^५खलियचारितो^६॥साहु
जणस्स^७अवमठ^८॥मडवि^९पुण^{१०}दुग्गइ^{११}जाइ^{१२}॥२२६॥

अर्थ॥१॥निरंतरा॥२॥शका सहित एटले रखे कोइ प
ण माहरी वातकरे एहवो॥३॥जय सहित एटले सर्व
लोक थकि डरतो एहवो॥४॥सर्व बालादिक जे तेमने
पण॥५॥गम्य एटले पराजव करवाने जोग्य एटले स
र्वबालादिक थकि पराजव पामतो एहवो॥६॥खलणा
पमाड्युं छे एटले विराध्यु छे चारित्र ते जेणे एहवो
ने वली॥७॥उत्तम पुरुषोने॥८॥अमान्य एटले उत्तम पु
रुषोए आदर नकरेलो एहवोसतो॥९॥वली॥१०॥ए
लोकने विशे मरण पाम्यो एहवो पण॥११॥दुर्गतिप्रते
१२॥जायछे ए कारण माटे प्राणात थये सते पण चा
रित्र न विराधवु ए उपदेश॥२२६॥

गिरिसुअपुणसुआण^१॥सुविहिय^२ओहरण^३कारण^४विहन्नु^५॥

वज्जिज्ज^६सीलवीगले^७उज्जुअ^८सीले^९हविज्ज^{१०}नइ^{११}॥२२७॥

अर्थ॥१॥हे सुविहित एटले हे जला शिष्या॥२॥गि

रिशुक एटले पर्वतने विपे रेहेनारो एहवो जे पोपट
 तेहनु गिरिशुक एहवु नाम पड्युं अने पुष्पशुक एट
 ले वाडिमा रेहेनारो एहवो जे पोपट तेहनु पुष्पशुक
 एहवु नाम पड्यु ते वे शुकनु॥३॥उत्तम अधम पूरुप
 ना ससर्गे करिने गुण दोशनु कारण एहवु॥४॥उदाह
 रण एटले द्रष्टांत प्रते॥५॥जाणिने॥६॥साधु जे ते॥७॥
 साधुना आचारे करीने रहीत एहवा पुरुषो प्रते॥८॥
 वर्ज एटले त्याग करे अने बलि॥९॥चारित्रने विशे
 ॥१०॥उद्यमवाना॥११॥याय एटले उद्यम करे॥२२७॥

उमन्नचरणकरण॥जहणो'वदति'कारण'पण॥

जे'मुवेदयपरमथा'॥ते'वदते'निवारति'॥२२८॥

अर्थ॥१॥जति एटले साधु मुनीराज जे ते॥२॥सि
 थिल चरण एटले पच महाव्रतादि मूल गुण रूप क
 रण एटले पच समीत्यादि उत्तर गुण रूपछे जेहने ए
 हवो एटले चरण शितरि करण शितरिने विशे शिथि
 ल एटले जयार्थ उद्यम रहीत एहवो जे पूरुप एटले
 सवेग पक्षी ते प्रते॥३॥कारण प्रते॥४॥पामीने एटले
 ज्ञानादिक जणवानी अपेक्षाए करीने॥५॥नमस्कार क
 रेछे तेवारे॥६॥जलिप्रकारे जाण्याछे परमार्थ एटले

सिद्धान्तनो सार ते जेमणे एटले तत्वना जाण एहवा
 ॥७॥ जे गिथिल आचारवत पूरूप एटले सवेग पक्षी
 जे ते ॥८॥ वदन करता एहवा ॥९॥ ते मूनीराज प्रते ॥१०॥
 निवारण करेछे एटले कहेछे जे मने वदन करशो न
 ही केमजे ते तत्वना जाण शुद्ध प्ररूपक पोताना वि
 तने पिगे विचारेछे जे सुविहीत मुनियोनि पासे वदन
 करावु अमने घटतु नथी ए प्रकारे पोताना दोष जा
 नेछे ते कारण माटे निषेध करेछे ॥२२८॥

॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥ ॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥ ॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥ ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ ॥४८॥ ॥४९॥ ॥५०॥ ॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ ॥५६॥ ॥५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥ ॥६०॥ ॥६१॥ ॥६२॥ ॥६३॥ ॥६४॥ ॥६५॥ ॥६६॥ ॥६७॥ ॥६८॥ ॥६९॥ ॥७०॥ ॥७१॥ ॥७२॥ ॥७३॥ ॥७४॥ ॥७५॥ ॥७६॥ ॥७७॥ ॥७८॥ ॥७९॥ ॥८०॥ ॥८१॥ ॥८२॥ ॥८३॥ ॥८४॥ ॥८५॥ ॥८६॥ ॥८७॥ ॥८८॥ ॥८९॥ ॥९०॥ ॥९१॥ ॥९२॥ ॥९३॥ ॥९४॥ ॥९५॥ ॥९६॥ ॥९७॥ ॥९८॥ ॥९९॥ ॥१००॥

॥१॥ उत्तम साधुश्रोत्री पासे वदन करावतो ॥
 ॥२॥ वंदन करता एहवा जे ते उत्तम साधुश्रोत्री प्रते न
 निवारण करता सतो ॥३॥ जला मार्गयकि एटले मी
 क्ष मार्गयकि ॥४॥ पोताना आत्मा प्रते ॥५॥ नाश को
 ॥६॥ अनिश्रोत्री ॥७॥ मृग एटले सिद्धान्तना तत्वना अना
 ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥ ॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥ ॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥ ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ ॥४८॥ ॥४९॥ ॥५०॥ ॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ ॥५६॥ ॥५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥ ॥६०॥ ॥६१॥ ॥६२॥ ॥६३॥ ॥६४॥ ॥६५॥ ॥६६॥ ॥६७॥ ॥६८॥ ॥६९॥ ॥७०॥ ॥७१॥ ॥७२॥ ॥७३॥ ॥७४॥ ॥७५॥ ॥७६॥ ॥७७॥ ॥७८॥ ॥७९॥ ॥८०॥ ॥८१॥ ॥८२॥ ॥८३॥ ॥८४॥ ॥८५॥ ॥८६॥ ॥८७॥ ॥८८॥ ॥८९॥ ॥९०॥ ॥९१॥ ॥९२॥ ॥९३॥ ॥९४॥ ॥९५॥ ॥९६॥ ॥९७॥ ॥९८॥ ॥९९॥ ॥१००॥

तिथशे एम ते मूर्ख केमनथी वीचारतो एटले जेज्ञान
दर्शन चारित्र रहीत उत्सूत्र प्ररूपक अनेवली पोताने
विशे गुणविना साधुपणु मानतो अने लोकोनी पासे
मनावतो ने पुरुषने पूर्वे कह्यो ते विचार आवेनही अने
साधु श्रावकना मार्गथकी चूकेछे ते सवेग पक्षी पण
न कहिए ते सर्व पासथ्यो मिथ्याद्रष्टी कहिए॥२२९॥

वदइ उभउकाल ॥ १॥ चेट्याइ ॥ धयधुईपरमो ॥

निणवरपडिमाघरधूवपुष्पगधघणुदुत्तो ॥ २३० ॥

॥ हवे श्रावकना गुण वर्णवेछे ॥

अर्थ॥१॥ चेत्य एटले जिनविंच ते प्रते॥२॥ चे कालने
विशे अने तेहना संबंधथकी मध्यांननु ग्रहण करवुं ए
टले त्रण कालने विशे॥३॥ पण॥४॥ विधि सहित वद
न करे ॥५॥ एहवो अने वली अक्तामरादि स्तोत्र
ससार दावादिक स्तूति तेमने विशे प्रधान एटले स्त
व स्तूति गणवाने विशे उत्कृष्टो एहयो॥६॥ सामान्य
केवली तेमनी मध्ये श्रेष्ठ एटले तिर्थकर तेमनि प्रति
माओ अने जिनघर एटलेविधी सहित डेरासर तेमने
विशे धुप अगुरु प्रमुख मालतीना फूल सुगाधि द्रव्य
वरासप्रमुख तेमणे करीने पूजवु एटले जिनवरनी प्रति

सिद्धांतनो सार ते जेमणे एटले तत्वना जाण एहवा
 ॥७॥जे शिथिल आचारवत पूरूप एटले सवेग पक्षी
 जे ते॥८॥वदन करता एहवा॥९॥ते मूनीराज प्रते॥१०॥
 निवारण करेछे एटले कहेछे जे मने वदन करशो न
 ही केमजे ते तत्वना जाण शुद्ध प्ररूपक पोताना वि
 तने विशे विचारेछे जे सुविहीत मुनियोनि पासे वंदन
 कराववु अमने घटतु नथी ए प्रकारे पोताना दोष जा
 ऐछे ते कारण माटे निषेध करेछे॥२२८॥

मुविहियवदावतो१॥नासेइ२अप्य३नु४मुपहाउ५॥मुविहप,
 हविष्यमुको॥रुह९मप्य८न१०याणई११मूढो५॥२२९॥

अर्थ॥१॥उत्तम साधुओनी पासे वदन करावतो ए
 टले वदन करता एहवा जे ते उत्तम साधुओ प्रते न
 निवारण करतो सतो॥२॥जला मारगथकि एटले मो
 क्ष मारगथकि॥३॥पोताना आत्मा प्रते॥४॥नाश करे
 छे॥५॥निश्चो॥६॥मूर्ख एटले सिद्धांतना तत्वना अजाण
 एहयो॥७॥जे प्रकारना मारगथकि भ्रष्ट थयो सतो ए
 टले साधु तथा आवरुना मारगथकि चुफ्यो सतो
 ॥८॥पोताना आत्मा प्रते॥९॥अप्यमा॥१०॥नथी॥११॥जा
 णतो जे हु वे मार्गथकि भ्रष्ट थाउछु माहरी दिग

तिथशे एम ते भूर्ख केमनथी वीचारतो एटले जेज्ञान
दर्शन चारित्र रहीत उत्सूत्र प्ररूपक अने वली पोताने
विशे गुणविना साधुपणु मानतो अने लोकोनी पासे
मनावतो ने पुरुषने पूर्व कह्यो ते विचार आवेनही अने
साधु श्रावकना मार्गथकी चुकेछे ते सवेग पक्षी पण
न कहोए ते सर्व पासध्यो मिध्याद्रष्टी कहोए॥२२९॥

वदइ^४ उभउकाल^१पि॥ चेइयाइ^१थय^१पुईपरमो^१॥

निणवरपाडिमाधरधूवपुष्पगधघणुब्जुस्तो॥२३०॥

॥ हवे श्रावकना गुण वर्णवेछे ॥

अर्थ॥१॥ चैत्य एटले जिनविब ते प्रते॥२॥ त्रे कालने
विशे अने तेहना संबंधथकी मध्यांननु ग्रहण करवु ए
टले त्रण कालने विशे॥३॥ पण॥४॥ विधि सहित वद
न करे ॥५॥ एहवो अने वली जक्तामरादि स्तोत्र
मसार दायादिक स्तूति तेमने विशे प्रधान एटले स्त
व स्तूति गणवाने विशे उत्कृष्टो एहवो॥६॥ सामान्य
केवली तेमनी मध्ये श्रेष्ठ एटले तिर्थकर तेमनि प्रति
माओ अने जिनघर एटलेविधी सहित डेरासर तेमने
विशे धुप अगुरु प्रमुख मालतोना फूल सुगाधि द्रव्य
वरासप्रमुख तेमणे करीने पूजवु एटले जिनवरनी प्रति

मानी आगल धूपनूं करवुं अने डेरामरने विशेष धूप करवो
अने जिन पडि मानी पुष्पादिके करीने पूजा करवी तेहने
विशे उद्यमवत एहवो जे पुरुष ते श्रावक कहिए २३०

सुविणिच्छिय एगमई १॥ धम्ममि २ अनन्नदेव उ ३ ४ पुणो १॥

नय ८ कुसम एशु २ उज्जइ १॥ पुत्रावरवाहिय ३ ४ मु ५॥ २३१॥

अर्थ ॥ १॥ वली ते श्रावक केहेवो ते केहेछे ॥ २॥ यम
ने विशे एटले जिनराज नापित धर्मने विशे ॥ ३॥ अ
तिशय निश्चल एहवी अने एकाग्र एहवीछे मति ते
जेहनी एटले जिन धर्मने विशे एक उपयोगवत ए
हवो ॥ ४॥ वली ॥ ५॥ नथी अन्य एटले जिनराजथी बीजो
देव ते जेहने एटले जिनविना मन वचन कायाए क
रिने बीजा देवने न मानतो एहवो जे श्रावक ॥ ६॥ पूर्वा
पर एटले आगल पाछल बाधा सहित एटले विरु
ध एहवाछे अर्थ ते जेमने विशे एटले आगल पाछल
अणमिलता अर्थोए करिने सहित एहवा ॥ ७॥ कुशाख
एटले स्वमत मिथ्या द्रष्टी एटले - निन्दवादिक तथा
पाखडी बौधादिक तेमना रचेलो जे शास्त्र तेहने विशे
॥ ८॥ नहिज १॥ रीझे एटले ते शास्त्रनी प्रशसान करे २३१

दहुण १ कुलिगीण १॥ तसथावग्भूयमद्वण ३ विविह १॥

धम्माउ० न० चालिङ्गद० ॥ देवेहिं सद्दणहिं पि० ॥ २३२ ॥

अर्थ॥ १॥ कुत्तिसत एटले माटुछे लिंग एटले वेश ते
जेमनो एहवा जे पूरुप तेमनु॥ २॥ नाना प्रकारनु॥ ३॥
त्रस एटले बेरद्रियादिक थावर एटले प्रथव्यादिक भू
त एटले प्राणि तेमनु मर्दन एटले विनाश प्रते ॥ ४॥
देखीने॥ ५॥ जिनराजे कहेला एहवा धर्मथकी सम्यक्त्व
गुण सहीत श्रावक जे ते॥ ६॥ इद्र सहित एहवाया॥ ७॥
पिण॥ ८॥ देवता जे तेमणे॥ ९॥ ना॥ १०॥ चलावि शकीए
एटले समकीत पूर्वक गुणोए करीने सहीत एहवो जे
श्रावक ते प्रते इद्र सहित देवता जे ते पण शुद्ध धर्म
थकि चलावि शके नहि एतातपर्यं॥ २३२ ॥

वदइ० पहिपुच्छइ० पबुवासेइ० साहूणो० सयय० मेव० प० ॥ ५६६०
मुणेइ० गुणेइ० ११०॥ मणस्स० धम्म० पत्तिवट्टे० ॥ २३३ ॥

अर्थ॥ १॥ जलो श्रावक जे ते साधु प्रते एटले मोक्ष
मार्गना साधक एहवा मुनिराज प्रते॥ २॥ निरतरा॥ ३॥
वटन करेछे एटले विधि सहित प्रणाम करेछे अने पत्ती
॥ ४॥ पोताना सदेह प्रते मुनिराजने पृछेछे अने पत्ती
मुनिराज प्रते॥ ५॥ प्रजुपासना करेछे एटले सेवेछे॥ ६॥
निश्च॥ ७॥ वली ते श्रावक शु करेछे ते कहेछे॥ ८॥ धर्म

धम्माउ०न०चालिङ्गज०१॥देवोहि०सद्वदएहि०पि०॥२३२॥

अर्थ॥१॥कुत्सित एटले माठुछे लिंग एटले वेश ते
जेमनो एहवा जे पूरुप तेमनु॥२॥नाना प्रकारनु॥३॥
त्रस एटले बेरद्रियादिक थावर एटले प्रथव्यादिक भू
त एटले प्राणि तेमनु मर्दन एटले विनाश प्रते ॥४॥
देखीने॥५॥जिनराजेकहेला एहवा धर्मथकी सम्यक्त्व
गुण सहीत श्रावक जे ते॥६॥इद्र सहित एहवाया॥७॥
पिण॥८॥देवता जे तेमणे॥९॥ना॥१०॥चलावि शकीए
एटले समकीत पूर्वक गुणोए करीने सहीत एहवो जे
श्रावक ते प्रते इद्र सहित देवता जे ते पण शुद्ध धर्म
थाकि चलावि शके नहि एतातपर्य॥२३२॥

वदइ०पडिपुच्छइ०पडनुवासेइ०साहूणो०सयय०मेव०च०॥पढइ०
सुणेइ०गुणेइ०१॥१०॥जणस्स०धम्म०परिकहेइ०॥२३३॥

अर्थ॥१॥जलो श्रावक जे ते साधु प्रते एटले मोक्ष
मार्गना साधक एहवा मुनिराज प्रते॥२॥निस्तरा॥३॥
वदन करेछे एटले विधि सहित प्रणाम करेछेअनेवली
॥४॥पोताना सदेह प्रते मुनिराजने पूछेछे अने वली
मुनिराज प्रते॥५॥प्रजुपासना करेछे एटले सेवेछे॥६॥
निश्चे॥७॥वली ते श्रावक शु करेछे ते कहेछे॥८॥धर्म

धम्माङ्गनं चालिङ्गद्वयं ॥ देवेहिं सद्दणहिं पियं ॥ २३२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ कुत्सित एटले माठुछे जिग एटले वेश ते
जेमनो एहवा जे पूरुप तेमनु ॥ २ ॥ नाना प्रकारनु ॥ ३ ॥
अस एटले बेरद्रियादिक थावर एटले प्रथव्यादिक भू
त एटले प्राणि तेमनु मर्दन एटले विनाश प्रते ॥ ४ ॥
देखीने ॥ ५ ॥ जिनराजे कहेला एहवा धर्मथकी सम्यक्त्व
गुण सहीत श्रावक जे ते ॥ ६ ॥ इद्र सहित एहवाया ॥ ७ ॥
पिण ॥ ८ ॥ देवता जे तेमणे ॥ ९ ॥ ना ॥ १० ॥ चलावि शकीए
एटले समकीत पूर्वक गुणोए करीने सहीत एहवो जे
श्रावक ते प्रते इद्र सहित देवता जे ते पण शुद्ध धर्म
थाकि चलावि शके नहि एतातपर्यं ॥ २३२ ॥

वदइ पडिपुच्छइ पडनुवासेइ ॥ माहूणो सपय मेव च ॥ पढइ
मुणेइ गुणेइ ॥ ११ ॥ ॥ जणस्स ११ धम्म ११ परिकहेइ ॥ १२ ॥ २३३ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जलो श्रावक जे ते साधु प्रते एटले मोक्ष
मार्गना साधक एहवा मुनिराज प्रते ॥ २ ॥ निरतर ॥ ३ ॥
वदन करेछे एटले विधि सहित प्रणाम करेछे अने वली
॥ ४ ॥ पोताना सदेह प्रते मुनिराजने पूछेछे अने वली
मुनिराज प्रते ॥ ५ ॥ प्रजुपासना करेछे एटले सेवेछे ॥ ६ ॥
निश्चे ॥ ७ ॥ वली ते श्रावक शु करेछे ते कहेछे ॥ ८ ॥ धर्म

मानी आगल धूपनू करवुं अने डेगमग्ने पिशे धूप करवो
अने जिन पडि मानी पुष्पादिके करीने पूजा करवी तेहने
विशे उद्यमवत एहवो जे पुरुष ते श्रावक कहिए २३०

सुविणन्त्रियएगमई ॥ धम्ममि अनन्नदेवउ यशुणो ॥

नय कुसमएशु रज्जइ ॥ गुवावरवाहियथेमु ॥ २३१ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ वली ते श्रावक केहेवोटे ते केहेछे ॥ २ ॥ मग्ने
विशे एटले जिनराज चापित धर्मने पिशे ॥ ३ ॥ अ
तिशय निश्चल एहवी अने एकाग्र एहवीछे मति ते
जेहनी एटले जिन धर्मने विशेज एक उपयोगवत ए
हवो ॥ ४ ॥ वली ॥ ५ ॥ नथी अन्य एटले जिनराजथी बीजो
देव ते जेहने एटले जिनविना मन वचन कायाए क
रिने बीजा देवने न मानतो एहवो जे श्रावक ॥ ६ ॥ पुर्वा
पर एटले आगल पाछल बाधा सहित एटले विरु
ध एहवाछे अर्थ ते जेमने विशे एटले आगल पाछल
अणमिलता अर्थीए करिने सहित एहवा ॥ ७ ॥ कुशास्त्र
एटले स्वमत मिथ्या द्रष्टी एटले निन्दुवादिक तथा
पाखडी बौधादिक तेमना रचेला जे शास्त्र तेहने विशे
॥ ८ ॥ नहिज ॥ ९ ॥ रीझे एटले ते शास्त्रनी प्रशसान करे २३१

दुण कुलिगीण ॥ तसधाव भूयमहण विविह ॥

स्मात्तु न चालिङ्गद १॥ देवो हि स इद एहि ५॥ २३२॥
 र्थ ॥ १॥ कुत्सित एटले माठुछे लिंग एटले वेश ते
 नो एहवा जे पूरुप तेमनुं ॥ २॥ नाना प्रकारनु ॥ ३॥
 एटले बेरद्वियादिक थावर एटले प्रथव्यादिक भू
 एटले प्राणि तेमनु मर्दन एटले विनाश प्रते ॥ ४॥
 नो ॥ ५॥ जिनराजे कहेला एहवा धर्मथकी सम्यक्त्व
 सहीत श्रावक जे ते ॥ ६॥ इंद्र सहित एहवाया ॥ ७॥
 ॥ ८॥ देवता जे तेमणे ॥ ९॥ ना ॥ १०॥ चलावि शकीए
 ले समकीत पूर्वक गुणोए करीने सहीत एहवो जे
 वक ते प्रते इंद्र सहित देवता जे ते पण शुद्ध धर्म
 के चलावि शके नहि एतातपर्य ॥ २३२॥

इ १५ डिपुच्छइ १५ अनुवासेइ १५ साहूणो १५ सयय १५ मेव १५ च ॥ १५६॥
 गेइ १५ गुणेइ १५ य १५ ॥ जणस्स १५ धम्म १५ परिकहेइ १५ ॥ २३३॥
 र्थ ॥ १॥ जलो श्रावक जे ते साधु प्रते एटले मोक्ष
 र्गना साधक एहवा मुनिराज प्रते ॥ २॥ निरतरा ॥ ३॥
 न करेछे एटले विधि सहित प्रणाम करेछे अनेवली
 ॥ पोताना सदेह प्रते मुनिराजने पूछेछे अनेवली
 नराज प्रते ॥ ५॥ प्रजुपासना करेछे एटले सेवेछे ॥ ६॥
 ॥ ७॥ वली ते श्रावक शु करेछे ते कहेछे ॥ ८॥ धर्म

શાસ્ત્ર પ્રતે મળેછે અને વલી ॥૧॥ ઉત્તમ પુરુષોનિ પા
સે જિનરાજ નાપિત અર્થ પ્રતે સાંજલેછે ॥૧૦॥ વલી
॥૧૧॥ જાણેલું જે શાસ્ત્ર તે પ્રતે અર્થ થકી વિચારેછે અને
વલી ॥૧૨॥ મધ્યસ્થ એટલે હઠ કદાગ્રહ રહિત એવા
લોકોની આગલા ॥૧૩॥ શુદ્ધ ધર્મ પ્રતે ॥૧૪॥ કહેછે એટલે
સિદ્ધાંતને અનુસારે પોતાની વૃદ્ધિ કરિને વીજા લોક
પ્રતે સમાકિત પૂર્વક ધર્મ પ્રતે પમાડે છે એ જાવા ॥૨૩૩॥

દદસીલવ્યનિયમો ॥ પોસહઆવસ્સએસુ १ અસ્થલિ ૩ ॥

મહુમજ્જમંસપચવિહવહુત્રીયફલેસુ ૨ પડિક્કતો ૧ ॥ ૨૩૪ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ વલી તે શ્રાવક કેહેવો હોય તે કેહેછે દૃઢ
શીલ એટલે જલો આચાર અને વ્રત એટલે પાંચ અણુ
વ્રત તેમનો નિયમ એટલે નિશ્ચય તે જેહને એહવો એટલે
સત આચારને વિશે અને અણુવ્રતાદિકને વિશે દૃઢ નિ
યમવાલો એહવો અને ॥ ૨ ॥ પૌપધવૃત એટલે આત્મધર્મનિ
પુષ્ટિનો કરનાર એહવો આઠમ ચૌદશાદિક પર્વોને વિશે
સાવધ વેપારનો ત્યાગ કરવો તે રૂપ નિયમ આવશ્યક
એટલે અવશ્ય કરવા જોગ્ય સામાયકાદિ છે તેમને વિશે
॥ ૩ ॥ અસ્થલિત એટલે અતિચાર રહિત એહવો અને વલી
॥ ૪ ॥ માલ્લીનુ મદ, મદીરા, માસ, પાંચ પ્રકારના વડના

उबरा, बहु बीज एटले रिगणादिक एहवा फल ए पूर्वे
कह्या ते थकी ॥५॥ निर्वृति पामेलो एटले अजक्षनो
त्यागि एहवो श्रावक होय ॥२३४॥

ना^१हम्मकम्मजीवी^१॥पच्चस्खाणे^२अभिस्सुत्त^३मुद्गत्तो^४॥

सर्व^५परिमाणकड^६॥अवरसह^७त्त^८वि^९सक्तो^{१०}॥२३५॥

अर्थ ॥१॥पली श्रावक केहेवो हीय ते कहेछे, अधर्म
कर्मे करिने एटले पन्नर कर्मा दान मध्येथी हरेक क
र्मादाने करिने आजीवीकानो करनार एहवो ॥२॥ न
होय ॥३॥दश प्रकारना पचस्खाण करवाने विशेष ॥४॥
निरतरा ॥५॥उद्य मवंत एटले उच्छाह वालो एहवो ॥६॥
सर्व धन धान्यादिक ते श्रावकने ॥७॥परिमाण करेलु
होय एटले परिग्रहना प्रमाण वालो एहवो अने वली
॥८॥जे अपराध करेछे एटले जे आरणादिक प्रत्ये
करेछे ॥९॥ते आरभादिक जे ते ॥१०॥पण ॥११॥शका
पामतो सतो करेछे पण निशुकपणे करतो नथी एटले
आलोचनादिक ग्रहण करिने ते थकि शुद्ध थायछे ए
हवो श्रावक होय ॥२३५॥

निस्सखमणनाणनिज्ञाणत्तम्मभूमीउ^१वदह^२निणाण^३॥

नय^४वसह^५साहूजणावेरहियामि^६देसे^७बहुगुणेवि^८॥२३६॥

अर्थ॥१॥ तिर्यकर महाराजनी॥२॥दिक्षा केवलज्ञान
निवारण, जन्म तेमनि, भूमिओ प्रते एटले दिक्षा भूमिजे
स्थानके दिक्षा लीधी होय ते स्थानक प्रते ए रीते ज्ञा
न भूमी प्रते, निवारण भूमी प्रते जन्म भूमी प्रते ॥३॥
श्रावक जे ते वदन करेछे एहवो ॥४॥साधुजने करिने
एटले मुनीराज महाराजना विहारे करिने तथा सम्य
कदृष्टी उत्तम पुरुषोथे करीने रहित एहवो ॥५॥बीजाघ
णा गुणे करिने सहीत एहवोय पण ॥६॥ जे देश ते
हने विशेष ॥७॥नहिज ॥८॥वशे एटले रहे केमजे तेस्था
नके रहेता धर्मनी प्राप्ति थाय नही ए कारण माटे ति
हा न रहे एहवो श्रावक होय ॥२३६॥

परतिथियाण^१पणमन^२॥उपावण^३धूणण^४भक्तिराग^५च^६
सकार^७सम्माण^८दाण^९विणय^{१०}च^{११}वज्जेइ^{१२}॥२३७॥

अर्थ॥१॥वली श्रावक शु करे ते कहेछे, परतिथि जे
तेमने एटले वीतरागनी आज्ञाथकी उलटा एहवा जे
पुरुष तेमने ॥२॥नमस्कारनु जे करवुं ते प्रते वजें एटले
नमस्कार न करे ॥३॥ ते परतिथिना गुणनी प्रशसान
करे ॥४॥तेमना देवनी स्तवना नकरे ॥५॥वली ॥६॥तेमनु
बहु मान न करे ॥७॥तेमनो सत्कार एटले वस्त्रादिकनु

प्रापवु ते प्रते वर्जे एटले वस्त्रादिक आपे नही॥८॥ ते
 नु सन्मान एटले आदर करे नहीं॥९॥ तेमने दान आपे
 हि एटले धर्म बुद्धीए करीने आहारादिक आपे नहि
 ॥१०॥ यली॥११॥ ते परतिथिना विनय प्रते॥१२॥ वर्जे ए
 टले तेमनो विनय करे नही एहयो श्रावक होय॥२३७

पदम^१ नद्वेण^१ दाऊण^१॥ अण्ण^१ पणमिऊण^१ पारेइ^१॥

असइ^१ अ^१ सुविहिआण^१॥ मुंनइ^१ कमादेसालोउ^१॥२३८॥

अर्थ॥१॥ साधु मुनिराजने॥२॥ पोतानी मेले॥३॥ नम
 स्कार करिने॥४॥ प्रथम एटले पोताने जमवाथी पेहेला
 ॥५॥ आहार पाणि आपीने॥६॥ पछे पोते पारणु करे ए
 टले नोजन करे॥७॥ जो साधु मुनिराज नहोयतो॥
 ॥८॥ सुद्ध चारित्रवत मुनिराजनो॥९॥ करयोछे दिशा
 तो आलोक एटले देखवुं ते जेणे एटले जो साधु मु
 निराज पधारि तो घणु सारु एम तेमनी वाट जोइने
 ॥१०॥ पछी भावना जावतो सतो पोते नोजन करे
 एहयो श्रावक होया॥२३८॥

साटूण^१ कण्णिज्ज^१॥ न नवि^१ नदिअ^१ कहिपि^१ कियि^१ तहि^१॥

धीरा^१ जहुत्तकारि^१॥ सुसावगा^१ त^१ न^१ भुजाति^१॥२३९॥

अर्थ॥१॥ कोइक देशकालने विशेष॥२॥ साधु मुनिराजने

॥३॥कल्पतु एटले शुद्ध एहवु॥४॥थोडु शु पण॥५॥जे
 आहारादिक॥६॥ते मुनीराजने॥७॥नथीज ॥८॥आप्यु
 एटले तेमने पात्रे नथी पड्यु॥९॥ते आहारादिक प्रते
 ॥१०॥धीर एटले सूरवीर एहवा॥११॥जेहवु बोल्नु ते
 हवु पालनारा एटले जथार्थ श्रावक मारगनापालनारा
 एहवा॥१२॥नला श्रावक एटले आज्ञावत श्रावक जे
 ते॥१३॥न॥१४॥जोजन करे एटले साधु मुनीराजने
 ज्या सुधी थोडुशुए पण आप्युं न होय तीहा सुधी ते
 चीज पोते वावरे नही ए जाव ॥२३९॥

वसहिसयणासणभक्तपाणभेसज्जनवत्थपत्ताइ४॥

नइवि^१न^२पज्जत्तधणो^३॥थोवावि^४हु^५थोवयं^६देइ॥२४०॥

अर्थ॥१॥वली श्रावक शुं करे ते कहेछे जो पण॥२॥
 संपूरण धनवालो ॥३॥ नथी तोपण॥४॥वसति एटले
 रहेवानु स्थानक, सयन एटले सुवाने अर्थे पाट, आसन
 एटले बाजठ पाटला प्रमुख, नक्त एटले अन्न पाणी
 एटले जल, जेसज एटले औसध वस्त्र पात्रादिक प्रते
 ॥५॥थोडामध्येथकी पण॥६॥थोडु॥७॥साधुमुनीराजने
 आपे एटले वस्त्र पात्रादिक सपूर्ण आपवाने असमर्थ
 एहवो सतोय पण श्रावक जे ते थोडामाथी थोडुंय पण

मुनिराजने तथा उत्तम पुरुषोने आप्या विना पोते वावरे
नही ए जावा ॥८॥ निश्चे ॥२४०॥

सवच्छरचाडमासीएसु ॥ अहाहिआसु ॥ अतिहिसु ॥

सहायरेण ॥ अहाहि ॥ जिणवरपूआतवगुणेसु ॥ २४१ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ सवच्छरी अने चौमासि असाड चौमासादिक
तेमने विशे ॥ २ ॥ वली ॥ ३ ॥ चैत्र असाडादिक अठाइयोने
विशे ॥ ४ ॥ आठम चौदसादिक तिथियोने विशे ॥ ५ ॥ जि
नवरनी पूजा एटले नक्ति, तप छठ अठमादिक, गुण
ज्ञानादिक तेमने विशे ॥ ६ ॥ सर्व प्रकारे करीने ॥ ७ ॥ लागे
एटले आसक्त थाय एटले तेजिनेंद्र पूजादिकने विशे
विशेस थकी आदरवालो थाय एहवो श्रावक होय वली
केहवो होय ते कहे छे ॥ २४१ ॥

साहूण ॥ चेद्रयाण ॥ १ ॥ ॥ डिणीय ॥ तह ॥ अवन्नवाय ॥ च ॥

जिणपवयणस्स ॥ अहिअ ॥ सवत्थामेण ॥ वारेइ ॥ २४२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ साधुमुनीराजनो ॥ २ ॥ वली ॥ ३ ॥ चैत्यनो एटले
जिनप्रसाद तथा प्रतिमानो ॥ ४ ॥ प्रत्यनीक एटले उपद्रव
नो करनार एहवो ॥ ५ ॥ तिमज ॥ ६ ॥ वली ॥ ७ ॥ श्रवणवाद
नो बोलनारो एहवो अने ॥ ८ ॥ जिनशासननो ॥ ९ ॥
अहितकारी एटले शत्रु एहवो जे पुरुष ते प्रते ॥ १० ॥

सर्व बले करिने॥११॥ निवारण करे पण उवेखी मूक
 नहीं एटले हमारे शुं कांम छे, घणाय सजालनारा छे,
 एम न करे केम जे एम उवेखी मूकता समकित रहे नहि.

विरया^१पाणिबहाउ^१॥विरया^१निचं^१च^१अलियवयणाउ^१॥

विरया^१चोरिकाउ^१॥विरया^१परदारगमणाउ^१॥२४३॥

अर्थ॥१॥बलीश्रावक केवाहोयते कहेछे; प्राणातिपा
 त थकि एटले जीवनी हिंसा थकि॥२॥विराम पामेला
 एटले जीव हिंसा करे नही एहवा॥३॥बली॥४॥निरतर
 ॥५॥जुठु बोलवा थकी॥६॥विराम पामेला एटले जुठु
 बोलेनही एहवा॥७॥चोरिकर्म थकी॥८॥विराम पामेला
 एटले चोरि कर्म करे नहि एहवा॥९॥परस्त्रीना गमन
 थकी एटले परस्त्रीना सेवन थकि॥१०॥विराम पामेला
 एटले परस्त्री सेवन करे नही एहवा श्रावक होय॥२४३॥

विरया^१परिगहाउ^१अपरिमिभाउ^१अणततनाउ^१॥

बहुदोसमुकुठाउ^१॥नरयगद्गमणपथाउ^१॥२४४॥

अर्थ ॥१॥ अपरिमित एटले नथी करघु परिमाण ते
 जेहनु एहवो॥२॥अनतिछे त्रण्णा एटले लोच ते जेह
 थकी एहवो॥३॥वणाटोप, वध, वधनादिक तेमणे करिने
 महित एहवो॥४॥नरक गतिने विशे जवु तेहनो मार्ग

एटले नरकगतिने विशेषे लेइ जनारो एहवो॥५॥परिग्रह
धन धान्यादिक तेह थकी॥६॥ विराम पामेला एटले
परिग्रहना प्रमाणा करनारा एहवा श्रावक होय वली
केहवा होय ते कहे छे ॥२४४॥

मुक्ता दुःखतणमिच्छी॥गहियागुरुवयणसाट्पाडिवसि॥

मुक्तापरपरिवाद॥गहिउपनिषदोसिठधम्मो॥२४५॥

अर्थ॥१॥श्रावक जे तेमणे दुर्जन एटले मिथ्या दृष्टि
प्राणियोनि मैत्रि॥२॥मूकीछे एटले मिथ्या दृष्टि प्राणीनी
मित्राइ करे नहि एहवा अने॥३॥जेमणे गुरु महाराजना
वचननी रुढी प्रतिज्ञा॥४॥ग्रहण करीछे एटले गुरुनु
वचन नली प्रकारे ग्रहण करनारा एहवा अने॥५॥जेमणे
परनो परिवाद एटले श्रवणवादनु बोलवु॥६॥मुक्त्तु छे
एटले पारको श्रवणवाद बोलेनही एहवा अने॥७॥जेमणे
जिनराजे देखादयो प्रतिश्रोतरूप एटले विधी सहित
एहवो॥८॥धर्म॥९॥ग्रहण करयो छे एटले विधी सहित
धर्म अंगिकार करे एहवा श्रावक होय ॥२४५॥

तवनीपमसीलकलिया॥मुमावगाजेहगतहसुगुण॥

तेसिनदुत्तराद॥निवाणविमाणमुम्प्लाह॥२४६॥

अर्थ॥१॥आ लोकने विशेषे॥२॥नप बार प्रकारे नीपम

मत्रं बले करिने॥११॥ निवारण करे पण उबेसी मूढ
 नहीं एटले हमारे शु कांम छे, घणाय सजाखनारा छे
 एमन करे केम जे एम उबेसी मूकतां समकित रहे नहि.

निराग' गतिराउ' ॥ निरया' निचिं' ॥ अतिम' गता' ॥

निराग' चोरिकाउ' ॥ निरया' ॥ परदाग्गमणाउ' ॥ २४२॥

अरे ॥ आरली आरक केगहोयते कहेछे; प्राणानि
 न फकि एटले जीवनी हिंसा थकि ॥२॥ निराम पांमेला
 एटले जीव हिंसा करे नहीं एहवा ॥ आरली ॥ २॥ निराम
 एटले जीव हिंसा थकि ॥ २॥ निराम पांमेला एटले जीव
 के छे ॥ २॥ एहवा ॥ आगेरि कर्म थकि ॥ २॥ निराम पांमेला
 एटले जीव हिंसा करे नहीं एहवा ॥ २॥ परस्वीना गम
 एटले जीव हिंसा करे नहीं एहवा ॥ २॥ निराम पांमेला
 एटले जीव हिंसा करे नहीं एहवा ॥ २॥ निराम पांमेला
 एटले जीव हिंसा करे नहीं एहवा ॥ २॥ निराम पांमेला

निराग' गतिराउ' ॥ निरया' निचिं' ॥ अतिम' गता' ॥

निराग' चोरिकाउ' ॥ निरया' ॥ परदाग्गमणाउ' ॥ २४३॥

अरे ॥ १॥ १॥ अर्पणमित्र मरति नथी कस्यु पांमेला ते
 निराम पांमेला ॥ १॥ अर्पणमित्र मरति नथी कस्यु पांमेला ते
 निराम पांमेला ॥ १॥ अर्पणमित्र मरति नथी कस्यु पांमेला ते
 निराम पांमेला ॥ १॥ अर्पणमित्र मरति नथी कस्यु पांमेला ते

एटले नरकगतिने विगे लेइ जनारो एहवो॥५॥ परिग्रह
धन धान्यादिक तेह थकी॥६॥ विराम पामेला एटले
परिग्रहना प्रमाण करनारा एहवा श्रावक होय बली
केहवा होय ते कहे छे ॥२४४॥

मुक्ता दुब्बणामिच्छी॥ गाहिया गुरुवयणसाहुपाडिवाप्ति॥

मुक्को परपरिवाद॥ गाहिये तिन दोसिद धम्मो॥२४५॥

अर्थ॥ १॥ श्रावक जे तेमणे दुर्जन एटले मिथ्या दृष्टि
प्राणियोनि मैत्रि॥२॥ मूकी छे एटले मिथ्या दृष्टि प्राणीनी
मित्राइ करे नहि एहवा अने॥३॥ जेमणे गुरु महाराजना
वचननी रुढी प्रतिज्ञा॥४॥ ग्रहण करीछे एटले गुरुनु
वचन चली प्रकारे ग्रहण करनारा एहवा अने॥५॥ जेमणे
परन्ते परिवाद एटले श्रवणवादनु बोलवु॥६॥ मुक्यु छे
एटले पारने तो श्रवणवाद बोलेनही एहवा अने॥७॥ जेमणे
जिनराजे देखे जन्मदो प्रतिश्रोतरूप एटले विधी सहित
एहवो॥८॥ धर्म॥९॥ अर्थ॥ मुक्ति शरण कर्यो छे एटले विधी सहित
धर्म अगिकार करे एहवा अने॥१०॥ नही तूक होय ॥२४५॥

तबनीयमसीलकलिया॥ सुसावगा जे हवात ॥२४६॥

तेसि न दुतहाइ॥ निवाणविमाणसुखवार ॥२॥ मले नीयम
अर्थ॥ १॥ आ लोकने विशेष॥२॥ तप वार प्रकार,

धित्तूणावि^१सामन्न^२॥सयमनोगेसु^३होइ^४जा^५सिढलो^६॥पडर^७
 नइ^८वयणिज्जे^९॥सोअइ^{१०}अ^{११}गउ^{१२}कुदेवत्त^{१३}॥२५९॥

अर्थ॥१॥जेपूरुप॥२॥चारित्र प्रते॥३॥गृहणकरिनेपण
 ॥४॥सजम वेपारने विशे एटले पाच आश्रवनु द्रव्य
 जाय वे प्रकारे न्याग करवु तेने विशे॥५॥प्रमादि॥६॥
 थायछे एटले होय ॥७॥वली ॥८॥जो॥९॥निदनिक
 जावने विशे॥१०॥पडेछे एटले आ लाकने विशे निद
 निक थायछे॥११॥ते पुरुष परजवने विशे कुदेवपणा
 प्रते एटले कील्वीशिरुपणा प्रते ॥१२॥पाम्यो सतो
 ॥१३॥सोच करे एटले पश्चात्तापमा पडेछे ॥२५९॥

मुद्या^१ते^२जियलो^३॥जिणवयण जे^४नरा^५नयाणाने ।

मुद्यागति^१ते^२मुद्या^३जे नाऊण नहि कराने^४ ॥२६०॥

अर्थ॥१॥आ जीव लोकने विशे॥२॥जा॥३॥परमा॥४॥

जिनपरना वचन प्रते॥५॥नथी जाणना॥६॥न परमा॥७॥
 सोच करया जोग्यछे एटले आ अविरेकी चचाग जिन
 वचन जाणना नथी तेमनी सी गति वडा न प्रकार प्र
 नुरुपा करया जोग्यछे॥८॥न परमा॥९॥ननरावना
 वचन प्रते जाणाने॥१०॥नथिजा॥११॥करना गच्छ प्र
 मादि पणा वकी नथी पाछा करना॥१२॥न परमा॥१३॥

शोच करवा जोग्य पुरुषोनी मध्ये पण ॥२४॥ विशेष
शोच करवा जोग्यछे एटले विशेष प्रकारे अनुकपा
करवा जोग्यछे केंमजे जाण पुरुषोने पण प्रमाद महा
अनर्थनु कारणछे ए हेतु माटे ॥२६०॥

दावेकणधननिहि ॥ तेसि उपाडियाणि अर्थीणि ॥

नाऊणावे ॥ तिणवयणं ॥ जे इह विहलति ॥ धम्मधण ॥ २६१ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जेम रांक पुरुषोने धनना नडार प्रते ॥ २ ॥
देखाडिने ॥ ३ ॥ ते राक पुरुषोना ॥ ४ ॥ नेत्र एटले आ
रुयो ॥ ५ ॥ उपाडि नासुया एटले काढी लीधा ॥ ६ ॥ तेम
आ ससारने विशेष ॥ ७ ॥ जे पुरुष ॥ ८ ॥ जिन वचन प्रते
॥ ९ ॥ जाणिने पण ॥ १० ॥ धर्म रूप धनप्रते ॥ ११ ॥ न सेव
न करवा थकि निरुफल करेछे ते पुरुषोनी पूर्व दृष्टांत
नी साथे उपमा करवो ते कहेछे जेम ते राक पुरुषो
ने धन देखाडिने आरुयो काढी लीधी त्यारे ते धन
शा कामनु तेम जिन वचन जाणीने पण पोतानी श
क्ति प्रमाणे समकीत सहीत धर्म जे पुरुषोये न क
रयो तेमनु जाणपणु शा कामनु ते माटे जाणीने जा
णपणा सहीत धर्मने विशेष उद्यम करवो एज सारछे ॥

ठाण उद्युधय ॥ मद्रहीण च हीणतरगवा ॥

બેળ'જાહિ' 'ગતવ' 'ચિઠાવિ' 'સે' 'તારિસી' 'હોઈ' '૧૨૬૨

અર્થ ॥ ૧ ॥ ઉચુ એહવુ ॥ ૨ ॥ સ્થાન સ્થાન એટલે દેવલો
ક રૂપ ॥ ૩ ॥ અતિશે ઉચુ સ્થાન એટલે મોક્ષગતિ રૂપ
॥ ૪ ॥ મધ્યમ સ્થાન એટલે મનુષ્ય ગતિ રૂપ ॥ ૫ ॥ વલી
॥ ૬ ॥ હીણ સ્થાન ॥ ૭ ॥ યલી ॥ ૮ ॥ અતિશે હીણ સ્થાન એ
લે નરકગતિ રૂપ એ પ્રકારના સ્થાન વર્તે છે તેની મ
ધ્યે ॥ ૯ ॥ જે પૂરુષે ॥ ૧૦ ॥ જે સ્થાનકને વિશે ॥ ૧૧ ॥ જવુ હો
યા ॥ ૧૨ ॥ તે પૂરુષને ॥ ૧૩ ॥ ચેષ્ટાપણ એટલે ક્રિયાપણ
॥ ૧૪ ॥ તેહવિ ॥ ૧૫ ॥ હોય એટલે જેવી ગતિમા જવુ હોય
તેહવિજ ક્રિયા ઉદયે આવે સિદ્ધાતને વિશે કહ્યું છે જે જે
લેશાને વિશે મરણ પામે તે તે લેશાને વિશે ઉત્પન્ન થાય
જસ' 'ગુરુમિ' 'પરિભવો' ॥ સાહુસુ' 'અણાયરો' 'સ્વમા' 'તુચ્છા' ॥

ધમ્મે' 'અ' 'અણહિલાસો' '૧' ॥ અહિલાસો' '૨' 'દુર્ગર્હ' '૧' 'એડ' '૧૨૬૩

અર્થ ॥ ૧ ॥ જે પૂરુષને ॥ ૨ ॥ ગુરુને વિશે એટલે જ્ઞાનાદિક
ગુણના દાતા પૂરુષને વિશે ॥ ૩ ॥ પરાન્નવ એટલે શ્રવણ
નુ કરવુ એટલે જે પૂરુષ સમ્યક્ત્વના દાતા ગુરુની
શ્રવણ કરે છે ॥ ૪ ॥ જે પૂરુષનો સાધુને વિશે એટલે મો
સાધક પૂરુષને વિશે ॥ ૫ ॥ અનાદર વર્તે છે એટલે જે
સમક્તિ દૃષ્ટિ પૂરુષનો અનાદર કરે છે ॥ ૬ ॥ જે

पूरुपने धोडि॥७॥क्षमाछे एटले जे पूरुप क्रोधा
 कशाय प्रते करेछे॥८॥बली॥९॥जे पूरुपनो धर्मने
 शे एटले दश प्रकारे जति धर्मने विशे॥१०॥नथी
 निलाख वर्ततो॥११॥ते पूरुपनो आ ॥१२॥ दुर्गति
 विशे जवानो ॥१३॥ अनिलाख थयोछे एटले पूर्वे क
 ह्या प्रमाणे उपगारी पूरुपनी अवज्ञादीकनो करना
 रो नरकादिक दुर्गतिने विशे जायछे ए जाव॥२६३॥
 सारीरमाणसाण५॥दुखसहस्साणवसणपरिभीया१॥
 नाणकुसेण१॥मुणिणो१॥रागगयद१॥निरुभति१॥२६४॥
 अर्थ॥१॥शरीर सबधी तथा मन सबधीना॥२॥हज्जा
 रो दु ख तेमनी पीडा ते थकी समस्त प्रकारें जय पा
 मेजा एहवा॥३॥मुनिराज॥४॥ सम्यक ज्ञान रूप अकु
 री करीने॥५॥राग रूप मोहोटा हस्ति प्रते॥६॥रोकेछे
 एटले पेसवा देता नथी एटले आत्म ज्ञानी मुनि महा
 न रागद्वेपने वश पडता नथी ए जाव॥२६४॥
 गइमगपइव१॥नाण१॥दितस्स१॥हुब्व१॥कि१॥मदेय१॥
 १॥१॥सद्गति मोक्ष रूप तेहनो मार्ग सम्यक ज्ञा
 न चारीत्र रूप तेहनो प्रकाश करवाने दिवा स

मानं एहवु॥२॥ज्ञान जेणे करीने तत्व वस्तु जाणीए ते
 ज्ञान कहीए एहवा ज्ञान प्रते॥३॥आपनार पूरुपने ए
 टले सम्यक श्रुत ज्ञानना दातार पूरुपने॥४॥स्यु॥५॥
 नहि आपवा जोग्य॥६॥होय अपितु सर्व आपवा जो
 ग्य होय एटले जो सम्यक ज्ञानदाता पूरुप जीवित
 प्रतेमागे तो जला विनीत शिष्य जे तेणे जीवित पण
 आपवु॥७॥जेम॥८॥पुलिंद एटले जीह जे तेणे॥९॥शि
 वने एटले महादेवने॥१०॥ते॥११॥पोतानि आख ए
 ले नेत्र॥१२॥आप्यु तेम बीजा पुरुपोये पण उपगारी
 पुरुप जे मागे ते आपवू ए जाव॥२६५॥

सिंहासणे^१निसन्न^२॥सोवाग^३सेणित^४नरवर्गिंदो^५॥

विज्ञ^६मगगद^७पयउ^८॥ईअ^९साहुजनस्व^{१०}सुआविणउ^{११}॥२६६॥

अर्थ॥१॥सिंहासनने विशेष॥२॥बेठेलो एटले राजाए
 पोतानी मेले बेसारेलो एहवो॥३॥चंडाल तेहनी पासे
 थी॥४॥नरनी मध्ये श्रेष्ठ तेनि मध्ये इद्र समान एह
 वो॥५॥श्रेणिक राजा॥६॥हाथ जोडिने आगल उजो
 रहीने॥७॥विद्या प्रते॥८॥मागेछे एटले जेम श्रेणिक
 राजाए विनये करीने चंडाल पासेथी विद्या लीधी॥९॥
 ए प्रकारे॥१०॥साधुजन जे तेणे एटले मोक्षना साधक

मुरुप जे तेणे॥१॥सिद्धातनो तथा सिद्धातना जणावना
रनो विनय करवो केगजे विनय करचा विना जणेलु जे
ज्ञान ते आत्महित जणीथाय नहि उलटुं दु खदाइ थाय
विजाए' कासवसातिआए'॥दगमूयरो' सिरि'पत्तो'॥

पडिउ' मुसवयत्तो'॥मुआनेन्हवणा'इअ'अपिथा'॥२६७॥
अर्थ॥१॥त्रिकाल स्नान करनारो एहवो कोइक त्रि
दंडोयो॥२॥ काश्यप नामे घायझा सबधी एटले का
श्यप एहवे नामे घायझाए आपेलि एहवी॥३॥विद्याए
करीने॥४॥लक्ष्मी प्रते॥५॥पाम्यो॥६॥पछी जुठु बोल
तो सतो एटले पोताना विद्या गुरु प्रते ओलवतो स
तो॥७॥पड्यो एटले लक्ष्मी रहीत थयो अने लोकमा
हीलना पाम्यो ए वात कया थकी जाणी लेवी॥८॥ए
प्रकारे॥९॥श्रुतज्ञानना दातार पुरुपनु ओलववु एटले
जणावनार पुरुपने मुकीने लज्जाए करीने बीजानुना
म लेवु ते॥१०॥अपथ्य एटले कर्म रूप रोगनु वधार
नारु जाणवु॥२६७॥

सयलमिवि'जियलो'॥नेण'इह'घोसिठ'अमाघाठ'॥

इकपि'नो'दुहत्त'॥संत्त'बोहेइ'निणवयणे'॥२६८॥

अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥दुखे करिने पीडाएलो एटले

17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100
101
102
103
104
105
106
107
108
109
110
111
112
113
114
115
116
117
118
119
120
121
122
123
124
125
126
127
128
129
130
131
132
133
134
135
136
137
138
139
140
141
142
143
144
145
146
147
148
149
150
151
152
153
154
155
156
157
158
159
160
161
162
163
164
165
166
167
168
169
170
171
172
173
174
175
176
177
178
179
180
181
182
183
184
185
186
187
188
189
190
191
192
193
194
195
196
197
198
199
200
201
202
203
204
205
206
207
208
209
210
211
212
213
214
215
216
217
218
219
220
221
222
223
224
225
226
227
228
229
230
231
232
233
234
235
236
237
238
239
240
241
242
243
244
245
246
247
248
249
250
251
252
253
254
255
256
257
258
259
260
261
262
263
264
265
266
267
268
269
270
271
272
273
274
275
276
277
278
279
280
281
282
283
284
285
286
287
288
289
290
291
292
293
294
295
296
297
298
299
300
301
302
303
304
305
306
307
308
309
310
311
312
313
314
315
316
317
318
319
320
321
322
323
324
325
326
327
328
329
330
331
332
333
334
335
336
337
338
339
340
341
342
343
344
345
346
347
348
349
350
351
352
353
354
355
356
357
358
359
360
361
362
363
364
365
366
367
368
369
370
371
372
373
374
375
376
377
378
379
380
381
382
383
384
385
386
387
388
389
390
391
392
393
394
395
396
397
398
399
400
401
402
403
404
405
406
407
408
409
410
411
412
413
414
415
416
417
418
419
420
421
422
423
424
425
426
427
428
429
430
431
432
433
434
435
436
437
438
439
440
441
442
443
444
445
446
447
448
449
450
451
452
453
454
455
456
457
458
459
460
461
462
463
464
465
466
467
468
469
470
471
472
473
474
475
476
477
478
479
480
481
482
483
484
485
486
487
488
489
490
491
492
493
494
495
496
497
498
499
500
501
502
503
504
505
506
507
508
509
510
511
512
513
514
515
516
517
518
519
520
521
522
523
524
525
526
527
528
529
530
531
532
533
534
535
536
537
538
539
540
541
542
543
544
545
546
547
548
549
550
551
552
553
554
555
556
557
558
559
560
561
562
563
564
565
566
567
568
569
570
571
572
573
574
575
576
577
578
579
580
581
582
583
584
585
586
587
588
589
590
591
592
593
594
595
596
597
598
599
600
601
602
603
604
605
606
607
608
609
610
611
612
613
614
615
616
617
618
619
620
621
622
623
624
625
626
627
628
629
630
631
632
633
634
635
636
637
638
639
640
641
642
643
644
645
646
647
648
649
650
651
652
653
654
655
656
657
658
659
660
661
662
663
664
665
666
667
668
669
670
671
672
673
674
675
676
677
678
679
680
681
682
683
684
685
686
687
688
689
690
691
692
693
694
695
696
697
698
699
700
701
702
703
704
705
706
707
708
709
710
711
712
713
714
715
716
717
718
719
720
721
722
723
724
725
726
727
728
729
730
731
732
733
734
735
736
737
738
739
740
741
742
743
744
745
746
747
748
749
750
751
752
753
754
755
756
757
758
759
760
761
762
763
764
765
766
767
768
769
770
771
772
773
774
775
776
777
778
779
780
781
782
783
784
785
786
787
788
789
790
791
792
793
794
795
796
797
798
799
800
801
802
803
804
805
806
807
808
809
810
811
812
813
814
815
816
817
818
819
820
821
822
823
824
825
826
827
828
829
830
831
832
833
834
835
836
837
838
839
840
841
842
843
844
845
846
847
848
849
850
851
852
853
854
855
856
857
858
859
860
861
862
863
864
865
866
867
868
869
870
871
872
873
874
875
876
877
878
879
880
881
882
883
884
885
886
887
888
889
890
891
892
893
894
895
896
897
898
899
900
901
902
903
904
905
906
907
908
909
910
911
912
913
914
915
916
917
918
919
920
921
922
923
924
925
926
927
928
929
930
931
932
933
934
935
936
937
938
939
940
941
942
943
944
945
946
947
948
949
950
951
952
953
954
955
956
957
958
959
960
961
962
963
964
965
966
967
968
969
970
971
972
973
974
975
976
977
978
979
980
981
982
983
984
985
986
987
988
989
990
991
992
993
994
995
996
997
998
999
1000
1001
1002
1003
1004
1005
1006
1007
1008
1009
1010
1011
1012
1013
1014
1015
1016
1017
1018
1019
1020
1021
1022
1023
1024
1025
1026
1027
1028
1029
1030
1031
1032
1033
1034
1035
1036
1037
1038
1039
1040
1041
1042
1043
1044
1045
1046
1047
1048
1049
1050
1051
1052
1053
1054
1055
1056
1057
1058
1059
1060
1061
1062
1063
1064
1065
1066
1067
1068
1069
1070
1071
1072
1073
1074
1075
1076
1077
1078
1079
1080
1081
1082
1083
1084
1085
1086
1087
1088
1089
1090
1091
1092
1093
1094
1095
1096
1097
1098
1099
1100
1101
1102
1103
1104
1105
1106
1107
1108
1109
1110
1111
1112
1113
1114
1115
1116
1117
1118
1119
1120
1121
1122
1123
1124
1125
1126
1127
1128
1129
1130
1131
1132
1133
1134
1135
1136
1137
1138
1139
1140
1141
1142
1143
1144
1145
1146
1147
1148
1149
1150
1151
1152
1153
1154
1155
1156
1157
1158
1159
1160
1161
1162
1163
1164
1165
1166
1167
1168
1169
1170
1171
1172
1173
1174
1175
1176
1177
1178
1179
1180
1181
1182
1183
1184
1185
1186
1187
1188
1189
1190
1191
1192
1193
1194
1195
1196
1197
1198
1199
1200
1201
1202
1203
1204
1205
1206
1207
1208
1209
1210
1211
1212
1213
1214
1215
1216
1217
1218
1219
1220
1221
1222
1223
1224
1225
1226
1227
1228
1229
1230
1231
1232
1233
1234
1235
1236
1237
1238
1239
1240
1241
1242
1243
1244
1245
1246
1247
1248
1249
1250
1251
1252
1253
1254
1255
1256
1257
1258
1259
1260
1261
1262
1263
1264
1265
1266
1267
1268
1269
1270
1271
1272
1273
1274
1275
1276
1277
1278
1279
1280
1281
1282
1283
1284
1285
1286
1287
1288
1289
1290
1291
1292
1293
1294
1295
1296
1297
1298
1299
1300
1301
1302
1303
1304
1305
1306
1307
1308
1309
1310
1311
1312
1313
1314
1315
1316
1317
1318
1319
1320
1321
1322
1323
1324
1325
1326
1327
1328
1329
1330
1331
1332
1333
1334
1335
1336
1337
1338
1339
1340
1341
1342
1343
1344
1345
1346
1347
1348
1349
1350
1351
1352
1353
1354
1355
1356
1357
1358
1359
1360
1361
1362
1363
1364
1365
1366
1367
1368
1369
1370
1371
1372
1373
1374
1375
1376
1377
1378
1379
1380
1381
1382
1383
1384
1385
1386
1387
1388
1389
1390
1391
1392
1393
1394
1395
1396
1397
1398
1399
1400
1401
1402
1403
1404
1405
1406
1407
1408
1409
1410
1411
1412
1413
1414
1415
1416
1417
1418
1419
1420
1421
1422
1423
1424
1425
1426
1427
1428
1429
1430
1431
1432
1433
1434
1435
1436
1437
1438
1439
1440
1441
1442
1443
1444
1445
1446
1447
1448
1449
1450
1451
1452
1453
1454
1455
1456
1457
1458
1459
1460
1461
1462
1463
1464
1465
1466
1467
1468
1469
1470
1471
1472
1473
1474
1475
1476
1477
1478
1479
1480
1481
1482
1483
1484
1485
1486
1487
1488
1489
1490
1491
1492
1493
1494
1495
1496
1497
1498
1499
1500
1501
1502
1503
1504
1505
1506
1507
1508
1509
1510
1511
1512
1513
1514
1515
1516
1517
1518
1519
1520
1521
1522
1523
1524
1525
1526
1527
1528
1529
1530
1531
1532
1533
1534
1535
1536
1537
1538
1539
1540
1541
1542
1543
1544
1545
1546
1547
1548
1549
1550
1551
1552
1553
1554
1555
1556
1557
1558
1559
1560
1561
1562
1563
1564
1565
1566
1567
1568
1569
1570
1571
1572
1573
1574
1575
1576
1577
1578
1579
1580
1581
1582
1583
1584
1585
1586
1587
1588
1589
1590
1591
1592
1593
1594
1595
1596
1597
1598
1599
1600
1601
1602
1603
1604
1605
1606
1607
1608
1609
1610
1611
1612
1613
1614
1615
1616
1617
1618
1619
1620
1621
1622
1623
1624
1625
1626
1627
1628
1629
1630
1631
1632
1633
1634
1635
1636
1637
1638
1639
1640
1641
1642
1643
1644
1645
1646
1647
1648
1649
1650
1651
1652
1653
1654
1655
1656
1657
1658
1659
1660
1661
1662
1663
1664
1665
1666
1667
1668
1669
1670
1671
1672
1673
1674
1675
1676
1677
1678
1679
1680
1681
1682
1683
1684
1685
1686
1687
1688
1689
1690
1691
1692
1693
1694
1695
1696
1697
1698
1699
1700
1701
1702
1703
1704
1705
1706
1707
1708
1709
1710
1711
1712
1713
1714
1715
1716
1717
1718
1719
1720
1721
1722
1723
1724
1725
1726
1727
1728
1729
1730
1731
1732
1733
1734
1735
1736
1737
1738
1739
1740
1741
1742
1743
1744
1745
1746
1747
1748
1749
1750
1751
1752
1753
1754
1755
1756
1757
1758
1759
1760
1761
1762
1763
1764
1765
1766
1767
1768
1769
1770
1771
1772
1773
1774
1775
1776
1777
1778
1779
1780
1781
1782
1783
1784
1785
1786
1787
1788
1789
1790
1791
1792
1793
1794
1795
1796
1797
1798
1799
1800
1801
1802
1803
1804
1805
1806
1807
1808
1809
1810
1811
1812
1813
1814
1815
1816
1817
1818
1819
1820
1821
1822
1823
1824
1825
1826
1827
1828
1829
1830
1831
1832
1833
1834
1835
1836
1837
1838
1839
1840
1841
1842
1843
1844
1845
1846
1847
1848
1849
1850
1851
1852
1853
1854
1855
1856
1857
1858
1859
1860
1861
1862
1863
1864
1865
1866
1867
1868
1869
1870
1871
1872
1873
1874
1875
1876
1877
1878
1879
1880
1881
1882
1883
1884
1885
1886
1887
1888
1889
1890
1891
1892
1893
1894
1895
1896
1897
1898
1899
1900
1901
1902
1903
1904
1905
1906
1907
1908
1909
1910
1911
1912
1913
1914
1915
1916
1917
1918
1919
1920
1921
1922
1923
1924
1925
1926
1927
1928
1929
1930
1931
1932
1933
1934
1935
1936
1937
1938
1939
1940
1941
1942
1943
1944
1945
1946
1947
1948
1949
1950
1951
1952
1953
1954
1955
1956
1957
1958
1959
1960
1961
1962
1963
1964
1965
1966
1967
1968
1969
1970
1971
1972
1973
1974
1975
1976
1977
1978
1979
1980
1981
1982
1983
1984
1985
1986
1987
1988
1989
1990
1991
1992
1993
1994
1995
1996
1997
1998
1999
2000
2001
2002
2003
2004
2005
2006
2007
2008
2009
2010
2011
2012
2013
2014
2015
2016
2017
2018
2019
2020
2021
2022
2023
2024
2025
2026
2027
2028
2029
2030
2031
2032
2033
2034
2035
2036
2037
2038
2039
2040
2041
2042
2043
2044
2045
2046
2047
2048
2049
2050
2051
2052
2053
2054
2055
2056
2057
2058
2059
2060
2061
2062
2063
2064
2065
2066
2067
2068
2069
2070
2071
2072
2073
2074
2075
2076
2077
2078
2079
2080
2081
2082
2083
2084
2085
2086
2087
2088
2089
2090
2091
2092
2093
2094
2095
2096
2097
2098
2099
2100
2101
2102
2103
2104
2105
2106
2107
2108
2109
2110
2111
2112
2113
2114
2115
2116
2117
2118
2119
2120
2121
2122
2123
2124
2125
2126
2127
2128
2129
2130
2131
2132
2133
2134
2135
2136
2137
2138
2139
2140
2141
2142
2143
2144
2145
2146
2147
2148
2149
2150
2151
2152
2153
2154
2155
2156
2157
2158
2159
2160
2161
2162
2163
2164
2165
2166
2167
2168
2169
2170
2171
2172
2173
2174
2175
2176
2177
2178
2179
2180
2181
2182
2183
2184
2185
2186
2187
2188
2189
2190
2191
2192
2193
2194
2195
2196
2197
2198
2199
2200
2201
2202
2203
2204
2205
2206
2207
2208
2209
2210
2211
2212
2213
2214
2215
2216
2217
2218
2219
2220
2221
2222
2223
2224
2225
2226
2227
2228
2229
2230
2231
2232
2233
2234
2235
2236
2237
2238
2239
2240
2241
2242
2243
2244
2245
2246
2247
2248
2249
2250
2251
2252
2253
2

गुरु जे तेमणे समकीत पमाडवे करीने जे उपगार क
र्योछे ते उपगारनो बदलो अनतगुणी उपगारनी को
डीयोए करीने वाली न शकीए ए कारण माटे समकी
त पमाडनार गुरुनी घणीज भक्ति करवी ए जाव।२६९

सम्मत्तामे 'उल्लङ्घे' ॥ ठट्टयाइ 'नरयतिरियदाराइ' ॥

दिवाणि 'माणुसाणि' ॥ मुम्बयमुद्राइ 'सहीणाइ' ॥ २७० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ हवे समकितना फल प्रते कहेछे जीव जे ते
णे समकित ॥ २ ॥ पामे सते ॥ ३ ॥ नरक तिर्यचना वारणा
॥ ४ ॥ रोक्या एटले समकित पाम्या पछी जीव नरकनु
तथा तिर्यचनु आउखु बाधे नही केमजे समकित पामे
सते मनुष्य देवतानु आउखु बाधेछे अने देवता मनु
ष्यनु आउखु बाधेछे ए कारण माटे ए जाव ॥ ५ ॥ अने
वली समकित पामे सते देवता सबधी सुख ॥ ६ ॥ वली
॥ ७ ॥ मनुष्य सबधी सुख ॥ ८ ॥ मोक्ष सबधि सुख ॥ ९ ॥
पोताने आधीन थायछे एटले समकितवत पुरुष देव
ताना तथा मनुष्यना तथा जावत मोक्षना सुख प्रते पा
मेछे ए कारण माटे पेहला समकितनो उद्यम करवो

कुसमयमुद्रणमहण' ॥ ममत्त' नरस' मुद्रिय हिय' ॥

तस्स' नगुशोयकरा' नाण धरण 'च' ॥ वमहण' [२७] ॥

1871
1872
1873
1874
1875
1876
1877
1878
1879
1880
1881
1882
1883
1884
1885
1886
1887
1888
1889
1890
1891
1892
1893
1894
1895
1896
1897
1898
1899
1900

॥३॥ अतिचार रहित एटले निर्दोष एहवा चारित्रने
वेशे उपयोगवत एटले दुपण रहीत चारित्रे करीने
पहीत एहवो जे पुरुष ॥४॥ मनवछित एहवो ॥५॥ अ
एटले मोक्षरूप प्रयोजन एटले कारज प्रते ॥६॥ प्र
कर्षे करीने साधेछे एटले पामेछे ॥२७२॥

बह'मुन्ताण'पुडरामि'पुवन्नरागवत्रेहि'॥

विभच्छा'पदसोहा'इय'सम्मत्त'एमाणहि'॥२७३॥

अर्थ ॥१॥ हवे प्रमादे करीने समकित मलिन थायछे ते
देखाडेछे जेमा ॥२॥ धोला एहवो ॥३॥ मूलताणो एटले सूत
रना तातणानो समूह तेहने विओ ॥४॥ दुष्ट एटले माठा
काला वरण तथा लाल वरण तेमणे करीने ॥५॥ वस्त्रनी
शोभा ॥६॥ अवखाणवा जोग्य थाय तेहनी प्रगट अर्थ
करीने देखाडीये छीए जे वस्त्रत कपटानो वणनारो वण
कर कपडु वणवाने अर्थ पेहेला सुतरना धोला तातणा
नाखेछे तेनी मध्ये काला वरणना तथा लाल वरणना
बिजा सुतरना तातणामिलवे करीने जेम वस्त्रनी धोला
ज वरोवर रहेनी नथी उलटु कावरचीनरु पायछे ॥७॥

ए प्रकारो ॥८॥ प्रमादे करीने एटले कुदेव कुगुरु कुधर्म
तेमनु सेवन करवु तथा तेमना भक्तलोकनी माथे सा

ધર્મ પણ કરવું તે રૂપ પ્રમાદે કરીને॥૧॥સમકિત મ
લિન થાયછે એટલે નાશ પામેછે તે કારણ માટે સમકિ
તનો વૈરીરૂપ પ્રમાદ ત્યાગ કરવા જોગ્યછે એ ભાવ॥

નરેસુ^૧સુરવેસુ^૨અ^૩॥જો^૧વધદ^૨સાગરોવમ^૩દુઃક^૪॥

પાલિડવમાળ^૧વધદ^૨૧૧॥કોટિસહસ્રાણિ^૧દિવસેન^૨૪૨૭૪॥

અર્થ॥૧॥જે પુરુષ સો વરસના આઝઘાવાલો પાપ
કર્મ પ્રતે આચરતો સતો તથા પુન્યકર્મ આચરતો સ
તો॥૨॥ નરકને વિશે॥૩॥વલી॥૪॥દેવલોકને વિશે॥૫॥
૧૬॥સાગરોપમના આઝઘા પ્રતે॥૭॥વાધેછે એટલે
જે પાપ કર્મ કરેછે તે નરકના આઝઘા પ્રતે વાધેછે
ને વલી જે પુન્યકર્મ પ્રતે કરેછે તે દેવલોકના આઝઘા
પ્રતે વાધેછે॥૮॥તે પુરુષ પાપ કર્મનો કરનારો તથા પુન્ય
કર્મનો કરનારો એક દિવશની મધ્યે ॥૯॥પલ્યોપમની
॥૧૦॥કોટિ મહસ્ર આઝઘા પ્રતે॥૧૧॥વાધેછે એટલે
સો વરસના આઝઘા વાલો પાપકર્મ કરીને નરકનું
૧૨ એક સાગરોપમનું આઝઘું વાધેછે તે પુરુષ એક દિવ
શની મધ્યે પલ્યોપમની હજારો કોટીઓ નરકના
આઝઘા પ્રતે વાધેછે દેવલોકને વિશે એજ રીતે જાણવું
૧૩ એજ રીતે એક દિવશની મધ્યે જોય પૂન્ય પાપ પ્રતે ઉ

आर्जन करेछे ए कारण माटे प्रमाद त्याग करीने आ
म हितने विशे उद्यम करवो ए उपदेश॥२७४॥

पलित्वमसाखित ॥ भाग १ तो १ बध १ सुरगणेशु १ ॥

दिवसे १ दिवसे १ बध १ ॥ स १ वासकोडेअसाखित्ता १ ॥ २७५ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जे पुरुष सो वरसना आउखावालो ॥ २ ॥ पु

यकर्म प्रते आचरीने मनुष्यना भवने विशे रह्यो सतो

देवताओना समूहने विशे ॥ ३ ॥ पल्योपमना सख्यातमा

॥ ४ ॥ नाग आउखा प्रते ॥ ५ ॥ बाधेछे ॥ ६ ॥ ते पुरुष ॥ ७ ॥ ८ ॥

देवश दिवशने विशे एटले निरतरा ॥ ९ ॥ वरसनी कोडि

अमस्यातिओ एटले असस्याति कोडि वरसना आ

उखा प्रते निरतरा ॥ १० ॥ बाधेछे एटले उपाजन करेछे

१ ॥ क्रमो १ नर १ मु १ वि १ ॥ बुहेण १ नाउण १ नाम १ एयापि १ ॥

यम १ १ पि १ १ कह १ १ पमाउ १ १ निमेसामित्त १ पि १ १ कायवो १ ॥ २७६ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ नरकने विशे ॥ २ ॥ पणा ॥ ३ ॥ आ ॥ ४ ॥ अनुक्रमछे

पापनो करनारो पुरुष निरतर असस्याता वरसनि

कोडि नरकना आउखा प्रते बाधेछे ॥ ५ ॥ ए अनुक्रम

प्रते ॥ ६ ॥ पडित पुरुष जे तेणे ॥ ७ ॥ जाणिने ॥ ८ ॥ निश्चे ॥ ९ ॥

आख मीचिने उघाडिये एटलो काल ॥ १० ॥ पण एटले

थोढो काल पण ॥ ११ ॥ धर्मने विशे एटले क्षमादिक द

1. 1. 1.
2. 2. 2.
3. 3. 3.

4. 4. 4.
5. 5. 5.
6. 6. 6.

7. 7. 7.
8. 8. 8.

9. 9. 9.

10. 10. 10.

अर्थ॥१॥देवलोकने विशेष॥२॥देवताओंने॥३॥जे॥४॥
 सुख वसंते॥५॥ते सुख॥६॥ अतिशे करीने वाचाल
 एहवो॥७॥पण॥८॥पुरुष॥९॥ सो वरसे करीने॥१०॥
 पण ॥११॥ नहि॥१२॥ कही शके एटले सो वरस सु
 धी देवताना सुखनो वर्णव करे तोयें पण पार न पा
 मे॥१३॥वली॥१४॥जे-पुरुषने॥१५॥जीननु सो एटले
 सो जीभो॥१६॥होय ते पुरुष पण सैकडो वरसोअ
 करीने देवताना सुखनो वर्णव करवाने अर्थे न समर्थ
 थाय तो बीजा पुरुषनं शू केहवू,केमजे जे पुरुष पर
 जावनी आगा रहित वीतराग जापित धर्म प्रते सेवे
 छे ते पुरुषने देवलोकालिकना सुख सरागिभाव पणा
 थकि विचे घासरुप उत्कृष्टा सुख निष्पन्न थायछे ते
 कारण माटे॥२७८॥

नरएमु^१नाइ^२अइकस्वडाइ^३॥दु.स्वडाइ^४परमतिस्वडा
 इ^५॥को^६स्वनेही^७ताइ^८॥जीवतो^९वासकोदीहि^{१०}॥२७९॥

अर्थ॥१॥नरकने विशेष॥२॥अतिशय करकश एटले दु
 स्खे करीने सहन करवा जोग्य एहवा॥३॥अने विपा
 के वेदवा थकि उत्कृष्ट तिक्षण एटले अतिशय आकरा
 एहवा॥४॥जे॥५॥दुख क्षुधा वृषा परवशापणा दिक वसंते

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

अर्थ॥१॥देवलोकने विशेष॥२॥देवताओने॥३॥जे॥४॥
 सुख वतेंछे॥५॥ते सुखा॥६॥ अतिशे करीने वाचाल
 एहवो॥७॥पण॥८॥पुरुष॥९॥ सो वरसे करीने॥१०॥
 पण ॥११॥ नहि॥१२॥ कही शके एटले सो वरस सु
 धी देवताना सुखनो वर्णव करे तोये पण पार न पा
 मे॥१३॥वली॥१४॥जे-पुरुषने॥१५॥जीननु सो एटले
 सो जीभो॥१६॥होय ते पुरुष पण सैकडो वरसोत्रे
 करीने देवताना सुखनो वर्णव करवाने श्रर्थे न समर्थ
 पाय तो बीजा पुरुषनु श्यू केहवू, केमजे जे पुरुष पर
 गावनी आशा रहित बीतराग नापित धर्म प्रते सेवे
 ते पुरुषने देवल्लोकादिकना सुख सरागिभाव पणा
 कि विचे घासरुप उत्कृष्टा सुख निष्पन्न थायछे ते
 रण माटे॥२७८॥

परसु॥नाइ॥अइकअवडाइ॥दु ख्वाइ॥परमतिख्वा
 ॥१॥को॥वनेही॥१०॥ताइ॥॥जीवतो॥वासकोडीहि॥२७९॥
 अर्थ॥१॥नरकने विशेष॥२॥अतिशय करकश एटले दु
 खे करीने सहन करवा जोग्य एहवा॥३॥अने विपा
 वेदवा थकि उत्कृष्ट तिक्षण एटले अतिशय आकरा
 ॥४॥जे॥५॥दुख क्षुधा व्या परवशपणा टिक वतें

॥१०॥ वणववान एटल कहवान समथ थाय आपतु का
इ कही शके नहीं ॥२७॥

कखलडदाहसामलिअसिवणवेयरणिपहरणसयोह' ॥

जा' नायणाउ' पावति' ॥ नारया' त' अहम्मफल' ॥२८॥

अर्थ ॥ १ ॥ करकस एटले आकरो एहवो जे दाह एटले
अग्नीनि मध्ये पचावारूपशामलिशब्दे करिने शामलि
एहवेनामे वृक्ष तेहना जे पानांतेणे करिने शरिरनुं छेदन
करवु, असिवण शब्दे करिने खड्गना जेहवाछे पत्रते
जेहनेविशं एहवु जेवन तेहनेविशेभमवुं, वेयरणि शब्दे
करिने वैतरणीनांमे नदी तेहनुं तपेला तरुवा सरसु जे
पाणी तेहनु पान करवु, पहरण शब्दे करिने कुहाडादि
क जे शस्त्र तेमना सइकडो एटले सइकडो शस्त्राए क
रीने शरीरादिकनु छेदन करवु. ए पुर्वे कहा एटलारा
नाए कारन ॥ २ ॥ नरकने विशे नारकि एटल नारकिना
जीव जे ते ॥ ३ ॥ जे ॥ ४ ॥ पीडाश्रो प्रते एटले कष्ट प्रते ॥
॥ ५ ॥ पामेछे एटल जागवछे ॥ ६ ॥ ते ॥ ७ ॥ अधमनु एटल
वैतराग जापित जयार्थ स्वदया परदया रूप जे धर्म

तेथी अवलु करवु ते रूप जे पाप तेहनु फल जाणवु॥

तिरिया १कसकुसारानिब्बायवहवधनमारणसयाइ १॥

नवे १इहयं १पावता १॥परध १नइ १नियमीया १हुता १॥२८१॥

अर्थ॥१॥आ लोकने विशे॥२॥फेटलाएक तिर्जव हा
थी घोडा प्रनुख ते जे ते॥३॥कशा शब्दे करीने फ
टकाअकुश,आर शब्दे करीने गोचरानो परुणो,निब्बा
य शब्दे करीने भूमिने विशे पाडवु,वध एटले लाक
डियादिके करिने कूटवु,वधन एटले दोरडा साकोला
दिके करिने बाधवु,मरण एटले जीवथी जुट्टु करवु ते
मना सइकडो एटले पूर्वे कहेला वध वधन मरणादि
कनु सइकडो वार पामवु ते प्रते॥४॥नहिजा॥५॥पाम
ता हवा॥६॥जो॥७॥परजवने विशे॥८॥नियमवत ॥९॥
होता हवा एटले जो परजवने विशे नियम करयोह
तो तो आ जवने विशे कोइ कर्मना उदयथी तिर्जवप
णु पाम्या तोये पण पूर्वे कहेला दुख प्रते न पाम्या
ते माटे जाण पुरुपना नीआये जाणपणा सहित वर्त
नियमने विशे उद्यम करवो ए उपदेश॥२८१॥

आमाविमकिनेसी १॥सुरख १सुनउ १उबदा १महुदा ॥

नीयतणसिठणाविअ १॥अणिदवासो १अ माणुसे १॥२८२॥

2. What is the purpose of the study?

किंति॥५॥वली॥६॥ विगोवणा आ पूर्वे कहा एहवा
जे दुखना कारण मनुष्य जवने विशेष धर्म रहित प्रां
णि पामेछे ते माटे धर्म रहित मनुष्य गति पामवे क
रिने शु अपितु काइ नहि॥२८३॥

चिंतासतावेहिय॥१॥दादिदुखआहि॥दुष्पउत्ताहि॥

कटूणावि॥माणुस्स॥मरति॥केई॥सुनिबिन्ना॥२८४॥

अर्थ॥१॥चिंता, कुटुंबनु जरण पोपण करवादिकथी
उत्पन्न थएली, सताप, चोरादिकथकी उत्पन्न थएली ते
मणे करिने अने वली॥२॥पूर्व जवने विशेष करेला एहवा
जे दुष्टकर्म तेमणे प्रेरणा करया एटले पूर्व जवने विशेष
बाधेला जे कर्म ते कर्मना उदयथकी निष्पन्न थया
एहवा॥३॥इलिद्रपणु एटले निर्धनपणु अने रोग जलो
दर कठोदर भगदरादिक तेमणे करिने॥४॥अतिशये
करिने खेद पाम्या सता एहवा॥५॥ केइक पुरुषा॥६॥
मनुष्यपणा प्रते॥७॥ पामीने पण॥८॥मरण पामेछे ए
टले धर्म रहित प्राणी दुखी थया सता मनुष्यनोभव
फोगट गमावेछे ते माट प्रमाद छोडीने निर्दभपणे शु
द्ध धर्मने विशेष उद्यम करवो ए श्रेयछे ए उपदेश॥२८४॥

देवावि॥देवलोए॥१॥दिवाभरणाणुराजियसारेरा॥

ज^१परिषदांति^२तत्तो^३त^४दुखं^५दास्य^६तेसि^७॥२८५॥

अर्थ॥१॥जे कारण माटे॥२॥देवलोकने विशे॥३॥दिव्य एटले प्रधान एहवा आभरण एटले घरेणा तेमणे करीने अनुरजित एटले शोभायमानछे शरीर तेजे मना एहवा॥४॥देवता जे ते पण॥५॥ते देवलोककथकी॥६॥पाछा पडेछे एटले अशुचि एहवा गर्भावासने विशे आवेछे॥७॥ते॥८॥दुख॥९॥ते देवताओने॥१०॥अति शये करिने दुखे सहन करवा जोग्यछे ते कारण माटे देवलोकने विशे पण सुख नथी ए भावा॥२८५॥

त^१सुरविमाणविभव^२॥चितिय^३चवण^४च^५देवलोकाउ^६॥अइबालि^७य^८चिय^९न^{१०}वि^{११}॥फुड्ड^{१२}सयसकर^{१३}हियय^{१४}॥२८६॥

अर्थ॥१॥ते प्रसिद्ध आश्चर्यकारि एहवु॥२॥देवताना विमाननु विभव एटले ठकुराइपणु ते प्रते॥३॥विचारीने एटले मने करीने विचारीने॥४॥वली॥५॥देवलोककथकी॥६॥चवन एटले पाछु गर्भावासने विशे पाछु आववु ते प्रते विचारीने शी रीते विचारीने ते कह्नेछे कया विमाननु ठकुराइपणु ओने कया हमारे निच स्थाविशे अवतरवु ए प्रकारे चिंतवता एहवा देवता पण॥७॥सो ककडा सहित एहवु॥८॥जे॥९॥हृद

य थयु सतु॥१०॥नथिज॥११॥फुटतु एटले हृदयना सो
 ककडा नथि थता ए कारण माटे ते देवताओनु हृदय
 ॥१२॥अतिशय बळवत एटले अतिशय कठोरहिजछे
 ॥१३॥निश्चे आ केहेवे करिने देवलोकने विगे पण मि
 थ्याट्टिप्राणियोने दुखज वत्तेछे एम देखाड्यु॥२८६॥
 इसाविषायमय कोहमाणमायालोभोते १ एवमाहं हि १॥
 देवाविषमभिभूया १॥तेसिं कत्तो सुह नाम ॥२८७॥
 अर्थ॥१॥इर्पा एटले माहोमाहि मत्सर,विपाद एटले
 देवतानो करेलो पराभव,मद एटले अहकार,क्रोध ए
 टले अभितिरूप,मान एटले पारका गुणनु असहनक
 रवु,माया एटले सरलता रहितपणु,लोचन एटले अ
 धिलपणु तेमणे करीने अने॥२॥ए आदिके करीने एट
 ले चित्तना विकारादिके करीने॥३॥पराभव पाम्या स
 ता एटले पुर्व कह्या एहवा इर्पा विखाद कपायादिकने
 वश पडेलो एहवा सता॥४॥देवता जे ते पण देवलो
 कने विगे वत्तेछे ए कारण माटे॥५॥ने देवताओने॥६॥
 क्याथाकि॥७॥सुख होय॥८॥निश्चे अपितु मिथ्या ट
 ट्टि देवताओने देव लोकने विगे पण सुख नहिज हो
 य ते कारण माटे मोक्षना अर्थ प्राणिओये तत्पत्ता

नीनी समीपे तत्व बोधनो स्वप करवो ए भाव॥२८७॥

धम्मं विनामनाउण॥ कीसपुरिसा महत्ते पुरिसाण॥

सामित्ते सहीणे॥ को नाम कारिज्ज दासत्त॥२८८॥

अर्थ ॥१॥ पुरुष जे ते॥२॥ नाम एटले प्रसिद्ध संसा

रना दुख निवारवे करिने मोक्षना सुख करवे करिने

प्रसिद्ध एहवा॥३॥ धर्म प्रते॥४॥ जाणिने॥५॥ पण॥६॥

शाकारण माटे॥७॥ बीजा पुरुषोना वचनादिक प्रते॥

॥८॥ महन करेछे एटले रामेछे एटले बीजा पुरुषो

ने वडा वर्ति केम थापछे॥९॥ पोताने आधिन एटले

पोताने नम एहवु॥१०॥ स्वांमिपणु सते केमजे धम्मं क

रिने पोताने वडापणु थापछे माटे॥११॥ कोण मुसं पु

ग्ग॥१२॥ परना दारापणा प्रते॥१३॥ करे॥१४॥ निभे

पगपुग्गो आज्ञामा जिम वनेछे तिम जिनराजनी प्रा

ज्ञा वनेतो मतां स्वांमिपणा प्रते पामे ते माटे नि

गराजनी आज्ञा पात्रवानो स्वप करवो ए भाव २८८

ममं एहवुं वाण्य॥ आत्ता विपस्सं बोदि॥

इत्थं एहं वणो॥ म्मे विस्सं आगममिदिताओ॥२९॥

अर्थ ॥१॥ वर्यामाना नुत्तम एहवा॥२॥ ममात्मनो व

दं जन्मने विदे॥३॥ कर्मण्य वचने करिने एटले कर्म

रूप बेडीओओ करीने॥४॥समस्त प्रकारे पीडायेलो
एटले कर्मरूपी बेडीमा पडेलो एहवो ॥५॥जे पुरुष तेनु
॥६॥मन एटले चित्त॥७॥उदविम थयु एटले क्यारे हू
आ ससाररूप बधीखानाथकी छुटीने मोक्ष प्रते पामी
श एहवो रीते जेहनु मन थयुछे॥८॥ते पुरुष ॥९॥
समोप वत्तिछे सिद्धीपथ एटले मोक्षनो मार्ग ते जेहने
एटले थोडा कालमा मोक्षमा जनारो एहवो जाणवो
॥१०॥किर इति सत्य हवे थोडाकालमा मोक्षजनार
पुरुषनु लक्षण आगली गाथामा कहीओ छीओ॥२८९

आसन्नकालमवासद्वियस्त॥बीवस्तलक्षणइणमो॥

विसयमहेमुनरक्तइ॥सव्वयामेमुउड्ढमइ॥२९०॥

अर्थ॥१॥थोडा कालमाछे ससार थाकि सिद्धी एटले
मुक्ति ते जेहनी एटले सीध मुक्तिने विशेष जनारा एहवा
॥२॥जीवनु एटले प्राणीनु॥३॥आगल कहीशु एहवा॥४॥
लक्षण जाणवु केमजे लक्षणे करिने सीध मोक्षगामि
पणु ओलखायछे ए हेनुमाटे ते लक्षण प्रते कहेछे॥५॥वि
पय एटले पाचइद्रियो थाकि उत्पन्न थया एहवा गव्ढादि
क विषय तेमना सुखने विशेष॥६॥ना॥७॥रीझे एटले आ
शक्त नही थाया॥८॥अने सजमादिक क्रिया अनुष्ठान

ने विशे सर्व बले करिने एटले पोतानी शक्ति प्रमाणे
॥९॥ उद्यम करेछे पोतानी शक्ति गोपवतो नथी एह
वा लक्षणे मोक्षगामी पुरुष जाणवो॥२९०॥

हुब्बन^१व^२न^३व^४देहबलं^५॥धिद्रुमइसत्तेण^{१२}जइ^{१३}न^{१४}उब्जमसि^{१५}॥
अधिहिसि^{१६}चिरकाल^{१७}॥त्रल^{१८}च^{१९}काल^{२०}च^{२१}सोअतो^{२२}॥२९१॥

अर्थ ॥१॥ शरीरनु सामर्थपणु॥२॥होया॥३॥अथवा॥
॥४॥नहोय एटले शरीरनु सामर्थपणु पोताने वश न
होय कर्मने आधिनछे ए हेतु माटे॥५॥पादपूर्णे॥६॥जो
हे शिष्य॥७॥शरीरना सामर्थपणा प्रते॥८॥बली ॥९॥
कालप्रते॥१०॥नीश्चे॥११॥सोच करतो सतो एटले मा
हारे शरीरनु सामर्थपणु नथी एम विचारतो सतो अ
ने बली हमणा अवसर नथी एम विचारतो सतो
॥१२॥धीरज एटले मननु धैर्यपणु मती एटले पोता
नी बुद्धि सत्य एटले पोतानु साहसीकपणु एटला वा
नाए करीने एटले धीरजे करीने तथा पोतानी बुद्धि
करीने तथा पोताना साहसीकपणाए करीने ॥१३॥न
थी॥१४॥उद्यम करतो एटले हमणा धर्मने विशे आ
लसु थायछे परतु पछी तु॥१५॥घणा काल सुधी॥१६॥
आ ससारने विशे रहीश ते कारण माटे आलस छा

डोने शक्तीने अनुसारे समकीत सहित धर्मने विशे उ
द्यम करवो ए उपदेश॥२९१॥

लदिलिय^१ च^१ बोहि^१ ॥ अकरितो^१ नागय^१ च^१ पधितो^१ ॥

अचदाइ^१ बोहि^१ ॥ लभसि^१ कयरेण^१ मुत्तेण^१ ॥२९२॥

अर्थ ॥१॥ आ जवने विशे पामी एहवी ॥२॥ बोधी
एटले जैन धर्मनी प्राप्ति प्रते ॥३॥ न करतो एटले न
आचरतो सतो ॥४॥ बली ॥५॥ अनागत काल सबधी ए
टले आगामी जव सबधी धर्मनी प्राप्ति प्रते ॥६॥ प्रा
र्थना करतो एटले वाच्छा करतो सतो एहवो ॥७॥ हे
मुख तु अन्य जवने विशे एटले आगामि जवने विशे
॥८॥ बोधि एटले जैन धर्मनी प्राप्ति प्रते ॥९॥ कीया ॥
१०॥ मुल्ये करिने ॥११॥ पामीश एटले हे मुख जो आ
जवने विशे पामेलो एहवो जे धर्म ते प्रते नथी आ
राधतो त्वारे आगामि भवने विशे शी रीते पामीश
ए जाव ॥१२॥ निश्चे ॥२९२॥

सघयणकालबलउसमास्त्यालवणाइ^१ धिचूण^१ ॥

सव^१ चिय^१ नियमधुर^१ ॥ निरुबजमाउ^१ पमुद्यति^१ ॥२९३॥

अर्थ ॥१॥ निरुद्यमि एटले आलसवत एहवा जे प्रा
णी ॥२॥ शरीरनु सघयण कालबल दुसमकाळ रोगा

दिक आलवन प्रते एटले हमणा तेहवु सघयण नथी
 अने हमणा काल पण दुकाल वर्ते छे अने हमणा ब
 ल एटले सामर्थपणु पण तेहवु नथी अने दुपमकाल
 एटले हमणा पाचमो आरो वर्ते छे अने हमणा रोग
 रहितपणु पण नथी ते माटे शी रीते धर्म करी स
 कीए ए प्रकारे आलवन प्रते॥३॥ग्रहण करीने एटले
 सघयणना बलादिकनो वाक काडीने॥४॥सर्व एहवी
 ॥५॥नियम रुपधुरा एटले चारित्रनी क्रिया तप प्रमु
 ख जे नियम एटले अजिग्रह तेहना चारनु वहन क
 रवु ते रुप धूसरा प्रते॥६॥प्रकर्षे करीने मुकी दे छे
 एटले जे आलशु पूरुप होयछे ते कालादिकनो दोष
 काडीने पोताना ग्रहण करेला व्रत प्रते मुकी देखे प
 ण उत्तम पूरुपोए तेम न करवु पोतानी शक्ति प्रमाणे
 धर्मने विशे उद्यम करवो ए उपदेश॥७॥निश्चो॥२९॥

क। ७ स्म३ य३ परिहाणी ॥ सप्तमनोगाद३ नथि३ पित्ताद३ ॥

तयणाद्-वडियव्य॥नहु॥ तयणा-भना॥ 'अग' ॥२९४॥

अर्थ ॥१॥ वली॥२॥कालनी ॥३॥समस्त प्रकारे हा

नी एटले निरतर कालनु घटवापणु वतेंछे॥१॥मंज
म निर्वाहने जोग्य एटले सजम पाखवाने जोग्य ए

हवा॥५॥क्षेत्र पण हमणा॥६॥नथि तारे शु करवु एवी
रीते गुरु महाराजनी आगल गिण्ये प्रण करचु त्यारे
गुरु महाराज उत्तर कहेंछे॥७॥ हे गिण्य जतनाए क
रीने एटले द्रव्य भाव वे प्रकारे जतना सहिता॥८॥वर्त
वु एटले प्रवर्तवु॥९॥जतना करवा माडे सते एटले
जतनाने विशे उद्यम करे सते ॥१०॥चारित्र रुप अग
जेते ॥११॥ नहिजा॥१२॥ जागे एटले विनाश प्रते न
पामे ए कारण माटे समकित सहित जतनाए करीने
पोतानि शक्ति प्रमाणे चारित्रने विशे उद्यम करवो

समिद्धकसायगारवइन्द्रियमयवभचेरगुप्तिमु॥

संभायविणयतवसत्तिउय॥जयणा सुविहियाण॥२५॥

अर्थ॥१॥सुविहीत एटले जलु विहित नाम आचरचु
छे आचरणते जेणे एहवा साधु जे तेमने ॥२॥ समिति
एटले इर्या समितियादिक पाच समिति तेमनु पाछ
वु, कपाय एटले क्रोधादिक च्यार कपाय तेमनो त्या
ग करवो, गारव शब्द करीने रिद्धीगारव रसगारव
सातागारव ए त्रण गारवनु निवारण करवु, इन्द्रिय ए
टले पाच इन्द्रियोनु वश करवु, मद एटले जाति मदा
दिक आठ मदनु निवारण करवु ब्रह्मचरज निगुप्ति

एटले ब्रह्मचरजनी नव वाडनु पालवु; एटला वाना
ने विशे एटले ए पूर्वे कहां पदार्थेने आश्रीने॥३॥
ली॥४॥ स्वाध्याय एटले वाचनादिक पाच प्रकारनी
संज्ञाय, विनय एटले दस प्रकारे विनय, तप एटले
वाइझ अभ्यंतर वे प्रकारे करीने वारे चेदे एटला वा
नानु करवुं शने शक्ति एटले पोतानी शक्तिनुं नगोप
ववु ए पूर्वे कहां संज्ञायादिक पदार्थेने आश्रीने॥५॥
जतना करवा जोग्य छे एटले पूर्वे कहां समितिपादि
क तथा संज्ञायादिक पदार्थेने विशे भला साधुजे ते
मणे निरंतर जतना करवी ए भावा॥२९५॥

हरे जतनानुं स्वरुप आगली गाथाए करीने केहेते
 दुखनि नंतरादिह ॥ १ ॥ य ॥ य ॥ चरणूणा ॥ मिमोहितो ॥
 अरु ॥ ज्ञाउत्तो ॥ ॥ दाय्याममिउ ॥ मुणी ॥ होइ ॥ ॥ २९६ ॥

अर्थ ॥३॥युगमात्र एटले साढा वण हाथ शयसा गा
र हाथ प्रमाण एहवु जे क्षेत्र तेनी मध्ये पापी छे
छी ते नेणे एहवो॥२॥चक्षुषे करीने एटले नेत्रे करीने
॥३॥आपन पगने विउं एटले पगले पगले॥४॥विगो
रने एटले मम्यक प्रकारे शयलोकरन करतो एहवो
॥५॥अक्षय गहिन एटले शय्यादिक विषयने विगो न

यि दिधु मन ते जेणे एहवो, ए कारण गाटे उपयोग
वत एटले धर्म ध्यान सहित एहवो॥७॥जे मुनि ते ॥
८॥इर्या एटले चालवानो मारग अथवा मुनीनो आचार
तेने विशे सावधान एटले सम्यक प्रकारे उपयोगवत
एहवो॥९॥होय एटले इर्या समितिनो पालनार कहीए॥

कडजे भासइ भास ॥ अणवन्न मकारणे न भासइ ॥ ५ ॥

विगहाविमुत्तिपपरिविजड ॥ अथा नइ ॥ भासणा समिड ॥ १२९ ॥

अर्थ ॥१॥कारज एटले ज्ञानादिकारज उत्पन्न थये
सते॥२॥दोपरहित एहवी॥ ३॥जापा एटले वचन प्रते
॥४॥जापण करेछे एटले बोले छे एहवो॥५॥वली॥६॥
कारण विना॥७॥नहिजा॥८॥बोले॥९॥वली॥१०॥विक
था एटले च्यार प्रकारनी विकथा तेणे करीने आगम
यि विरुद्ध वचननु बोलवु तथा चिंतवन करवु तेणे क
रीने रहित एहवो॥११॥जे जति एटले जे साधु होय
ते साधु॥१२॥भापण करवाने विशे एटले बोलवाने
विशे समित एटले सावधान होय एटले जापा समि
तिनो पालनार कहीए॥१२९॥

बायाळ मेसणाड ॥ भोयण दोसे ५ ॥ पच ५ सोहेइ ॥

सो ५ सणाइ समिड ॥ आजो वि ५ अन्नहा होइ ॥ १२९ ॥

अर्थ ॥१॥ वेतालीस प्रकारना॥२॥ एपणा दोष ए
टले आहारना दोष प्रते॥३॥वली॥४॥पाच एटले सजो
जनादिक पांच॥५॥भोजनना दोष एटले भोजन कर
तीषखत लागेछे ते प्रते॥६॥जे साधुसोधेछे एटले टाले
छे॥७॥ते साधु॥८॥एपणाने विशेषे एटले आहार ग्रहण
करवाने विशेषे समित अटले सावधान होय एटले ए
पणा समितिनो पालनारो कहिये॥९॥जो दोष न टा
ले तो॥१०॥आजिविकानो करनारो एटले पेट भरो
॥११॥होय एटले दोष सहित आहार ग्रहण करवेक
रिने पोतानी आजिविका चलावेछे ते केवल वेप धा
रण करवे करिने पेट भरनारो कहिये ॥२९८॥

पुर्वि^{अर्} चखूपरिखिय^{११}॥पमज्जिउ^{१२}॥जो^{१३}ठवेइ^{१४}गिन्हइ^{१५}वा^{१६}॥
आयाणभडनिखेवणाइसमिउ^{१७}मुणी^{१८}होइ^{१९}॥२९९॥

अर्थ ॥१॥जे साधु॥२॥प्रथम एटले ग्रहण करवा थ
कि पेहला॥३॥चक्षुअरे करिने सम्यक प्रकारे अवलो
कन करिने॥४॥पछि रजोहरणादिके करिने प्रमार्जन
करिने एटले पुजिने हरेक कोइ वस्तु प्रते॥५॥भूमिने
विशे स्थापन करेछे एटले मुकेछे॥६॥अथ^{१७}॥७॥भूमि
थाकि ग्रहण करेछे॥८॥ते मुनी ते साधु॥९॥आदान ए

एले भूमि थकि वस्तुनु ग्रहण करवु॥भाड एटले उप
करणनु भूमिने विगे निक्षेप एटले मुकवु तेहने विगे
समित एटले सावधान॥१०॥होय एटले जतना पूर्व
क ग्रहण करतोअथवा मुकतो एहवो जे साधु तेआ-
दानभडनिक्षेपणा समितिनो पालनार कहिये॥२९९॥

उच्चारपासवणखे ठजत॥सिध्याणपय॥पाणीवरी॥

सुविवेदणपणमे॥निसिरतो॥होइ॥तरसमिड॥३००॥

अर्थ ॥१॥उच्चार एटले वटिनीत एटले ठडीला॥पास
वण एटले लघुनीत एटले मात्रा॥खेल एटले मुखनो
मला॥जल एटले शरीरनो मला॥सिध्याण एटले नासि
कानो मल एटला वाना प्रते॥२॥वली॥३॥परठयवा
ने जोग्य एहवो अशुद्ध आहार पाणिनो विधि ते प्र
ते॥४॥रुडी रीते जाणेलो एटले प्रसथावर प्राणीये
करीने रहीत एहवा॥५॥भूमि प्रदेशने विशे एटले ग्या
नकने विशे॥६॥परठयतो एहवो जे मुनी ते मुनी॥७॥
परठयवाने विश सावधान एटले पारिष्ठापनास समि
तिनो पालनारा॥८॥हाय॥३००॥

कोटो॥पणो॥माया॥॥गेमो॥तासा रड॥अ॥बरड॥अ॥

खोमो॥भय॥दुग छ॥॥पण॥वरी॥हमे मरे ॥३००॥

अर्थ॥१॥क्रोध एटले अप्रितिरूप॥२॥मान एटले पा
रका गुणनु न सहन करवु ते रूप॥३॥माया एटले स्ने
हरूप॥४॥लोचन एटले गृथील पणू॥५॥हास एटले ह
सवु॥६॥वली॥७॥अरति एटले असजमने विशे प्रीति
॥८॥वली॥९॥अरति एटले चित्तने विशे उदवेग॥१०॥
शोक एटले शोच करवो॥११॥भय एटले सात प्रकारे जय
करवो॥१२॥जुगुप्सा एटले निंदा॥१३॥आ पूर्वे कहा
एहवा॥१४॥सर्वे पण॥१५॥प्रत्यक्ष क्लेशरूप जाणवा हवे
आगली गाथाने विशे प्रथम क्रोधना नेद कहेछे॥३०१॥

कोहो^१ कलहो^२ खारो^३ । अवसुपरमच्छरो^४ अणुसउ^५ अ^६ ।

चंडत्तण^७ मणुवसमो^८ तामसभावो^९ अ^{१०} संतावो^{११} । ३०२॥

अर्थ॥१॥क्रोध एटले केवल अप्रीतिरूप॥२॥ कलह
एटले वचने करीने राड्यो पाडवी॥३॥खार एटले प
रना उपर माठु चितववु॥४॥माहोमाहे मच्छर धारण
करवो ते पण क्रोधनो नेद जाणवो॥५॥ वली॥६॥ प
श्चाताप ते पण क्रोधनु नाम जाणवु केमजे क्रोध थ
की पश्चाताप उत्पन्न थायछे ए कारण माटे॥७॥कुरप
णु एटले भ्रघुटीनु चढाववु॥८॥उपशात रहितपणु॥९॥
तामसपणु॥१०॥वली॥११॥तताप एटले चितने विशे

उद्वेगकरयो ए पूर्वे कहा सर्वे पण क्रोधना नाम जाणवा

निच्छोदण^१ निभच्छण^२ ॥ निराणुवात्तेत्तण^३ असवासो^४ ॥

कयनासो^५ अ^६ असम्म^७ ॥ बाधह^८ १ ० ॥ वणचिकण^९ कम्म^{१०} ॥ ३०३ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ निच्छोदन एटले क्रोध थकी पोताना आ

त्माने मालिन करवु ॥ २ ॥ निरभ्रसन एटले परने कठोर

वचन बोलवुं ॥ ३ ॥ क्रोधथाकि पोताने छटे वर्तवुं ॥ ४ ॥

क्रोध थकी मुनीयोना परिवार मध्ये न रहेवुं एटले ए

काकी विचरवु ॥ ५ ॥ बली ॥ ६ ॥ कृतनाश एटले करेला उ

पकारनो नाश करवो ॥ ७ ॥ असमपणु एटले समताए क

रीने रहीतपणु ए सर्वे पूर्वे कहा ते क्रोधना पर्जायना

म जाणवा ते क्रोधना पर्जाय नामने विशेषत्ततो एह

वो जे जीव ते ॥ ८ ॥ निविड एहवु अने चिकणु एटले अ

तिशय कटुक एहवु ॥ ९ ॥ कर्म प्रते ॥ १० ॥ बाधेछे ए का

रण माटे क्रोध त्यागवा जोग्यछे हवे मानना पर्जाय

नाम आगली गाथामा कहेछे ॥ ३०३ ॥

माणो^१ मय^२ हकारो^३ ॥ परपरिवाद^४ अ^५ असउकरिसो^६ ॥

परपरिभवो^७ विव^८ तहा^९ ॥ परस्सनिदा^{१०} अमूया^{११} ॥ ३०४ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ मान एटले अनीमान ए सामान्य नाम जा

णवु ॥ २ ॥ मद एटले जात्यादिकनो उत्कर्ष करवो ॥ ३ ॥

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

माया^१कुडागि^२पच्छन्नपावया^३॥कुड^४कवड^५धचणया^६॥

सद्व्यअसम्भावो^७॥परनिटखेवावहारो^८य^९॥३०६॥

अर्थ॥१॥हवे मायाना पर्याय नाम कहेछे माया॥२॥

वश जालनी पठम घहन एटल उडु॥३॥छानु पाप प

णुं एटले छानु पाप कर्मनु करवु॥४॥कुट एटले अवलु

करवु ॥५॥ कपट ॥६॥ ठगवा पणु एटले मायाये क

रीने परने ठगवु॥७॥सर्व ठेकाणे असद्भाव एटले होय

बीजु अने केहेवु बीजु ॥८॥ वली॥९॥पारकी थापणनु

ओलववु ए सर्व मायाना पर्जाय नाम जाणवा॥३०६॥

छळ^१छोम^२सवइयरो^३॥गुढायारिचण^४मईकुटिला^५॥

बीसमघायण^६पि^७य^८॥भवकोडिसएसुवि^९नडाति^{१०}॥३०७॥

अर्थ ॥१॥ छल एटले मायाये करीने परने छेतरवु

॥२॥ छोम एटले छय एटले कपट करवु ॥३॥ माया

ये करीने पोतानु कार्य साधवाने अर्थ गाढा पणु क

रवु ॥४॥ गुढ आचारि पणु एटले गुप्त आचार पणु

॥५॥ मतिनु कुटिल पणु एटले वाकी मति ॥ ६॥ व

ली ॥ ७॥ विश्वासघात करवो ॥८॥ पादपूणे ॥९॥ ए

पूर्व कह्या मायाना पर्जायनाम नवनी कोटीना सैक

डोने विशे एटले कोडो नवने विशे पण ॥ १०॥ न

डेछे एटले दुखदाइ थायछे. माया थकी उत्पन्न थयाजे
कर्म, जोगव्या विना क्षय थाय नही ए कारण माटे
मायात्यागवाजोग्यछे माया एटलेकपटरचनासमजवी

लोभो^१ अइसचयसीलया^२ य^३ ॥ किलिद्वत्तणं^४ अइममत्त^५ ॥

कण्णमपरिभोगो^६ ॥ नइविणट्टेसु^७ आगल^८ ॥ ३०८ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ लोभ ए सामान्य नाम जाणवु ॥ २ ॥ पली ॥ ३ ॥

अतिशय सचय शीलपणु एटले लोभे करीने अनेऊ
वस्तुनो अथवा एक वस्तुनो अतिशय सग्रह करवानो
स्वप्नावा ॥ ४ ॥ कलिष्ट पणु एटले लोभे करीने मननुं क
लुंयपणु ॥ ५ ॥ अतिममत्वपणु एटले वस्तुनेविशे अतिश
य माहरापणु ॥ ६ ॥ भोगववा जोग्य एहवु अन्नादिक
तेहनु न भोगववु ॥ ७ ॥ नाशविनाश थयेसते एटले गा
य चोडादिकनु नाश थये सते अने धान्यादिकनो पि
नाश थये सते ॥ ८ ॥ रोगादिकनु थवु ए सर्वे लोभना
नाम जाणवा द्रव्यजात्र वे प्रकारे लोभ समजवो ३०८

मुच्छा^१ अइचट्टु^२ गयेभया^३ य^४ ॥ १७ भावभाषणा^५ य^६ सया^७ ॥

वे नि^८ मत्तामोरे^९ ॥ जग्मरणमत्ताममुदमि^{१०} ॥ ३०९ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ मुर्छा एटले पदार्थने पिगे तिप्ररागा ॥ २ ॥

वन्नी ॥ ३ ॥ अतिशय बहु धनने पिगे लोभपणु ॥ ४ ॥ पली

॥५॥ ते लोच जावे करीने मनना जावनु विचारवाप
ण एटले द्रव्य ग्रहण करवानी विचारणा ए पूर्वे क
ह्या सामान्य विशेष लोचना जेद ते जे ते॥६॥निरतर
संसारी जीवो प्रते॥७॥अतिशय जयनो करनार एह
वो॥८॥जरा मरण रूप महा समुद्र एटले मोहोटी स
मूद्र तेहने विशेष॥९॥बोलेछे एटले डुवाडेछे ए कारण
माटे लोच त्यागवा जोग्यछे॥३०९॥

एसु^१बो^१न^१वाडिज्जा^१तेण^१अप्पा^१नहडिउ^१नाड^१॥

मणूआणमाणणीज्जो^१देवाणवि^१देवय^१हुब्जा^१॥३१०॥

अर्थ॥१॥जे पूरुप एटले जाण्याछे तत्व ते जेणे एह
वो जे पूरुपा॥२॥ए पूर्वे कह्या जे कपायादिक तेमने
विशे॥३॥न॥४॥वर्ते एटले कपायादिक प्रते न करे
॥५॥ते पूरुप जे तेणे॥६॥जथार्थ एटले सत्यकर्म थकि
जिन्न एहवो॥७॥पोतानो आत्मा॥८॥जाण्यो एटले क
पाय रहीत थाय तो पोताना आत्मा प्रते जथार्थपणे
जाणे ते पूरुप केहेवो होय ते केहेछे॥९॥मनुष्योने मा
नवा जोग्य होया॥१०॥देवताओंने पण एटले इद्रादि
कने पण॥११॥पूजवा जोग्या॥१२॥होय॥३१०॥

बो^१भासुर^१भूयग^१॥पयडदादाविस^१विउडे^१॥

તત્તોચિય૨તસ્સ૨તો૮૥રોસમુનગોવમાણ૧૧મિણ૧૦૥૩૧૨૥
 અર્થ૥૧૥જે પૂરુપ૥૨૥નાસૂર એટલે વિહામણો ૨૯
 ૥૩૥આકરુ છે દાઢાને વિશે વિપ તે જેહને એહવો૥૪
 જૂજગ એટલે સર્પ તે પ્રતે૥૫૥સ્પર્શ કરેછે એટલે
 ડકેછે૥૬૥તે સ્પર્શ થકિ૥૭૥તે પૂરુપનું૥૮૥મરણ
 છે૥૯૥નિશ્ચે૥૧૦૥આ૥૧૧૥રોસ એટલે ક્રોધને
 સર્પનુ ઉપમાન જાણવુ એટલે રોસરૂપ સર્પ જે તે વળ
 ફરસ્યો સતો સજમરૂપજીવિત પ્રતે નાશકરેછે૥૩૧૧૥
 નો૧આગલે૨૧મત્ત૧૥કયતકાલોવમ૧વળગયદ૧૥
 સો૧તેણ૧ચિય૧છુજ્જ૨૮૥માણગયદેણ૧૦૨૫૧૧વમા૧૨૥૩૧૨૥
 અર્થ૥૧૥જે અજ્ઞાની પૂરુપ૥૨૥મદોન્મત્ત એહવો૥૩૥
 મરણ કાલે કરીને છે ઉપમા તે જેહને એટલે મરણ
 કાલની પઠમ અતીશય જયનો કરનાર એહવો૥૪૥
 વનનો હાથી તે પ્રતે૥૫૥આરુપણ કરેછે એટલે સંપદે
 ૥૬૥તે મૂરસ પૂરુપ૥૭૥તે વન હસ્તી જે તેણે ૥૮૥
 ચૂરણ કરીએ છીએ એટલે તે હસ્તી તે સેવનાર ૫૦૫
 પ્રતે ચૂરણ રૂપ કરેછે૥૯૥નિશ્ચે૥૧૦૥એ પ્રકારે માનરૂ
 પ હસ્તીયે કરીને૥૧૧૥હા૥૧૨૥ઉપમા જાણી એટ
 લે જે અજ્ઞાની પૂરુપ માન રૂપ હસ્તી પ્રતે આરુપણ

करेछे एटले मान करेछे ते पुरुष प्रते मान हस्ती जे
ते चूरण रूप करेछे एटले चार गतिमा नमावेछे. ए
माटे मानरूपहस्तीनो स्पर्श न करयो एनावा॥३१२॥

विभवलीमहागहन॥॥जो॥पविस्व॥साणुवायफारिमविस॥॥

सो॥अचिरेण॥विणस्व॥माया॥विभवलीमहनसमा॥॥३१३॥

अर्थ॥१॥जे पुरुष ॥२॥ अनुकुल एहयो वायरो तेना
स्पर्श थकीज उत्पन्न थयु एहवु जे विष तेहणे करीने
सहीत एटले जे वनने विशे वायुना स्पर्श थकीज विष
लागेछे एहवु॥३॥विषरूप वेला तँमणे करीने मोहटु
एहवु घहन एटले साकहु एहवु जे वन एटले विषरूप
बेलनु मोहटु वन ते प्रते॥४॥प्रवेश करेछे॥५॥ने पुरुष
॥६॥थोडा कालमा॥७॥विनाश प्रते पामेछे॥८॥ए प्रकार
माया जे ते पण॥९॥विषयहीना वन सरखी जाणवी.

घोरे॥भयागरे॥सागरमि॥॥तिमिमगरगाहपूरीम॥॥

सो॥पविस्व॥सो॥पविस्व॥॥जोभमहासागर॥भीमे॥॥३१४॥

अर्थ॥१॥जे पुरुष ॥२॥घोर एटले भयकर एहयो॥३॥
भयनु स्थानक एहवो॥४॥मच्छ मछर जीव विगेष तँम
नूछे पुर ते जेहने विशे एटले विहामणा एहयो जल
जनुए करीने पूरण एहयो॥५॥समुद्र तेहने विशे ॥६॥

करेछे एटले मान करेछे ते पूरुप प्रते मान हस्ती जे
ते चूरण रूप करेछे एटले चार गतिमां जमावेछे. ए
माटे मानरूपहस्तीनो स्पर्श न करवो एजावा॥३१२॥

विसवल्लीमहागहन१॥जो१पविसइ१साणुवायफारिसविस१॥

सो१अचिरेण१विणस्सइ१माया१विसवल्लीगहनसमा१॥३१३॥

अर्थ॥१॥जे पुरुष ॥२॥ अनुकुल एहवो वायरो तेन
स्पर्श थकीज उत्पन्न थयु एहवु जे विप तेहणे करीने
सहीत एटले जे वनने विशे वायुना स्पर्श थकीज विप
लागेछे एहवु॥३॥विपरूप बेला तेमणे करीने मोहटु
एहवु घहन एटले साकडु एहवु जे वन एटले विपरूप
बेलनु मोहटु वन ते प्रते॥४॥प्रवेश करेछे॥५॥ते पूरुप
॥६॥थोडा कालमा॥७॥विनाश प्रते पामेछे॥८॥ए प्रकारे
माया जे ते पण॥९॥विपवल्लीना वन सरस्वी जाएवी

घोरे१भयागरे१सागरंमि१॥तिमिमगरगाहपूरमि१॥

जो१पविसइ१सो१पविसइ१॥लोभमहासागरे१भीमे१॥३१४॥

अर्थ॥१॥जे पुरुष ॥२॥घोर एटले भयकर एहवो॥३॥
भयनु स्थानक एहवो॥४॥मच्छ मघघर जीव विशेष तेम
नूछे पूर ते जेहने विशे एटले बिहामणा एहवा जल
जतुए करीने पूरण एहवो॥५॥ममुद्र तेहने विशे ॥६॥

તત્તોચિયત્તસ્સતો ॥ રોસભુજગોવમાણ ૧૧ મિણ ૧૦ ॥ ૩૨૨ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ જે પૂરુષ ॥ ૨ ॥ નાસૂર એટલે વિહાંમણો એહવો ॥ ૩ ॥ આકરુ છે દાઢાને વિશે વિપ તે જેહને એહવો ॥ ૪ ॥
 નૂજગ એટલે સર્પ તે પ્રતે ॥ ૫ ॥ સ્પર્શ કરેછે એટલે શ્ર
 ડકેછે ॥ ૬ ॥ તે સ્પર્શ થકિ ॥ ૭ ॥ તે પૂરુષનું ॥ ૮ ॥ મરણ થાય
 છે ॥ ૯ ॥ નિશ્ચે ॥ ૧૦ ॥ આ ॥ ૧૧ ॥ રોસ એટલે ક્રોધને વિશે
 સર્પનું ઉપમાન જાણવું એટલે રોસરૂપ સર્પ જે તે ણ
 ફરસ્યો સતો સજમરૂપ જીવિત પ્રતે નાશ કરેછે ॥ ૩૧૧ ॥

જો ૧ આગલે ૬ મત્ત ૧ ॥ કયતકાલોવમ ૧ વળગયદ ૧ ॥

સો ૧ તેણ ૧ ચિય ૧ છુઝ્ઝ ૬ ૮ ॥ માણગયદેણ ૧ ૦ ૬ થુ ૧ ૧ વમા ૧ ૧ ॥ ૩૨૨ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ જે અજ્ઞાની પૂરુષ ॥ ૨ ॥ મદોન્મત્ત એહવો ॥ ૩ ॥
 મરણ કાલે કરીને છે ઉપમા તે જેહને એટલે મરણ
 કાલની પઠમ અતીશય નયનો કરનાર એહવો ॥ ૪ ॥
 વનનો હાથી તે પ્રતે ॥ ૫ ॥ આકર્ષણ કરેછે એટલે ૧
 ॥ ૬ ॥ તે મૂરખ પૂરુષ ॥ ૭ ॥ તે વન હસ્તી જે તેણે ॥ ૮ ॥
 ચૂરણ કરીએ છીએ એટલે તે હસ્તી તે સ્વેચનાર પૂરુષ
 પ્રતે ચૂરણ રૂપ કરેછે ॥ ૯ ॥ નિશ્ચે ॥ ૧૦ ॥ એ પ્રકારે માનરૂ
 પ હસ્તીયે કરીને ॥ ૧૧ ॥ ૩૨૩ ॥ ૧૨ ॥ ઉપમા જાણવી એટ
 લે જે અજ્ઞાની પૂરુષ માન રૂપ હસ્તી પ્રતે આકર્ષણ

करेछे एटले मान करेछे ते पुरुष प्रते मान हस्ती जे
ते चूरण रूप करेछे एटले चार गतिमा जमावेछे ए
माटे मानरूपहस्तीनो स्पर्श न करयो एजाया॥३१२॥

विमबलीमहागहण॥॥जो॥पविसद॥सा॥गुवायफारिसविम॥॥

सो॥अचिरेण॥विणस्सद॥माया॥विमबलीगतनसमा॥॥३१३॥

अर्थ॥१॥जे पुरुष ॥२॥ अनुकुल एहयो वायरो तेना
स्पर्श थकीज उत्पन्न थयु एहवु जे विप तेहणे करीने
सहीत एटले जे वनने विशे वायुना स्पर्श थकीज विप
लागेछे एहवु॥३॥विपरूप बेल्ला तेंमणे करीने मोहटुं
एहवु घहन एटले साकडु एहवु जे वन एटले विपरूप
बेलनु मोहटु वन ते प्रते॥४॥प्रवेश करेछे॥५॥ते पुरुष
॥६॥थोडा कालमा॥७॥विनाश प्रते पामेछे॥८॥ए प्रसार
माया जे ते पण॥९॥विपबलीना वन सरसी जाणसी

घोरे॥भयागरे॥सागरमि॥॥तिममगरगाहपूरमि॥॥

सो॥पविसद॥सो॥पविसद॥॥गेभमहाणागरे॥भीमे॥॥३१४॥

अर्थ॥१॥जे पुरुष ॥२॥घोर एटले भयकर एहयो॥३॥
भयनु स्थानक एहवो॥४॥मच्छ मच्छर जीर दिशेप तेम
नूछे पुर ते जेहने विशे एटले बिहामणा एहना जल
जनुए करीने पूरण एहयो॥५॥समुद्र तेहने विशे॥६॥

प्रवेश करेछे॥७॥ते पूरुप॥८॥नयंकर एहवा॥९॥लोम
रूप मोहटा समुद्रने विशे॥१०॥प्रवेश करेछे एटले जे
म समुद्रने विशे पेठो सतो जे पूरुप अनर्थ प्रते पामे
छे तेम लोमरूप समुद्रने विशे पड्यो सतो मोहोटा
अनर्थ प्रते पामेछे ए जाव॥३१४॥

गुणदोसबहुविसेसं॥१॥पयपय१जाणिऊण१नीसेस॥

दोसेमु१जणो१न१विरज्जइ१त्ति१कम्माण१०अहिगारो॥३१५॥

अर्थ॥१॥जन एटले लोक जे ते॥२॥पग पगने विशे
एटले श्री सर्वज्ञ महाराजे कहेलु एहवु जे सिद्धात ते
हने विशे ठाम ठाम॥३॥गुण ज्ञानादिक मोक्षना कारण
अने दोष क्रोधादिक ससारना कारण तेमनी मध्ये
बहु विशेष एटले मोटा अंतर प्रते॥४॥समस्त प्रका
रे॥५॥जांणीने॥६॥दोष थकी एटले क्रोधादिक थकी
॥७॥नथी॥८॥विराम पामतो॥९॥ए प्रकारे॥१०॥आ
कर्मनो॥११॥अधिकार एटले दोष जाणयो एटले जा
णतो सतो पण कर्मना वशथकी दोष प्रते त्याग क
रवाने नथी समर्थ थतो ए भाव॥३१५॥

अटइहाम१केटीकिलत्तण१हासखिइ१ममगरु१॥

कटण१टपहमण१॥गरुम१न१करति१०अणगारा१॥३१६॥

अर्थ॥१॥ मुनीराज महाराज जे ते ॥२॥ पग्ने एटले
बीजा पुरुपने॥३॥ मोहट्टु हामा॥४॥ क्रीडाए करीने छिट
पणु एटले परनी क्रीडाने विशेषे अणमिलतु वचन बो
लवु॥५॥ हासीए करीने पारका शरीरनो वारवार फर
स करवो॥६॥ समकाले हाथने विशेषे ताली आपवी॥७॥
कटर्प एटले भांडनी पठम चेष्टा करवी॥८॥ सामान्य
प्रकारे हसवु ए पूर्वे कहा एटलां वानां॥९॥ न॥१०॥
करावे अने पोते पण न करे॥३१६॥

साहूण अणरुद॥ मसगीरपलोअणा तवे अरद॥

मुषियवन्नो अरुपहारिसो नानधि मुसाहूण॥३१७॥

अर्थ॥२॥ साधु मुनिराजने॥२॥ आत्मरुचि एटले रखे
मने टाहाडतडकादिक दृखिकरी ए प्रकारे पोतानु यल्ल
नपणु॥३॥ पोताना शरीरनु तका पाणी आदिकने वि
शे अवलोकन करवु एटले जोवु॥४॥ तपने विशेषे ॥५॥
अरति एटले तप करवे करीने शरीर दृवळु पक्षे एह
वी बुद्धिए करीने चित्तने विशेषे उदवेगा॥६॥ रुडा वरण
वालो दृष्टु एटले ह रुढोछु ए प्रकारे पोतानो प्रकाश
करवो॥७॥ अतिशय मोटो लाज थये सते प्रकरपे
करीने हरप करवो ए पूर्वे कहा जे रतिना प्रकारा॥८॥

न होय॥१॥सुसाधु जे तेमने पूर्वे कह्या एहवा जे
ना प्रकार नथी सेवन करवा जोग्य एटले सुसाधु
होय ते पुद्गलभावनेविशे रति करे नही ए भाव३१७

उधेवउ^१अ^२अरणामउ^३अ^४॥अरमतिया^५य^६अरइ^७य^८॥

कलमलउ^९अणेगगया^{१०}य^{११}॥रुत्तो^{१२}सुविहियाण^{१३}३१८॥

अर्थ ॥१॥ उदवेग एटले धर्मनी समाधि थकी चल
वापणुं॥२॥वली॥३॥पाच इद्रियोना विषयने विशे मन
नुं जवु॥४॥वली॥५॥धर्मने विशे मननु नरमवु एटले
धर्म थकि विमुखपणु॥६॥वली॥७॥अरति एटले अति
शय चित्तनो उदवेग॥८॥वली॥९॥विशयने विशे मननु
व्याकुलपणुं॥१०॥वली॥११॥अनेकाग्रपणु एटले अण
मिलतु मनने विशे विचारवु ए पूर्वे कह्या एहवा मन
ना सकल्प एटले अरतिना प्रकार॥१२॥सुविहित सा
धुओने एटले उत्तम मुनीयोने॥१३॥क्याथकि होय अ
पितु नहिंज होय ए जावा॥३१८॥

सोग^१सताव^२अधिइ^३च^४॥मन्नु^५च^६वेमणस्स^७च^८॥

कारुन्नरुन्नभाव^९॥न^{१०}साहुधम्ममि^{११}इच्छति^{१२}३१९॥

अर्थ ॥१॥ शोक एटले पोताना सबधी लोकनु
ए थये सते शोक घरवो॥२॥सताप एटले अतिशय उ

चाट करवो॥३॥वली॥४॥अधिरज एटले हा इति खेदे
 क्येम हू एहवु गाम अथवा उपाश्र प्रते मुकु ए प्रका
 रे विचारवु॥५॥वली॥६॥मन्नु एटले इद्रियोनु मोकलु
 मेलवु॥७॥वली॥८॥मननु उदासीपणु एटले शोके क
 रीने पोताना घातनु विचारवु॥९॥करुणापणु एटले थो
 डु शु रोवु, मोटा शब्दे करीने रोवु॥१०॥साधु धर्मने
 विशे रहेला एहवा साधु जे ते आ पूर्वे कहा एहवा
 जे शोकना जेद तेहनी मध्येयी एक पण जेद प्रते॥११॥
 ना॥१२॥इछे एटले साधु मुनिराज जे ते पूर्वे कहा ए
 हवा शोक प्रते न करे ए जाव॥३१९॥

भय^१सखोह^१विसाड^१॥मग्गविभेउ^१विभीसियाउ^१अ^१॥

परमग्गदसणाणि^१अ^१॥॥दढधम्माण^१कड^१हुति^१॥॥३२०॥

अर्थ ॥१॥ भय एटले कलीवपणे करीने अकस्मात
 बीहवु॥२॥मक्षोज एटले चोरादिक देखीने नामवु॥३॥
 विषाद एटले दिनपणु॥४॥मार्गनो विजेद एटले मार्ग
 ने विशे सिंहादिक प्रते देखीने ग्राम पामनु॥५॥विजि
 सिका एटले वेतालादिक देवता प्रते देखीने जय पा
 मवो॥६॥वली॥७॥पग्ना एटले कुतीथियोना जे मा
 र्ग तेमनु जय थकी वा अथवा पोताना स्वाथ थकी दे

न होय॥९॥सुसाधु जे तेमने पूर्वे कह्या एहवा जे
ना प्रकार नथी सेवन करवा जोग्य एटले
होय ते पुद्गलभावनेविशे रति करे नही ए भाव३१

उच्चेवउ^१अ^२अरणामउ^३अ^४॥अरमतिया^५य^६अग्नि^७य^८॥

कलमलउ^९अणेगगया^{१०}य^{११}॥रुत्तो^{१२}सुविहियाण^{१३}३१४

अर्थ ॥१॥ उदवेग एटले धर्मनी समाधि थकी
वापणु॥२॥वली॥३॥पाच इद्रीयोना विषयने विशे मन
नुं जवुं॥४॥वली॥५॥धर्मने विशे मननु नरमवु
धर्म थकि विमुखपणु॥६॥वली॥७॥अरति एटले
शय चित्तनो उदवेग॥८॥वली॥९॥विशयने विशे मननु
व्याकुलपणु॥१०॥वली॥११॥अनेकाग्रपणु एटले अण
मिलतुं मनने विशे विचारवु ए पूर्वे कह्या एहवा मन
ना सकल्प एटले अरतिना प्रकार॥१२॥सुविहित सा
धुआने एटले उत्तम मुनीयोने॥१३॥कयाथकि होय
पितु नहिज होय ए जाव॥३१८॥

सोग^१संताव^२अधिइ^३च^४॥मन्नु^५च^६वेमणस्स^७च^८॥

कारुन्नरुन्नभाव^९॥न^{१०}साहुधम्ममि^{११}इच्छति^{१२}३१९॥

अर्थ ॥१॥ शोक एटले पोताना सबधी लोकनु
ए थये सते शोक धरवो॥२॥सताप एटले अतिशय उ

फेडेउण न तीरह ॥ अतिबलीड ॥ कम्मसथाड ॥ ३२२ ॥
 अर्थ ॥ १ ॥ प्रसिद्ध एटले जिनराजे कहेलो एहवो ॥
 आ पूर्वे कहेलो कपायादिकनो निग्रह करवो एटले
 दूर करवू त्यारे शीष्य बोल्यो जे पूर्वे कहेला कपाय
 ना स्वरूप प्रते पण ॥ ३ ॥ जाणीने ॥ ४ ॥ जीवने शु ॥ ५ ॥
 नीश्रो ॥ ६ ॥ मुझावु जोग्यछे ॥ एटले मुढपणे थवु घटीतछे ॥
 अपीतु मुझावु घटीत नथी त्यारे कपायादिकना स्वरूप
 प्रते जाणीने पण क्येम मुझायछे क्येम दूर नथी क
 रतो तेनो उत्तर कहोये छोये ॥ ७ ॥ जीव जे तेणे फेडवा
 ने एटले कपायादिक दूर करवाने ॥ ८ ॥ ना ॥ ९ ॥ समरथ थ
 ह्ये छीए एटले जीव जेते कपायादिक प्रते दूर करवा
 समर्थ थतो नथी तेहने विशेष कारण कहेछे जे कारण
 टो ॥ १० ॥ कर्मनो समूह एटले आठ कर्मनो समूदाया ॥
 ॥ अतिशय बलवान वर्ते छे एटले जिहा सुधी कर्मनु
 वानपणु वर्ते छे तिहा सुधि जीव जे ते कपायादिक
 र करवाने समर्थ थतोज नथी ए भाव ॥ ३२२ ॥
 ह ॥ बहुसुड ॥ सम्मउ ॥ य ॥ सीसगणसपरिवुडो ॥ अ ॥ आविणि
 ॥ अ ॥ समए ॥ तह ॥ तह ॥ सिद्धतपडिणीड ॥ ३२३ ॥
 ॥ १ ॥ जेमा ॥ २ ॥ जेमा ॥ ३ ॥ बहुश्रुत थायछे एटले ब

खाडवुं एटले परुपवु अथवा परने एटले रस्ताना
 लनार लोकोने जये करीने मारगनुं देखाडवु ए पूर्वे
 कहा एहवा सर्वे पण भयना प्रकार ॥ ८॥ द्रढ छे
 म ते जेमने एहवा जे साधु तेमने ॥ ९॥ क्यार्थी ॥ १०॥
 होय अपीतु नहीज होय ॥ ११॥ निश्चये ॥ ३२०॥
 कुच्छा^१चिलीणमलसकडेसु^२ ॥ अवेवड^३अणिद्वेसु^४ ॥
 चखुनियत्तण^५मसुभेसु^६ ॥ नथि^७दवेसु^८दताण^९ ॥ ३२१॥
 अर्थ ॥ १॥ अपवीत्र एहवो जे मल तेणे करीने
 लां एहवां मुएला कलेवर तेमने विशे एटले
 ॥ २॥ जुगुप्सा एटले निदा न करवो ॥ ३॥
 विशे एटले मलिन देह वस्त्रादिकने विशे ॥ ४॥
 ग न करवो ॥ ५॥ अशुभ एटले कीडायोए भक्षण
 ला एहवा ॥ ६॥ द्रव्य मुयेलां कुत्रादिक द्रष्टिने
 आवे सते ॥ ७॥ आंख्योनु पाछु वालवुं एटले
 ए करीने न जोवु ए पूर्वे कहा जे निदाना
 दान्त पूरुपोने एटले इद्रियो दमि छे जेमणे एहवा
 रुपोने ॥ ८॥ न होय एटले दान्त पूरुप जे ते पूर्वे
 एहवो वस्तुनी निदा न करे अपीतु समभाव राखे ॥ ३२१॥
 एयपि^१नाम^२नाऊण^३ ॥ मुझियवात्ति^४भूण^५बीवस्स^६ ॥

फेडवण न स्तीरइ १॥ अतिबलीड १॥ कम्मसघाड १॥ ३२२॥

अर्थ ॥ १॥ प्रसिद्ध एटले जिनराजे कहेलो एहवो ॥ २॥

आ पूर्वे कहेलो कपायादिकनो निग्रह करवो एटले
दूर करवू त्यारे शीष्य बोल्यो जे पूर्वे कहेला कपाय
ना स्वरूप प्रते पण ॥ ३॥ जाणीने ॥ ४॥ जीवने शु ॥ ५॥
नीश्वे ॥ ६॥ मुझावु जोग्यछे? एटले मुढपणे थवु घटीतछे?
अपीतु मुझावु घटीत नथी त्यारे कपायादिकना स्वरूप
प्रते जाणीने पण क्येम मुझायछे क्येम दुर नथी क
रतो तेनो उत्तर कहीये छीये ॥ ७॥ जीव जे तेणे फेडवा
ने एटले कपायादिक दूर करवाने ॥ ८॥ न ॥ ९॥ समर्थ थ
इऐ छीए एटले जीव जेते कपायादिक प्रते दूर करवा
ने समर्थ थतो नथी तेहने विशेष कारण कहेछे जे कारण
माटे ॥ १०॥ कर्मनो समूह एटले आठ कर्मनो समूदाय ॥
११॥ अतिशय बलवान बर्ते छे एटले जिहा सुधी कर्मनु
बलवानपणु बर्ते छे तिहा सुधि जीव जे ते कपायादिक
ने दूर करवाने समर्थ थतोज नथी ए भाव ॥ ३२२॥

तह १॥ तह १॥ बहुमुड १॥ सम्मउ १॥ य १॥ सीसगणसपरिवुडो १॥ अ १॥ धाविणि
च्छिड १॥ अ १॥ समए १॥ तह १॥ तह १॥ सिद्धतपडिणीड १॥ ३२३॥

अर्थ ॥ १॥ जेमा ॥ २॥ जेमा ॥ ३॥ बहुश्रुत थायछे एटले ब

दूश्रुत सांचल्यु छे जेणे एहवो अथवा बहुश्रुतनो नण
 नारो थायछे॥४॥वली॥५॥सम्मत् एटले घणा अज्ञानी
 लोकोने मान्य एटले वल्लभ थायछे॥६॥वली॥७॥शी
 प्यना समुहे करीने परवरेलो एटले बहु परीवारे करी
 ने परवरेलो एहवो थयो सतो पण जो॥८॥पादपूर्णे॥९॥
 जिनमारगने विशे एटले जिनराजना सिद्धातने विशे
 ॥१०॥निश्चय रहित एटले नथी जाण्यो रहस्य ते जे
 णे एहवो एटले अनुभवज्ञान रहित एहवो होयतो॥११॥
 तीमा॥१२॥तीमा॥१३॥सिद्धातनो एटले जीनशासननो
 प्रत्यनीक एटले वयरी भुत जाणवो जाण्यो छे तत्व ते
 जेणे एहवो थोडु भणेलो छे तोये पण मोक्ष मारगनो आ
 राधक जाणवो ए भाव॥३२३॥

पवराद्^१वस्थपायासणोवगरणाद्^२एस^३विभवो^४मे^५॥

अवि०य०महाजननेया०अह०ति०इह०इद्विगारविउ०॥३२४॥

अर्थ ॥ १ ॥ हवे रिधि गारवनु लक्षण कहिये छीए माहा

गोत्राः॥३॥प्रधान एहवा॥४॥वस्त्र पात्र आसन उप

रूपोने नि रूप॥५॥ वैभव एटले सपत्ति वर्तते छे॥६॥ यली

एहवी वस्तु। महाजननो एटले मोहोटा शेठशाह्णकारोनी

एतद्विनाम नन्वामिच्छु ॥ ९ ॥ इहा ॥ १० ॥ ए प्रकारे पोताना

चितमा विचारवे करीने॥११॥रिद्धि गारववालो कहीये
एटले जे साधु पूर्वे कह्यो एहवो विचार करे ते रीधी गा
रवनो करनार कहीये॥३२४॥

अरस^१विरस^२ल्ह^३॥जहोवन्न^४च^५निध^६ए भुत्तु॥
निद्राणि^१पेसलाणि^२१५॥मगद^३रसगारवे^४गिदो॥३२५॥
अर्थ॥१॥हवे रसगारवनु लक्षण कहेछे रसगारवने
विशे॥२॥ग्रथिल एटले लोलपि एटले सारा सारा
आहार खावानी इच्छावालो थयो सतो एहवो जे ना
म मात्र साधु॥३॥रसे करीने रहीत एहवु॥४॥जुनु एह
वु॥५॥लुखु एहवु॥६॥वली॥७॥ निक्षाने विशे नमवे
करीने जेहवु मल्यु एहवु अन्न पाणी ते प्रते॥८॥खा
वाने॥९॥न इच्छे एटले न खाय त्यारे स्यु करे ते क
हेछे॥१०॥स्नेहे करीने सहित एटले बहुधीए करीने
सहित एहवा॥११॥वली॥१२॥रूडा एटले पोताना श
रीरने पुष्टकारी एहवा अन्न पाणी प्रते॥१३॥खोलेछे ए
टलेखावानी वछा करेछे ते रसगारवनो करनारो कहीए

सुस्मूसद^१सरीर^२॥सयणासणग्रहणपसगपरो॥
सायागारवगुरुड^३॥दुखस्वस्स^४न^५देइ^६अण्णाण^७॥३२६॥
अर्थ॥१॥सातागारवनो लक्षण कहेछे पोताना शरी

ર પ્રતે સ્નાનાદિકે કરીને॥૨॥સુશ્રુષા કરેછે એટલે શો
 જાયમાન કરેછે એહવો॥૩॥શયન એટલે સુંહારી સજ્યા
 શ્રાસન એટલે પાટ પાટલાદિક શ્રાસન તેમનું કારણ
 વિના સેવવું તેને વિશે પ્રસંગ એટલે શ્રાસકિત તેને વિશે
 પર એટલે તત્પર એહવો॥૪॥સાતાગારવે કરીને મોટો
 એટલે પુદ્ગલીક સુખની વાચ્છાએ કરીને શ્રાસક એહ
 વો થયો સતો નામ સાધુ જે તે॥૫॥પોતાના આત્મા પ્ર
 તે॥૬॥દુઃખને॥૭॥નથી ॥૮॥આપતો એટલે પોતાને પૂદ્ગ
 લની મુર્છાએ કરીને દુઃખ નથી ઉપજવા દેતો તે સાતા
 ગારવનો કરનાર કહીએ એ જાવો॥૩૨૬॥

તવકુલગ્રાયામસો ॥ગંડિષ્ઠફુંસના ॥અણિદ્રવહો ॥

વસનાણિ ॥રણમુહાણિ ॥ય ॥દિવ્યવસગા ॥અણુહવતિ ॥૩૨૭॥

શ્રર્થ ॥૧॥તપ બાર પ્રકારે કુલ એટલે પીતાનો પક્ષ
 ળાયા એટલે પોતાના શરીરની શોજા એટલાવાનાના
 નાશ થાયા ॥૨॥પઢીતપણાની એટલે ચતુરાઈપણાની મ
 લીનતા થાયા ॥૩॥અનીષ્ટ મારગ એટલે સસારનો માર
 ગ વૃદ્ધિ પામે ॥૪॥કષ્ટ એટલે અનેક પાપ કરવાયકી
 અનેક દુઃખ ઉત્પન્ન થાયા ॥૫॥ગલી ॥૬॥સગ્રામના મુલ
 ને વિશે પડવું એટલે લડાઈમા ચડવું થાયછે આ પૂર્વે

कह्या एटला वाना प्रते॥७॥इन्द्रियोने वश पड्या एह
वा पूरुष॥८॥अनुजवेछे एटले इन्द्रियोने वश पड्या ए
हवा पूरुष जे तेमने तपादिकनो नाश तथा पडितप
णानोनाश इत्यादिक पूर्वे कह्या एटला वाना थायछे ते
माटे इन्द्रियोने वश न पडवु ए जाव ॥३२७॥

सरेसु^१न^२राजिगजा^३॥रुव^४दु^५पुणो^६न^७इस्त्रिबजा^८॥
गधे^९रसे^{१०}अ^{११}फासे^{१२}॥अमूर्च्छित^{१३}उत्तमिज्ज^{१४}मुनी^{१५}॥३२८॥

अर्थ ॥ १॥गधने विशे एटले बरासादिक सुगध द्रव्य
ने विशे॥२॥रसने विशे एटले साकर प्रमुखना आस्वा
दनने विशे॥३॥वली॥४॥फरसने विशे एटले कोमल
सज्यादिकना फरसने विशे॥५॥अमूर्च्छित एटले मूर्छा
रहित एहवो॥६॥मुनी जे ते॥७॥स्त्री गीत वीणादिकना
शब्दोने विशे॥८॥न ॥९॥रीजे एटले आसक्त न थाय
॥१०॥रूप प्रते एटले स्त्रीयादिकना शरीरना श्रवणव
ना सुंदरपणा प्रते॥११॥देखीने॥१२॥वारवार सराग
बुद्धि एकरीने॥१३॥न॥१४॥जुवे॥१५॥चारित्र धर्मने वि
शे उद्यम करे एहवा होय ते मुनी जाणवा॥३२८॥

निहयाणि^१टयाणि^२य^३इदियाणि^४॥घाए^५हण^६पयत्तेण^७॥

अहियच्छे^८निहयाइ^९॥हिययरुग्गे^{१०}पूयाणिग्गाइ^{११}॥३२९॥

बळ विद्याए करीने एटले बळे करीने अने ज्ञाने करी
ने॥१०॥बली॥११॥तपे करीने॥१२॥बली॥१३॥लाज
ना मदें करीने एटले कोइक वस्तु पांमवाना अहका
रे करीने पर पुरुष प्रते निदेछे तेने शु फळ थाप ते
आवती गाथाए करीने कहेछे॥३३१॥

ससार^१मणवयग^१॥नीयठाणाइ^१पावमाणो^१य॥

भमइ^१अणत^१काल^१॥तह्माउ^१मए^१विबज्जिजा^१॥३३२॥

अर्थ॥१॥अनतो एटले नथी अत ते जेहनो एहवो
॥२॥ससार एटले च्यार गतिमा भ्रमण रूप तेने बि
शे पूर्व कह्यो मदनो करनारो जे जीव ते ॥३॥नीच
स्थानक प्रते एटले हीन जातीयादिक प्रते॥४॥पाम
तो सतो॥५॥अनता॥६॥काल सुधी॥७॥नमेछे एटले
अनतो ससार वधारेछे॥८॥नीश्वे॥९॥ते कारण माटे
डाह्यो पुरुषा॥१०॥मद प्रते ॥११॥विशेपे करीने वजें
एटले मद प्रते न करे ए जाय॥३३२॥

मुहुवि^१मद^१नयनो^१॥नारिमपारिम^१मुद्रइ^१मोउ^१॥

मो^१मेअवज्जिमी^१नहा^१॥दणिमचटुव^१परिहाइ^१॥३३३॥

अर्थ॥१॥अनिशय करीने पण॥२॥सजमने विशे उ
पम करतो एहवो॥३॥ने॥४॥नति एटले साधु॥५॥जा

ति मदादिकने विशेष॥६॥मूझायछे एटले अहकार क
रेछे॥७॥ते साधु॥८॥जेमा॥९॥मेतारज रूपि जात्यादि
कना हीनपणा प्रते पाम्यातेम पामछे॥१०॥हरिकेशीवल
मुनिनी पठमा॥११॥प्रकर्षे करीने हीन थायछे॥३३३॥

इधिपमुसकिलिह॥वसहि॥इधिकर॥च॥वसतो॥॥

इधिगणसनिबिन्न॥निरुवण॥अगुवगाण॥॥३३४॥

अर्थ॥१॥मनुष्य सबधि तथा देवता सबधी स्त्री पशु
एटले तिर्यच तेमणे करीने सहीत एहवी ॥२॥चरती
एटले उपाश्रय ते प्रते॥३॥यली॥४॥स्त्रीनी कथा ते प्र
ते॥५॥वर्जे॥६॥स्त्री जनना आसन प्रते वर्जे एटले जे
ठेकाणे स्त्री बेठी होय ते ठेकाणेथी उठ्या पछी घे घ
डी सुधी भ्रमचारी पूरुप तीहा बेसे नहीं॥७॥स्त्री जन
ना अगोपांग प्रते एटले चक्षु मुख हृदयादिक प्रते
॥८॥सराग बुधीए करीने एटले काम घेष्टानी बुधीए
करीने जुवे नहीं॥३३४॥

पुवरयाणुरसरण॥हाधिमणिररररररर॥॥॥

अइनहुअ॥अइनहुओ॥॥बिबतो॥अ॥आहार॥॥३३५॥

अर्थ॥१॥शीलव्रत धारण करचापी पेहेला ग्रहरय
पणाने विशेष जे काम क्रीडा करी होय तेहनु जे सना

रबु ते प्रते न करे एटले सजारे नहीं॥२॥

जनना विरहरूप एटले विजोग रूप विलापनु
ते त्याग करवा जोग्य छे एटले स्त्री ज
विजोगे करीने चिता करे नहीं क्येम जे १
कारणछे ए हेतु माटे॥४॥अतिगे बहु एटले गला
धी ठासीने आहार खाय नहीं॥५॥वली॥६॥अ
स्नीग्ध मधुरपणादिके करीने बहु प्रकारे अथवा
णीवार एहवा॥७॥आहार प्रते॥८॥वर्जे एटलेन करे॥३॥

वज्रतो १ अ १ विभूष १ ॥ नद्वज १ २ दह १ ३ बभचेरगुत्तीसु १ ॥

साहू १ तिगुत्तिगुत्ती १ ॥ निहुड १ दतो १ पसतो १ य १ ॥ ३ ३ ६ ॥

अर्थ॥२॥वली॥२॥विभुषा प्रते एटले शरीरनी

प्रते॥३॥वर्जे एटले न करे ॥४॥वली॥५॥त्रिए

करीने एटले मन वचन कायाना गोपववे करीने

करयाछे एटले रोक्काछे मन वचन काया ते जेणे

वो॥६॥निश्चल एटले शातपणे करीने अन्य व्यापार

रहित एहवो॥७॥पाच इन्द्रियोने दमवाने तत्पर एहवो

॥८॥प्रकर्ष करीने शात एटले जीत्युछे कपायनु बल ते

जेणे एटले॥९॥मात्रु जे ते॥१०॥आ॥११॥ब्रह्मचर्यनी

गुतीने विज्ञे एटले आ पूर्ण कही जे शीलनी नमसा

तेने विशे वृत्तनी रक्षा करवाने अर्थ॥१२॥उद्यम करे
एटले आलस न करे ए उपदेश॥३३६॥

गुप्तोत्सवयणकस्त्रोरअतरे॥तह१थणतरे१दहु१॥

सहाइ१तठ१दिहि॥नय१वधइ११दिहि१दिहि१॥३३७॥

अर्थ ॥१॥ गुञ्जस्थान एटले स्त्रिनु चिन्ह, उरु एटले
साथलनु जुगल, वदन एटले मुख, काख एटले बगल,
उर एटले हृदय एटला वानाना अंतर एटले मध्य
भाग प्रते॥२॥देखीने॥३॥तेमज॥४॥स्त्रीना स्तनना म
ध्य भाग प्रते देखीने॥५॥ते पूर्वे कहा एटला वानाय
की॥६॥पोतानी द्रष्टि प्रते॥७॥ब्रह्मचारी पुरुष जे ते
खेची ले एटले पाछी वाले॥८॥स्त्रीनी द्रष्टि साथे॥९॥
पोतानी द्रष्टि॥१०॥नहीज॥११॥बाधे एटले मेलवे मु
नीराज जे ते कोइ कारज पडे सते निचु मुख राखीने
स्त्री प्रते बोलावे ए जाव गुप्तिद्वार समाप्त ॥३३७॥

सद्भाण१पस१ध१॥आण१भाणइ१य१सवपरम१ध१॥

सद्भाए१वडनो१॥खणे१२१॥भाइ१वेरगा१॥३३८॥

अर्थ ॥१॥ स्वाध्याय करीने एटले वाचना पृच्छना
परावर्तना अनुप्रेक्षा धर्म कथादि पाच प्रकारे करीने
॥२॥प्रसस्त एटले रुढु एहवु॥३॥ध्यान एटले धर्म ध्या

नादि ते प्रते सिद्धांतनो जणनार मुनि पामेछे
 लो सिद्धात जणवे करीने॥५॥सर्व परमार्थ प्रते एटले
 वस्तूना स्वरूप प्रते॥६॥जाणेछे॥७॥स्वाध्यायने विशेषे
 एटले सिद्धातना जणवा गणवाने विशेषे॥८॥वरततो ए
 हवो जे साधु तेहने॥९॥क्षण॥१०॥क्षणमा एटले थो
 ढी थोढी वेळामां॥११॥वैराग्य एटले परजावथी विरा
 मपणुं॥१२॥थायछे एटले राग द्वेषरूप विषयना उतर
 वा थकी ते सम्यक् प्रकारे सिद्धांतनो जाणनार साधु
 निर्विष थायछे ए जाव ॥३३८॥

उद्द^१मह^१तिरियलोए^१॥मोक्ष^१वेमाणिया^१य^१सिद्धी^१य^१॥
 सद्गो^१लोगालोगो^१॥सद्गायविठस्स^१पद्मरुतो^१॥३३९॥

अर्थ॥१॥ स्वाध्यायनो जांण एटले सिद्धांतनो जांण
 एहवो जे मुनी तेहने॥२॥उर्द्ध लोकनुं स्वरूप प्रत्यक्ष
 पणे वर्ततेछे॥३॥अधो लोक एटले अधो लोकनुं स्वरूप
 पा॥४॥त्रिछा लोक एटले त्रिछा लोकनुं स्वरूप ॥५॥
 ज्योतिष एटले चंद्र सूर्यादिक॥६॥बली॥७॥वैमानिक
 एटले विमानवासि देवता॥८॥बली॥९॥मोक्षनु स्वरूप
 ॥१०॥सर्व एहवो आ॥११॥लोका लोक एटले सर्व
 चौद राज प्रमाण लोक प्रमाण रहीत एहवो सर्व अ

लोक॥१२॥ए पूर्वे कहा एटला वाना प्रत्यक्षपणे एट
ले साक्षात्पणे वतेंछे एटले सिद्धात नणवे करीने सा
धु मुनीराज जे ते सर्व वस्तूना स्वरूप प्रते सम्यक्
प्रकारे जाणेंछे ॥३३९॥

मो'पनिधकाळ'तवस नमुब्बुउ'॥नवि'करेइ'सद्भाय'॥

अलस'मुहसीलजन'॥नरि' 'त'ठवेइ'सद्भाय'॥३४०॥

अर्थ॥१॥निरतर॥२॥तप सजमने विशे एटले बार
भेदे तप अने सत्तर प्रकारे संजम तेमने विशे उद्यम
वत एहवो ॥३॥जे साधु॥४॥स्वाध्याय प्रते एटले सि
द्धात भणवु नणाववु ते प्रते॥५॥नथिज॥६॥करतो ए
टले भणवा भणाववाने विशे उद्यम नथी करतो॥७॥
आलस सहीत एहवो॥८॥ते॥९॥सुख शील जन एटले
पुद्गलिक सुखने विशे लपट एहवो साधु ते प्रते॥१०॥
साधु पदने विशे एटले साधु मारगने विशे॥११॥जि
न मारगना जाण एहवा जे पूरुप ते नहीज॥१२॥था
पे एटले जिन सिद्धातना परमारथना जाण एहवा जे
साधु तथा श्रावक ते ज्ञान रहित पोताने छेदे क्रिया
रूप आढवरना करनार पूरुपने साधु पदमा न माने
ए भाव स्वाध्याद्वार समाप्त ॥३४०॥

विणउ 'सासणे' मूल । विणीउ 'सजउ' भवे ।

विण्याउ 'विणमुकरस' । कउ 'धम्मो' कउ '२३

अर्थ ॥ १ ॥ जिन सासनने विशे ॥ २ ॥ वि

ता थकी सम्यक् ज्ञानादिक गुणे करीनि

पोनो विनय करवो ते ॥ ३ ॥ धर्मनु मूलछे

त एहवो जे पूरुप होय ते साधु तथा श्र

॥ ४ ॥ साधु जे ते ॥ ५ ॥ विनीत ॥ ६ ॥ होय ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ रहित एटले गुणी पुरुषोनो विनय

वो जे पूरुप तेहने ॥ ९ ॥ धर्म ॥ १० ॥ क्यांथी

॥ १२ ॥ म्यापी होय एटले विनय विना

अने तप पण नही ते माटे विनयने विगे

विणउ 'अ' नहइ 'मिरि' ॥ १ ॥ लहइ 'विणीउ' मस 'च'

न' 'कपाइ' 'दुविणीउ' ॥ १ ॥ सकुन्नसिद्धि' 'समा

अर्थ ॥ १ ॥ विनय जे ते ॥ २ ॥ लक्ष्मि प्रते

अभ्यन्तर रूप लक्ष्मि प्रते ॥ ३ ॥ पमाडेछे

करीने वाज्य लक्ष्मि धन धान्यादिक त

लक्ष्मि ज्ञानादिक गुण पामीएछीए ॥ ४ ॥

त पुन्य जे ते ॥ ५ ॥ नम प्रते सर्व दीशामा

म कहोए ते प्रन्ये ॥ आपामे ॥ ८ ॥ रली ॥ ९ ॥

एले एक दीशाने विशे व्यापे ते किर्ति कहीए ते प्रते
 पामे॥१०॥दुर्विनीत एटले विनय गुणे करीने रहित
 एहवो पूरुपा॥११॥पोताना कारजनी सिद्धि एटले नि
 प्पत्ति प्रते॥१२॥कोई दहाडो पण॥१३॥नही॥१४॥पामे
 एटले अविनित पुरुपने पोताना कारजनी सिद्धि थाय
 नहीते कारण माटे गुणी पूरुपोनो विनय चूकवो नही
 जह^१जह^२खमह^३सरीर^४धुबजोगा^५जहा^६जहा^७न^८हायति^९॥कम्म
 स्वउ^{१०}अ^{११}विउलो^{१२}॥विवित्ता^{१३}इदिअदमो^{१४}य^{१५}॥३४३॥

अर्थ॥१॥ जेमा॥२॥ जेमा॥३॥शरीरा॥४॥खमे एटले जे
 तप करवे करीने बल रहीत थाय नही॥५॥ जेमा॥६॥
 जेमा॥७॥निश्चल वेपार एटले निरतर पोताने करवा
 जोग्य प्रति लेपणा प्रतिक्रमण नणवा भणाववादिरू
 प क्रिया॥८॥नही॥९॥हानि पामे एटले हीन न थाय॥
 १०॥वलीए प्रकारेतपना करनार पूरुपोने॥११॥विस्ता
 रवत एहवो॥१२॥कर्मनो क्षय थायछे एटले घणा काल
 ना बाधेला कर्मनो नाश थाय छे॥१३॥वली॥१४॥जुदा
 पणे करीने एटले आ जीव शरीर थकी न्यारो छे अने
 शरीर जीव थकी न्यारो छे ए प्रकारनी जावनाए करीने
 ॥१५॥इद्रियोनु दमवु पण थायछे एटले इद्रियो पोताना

विणउ^१सासणे^१मूल^३॥विणीउ^१सजउ^१भवे ॥

विणयाउ^१विणमुकस्स^८॥कउ^१घम्मो^१कउ^१तवो^१॥३४१॥

अर्थ॥१॥जिन सासनने विशे ॥२॥विनय एटले पो
ता थकी सम्यक् ज्ञानादिक गुणे करीने अधिक पूरु
पोनो विनय करवो ते॥३॥धर्मनु मूलछे एटले विनय
त एहवो जे पूरुप होय ते साधु तथा श्रावक कहेवाय
॥४॥साधु जे ते॥५॥विनीता॥६॥होय॥७॥विनये करीने
॥८॥रहित एटले गुणी पुरुषोनो विनय न करतो
वो जे पूरुप तेहने॥९॥धर्म॥१०॥क्याथी होय॥११॥तप
॥१२॥क्याथी होय एटले विनय विना धर्म पण नही
अने, तप पण नही ते माटे विनयनेविगे उद्यम करवो.

विणउ^१आवहइ^१सिरिं^१॥लहइ^१विणीउ^१जस^१च^१किर्त्ति^१च^१॥

न^१कयाइ^१दुविणीउ^१॥सकज्जसिद्धिं^१समाणेइ^१॥३४२॥

अर्थ॥१॥विनय जे ते॥२॥लक्ष्मि प्रते एटले बाज्य
अभ्यतर रूप लक्ष्मि प्रते॥३॥पमाडेछे एटले विनये
करीने बाज्य लक्ष्मि धन धान्यादिक तथा अन्यतर
लक्ष्मि ज्ञानादिक गुण पामीएछीए॥४॥वली॥५॥विनी
त पूरुप जे ते॥६॥जस प्रते सर्व दीशामा व्यापे ते ज
स कहीए ते प्रत्ये॥७॥पामे॥८॥वली॥९॥किर्त्ति प्रते ए

एटले एक टीशाने विशे व्यापे ते किर्ति कहीए ते प्रते
 पामे॥१०॥दुर्विनीत एटले विनय गुणे करीने रहित
 एहवो पूरुपा॥११॥पोताना कारजनी सिद्धि एटले नि
 प्पत्ति प्रते॥१२॥कोई दहाडो पण॥१३॥नही॥१४॥पामे
 एटले अविनित पुरुषने पोताना कारजनी सिद्धि थाय
 नहीते कारण माटे गुणी पूरुषोनो विनय चूक्यो नही
 नह^१ जह^२ खमद^३ सरीर^४ धुवतोगा^५ जहा^६ नहा^७ नहायति^८॥कम्म
 स्वड^९ अ^{१०} विडलो^{११} विविक्तपा^{१२} इदिअटमो^{१३} थ^{१४}॥३४३॥

अर्थ॥१॥ जेमा॥२॥ जेम॥३॥शरीर॥४॥खमे एटले जे
 तप करवे करीने बल रहीत थाय नही॥५॥ जेम॥६॥
 जेम॥७॥निश्चल वेपार एटले निरंतर पोताने करवा
 जोग्य प्रति लेपणा प्रतिक्रमण जणवा भणाववादिरू
 प क्रिया॥८॥नही॥९॥हानि पामे एटले हीन न थाया॥
 १०॥वली ए प्रकारे तपना करनार पूरुषोने॥११॥विस्ता
 रवत एहवो॥१२॥कर्मनो क्षय थायछे एटले घणा काल
 ना बाधेला कर्मनो नाश थाय छे॥१३॥वली॥१४॥जुदा
 पणे करीने एटले आ जीव शरीर थकी न्यारो छे अने
 शरीर जीव थकी न्यारो छे ए प्रकारनी जावनाए करीने
 ॥१५॥इंद्रियोनु दमवु पण थायछे एटले इंद्रियो पोताना

विषयथकी पाछीवलेछे एटले, . मां१६००
 माटे समता सहीत तपने विषे उद्यम करवो ते भाव.
 नइ१ता१असक्काणिज्ज३॥न१तरसि१काउण१तो१इमं१कीस१॥
 अणायत्तं१न११कुणसि१॥सन्नमज्जयण११जईजोग१०॥३४४॥

अर्थ॥१॥जो॥२॥प्रथम हे शिष्य ॥३॥ नकरी
 एहवो साधुनी प्रतिमा रूप जे तप ते प्रते॥
 ॥५॥नथी॥६॥समर्थ एटले तुं न१ करि१०॥

॥८॥प्रसिद्ध एहवी॥९॥अने पोताने वश एहवी॥१
 धुने करवा जोग्य एहवी॥११॥संजमने विषे जत
 एटले पछवाडे कह्या एहवा क्रोध दिकना ज

क्येमा॥१३॥नथी॥१४॥करतो एटले जो तारे तप
 नी शक्ति नथी तो पाच समिति अने तृण गुप्ति ५
 शु जोर पडे छे ते माटे संजमने विशे उद्यम करवो

जायमि१देहसदेहयामि१॥जइणाइ१किचि१सेविज्जा॥अह१पुण१
 सन्नो१अ१निरुद्धमो१०अ११॥तो११सन्नमो११कत्तो११॥३४५॥

अर्थ॥१॥देहनो सदेह॥२॥थये सते एटले मोटु रोगा
 दि कष्ट उत्पन्न थये सते॥३॥जतनाए करीने एटले वित
 रागनी आज्ञा सहित चित्तने विशे दाझ सहित॥४॥किं
 चित् एटले काइक सावध प्रते पण एटले अशुध आहा

सादिक प्रतेपण॥५॥साधु जे ते सेवे एटले ग्रहण करे॥६॥
 त्वार पछी॥७॥वलीजो॥८॥साजो थयो सतो एटले नि
 रोगी थयो सतो॥९॥पाद पूर्ण॥१०॥निरुद्यमी एटलेशु
 द्ध आहारादिक प्रतेग्रहण नयी करतो अने अशुद्धज ग्र
 हण करेछे॥११॥त्यारे ते साधुने॥१२॥क्यायकी॥१३॥
 सजम होय अपितु न होय॥१४॥निश्चे झा कारण माटे
 एम कहो छो उत्तर वीतरागनी आज्ञाथी अवली आ
 चरणा छे ए हेतु माटे ॥३४५॥

माकुणउ^१॥गद^१तिगिचउ^१॥अहिपासेऊग^१गद^१तरद^१सम्म^१॥
 अहिपासतरस^१पुणो^१॥गद^१से^१नोगा^१न^१हायति^१॥३४६॥

अर्थ॥१॥जो॥२॥जति एटले साधु मुनिराज जेते ते रो
 ग प्रत्ये॥३॥सम्यक प्रकारे एटले समता सहीत॥४॥स
 हन करवाने॥५॥समर्थ होय॥६॥वली॥७॥जो॥८॥सम
 ता सहीत सहन करतो एहयो॥९॥ते साधुने॥१०॥व्या
 पार एटले प्रतिलेपण प्रतिक्रमणादिक क्रियाओं॥११॥
 न॥१२॥हानि पामे एटले नाश नही थाय तो॥१३॥रो
 गना उपाय प्रते॥१४॥न करे एटले औपध प्रते न करे
 अने जो सजम जोग सीजाय एटले सजम साधनने वि
 शे घाटो पडे तो स्थिवर कल्पी मुनि जे ते अपवादे

વિપયથકી પાછીવલેછે એટલે, ૧૧૨૬
 માટે સમતા સહીત તપને વિપે ઉદયમ કરવો તે ભાવ
 જડતા^૧ અસક્ષાણજન^૨ ૧૧૧ ન^૩ તરસિ^૪ કાઉળ^૫ તો^૬ ઇમં^૭ કીસ^૮ ૧૧૧
 અપ્પાયત્તં^૯ ન^{૧૦} કુણસિ^{૧૧} ૧૧૧ સન્નમજ્જયણ^{૧૨} જઈજોગ^{૧૩} ૧૧૧ ૩૪૪
 અર્થ ૧૧૧ જો ૧૧૨ પ્રથમ હે શિષ્ય ૧૧૩ નકરી શકીએ
 એહવો સાધુની પ્રતિમા રૂપ જે તપ તે પ્રતે ૧૧૪ કરવાને
 ૧૧૫ નથી ૧૧૬ સમર્થ એટલે તું નથી કરી શકતો ૧૧૭ તારે
 ૧૧૮ પ્રસિદ્ધ એહવી ૧૧૯ અને પોતાને વશ એહવી ૧
 ધુને કરવા જોગ્ય એહવી ૧૧૧ સંજમને વિપે જતના પ્રત્યે
 એટલે પછવાડે કહ્યા એહવા ક્રોધાદિકના જય પ્રતે ૧૧૨
 ક્યેમ ૧૧૩ નથી ૧૧૪ કરતો એટલે જો તારે તપ કરવા
 ની શક્તિ નથી તો પાંચ સમિતિ અને તૃણગુણ પાલતા
 શુ જોર પડે છે તે માટે સંજમને વિશે ઉદયમ કરવો
 નાયામિ^૧ દેહસંદેહયામિ^૨ ૧૧૧ જડનાડ^૩ કિચિ^૪ સેવિજ્ઞા ૧૧૧ અહ^૫ પુણ^૬
 સન્નમો^૭ અ^૮ નિરુદ્ધમો^૯ ૧૧૧ અ^{૧૦} ૧૧૧ તો^{૧૧} સન્નમો^{૧૨} કત્તો^{૧૩} ૧૧૧ ૩૪૫
 અર્થ ૧૧૧ દેહનો સંદેહ ૧૧૨ થયે સતે એટલે મોટું રોગ
 દિ કષ્ટ ઉત્પન્ન થયે સતે ૧૧૩ જતના એ કરીને એટલે વિત
 રાગની આજ્ઞા સહિત ચિત્તને વિશે દાક્ષ સહિત ૧૧૪ કિં
 ચિત્ એટલે કાઢક સાવધ પ્રતે પણ એટલે અશુદ્ધ આહાર

इक प्रतेपण॥५॥साधु जे ते सेवे एटले ग्रहण करे॥६॥
र पछी॥७॥वलीजो॥८॥साजो थयो सतो एटले नि
ति थयो सतो॥९॥पाद पूर्ण॥१०॥निरुद्यमी एटलेशु
आहारादिक प्रतेग्रहण नथी करतो अने अशुद्धज ग्र
ह करेछे॥११॥त्यारे ते साधुने॥१२॥क्याथकी॥१३॥
म होय अपितु न होय॥१४॥निश्चे शा कारण माटे
कहो छो उत्तर वीतरागनी आज्ञाथी अवली आ
णा छे ए हेतु माटे ॥३४५॥

णउ॥१॥नद॥तिगिच्छ॥१॥अहिपासेऊण॥नद॥तरद॥सम्म॥॥
यासतस्स पुणो॥१॥मद॥से॥मोगा॥१॥न॥१॥हायति॥१॥३४६॥
र्या॥१॥जो॥२॥जति एटले साधु मुनिराज जेते ते रो
वत्ये॥३॥सम्यक प्रकारे एटले समता सहीत॥४॥स
करवनि॥५॥समर्थ होय॥६॥वली॥७॥जो॥८॥सम
सहीत सहन करतो एहवो॥९॥ते साधुने॥१०॥व्या
एटले प्रतिलेपणप्रतिक्रमणादिक क्रियाओ॥११॥
१२॥हानि पामे एटले नाश नहीं थाय तो॥१३॥रो
उपाय प्रते॥१४॥न करे एटले औपध प्रते न करे
ने जो सजम जोग सीजाय एटले सजम साधनने वि
घाटो पडे तो स्थिवर कल्पी मुनि जे ते अपवादे

श्रौपय प्रते करे ए जाव ॥३४६॥

निध^१पवयणसोहा ॥ करण^२चरणञ्जुयाण^३साहूण^४ ॥

सविग्गविहारीण^५ ॥ सवपयत्तेण^६कायव^७ ॥ ३४७ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ निरतर ॥ २ ॥ जिनशासननी गोभाना करनारा
एहवा ॥ ३ ॥ चारित्रने विशे उद्यमना करनारा एहवा ॥ ४ ॥
मोक्षना अभिलापेकरीने विहारना करनारा एटले
क्षना अभिलापना करनारा एहवा ॥ ५ ॥ साधुओनो
सर्व प्रयत्ने करीने एटले जेटली पोतानि शक्ति होय ते
टली शक्ति बडे करीने ॥ ७ ॥ वियावच करवो तेहमा
लस करवो नही ॥ ३४७ ॥

हीणस्स^१વિસુદ્ધપરુવગસ્સ^२ ॥ નાણાહિયસ્સ^३કાયવ^४ ॥

જળાચિત્તગ્ગહણથ^५ ॥ કરતિ^६લિંગાડવસેસે^७વિ^८ ॥ ૩૪૮ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ ચારિત્રે કરીને રહિત એહવો એટલે શિથિલ
આચારવત એહવો ॥ ૨ ॥ સમ્યક જ્ઞાન ગુણેકરીને અધિક
એહવો એટલે સિદ્ધાતના જાણપણાયે કરીને સમપૂર્ણ
એહવો ॥ ૩ ॥ વિશુદ્ધ પ્રરૂપક એહવો એટલે વિશેષે કરીને સિ
દ્ધાતના અનુસારે સ્યાદવાદ શૈલિયે કરીને સહિત પ્રરૂ
પણાનો કરનાર એહવો જે પુરુષ તેહનો વ્યાવચ અપ
વાદ મારગે કરીને જ્ઞાનાદિ કારજને અરથે મુનિને ॥ ૪ ॥

करवा जोग छे केमजे क्रिया हीन एहवो पिण जे ज्ञा
नि तेहनी वियावच करवी ते घटित छे॥५॥ वली॥६॥
लोकना चित्त वश करवाने अर्थे एटले धन्य छे आ पू
रुपोने के गुणवन सतापण उपकार बुद्धिये करीने नि
गुणिनो पण वियावच करे छे ए प्रकारे लोकना चित्त
ने प्रसन्न करवाने अर्थे॥७॥केवल एक लिंग धारिनो
पण घाढतर कारणे लोकापवाद टालवाने अर्थे कोइ
क वखते कोइक देशमा॥८॥ सजमनो उपघात टाल
वाने अर्थे वियावच करे तेहनो विशेष विस्तार सि
द्धातथी जाणवो ॥३४८॥

दगपाण १ गुणफल ५॥ अणे सणिदम १ गिह ५ धाकि द्याइ ५॥

अमया १ पडिसेवती ५॥ जइवेस विडव ८ गानवर ५॥ ३४९॥

अर्थ ॥ १॥ असजत एटले नाम मात्र जे साधु॥२॥ स
चित्त पाणिनु पीवु ते प्रते॥३॥ फुल फल प्रते एटले जा
यना फुल अने आबादिकना फल ते प्रते॥४॥ अने पाणि
य एटले आधाकर्मादिक दोषे करीने दुष्ट एहवा आ
हारादि प्रते॥५॥ ग्रहस्थना कारज प्रते एटले ग्रहस्थो
ना व्यापारादिक प्रते॥६॥ सेवन करेछे एटले आचरेछे
॥७॥ ते असजत केवला॥८॥ जतिवेप विडवक एटले मु

निराजना वेपने दूषित करनारा एहवा जाणवा पण
लगारे आतम साधन करनारा नहिं जाणवा॥३४९॥

उसन्नया^१भवोही^२॥पवयणउभावणा^३य^४बोहिफल ॥

उसन्नोवि^५वर^६पि^७हु^८॥पवयणउभावणापरमो^९॥३५०॥

अर्थ॥१॥ए पूर्वे कहा एहवा भ्रष्टाचारियोनु उसन्न
पणु एटले सिथिलपणु॥२॥ अवोधिनु कारण जाणवु
एटले समकित न पामवानुं कारण जाणवु एटले चा
रित्रने विशे आलसु थडने पोताने विशे साधुपणु थाप
न करता एहवा जे प्राणी ते समकीत पामे नही अने
पूर्वे पामेलु होय ते पण हारी जाय ए जाव॥३॥ वली
॥४॥ जिन शासननी उदजावना एटले उनती जे ते
॥५॥ समकीत रूप फलनि पमाडनारीछे एटले जिन
शासननी उन्नति करघे सते समकित रूप फल पामी
ए ए भाव॥६॥वली॥७॥ जिनशासननी प्रजावना एट
ले शोजा वधारवाने विशे प्रधान एटले तत्पर एहवो
पुरुषा॥८॥करमं वशे करीने सिथील आचारवालो पण
॥९॥ श्रेष्ठे एटले वाख्यान चरचा वार्तादीके करीने
जिनशासननो शोजावनार एहवो जे पुरुष ते क्रिया
ने विशे सिथिल होय तोयें पण श्रेष्ठ जाणवो एटले

मानवा जोग्य जाणवो ए जावा॥१०॥निश्चे॥३५०॥

गुणहीणो गुणरयणायरेसु ॥ जो कुणइ तुल्य मण्याण ॥

सुतवास्सिणो अ हीलइ ॥ सम्मत्त कोमल तस्स ॥ ३५१ ॥

अर्थ॥१॥ गुणे करीने एटले सम्यक् चारित्रे करीने

हिन एटले रहित एहवो॥२॥ जे वेश धारि॥३॥ गुणना

समुद्र एहवा साधुओनी साथे॥४॥ पोताना आत्मा प्र

ते॥५॥ तुल्य एटले चरोवर॥६॥ करेछे एटले अमे पण

साधु छीए ए प्रकारे मानेछे॥७॥ वली॥८॥ रुडा एहवा

जे तपस्वी एटले उत्तम एहवा जे मुनिराज ते प्रते

॥९॥ हीलना करेछे एटले तेमना अवर्णवाद बोलेछे

॥१०॥ ते पुरुषनु॥११॥ समकित॥१२॥ असार थयु एटले

ते पुरुष मिथ्या दृष्टि थयो क्येम जे गुण अने अवगुण

बे सरखा करचा ते माटे॥३५१॥

उसन्नस्स गीहस्स व ॥ जिणपवयणतिवभाविमइस्स ॥

कीरइ ज अणवज्ज ॥ इटसम्मत्तस्स वध्यामु ॥ ३५२ ॥

अर्थ॥१॥ चारित्रने विशे सिथिल एहवो जे पुरुष तेह

नु॥२॥ वा अथवा ॥३॥ जिन एटले तीर्थकर तेमनु प्रव

चन एटले सिद्धात तेणे करीने तिव्र एटले निविड जा

वित एटले वासितछे मति ते जेहनी एटले जिनराज

ના સિદ્ધાતનો જાણ એહવો અને વ્રત પચ્ચાણ કરવા
 ને આલસુ એહવો॥૪॥દ્રઢહે એટલે નિશ્ચલછે સમકીત
 તે જેહને એટલે દ્રઢ સમકીતવત એહવો॥૫॥ગ્રહસ્થ એ
 ટલે શ્રાવક તેહનુ કોઝક કાલને વિશે॥૬॥જે વિચા
 વચા॥૭॥અવસ્થાને વિશે એટલે કોઝક ક્ષેત્રની મધ્યે કો
 ઝક કાલની મધ્યે॥૮॥કરીએ તે॥૯॥પાપ રહિત એટલે
 દૂષણરહિત જાણવું આ વાત ઘાડતર કારણની જાણવી
 પાસથોસન્નકુસીલ।નીયસસપ્તજનમહાહદ।।

નાડળ^૫ત^૩સુવિહિયા^૫।સદ્વપયતેણ^૫વદ્ધતિ।।૩૫૩।

અર્થ॥૧॥પાસથો એટલે જ્ઞાન દર્શન ચારિત્રની સ
 મિપે રહે તે પાસથો કહીએ એટલે જ્ઞાન દર્શન ચારિ
 ત્રે કરીને રહિત એહવો, ઉસન્નો એટલે ચારિત્રને વિશે
 સિથિલ આચારવાલો એહવો, કુસીલ એટલે સાધુપ
 ણાના આચારેકરીને રહિત એહવો, નીચ એટલે અવની
 યે કરીને જાણવાથકી જ્ઞાનનો વિરાધક એહવો, સસત્તો
 એટલે જિહાં જેવો મિલે તિહા તેની સગતિયે કરીને
 તેવો થાય તે સસક્ત કહીયે એટલે રાગીની સાથે રાગી
 થાય અને વૈરાગીની સાથે વૈરાગી થાય એહવો॥૨॥ય
 ધા હદ એટલે પોતાની મતિયે કરીને ઉત્ત્મૂત્ર પ્રરૂપક

एहवो॥३॥प्रसिद्ध एहवो॥४॥जन एटले लोक ते प्रते
 एटले तेमना स्वरूप प्रते॥५॥जाणीने॥६॥उत्तम साधु
 जे ते ते पासथ्यादिक पूर्वे कहा ते प्रते॥७॥सर्व उद्य
 मे करीने एटले द्रव्यनाव वे प्रकारनी शक्तिये करीने
 ॥८॥वर्जें एटले तेमनी सगति प्रते न करे चारित्र वि
 नाश करनारछे ए हेतु माटे॥३५३॥

बायालयमेसणाउ'॥न'रस्तव'धादिसिद्धिपिंड'च'॥

आहारेड'अभीस्तव'॥विगडउ'सन्निहि'खाड'० ॥२५४॥

अर्थ॥१॥हवे पासथ्यादिकना लक्षण कहीएलीए.वेता
 लिसएपणा प्रते एटले आहारादिकना वेतालिग दोष
 प्रते॥२॥ना॥३॥रक्षा करे एटले न निवारे॥४॥वली॥५॥
 धात्रीपिंड प्रत्ये एटले छोकरा रमाडिने पछी आहार
 लेवो ते प्रते तथा सज्यात्तर पिंड प्रत्ये एटले निरतर
 पराठन करीने आहार लेवो ते प्रते न निवारे॥६॥दुध
 दाहि प्रमुखवि गयो प्रते कारण विना॥७॥निरतर॥८॥
 नक्षान करेछे॥९॥सन्निधि एटले रात्रिनेविशेअथवारात्रे
 रात्री लो वस्तू ते प्रते॥१०॥खायछे ते पासथ्यो कहीए

सूत'पमाणभोड'॥आहारेड'अभिस्तव'माहार'न'य'मडली

र'मु'जड'॥न'य'अभिस्तव'हिडड'अलसो' ॥३५५॥

ના સિદ્ધાતનો જાણ એહવો અને વ્રત પચ્ચાણ કરવા
 ને આલસુ એહવો॥૪॥દ્રઢહે એટલે નિશ્ચલછે સમકીત
 તે જેહને એટલે દ્રઢ સમકીતવંત એહવો॥૫॥ગ્રહસ્થ એ
 ટલે શ્રાવક તેહનુ કોઈક કાલને વિશે॥૬॥જે વિચા
 વચા॥૭॥અવસ્થાને વિશે એટલે કોઈક ક્ષેત્રની મધ્યે કો
 ઇક કાલની મધ્યે॥૮॥કરીએ તે॥૯॥પાપ રહિત એટલે
 દૂષણરહિત જાણવું આ વાત ઘાડતર કારણની જાણવી
 પાસથોસત્રકુસીલાનીયસસત્ત^૧જળ^૨મહાહૃદ^૩॥

નાડળ^૪ત^૫સુવિહિયા^૬સવ્વપયતેણ^૭વદ્યતિ^૮॥૩૫૩॥

અર્થ॥૧॥પાસથો એટલે જ્ઞાન દર્શન ચારિત્રની સ
 મિપે રહે તે પાસથો કહીએ એટલે જ્ઞાન દર્શન ચારિ
 ત્રે કરીને રહિત એહવો, ઉસત્તો એટલે ચારિત્રને વિશે
 સિથિલ આચારવાલો એહવો, કુસીલ એટલે સાધુપ
 ણાના આચારેકરીને રહિત એહવો, નીચ એટલે અવની
 યે કરીને જળવાથકી જ્ઞાનનો વિરાધક એહવો, સસત્તો
 એટલે જિહાં જેવો મિલે તિહાં તેની સગતિયે કરીને
 તેવો થાય તે સસક્ત કહીયે એટલે રાગીની સાથે રાગી
 થાય અને વૈરાગીની સાથે વૈરાગી થાય એહવો॥૨॥ય
 થા હંદં એટલે પોતાની મતિયે કરીને ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપક

एहवो॥३॥प्रसिद्ध एहवो॥४॥जन एटले लोक ते प्रते
 एटले तेमना स्वरूप प्रते॥५॥जाणीने॥६॥उत्तम साधु
 जे ते ते पासध्यादिक पूर्वे कह्या ते प्रते॥७॥सर्व उद्य
 मे करीने एटले द्रव्यभाव वे प्रकारनी शक्तिये करीने
 ॥८॥वर्जे एटले तेमनी सगति प्रते न करे चारित्र वि
 नाश करनारछे ए हेतु माटे॥३५३॥

वायालयमेषणाउ॥॥न१रख्खइ१धाडसिध्निपिंड१च॥

आहारेइ१अभीख्ख१॥विगइउ१सन्निहि१खाइ१०॥२५४॥

अर्थ॥१॥हवे पासध्यादिकना लक्षण कहीएछीए.वेता
 लिसएपणा प्रते एटले आहारादिकना वेतालिइ दोष
 प्रते॥२॥ना॥३॥रक्षा करे एटले न निवारे॥४॥वली॥५॥
 धात्रीपिंड प्रत्ये एटले छोकरा रमाडिने पछी आहार
 लेवो ते प्रते तथा सज्यात्तर पिंड प्रत्ये एटले निरतर
 परीठन करीने आहार लेवो ते प्रते न निवारे॥६॥दुध
 दाहि प्रमुखवि गयो प्रते कारण विना॥७॥निरतरा॥८॥
 नक्षत्र करेछे॥९॥सन्निधि एटले रात्रिनेविशेअथवारात्रे
 रात्रीली वस्तू ते प्रते॥१०॥खायछे ते पासध्या कहीए

सूर१पमाणभोइ१॥आहारेइ१अभिख्ख१माहार१न१य१भडली

इ१मु१जइ१न११य१भिख्ख११हिंडइ१अलसो१०॥३५५॥

अर्थ॥१॥सूर्यना प्रमाण सुधी एटले सूर्यना उदयथी
माडीने आथमता सुधी नोजन करनारो॥२॥अशना
दि आहार प्रते॥३॥निरतरा॥४॥खाय॥५॥वली॥६॥सा
धुनी मडलीने विशे॥७॥ना॥८॥जीमे एटले एकलो नो
जन करे॥९॥वलि॥१०॥आलसु सतो॥११॥भिक्षा प्रते
एटले गोचरी प्रते॥१२॥ना॥१३॥जाय एटले थोडा घ
रमांथी घणो आहार ग्रहण करे॥३५५॥ ते पा०

कीवो^१न^२कुणदलो^३अ ॥लब्जद^४पडिमाइ^५जल^६भुवणेइ^७॥६॥
वाहणो^८अ^९हिंडइ^{१०}॥वधइ^{११}कडिपट्टय^{१२}मकब्जे^{१३}॥३५६॥

अर्थ॥१॥क्लीव एटले दीनपणाए करी॥२॥
प्रते एटले केशना लोच प्रते॥३॥नथी॥४॥करतो॥५॥
उसग्न प्रतेकरतो सतो॥६॥लज्या पामेछे॥७॥शरीर
मल प्रते॥८॥दुर करेछे हाथे करीने अथवो पाणीए
रीने शरीरना मल प्रते दुर करेछे॥९॥वली॥१०॥
डा मोजा सहीत॥११॥हीडेछे एटले साधु थइने
तथा मोजा पेरेछे॥१२॥कारण विना॥१३॥चोल
प्रते॥१४॥वाधे छे एटले कोइग्रहस्थ आव्या
ल पट्टो पेहेरेछे॥३५६॥ ते पा०

गाम^१देस^२च^३कुल^४॥ममाए^५पीठफलपडिवडो^६॥धरसरपक

सु०पसङ्गद०१॥निहरद०य०सकिंचणो०१॥गिको०१॥३५७॥

अर्थ ॥१॥गाम प्रते॥२॥देशप्रते॥३॥वली॥४॥कुलप्र
ते॥५॥ममताए करीने॥६॥विचरे छे एटले आगम त
था देश तथा कुल हमारा छे ए प्रकारे ममत्व जावे
करीने सहीत वीचरे छे॥७॥गली॥८॥वाजठ पाट पा
टीयां तेने विशे प्रति बद्ध एटले चोमासाना काल वि
ना पण शेष कालने विशे राखे ॥९॥नवीन घर उपा
श्रयादिक कराववाने विशे॥१०॥प्रसंग प्रते कहेछे ए
टले तेमनी चिता करेछे॥११॥मुवर्णादि द्रव्य सहीत
सतो॥१२॥हू द्रव्य रहित एहयो निरग्रथछु ए रीते लो
कोनी आगळ कहेछे॥३५७॥ते पा०

नहदतकेसरोमे॥१॥जमे॥अच्छोत्तडोअणो॥अजउ॥॥

वाहेद्र०य०पल्लिक०॥अदरेगपमाण०पधरद०॥३५८॥

अर्थ॥१॥नख, दात, केश, मस्तक सबधी रोम शरीर

वधिरुवाडा ते प्रते॥२॥भुषित करे एटले शोभाये॥३॥

पाणीए करीने हाथ पगादिकनु धोवुछे जेहने एटले

॥पाणीये करीने हाथ पगादिक धुवे॥४॥अजननाए

नेसहीत एटलेद्रव्य जावबे प्रकारे जनना करे नहि

ली॥६॥पल्यक प्रते एटले माचा प्रते॥७॥रहन क

रेछे एटले ग्रहस्थनी पठम जोगवेछे॥८॥ अतिशे प्रमाण

एटले प्रमाण थकि अधिक सथारा उत्तर पट्टादिक प्रते

॥९॥ पाथरेछे अटले सुख सज्या प्रते करेछे॥३५८॥ पा०

सोवइ १५ १ सवराइ १॥ नीसइ १ मचेयणो १ न १ वा १ शरइ १॥ न १ ५

मन्नतो १ पविस्इ १ १ निसिहियावस्सिय १ २ न १ १ करेइ १॥ ३५९॥

अर्थ॥ १॥ वली॥ २॥ अतीशया॥ ३॥ चेतना रहित एटले

लाकडानी पठमा॥ ४॥ सर्व रात्रिने विशेष एटले रात्रिना

च्यारपोहोर सुधी॥ ५॥ सुइ रहे एटले शयन करेछे॥ ६॥

वली॥ ७॥ ना॥ ८॥ स्वाध्याय करे एटले रात्रिने विशेषे जणे

लुं गणे नहि॥ ९॥ प्रमार्जन करतो सतो॥ १०॥ ना॥ ११॥

प्रवेश करे एटले रात्रिने विशेषे रजोहर्णादिके करीने

जूमि प्रते अप्रमार्जन करतो शतो उपाश्रयने विशेषे प्र

वेश करे॥ १२॥ नीसहियावसहि प्रते एटले उपाश्रय

मा पेसवाने श्रवसरे निसहि केहवि अने निकटवाने

श्रवसरे श्रावस्सहि केहवि ते प्रते॥ १३॥ ना॥ १४॥ करे

एटले श्रावस्सहि निस्सहि रूप साधु समाचारि प्रते

नयी साचयतो॥ ३५९॥ ते पा०

पाय १५ हे १ न १ पमन्नइ १॥ जुगमाया १ न १ सोहण १ इरिय १॥

पुढवां दग अगणिमा १ अ १ वणम्मइ तमे मु १ निरविस्तो १०॥ ३६०॥

अर्थ॥१॥मार्गने विशेषे चालतो सतो एटले गामनी सी
 ने विशेषे प्रवेश करतो सतो अथवा गाम थकि निक
 ततो सतो॥२॥पग प्रते॥३॥न॥४॥प्रमाणे एटले पूजे
 नहि॥५॥जुग प्रमाण भुमिने विशेषे एटले साडात्रण हा
 य अथवा च्यार हाथ भुमिने विशेषे॥६॥इर्या प्रते एटले
 गालवाना मारग प्रते॥७॥न॥८॥सोवे एटले जुवे नहि
 ॥९॥पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, व
 तस्पतिकाय, त्रसकाय, एटला वानाने विशेषे॥१०॥अपे
 ना रहित एटले पृथव्यादिक छकाय जीव प्रते विराध
 ना करतो सतो शका पामे नहि एटले बीहे नहि॥३६०॥

सब^१ थोव^२ उवाहिं^३॥न^४ पेहए^५ नय^६ करेइ^७ सझाय^८॥

सदकरो^९ अग्रकरो^{१०}॥लहुउ^{११} गणभेयतमिद्धो^{१२}॥३६१॥

अर्थ॥१॥सर्व॥२॥थोडी॥३॥उपधि प्रत्ये एटले थोडा
 ना थोडी उपधि केवल मुख वस्त्रिका प्रते पण॥४॥न
 ॥५॥पडिलेहवे एटले प्रतिलेपण करे नहि॥६॥स्वाध्या
 य प्रते एटले जणवु जणाववु ते प्रते॥७॥नहिजा॥८॥
 करे एटले नथी करतो॥९॥रात्रिने विशेषे सुतापछि घा
 इ शब्द प्रते करे॥१०॥कलह प्रते करे॥११॥हलको हो
 य एटले गजीर गुणे करीने सहित नहोय॥१२॥गण

अर्थ॥१॥कार्य॥२॥विना एटले फोगटा॥३॥अवग्रह प्र
ते एटले स्थान प्रते॥४॥जणावे एटले काम पड्या वि
ना ग्रहस्थानि आज्ञा लेइने तेमनी भूमिका प्रते ग्रह
ण करे॥५॥दिवसने विगे॥६॥सुइ रहे एटले कारण वि
ना दिवसे उघे॥७॥साध्विना लान्न प्रते एटले साध्वि
ना आणेली आहारादिक प्रते॥८॥भोगवे॥९॥स्त्रीयोना
आसनने विगे॥१०॥समस्त प्रकारे क्रिडा करे एटले स्त्री
योना उठया पछी ततकाल ते स्थानकने विगे वेसे॥३६६॥

उच्चारें 'पासवणे'॥खेले 'सिंराण'॥अणाउत्तो॥

सथारगडवहीण॥१॥गडिकमइ 'सवासपाठरणो'॥३६७॥

अर्थ॥१॥ठंडिलने विशो॥२॥मुत्रने विगे॥३॥मुखना श्ले
ष्मने विशो॥४॥नामिकाना मलने विशो॥५॥असावधान
एटले उपयोग विना ठंडिलमात्रु श्लेष्म नासिकानु म
ल एटला वाना प्रते परठवे॥६॥सथाराने विगे अथवा
उपधीने विगे वेठो सतो॥७॥वस्त्रनु ओढवु तेणे करिने
सहित एटले वस्त्र ओढीने॥८॥पडिकमणू करे॥३६७॥

न 'करेइ' पाहे 'जडण'॥नट्टियाण नह 'करेइ' परिभोग॥

चरइ' 'अणुवडुबासे'॥सपस्त्वपरपस्त्वउमाणे॥३६८॥

अर्थ॥१॥मार्गने विशो॥२॥जतना प्रते॥३॥आना॥४॥करे

एटले रस्ते चालता इर्या समिति साचवे नहि॥५॥ति
मजा॥६॥खासडा तथा मोजाओनो॥७॥परिभोग प्रते
॥८॥करे एटले पगरखा प्रते तथा कारण विना मोजा
प्रते पेहरे॥९॥वर्षा कालने विगे पण॥१०॥विहारकरे
॥११॥पोताना पक्षनी मध्ये एटले साधुओनी मध्ये
ने परपक्षनी मध्ये एटले अन्य दर्शनियोनि मध्ये
पमान थये सते अजोग्य सतो विहार करे॥३६८॥

सज्जोअइ^१अइबहुअ^२॥इगालसधुमग^३अणट्टाए^४॥

मुंजइ^५स्ववलट्टा^६॥न^७धरेइ^८०अ^९पायवुळणय^{१०}॥३६९॥

अर्थ॥१॥सजोजना करे एटले जुदाजुदा रहेला ए
हवा जे द्रव्य तेहने स्वादने अर्थे एकठा मिलावे॥२॥अ
तिशे बहू आहारादिक प्रते॥३॥जिमे॥४॥एगाल शब्दे
करीने रूडा आहारादिक प्रते राग बुद्धिये करीने जि
मे सधूमग एटले अनिष्ट आहारादिक प्रते द्वेष बुद्धि
करिने एटले मुख मचकोडिने जिमे॥५॥कारणविना ए
टले क्षुधा वेदनादि तथा वैयावचादिक छ कारणविना
आहारपाणीवावरे॥६॥रूपतथा बलबधारवाने अर्थे जो
जन करे॥७॥वली॥८॥रजो हरण प्रते॥९॥ना॥१०॥राखे

अइमउट्टचउथ^१॥सवच्छरचाठमासपखेसु^२॥

न० करेइ० सायबहुलो०॥ न० य० विहरइ० मासकप्पेण०॥ ३७०॥

अर्थ॥ १॥ सुखशीलियो सतो॥ २॥ सवत्सर पर्वने विशे
तथा चोमासि पर्वने विशे तथा पस्ख पर्वने विशे॥ ३॥
अष्टम तप प्रते छठ तप प्रते तथा चतुर्थ जक्त तप प्र
ते॥ ४॥ ना॥ ५॥ करे एटले सवत्सर पर्वने विशे सुखशीलि
या पणे करिने न करे ए रिते चोमासि पर्वादिकने विशे
अनुक्रमे जाणवु॥ ६॥ वली॥ ७॥ मास कल्पे करिने॥ ८॥
न॥ ९॥ विचरे एटले शिखाकाल एटले उनालासीयाला
ने विशे नव कल्पि विहार करे नहि॥ ३७०॥

नोय० गिण्हइ० पिंड०॥ एगागी० अल्लए० गिह० थकहो०॥
पावसुआणि० अहिज्जइ०॥ अहिगारो०० लोगगहणामि०॥ ३७१॥

अर्थ॥ १॥ नित्या॥ २॥ पिंड प्रते॥ ३॥ ग्रहण करे अमुक घे
रथि आटलु लेवु एहवा निमपुर्वक ग्रहण करवु ते नि
त्य पिंड कहिये॥ ४॥ एकलो॥ ५॥ रहे एटले साधुना समु
दायने विशे वसेनहि॥ ६॥ ग्रहस्थ लोकोनि पठम प्रवत्ति
करे एटले व्यवहार चलावे॥ ७॥ पापश्रुत प्रते एटले जो
तिपशास्त्र, वैदकशास्त्र, कोकशास्त्रादिक प्रते धर्मनी बु
द्धिये करीने॥ ८॥ भणे॥ ९॥ लोकना मन रजित करवाने
थे एटले मनाव्वा पूजाववाने अथ लोकना चित वश क

रवाने विशे॥१०॥ अधिकार प्रते करेछे एटले अग्रेसर
 थायछे पण पोताना अनुष्ठानने विशे अग्रेसर थतो नथी
 परिभवइ ॥ उगकारी ॥ सुद्ध ॥ मग ॥ निगुहए ॥ बालो ॥
 विहरइ ॥ सायागुरुउ ॥ मंजमविगले मु ॥ खित्ते सु ॥ ३७२ ॥

अर्थ॥१॥ अज्ञानि एटले अजाण एहवो ॥ २ ॥ साता ए
 टले सुख तेहने विशे गुरुक एटले लपट एटले पुढ
 लिक सुखने विशे लपट थयो सतो ॥ ३ ॥ उग्रविहारना क
 रनार मुनिराज प्रते ॥ ४ ॥ पराजव करो ॥ ५ ॥ शुद्ध एटले नि
 दांपण एहवा ॥ ६ ॥ मार्ग प्रते एटले मोक्ष मार्ग प्रते ॥ ७ ॥
 ओलवे एटले ढाके ॥ ८ ॥ सजमे करीने रहित एटले संज
 मना पालनार मुनियोये करीने रहित एहवा ॥ ९ ॥ शे
 त्रोने विशे ॥ १० ॥ विचरे ॥ ३७२ ॥

उगाइगाइ ॥ हसइ ॥ य ॥ असतुडो ॥ सइ ॥ करेइ ॥ कदण ॥ गिहि
 क ॥ जचितगो ॥ वि ॥ य ॥ उसने ॥ देइ ॥ गिणहइ ॥ वा ॥ ३७३ ॥
 अर्थ॥१॥ आक्राशपणे करीने एटले मोहोटा शब्दे करी
 ने गान करे ॥ २ ॥ बली ॥ ३ ॥ हासिकरे ॥ ४ ॥ असवृत एटले
 पोहलुं छे मुख ते जेहनु एहवो सतो ॥ ५ ॥ निरतरा ॥ ६ ॥
 कदप प्रते एटले कामनी चेष्टा प्रते ॥ ७ ॥ करेछे ॥ ८ ॥
 बली ॥ ९ ॥ ग्रहस्थना काज प्रते चिन्तन करे ॥ १० ॥ निश्रं

॥११॥उसन्ना साधुने एटले साधु मारग पालवानेवि
शेसिथिल एहवाने वस्त्र पात्रादि प्रते॥१२॥आपे॥१३॥
अथवा तेमनी पासे थकि॥१४॥ग्रहण करे॥३७३॥

धम्मकहाड'अहिइइ'॥धराघट'भमइ'परिकहतो'य'॥

गणणाइपमाणेण'य'॥अइरित्त'वहइ'१'उवगरण'०॥३७४॥

अर्थ॥१॥धर्म कथाओ प्रते केवल लोकना चित्तने रि
जववानेअर्थे॥२॥भणे॥३॥वली॥४॥धर्म कथाओ प्रते क
हेतो सतो॥५॥घरघर प्रते॥६॥जमे एटले धर्म कथा क
हेतो सतो घरघर प्रते निक्षाने अर्थे जमे॥७॥वली॥८॥
गणनाडिक प्रमाणे करीने एटले साधुना चौट उपकर
ण तथा साध्विना पच्चीस उपकरण जेटला लावा पो
हला राखवा कहा छे ते थकि ॥९॥अधिक एटले स
रुया तथा प्रमाण थकि वधारे॥१०॥उपकरण प्रते॥११॥
वहन करे एटले राखे॥३७४॥

बारस'बारस'तिनि य'॥काइय'उच्चार'काल'भूमीउ'॥अतो'
बहि'१'च'१'अहिआसे'१॥अणहिआसे'१'न'१'पडिलेहे'१॥३७५॥

अर्थ॥१॥वारा॥२॥लघुनितिने जोग्य एटले मात्रु कर
वाने जोग्य एहवो॥३॥वारा॥४॥वडिनितिने योग्य ए
टले ठडिल करवाने जोग्य एहवो॥५॥वली॥६॥त्रयण

॥७॥कालग्रहणनेजोग्य एहवी॥८॥भुमिओ एटलेस्था
न प्रते॥९॥उपाश्रयनी मध्ये॥१०॥वली॥११॥ उपाश्र
यनी बाहिर॥१२॥मात्रा ठंडिल प्रते सहन करवाने स
मर्थ॥१३॥मात्रा ठंडिल प्रते सहन न करि शके एह
वा साधुने अर्थ॥१४॥ना॥१५॥पडिलेहवे एटले जो मा
त्रा ठंडिल सहन करि सकिएतो छेटे मात्रा ठंडिल पर
ठववाने जोग्य एहवी भुमिओ प्रते नपडिलेहवे एटले
सम्यक प्रकारे जुवे नही अने जो सहन न करि सकी
एतो समिप रहेली एहवी मात्रा ठंडिल परठवा जोग्य
भुमि प्रते सम्यक प्रकारे जुवे नहिए प्रकारे सत्ताविश
ठंडिलनी चुमीयो प्रते उपाश्रय माहि तथा बाहिर उ
पयोग सहित जुवे नहि॥३७५॥

गीयथ्य^१ सविगं^२॥आयारिअ^३ मुअइ^४ वलइ^५ गच्छस्स^६॥गुरुणो^७
य^८ अणापुच्छा^९॥ज^{१०} किंचिवि^{११} देइ^{१२} गिण्हइ^{१३} वा^{१४}॥३७६॥

अर्थ॥१॥गीतार्थ एटले सूत्रना जाण एहवा॥२॥मो
क्षना अभिलापि एहवा॥३॥पोताना धर्माचारज प्रते॥
४॥मुके एटले कारण विना तजे॥५॥साधुना समुदाय
ने शिखामणना देनारा एहवा॥६॥ गुरुप्रते॥७॥सामु
बोले॥८॥वली॥९॥गुरुमाहाराजने पुछ्याविना एटले

आज्ञा विना॥१०॥जे॥११॥काइपण वस्तु परने ॥१२॥
आपो॥१३॥अथवा॥१४॥गुरुमहाराजनी आज्ञाविना प
र पासेथी ग्रहण करे ॥३७६॥

गुरुपरिभोग भुजइ ॥ शिबनासधारउवगरणजाय ॥

किस्तिय तुमाति भासइ ॥ अविणीउ गाविउ लूडो ॥३७७॥

अर्थ॥१॥गुरु महाराजने जोगववा जोग्य एहवो॥२॥
शय्या एटले रेहेवानी वसति, संस्तारक एटले त्रणादि
कनो सथारो उपकरण कपडा कावलियादिक तेमनो
जात एटले समुह ते प्रते॥३॥पोते जोगवे॥४॥गुरु महा
राजे बोलाव्यो सतो॥५॥अविनीत एहवो॥६॥अहकारी
एहवो॥७॥विषयादिकने विज्ञे लपट एहवो थयो सतो॥
८॥तु ए प्रकारे टुकारे करिने॥९॥गुरुमहाराज प्रते बोला
वे पण हे जगवन ए प्रकारे बहू मान सहित नबोलावे

गुणपद्मस्वर्णागिलाणसेहवालाउल्सस गच्छस्स ॥

न करेइ धनेय पुच्छइ । निदुम्भो लिंग मुवनीवि ॥३७८॥

अर्थ॥१॥ मोहटा पचखाणना करनारा एटले अनश
नादि तपना करनारा ग्लान एटले रोगी॥शिष्य एटले
नवदक्षित साधु, बाल एटले नाना साधु ए पूर्वे कहा ए
हवा साधुओए करीने, व्याप्त एटले सहित एहवो॥२॥

जे गच्छ एटले साधुनो समुदाय तेहनि वैयावचादिक प्र
 ते पोते ॥३॥न॥४॥करे अने वलि जाण पुरुष प्रते ॥५॥न
 हिजा ॥६॥पुछे एटले हुंस्यु करु ए प्रकारे पुछे नहि ॥७॥
 धर्म रहित एहवो सतो ॥८॥लिंग प्रते एटले रजोहरण
 मुहपत्ति प्रते ॥९॥जीवाडनारो एटले लोकोनि आगळ के
 वल एक लिंगनी थापना करिने तेज लिंगे करिने आ
 जीविकानो चलावनारो एहवो होय ॥३७८॥

पहगमणसहिआहारसुअण्यंडितविहि'परिठण ॥

ना'यरइ'नेव'जाणइ'॥अद्यावडावण'चेव'॥३७९॥

अर्थ ॥१॥मार्गने विशे चालवु, रेहेवाने अर्थे उपाश्रय
 नुं जाचवुं, आहारनुं ग्रहण करवु, शयन करवु एटले सु
 पुं, थडिलनु सोधवु एटले शुद्ध जमिनु जोवु, ए पुर्वे कहा
 एटलां यानानो जे विधि ते प्रते ॥२॥अशुद्ध आहार पा
 णिनुं परठवु एटले तजवु ते प्रते जाणता सतो पण ध
 र्म रहित छे ए कारण माटे ॥३॥न ॥४॥आदरे एटले
 मिढातमा कहा प्रमाणे विधि साचवे नहि अथवा
 जाणयानो स्वयं करेज नहि ॥५॥माधियने प्रवर्तावपुं ए
 टले सनमने विगे उद्यम करावयो ते प्रते पण ॥६॥
 नहिजा ॥७॥नाणे ॥८॥निश्रे ॥३७९॥

सच्छदगमणउटाणसोअणो^१अण्णेण^२चरणेण^३॥

समणगुणमुक्कतोगी^४॥बहुजीवखयकरो^५भमइं^६॥३८०॥

अर्थ॥१॥पोताना छटे करिने चालवु सुवुछे जेहने ए
टले पोतानी इच्छाए करिने चालनारो अने पोतानी
खुशिए करिने उठनारो अने पोतानी खुशिये करिने
सुइ रहेंनारो एहवो॥२॥पोतानि मति कल्पनाए करि
ने कल्पित एहवो॥३॥चारित्र तेणे करिने चालनारो ए
हवो॥४॥साधु मुनिराजना गुण ज्ञानादिक तेहनो मु
क्योछे जोग एटले वेपार ते जेणे एटले ज्ञानादिक
गुणोए करिने रहित एहवो॥५॥घणा जीवोनु क्षय कर
नार एटले उनमारगनी देशनाए करिने घणा जीवो
ने ससारमा बोलनारो एहवो सतो॥६॥संसारने विपे
जमेछे, ए सर्व पासथ्याना लक्षण जाणवा॥३८०॥

वधिहवापुपुत्रो^१॥पटिभणइ^२जिणमय^३अजाणतो^४॥

पढो^५निवित्राणो^६॥न^{१०}य^{११}विच्छइ^{१२}किंति^{१३}अणसम^{१४}॥३८१॥

अर्थ॥१॥वस्तिनी पठम वायुयें करिने पूरण एटले
जेम वायुयें करिने पूर्ण एहवो वस्ति एटले दृति एट
ले चावडानी मसक जाडो थयो सतो पाणिमा जमेछे
तेम गरवे करिने जरेलो एहवो॥२॥अने बलि जिन

मत प्रते एटले रागादि रुप रोगनु उत्कृष्ट ओपध रुप
 जिनराज नापित धर्म प्रते ॥ ३ ॥ न जाणतो एहवो ॥
 अहकारि एहवो ॥ ५ ॥ ज्ञान रहित एहवो सतो ॥ ६ ॥
 रिभ्रमण करेछे ॥ ७ ॥ वली ॥ ८ ॥ किंचित मात्र पण ॥ ९ ॥
 पोताने तुल्या ॥ १० ॥ न ॥ ११ ॥ देखे एटले सर्व प्राणियो
 प्रते त्रणा समान गणे ॥ ३८१ ॥

सच्छदगण^१णउठाणसोअणो^२भुजइ^३गिहीणच^४॥

पासथाइठाणा^५॥ हवति^६एमाइया^७ण^८॥ ३८२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ पोतानी खुशी प्रमाणे चालवु उठवु सु
 छे जेहने-आ विशेषणनु फरिने ग्रहण करवु थपुछे ते
 हनुं कारण जाणवु जे गुरूनि आज्ञा विना गुणानि प्राप्ति
 धाय नहि ए प्रकारे जणावाने अर्थ ॥ २ ॥ वलिग्रहस्थोनी
 मध्ये ॥ ३ ॥ नोजन करे एटले ग्रहस्थानि साथे मिलिने
 आहार पाणि करे ॥ ४ ॥ ए आदि देइने ॥ ५ ॥ ए पूर्वे कहा
 जे संप्रते ॥ ६ ॥ पासथादिकना स्थानका ॥ ७ ॥ होय एट
 पूर्वे कहा जे लक्षण ते सर्वे पासथादिकना जाणवा
 तो^१हुगड^२असमा^३थो^४संगेग ॥ १ ॥ पलिउ^५द्रागियदेहो^६॥

सवमवि^७महाभणिय^८॥ कयाइ^९न^{१०}तरिइ^{११}काउ^{१२}मे^{१३}॥ ३८३ ॥

ए पासथादिकना लक्षणनु द्वार समाप्त थपु ॥ हवेति

प्य प्रश्न करेते त्वारे स्यु साधु नथि ए प्रकारनि आश
का दुर करवाने अर्थे गुरु महाराज उत्तर कहेछे॥

अर्थ ॥१॥ जे साधु॥२॥सजावे करिने अममर्थ एट
ले बल रहित एहवो॥३॥होय॥४॥अववा॥५॥रोगे क
रिने एटले स्वासि स्वास चरसादिके करिने॥६॥पिडा
यो सतो एहवो॥७॥जिरण थयोछे देह ते जेहनो एट
ले वृद्ध एहवो सतो॥८॥कदाचित एटले कोइरु यखत
॥९॥सर्व पण एटले समस्त पण॥१०॥जेम कष्ट तेम
॥११॥करवाने अर्थे॥१२॥न॥१३॥समर्थ थाय एटले न
करि शके॥१४॥वाक्य शोजवाने अर्थे॥१५॥

सोविश्य निययपरक्रमवसायधीदबल अग्रहो ॥

मूत्तुण कूडचारिय ॥ जट गयतो अरम ॥ जट ॥ ३८४ ॥

अर्थ ॥१॥ बली॥२॥ते पण एटले पूरे कथो एहवो
पण॥३॥साधु॥४॥पोतानु प्राक्रम एटले पोताना सघय
एनु बल । व्यवसाय एटले शरीरनो उद्यम । धीरज
एटले सतोप, बल एटले मननु बल एटला याना प्र
ते॥५॥न ओलवतो एटले न गोपवतो सतो॥६॥ कुट
चरित्र प्रते एटले कपट सहित आचरण प्रते॥७॥ मु
किने एटले ताजिने॥८॥चारित्रने विशे उद्यम करतो ए

પાંચ સજોગિ તે થાકે॥૭॥જે પ્રકારે જે પુરૂષને વિશે
 ॥૮॥ઘણા દોષા॥૯॥હોયછે॥૧૦॥તે પ્રકારે ॥૧૧॥કર્મ
 કરિને નારે થાયહે એટલે વિરાધક થાયછે હવે તે દો
 પની વૃદ્ધિના નાગા દેખાડિયેછે॥

द्विकसयोगी भागा १०

त्रिकसयोगी भागा १०

| | | | | |
|-----------|-----------|--------|-----------|-----------|
| एकाकी | पास्थो | एकाकी | पास्थो | सछदो |
| एकाकी | सछदो | एकाकी | पास्थो | स्थानवासि |
| एकाकी | स्थानवासि | एकाकी | पास्थो | उसन्नो |
| एकाकी | उसन्नो | एकाकी | सछदो | स्थानवासि |
| पास्थो | सछदो | एकाकी | सछदो | उसन्नो |
| पास्थो | स्थानवासि | एकाकी | स्थानवासि | उसन्नो |
| पास्थो | उसन्नो | पास्थो | सछदो | स्थानवासि |
| सछदो | स्थानवासि | पास्थो | सछदो | उसन्नो |
| सछदो | उसन्नो | पास्थो | स्थानवासि | उसन्नो |
| स्थानवासि | उसन्नो | सछदो | स्थानवासि | उसन्नो |

चतुष्सयोगी भागा ५

| | | | |
|--------|--------|-----------|-----------|
| एकाकी | पास्थो | सछदो | स्थानवासि |
| एकाकी | पास्थो | सछदो | उसन्नो |
| एकाकी | पास्थो | स्थानवासि | उसन्नो |
| एकाकी | सछदो | स्थानवासि | उसन्नो |
| पास्थो | सछदो | स्थानवासि | उसन्नो |

पचसयोगी भागो १

एकाकी | पासथो | सछदो | स्थानवासि | उमत्रो
 श्रे रीते सर्व मलीने छविस भागा जाणवा श्रेटले
 कोइ एक साधु एकाकी होय अने पासथो पण होय
 कोइ एक साधु एकाकी होय अने पासथो होय अने
 सछदो पण होय कोइ एक साधु च्यारें पद सहीत
 होय कोइक पाच पद सहीत होय ए रीते छवीस
 भागा दोपनी वृद्धीना जाणवा॥३८७॥

गच्छगउ^१अणुउगी^२॥गुरुसेरो^३अनियवासि^४आउत्तो^५॥

सतोएण^६पयाण^७॥सजमआराहगा^८भणिवा^९॥३८८॥

अर्थ ॥ १॥ हवे आराधक साधुनु स्वरूप केहेछे ॥
 गच्छने विशे रेहेलो॥२॥ज्ञानादिक सेवन करवाने वि
 शे उद्यमवत॥३॥गुरुनी सेवानो करनार॥४॥एक ठेका
 ऐ रहे नहि एटले मास कल्पादिके करिने विहारनो
 करनारो॥५॥प्रतिक्रमणादिक क्रियाने विशे उपयोग
 वत॥६॥ए पूर्वे कह्या जे पाच पद तेमना॥७॥सजोगे
 करिने एटले पूर्वे गाथानि पठेम द्विकादिक सजोगे क
 रिने॥८॥सजमना आराधक एहवा॥९॥कह्याछे एटले
 कोइक साधु गच्छ गत होय अने ज्ञानादिकनो से

नार पण होय ए रिते कोइक त्रइण पद सहित कोइ
चार पद सहित कोइक पाच पद सहित ए रीते छवी
स भागा जाणवा ॥३८८॥

निम्मम^१निरहकारा^२॥उबउत्ता^३नाणदसणचरित्ते^४॥

एगखित्तेवि^५ठिया^६॥खवाति^७पोराणय^८कम्म॥३८९॥

अर्थ॥१॥ममत्व जावे करीने रहित एहवा॥२॥अह
कारे करीने रहित एहवा॥३॥ज्ञान दर्शन चारित्रने वि
शे एटले विशेष बोध रूप ज्ञानने विशेष तत्त्वनि श्रद्धा
न रूप दर्शनने विशेष आश्रवणु रोकवु ते रूप चारित्रने
विशे॥४॥उपयोगवत एटले सावधान एहवाजे महामुनी
राज॥५॥एकक्षेत्रने विशेष एटले एक देशने विशेष पणा॥६॥
रह्या सता॥७॥पूर्वभवनुं उपार्जन करेलु एहवा॥८॥ज्ञाना
वर्णादि कर्म ते प्रते॥९॥खपावेछे एटले विनाश करेछे

जियकोहमाणमाया^१॥जियलोहपरीसहा^२य^३जे^४धीरा^५॥

बुद्धावासेवि^६ठिया^७॥खवाति^८चिरसचिय^९कम्म॥३९०॥

अर्थ॥१॥जित्याछे क्रोध मान माया ते जेमणे एह
वा॥२॥वली॥३॥जित्याछे लोभने परिसह ते जेमणे ए
टले लोभ सज्ञा रहित एहवा क्षुधा तृपादि रूप प
रिसहना सहन करनार एहवा॥४॥जे ॥५॥प्राक्रमि

साध तं॥६॥रुद्धा अस्थाने विधे पण॥७॥एक क्षेत्र
ने विगे रह्या सता॥८॥पणाकालमुशी सचेतु एटले
एकठु करेलु एहवु जे॥९॥कर्म ते प्रते॥१०॥रपावेछे
केमजे मन आचारवत साधु मुनिराजने कोइक कार
णे कारिने एक ठेकाणे रहेवानी पण जिनराजनी आ
ताछे ए हेतु माटे॥३९०॥

पचमिया'तिगुत्ता ॥उदुत्ता'भपमे'तरे'चरणे'॥

शमुत्ता'वि'वसता'॥मुनिणो'आराहगा'भणिया'॥३९१॥

अर्थ॥१॥पाच समितिये करीने समिता एटले साव
धान एहया॥२॥प्रदण गुप्तिये करिने गुप्ता एटले मन
चचन कायाने अशुज वेपारथि निवारिने शुज जोगने
विधे एटले शुज वेपारने विधे जोडता एहवा॥३॥स
जमने विधे एटले सत्तर प्रकारे सजमने विधे अथवा
उ कायनी रक्षा रूप सजमने विधे॥४॥तपने विधे ए
टले उ प्रकारे अभ्यतर अने उ प्रकारे बाज्य ए बार
प्रकारे तपने विधे॥५॥चारित्रने विधे एटले पच महा
रुननी क्रियागुप चारित्रने विधे॥६॥उद्यमवत एहवा
॥७॥मुनिराज जे ते॥८॥मो वरस मुधी पण॥९॥एक
क्षेत्रने विगे रह्या सता॥१०॥आराधका॥११॥रुद्धाछे केम

जे जिन आज्ञाना पालनार साधुओने एक ठेकाणे रहे सते
पण दूष नथी ए कारण माटे आराधक कहा ॥३९१॥

तद्धा^१ सवाणुत्रा^२ ॥ सवनिसेहो^३ य^४ पवयणे^५ नथि^६ ॥

आय^१ वय^२ नुलिङ्गा^३ ॥ लाहाकखि^४ वाणियउ^५ ॥३९२॥

अर्थ ॥१॥ ते कारण माटे ॥२॥ प्रवचनने विशे एटले जि
न शासनने विशे ॥३॥ सर्व वस्तुनि अनुज्ञा एटले आ
ज्ञा आज प्रमाणे करवु ए प्रकारे ॥४॥ वलि ॥५॥ एकते
करिने सर्व वस्तुनो निषेध एटले आ न करवु ए प्रका
रे ॥६॥ नथि केमजे स्याद वाद रूपपणुछे ए हेतु माटे
॥७॥ जेम ॥८॥ लाज्जनो आकाक्षि एटले लाज्जनो अर्थि
॥९॥ वाणियो ॥१०॥ लाभ प्रते ॥११॥ हानि प्रते ॥१२॥ तु
लना करे एटले विचारे तेम साधु जे ते ज्ञानादिक गु
णना लाज्ज प्रते तथा ज्ञानादिक गुणनी हानि प्रते
विचारे एटले जेम लाज्जनो अर्थि एहवो वाणियो जे
वस्तुने विशे लाज्ज जाणे ते वस्तु प्रते गृहण करेछे
तेहनी पठम साधु पण पोताना पदने अनुसारे नि
र्दक्षपणे लाज्जालाज्ज विचारे ए जाव ॥३९२॥

धम्ममि^१ नथि^२ माया^३ ॥ न^४ य^५ कवड^६ आणुअत्तिभाण्य^७ वा^८ ॥

फुडपागड^१ मकुटिल^२ ॥ धम्मवयण^३ मुब्बुय^४ जाण^५ ॥३९३॥

अर्थ॥१॥ गुरु महाराज शिष्य प्रते कहेछे हे शिष्य
 धर्मने विशे एटले सत्य एहवो जे साधु धर्म तेहने वि
 शे॥२॥ माया एटले ठगाइपणु॥३॥ नथी केमजे माया
 अने धर्मने अतिशय बैरिपणुछे ए हेतु माटे॥४॥ बली
 ॥५॥ धर्मने विशे कपट एटले परने ठगवु॥६॥ नथी॥७॥
 बलि॥८॥ अनुवृत्ति ए करिने बोलवु एटले परने वश क
 रवाने अर्थे मायाकारि एहवु परनिदा दाक्षणाता ए करि
 ने जे बोलवु ते पण धर्मने विशे पण नहोय॥९॥ प्रगट
 छे अक्षर ते जेहना एहवु अने प्रगट एटले लज्या र
 हित एहवु ॥१०॥ अकुटिल एटले माया रहित एहवु
 ॥११॥ सरल एटले मोक्षनु कारण एहवु जे वचन हो
 यते॥१२॥ धर्मनु वचन॥१३॥ जाण्य एटले जाणवु॥१४॥
 न॥ वि॥ धम्मस्स भडका॥ उकोडा वचना व॥ कवड वा॥
 निच्छमो॥ किर॥ धम्मो॥ सदेवमणु आसुरे॥ लोए॥१५॥ ३९४॥
 अर्थ॥१॥ बलि॥२॥ अतिशय आडवर देखाडवा थकि
 ॥३॥ धर्मनु साधन॥४॥ नहोय ॥५॥ जो आ वस्तु मने
 पे तो माहरि करिने राखु ए प्रकारनी वृष्णाए क
 धर्मनु साधन नहोय॥६॥ बलि॥७॥ परने ठगवु
 करिने॥८॥ बलि॥९॥ कपटे करिने एटले मायानि

चेष्टाए करिने धर्मनु साधन न थाय एटले धर्म ।
 न न थाया॥१०॥ देव एटले वैमानिक देवता
 एटले मृत्यु लोकना रहेनारा असुर एटले
 वासी देवता तेमणे करिने सहित एहवो ॥११॥
 तेहने विशे तिर्यकर महाराज जे तेमणे ॥१२॥ कपट
 हित एहवो ॥१३॥ धर्म कह्योछे ॥१४॥ किर एटले

भिरावू गोय मगो ॥१५॥ अभिसे एतह ॥१६॥ चव रायणि ॥१७॥

एव ॥१८॥ पुरिमवथु ॥१९॥ दवाइ ॥२०॥ चउविह ॥२१॥ सेस ॥२२॥ ३९५॥

अर्थ ॥१॥ पेहेली पुरुषनी ओलखाण करवी ते
 केहेछे आ साधु ॥२॥ गीतार्थ छे के ॥३॥ अगीतार्थ
 वलो ॥४॥ तेमज ॥५॥ उपाध्याय छे अथवा आचारज
 ॥६॥ निश्चे ॥७॥ रत्नाधिकछे ॥८॥ ए प्रकारे ॥९॥
 ११॥ पुरुषरूप वस्तु विचारीने एटले प्रथम पुरुष
 ते ओलखीने ॥१२॥ बाकि रहेलु ॥१३॥ च्यार नका ॥
 १४॥ द्रव्यादिक एटले द्रव्य क्षेत्रकाल जायप्रते
 रे एटले लाजाजाज विचारे ए कारण माटे प्रथम स
 पूर्ण विचार करवो ए जाव ॥३९६॥

चरणयागे दुर्गाहो ॥१॥ मूगुणे भेव उत्तरगुणे ॥२॥

अ ॥ मूगुणे छटाणा ॥३॥ पदमो ॥४॥ पुण नवहो ॥५॥ तप ॥६॥ ३९६॥

अर्थ॥१॥चारीत्राचार एटले चारीत्रनो आचार॥२॥वे
प्रकारनो छे॥३॥मूल गुणरूप॥४॥उत्तर गुणरूप॥५॥नि
श्रे॥६॥वली॥७॥मूलगुणने विशेष॥८॥छ स्थानक छे एट
ले पचमहाव्रतने छठु रात्रिभोजन ते रूप छभेदछे॥९॥
वली॥१०॥ते स्थानकने विशेष एटले पूर्वकह्या छ महा
व्रतने विशेष ए॥११॥पेहेलु महाव्रत॥१२॥नव प्रकारे ए
टलेष्टयिव्यादि पाचवेरिद्रियादिकचार एनव प्रकारे प्रा
णातिपातथकि विराम पामवुते रूप नवजेद वालु होय
सेमुकोसमाधिमतहत्रउ'वा'भवे'चउडाउ'॥

उत्तरगुणनेगविहो'॥दसणनाणेमु'अठठ'॥३९७॥

अर्थ॥१॥शेष एटले बाकि रह्या पाच बीजा महावृता
दिक मूलगुण उत्कृष्ट मध्यम जघन्य जेदे करिने त्रण
प्रकार वाला जाणवा॥२॥अथवा द्रव्यक्षेत्रकाल भाव
जेदे करिने॥३॥च्यार प्रकारे॥४॥होय॥५॥उत्तरगुणने
विशे एटले गोचरि समिति जावनादिरूप तेहने विशेष
अनेक प्रकारनो आचार जाणवो॥६॥दर्शन ज्ञानने वि
शे॥७॥आठआठ आचार जाणवा एटले दर्शनने विशेष
एटले समकितने विशेष निरुसकिय निकरिय इत्यादि
आठआचार जाणवा ज्ञानने विशेष कालेविणये बहुमा

એ इत्यादि आठ आचार जाणवा॥३९७॥

જં^૧જયદ^૨અગીયથો^૩॥જ^૪ચ^૫અગીયથનિસ્સિ^૬જયદ^૭॥

વદ્રવેદ^૮ગચ્છ^૯॥અણતસસારિ^{૧૦}હોદ^{૧૧}॥૩૯૮॥

અર્થા॥૧॥અગીતાર્થ એટલે સિદ્ધાતનો અજાણ એહવો સતો॥૨॥જે કાઢ ॥૩॥તપક્રિયાને વિશે ઉદ્યમ કરેછે॥ ૪॥વલિ॥૫॥અગીતાર્થની નિશ્રાયે રહ્યો સતો ॥૬॥જે કાઢ ॥૭॥ઉદ્યમ કરેછે એટલે ક્રિયા અનુષ્ઠાન કરેછે એટલે અગીતાર્થના હુકમ પ્રમાણે ચાલે છે॥૮॥પોતે અગી તાર્થ સતો ગચ્છ પ્રતે॥૯॥પ્રવર્ત્તાવે છે એટલે ક્રિયા અનુષ્ઠાનને વિશે પ્રેરે છે॥૧૦॥અનંત સસારિ॥૧૧॥થાયછે એટલે પૂર્વે કહ્યા જે ત્રણ પૂરુષ ઉત્કૃષ્ટ જાંગે અનતાકાલસુધિ સંસારને વિશે પરિભ્રમણ કરેછે ગીતાર્થનેજક્રિયા અનુષ્ઠાન મોક્ષ ફલદાઈ થાયછે॥ ૩૯૮॥

કહડ^૧જયતો^૨સાહુ^૩॥વદ્રવેદ^૪ય^૫જોડ^૬ગચ્છ^૭તુ^૮॥

સંજમજુતો^૧હોડ^૨॥અણતસસારિ^૩હોડ^૪॥૩૯૯॥

અર્થા॥૧॥હવે શિષ્યગુરુ પ્રતે પુછેછે,હે જગવત તપસ જમને વિશે ઉદ્યમ કરતો એહવો ॥૨॥સાધુ॥૩॥કેમ એટલે શી રીતે॥૪॥અનતસસારિ॥૫॥હોય॥૬॥વલી॥૭॥જે સાધુ॥૮॥ગચ્છ પ્રતે॥૯॥તપસજમને વિશે પ્રવર્ત્તાવતો એ

हवो॥१०॥वलि॥११॥सजमे करीने सहित एहवो॥१२॥

थइने केम अनंत ससारि थाप॥३९९॥

दह^१खिच^१काल^१॥भाव^१गुरिसपाडिसेवणाउ^१य^१॥

नवि^१जाणइ^१अगीउ^१॥उत्सगगवाइय^१चेव^१॥४००॥

अर्थ॥१॥हवे गुरु तेनो उत्तर कहेछे, हे शिष्य अगी
तार्थ एहवो जे साधु ते॥२॥द्रव्य प्रते॥३॥स्वेत्रप्रते॥४॥

कालप्रते॥५॥भावप्रते न जाणे॥६॥वलि॥७॥पुरुषप्रति

सेवनाप्रते एटले आ पुरुष जोग्य छे के अजोग्य छे

ए प्रकारे अने प्रतिसेवना प्रते एटले पापना सेवन

प्रते आ पुरुषे पोताना वश पणे पाप शेव्यु छे अथवा

परवश पणे शेव्यु छे ए प्रकारे॥८॥नहिंजा॥९॥जाणे॥

१०॥उत्सर्ग अपवाद प्रते एटले सामर्थ्य पणु सते जे प्र

कारे सिद्धात्मा कह्युछे ते प्रकारे करवु ते उत्सर्ग कहि

ए, रोगादिक कारण सते थोडा दोषनु सेववु ते अपवाद

कहिये, ते बे धर्मो प्रते न जाणे॥११॥निश्च्ये॥४००॥

महाद्वि^१दह^१न^१याणइ^१॥सचित्ताचित्तमिधिय^१चेव^१

कणारूप^१च^१तहा^१जुग^१वा^१जस्स^१म^१होइ^१॥४०१॥

अर्थ॥१॥जथार्थ एटले जेहवुछे तेहवु॥२॥द्रव्य प्रते

एटले द्रव्यना स्वरूप प्रते॥३॥ना॥४॥जाणे॥५॥सचित्

अचित्त मिश्र प्रते न जाणे॥६॥निश्चे॥७॥वलि॥८॥ क
 ल्प अकल्प प्रते एटले आ वस्तु कल्पवा जोग्यछे अने
 आ वस्तु नथि कल्पवा जोग्य ए प्रकारे न जाणे॥९॥
 वलि॥१०॥तेमज॥११॥जेने एटले वाल ग्लानादिकने
 ॥१२॥जे॥१३॥जोग्य॥१४॥होय ते प्रते पण न जाणे
 जहठिय^१खित्त^२न^३जाणाइ^४अद्दाणे^५जणवए^६अ^७ज^८भणिया^९काल
 पि^{१०}य^{११}नवि^{१२}जाणाइ^{१३}सुभिखखदुभिखखज^{१४}कप्प^{१५}४०२
 अर्थ॥१॥वली अगीतार्थ एहवो सतो जथार्थ एहवा
 ॥२॥क्षेत्र प्रते एटले आ क्षेत्र रुडुछे अथवा रुडु नथि
 ए प्रकारे क्षेत्रना स्वरूप प्रते ॥३॥ न॥४॥ जाणे ॥५॥
 विहार करवा जोग्य एहवा मारगने विशे ॥६॥वलि
 ॥७॥विहार करवा जोग्य एहवा देशने विशे ॥८॥ जे
 ॥९॥कह्यु विधिनु स्वरूप ते प्रते॥१०॥नहिजा॥११॥जा
 णे एटले मारग सबधी तथा देश सबधी सिद्धातमा
 कहेलो एहवो जे विधि ते प्रते जाणे नहि॥१२॥वलि
 ॥१३॥काल प्रते पण एटले कालना स्वरूप प्रते न
 जाणे॥१४॥सुनिक्ष कालने विशे तथा दुर्निक्ष कालने
 विशे एटले सुकाल दुकालने विशे जे वस्तु ॥१५॥ क
 ल्पवा जोग्य अकल्पवा जोग्य प्रते न जाणे॥१६॥

भावे'हिदागिलाण॥नवि'जाणइ'गातागाढकल्प'च॥
 सहुअसहुपुरिसवथ'वथू'मवथ'०'च'नवि'१'जाणइ'२॥४०३
 अर्थ॥१॥नाव द्वारने विशेष॥२॥ निरोगी तथा ग्लान
 प्रते एटले आ साधु निरोगीछे ए कारण माटे एहने
 आ वस्तु आपवा जोग्य छे अने आ साधु ग्लान छे
 ए कारण माटे एहने तो आहिज वस्तु आपवा जोग्य
 छे ए प्रकारे॥३॥ नहि जा॥४॥जाणे॥५॥वलि॥६॥ गाढा
 गाढ कल्प प्रते एटले गाढ कारण सते एटले मोहटु
 कारज पडचे सते आ करवा जोग्य छे अगाढ कारण
 सते एटले स्वभाविक कारज पडचे सते आ प्रमाणे
 करवा जोग्य छे ए प्रकारे न जाणे॥७॥समर्थ शरिरवा
 लुं असमर्थ शरिरवालु एहवु पुरुपरूप वस्तु प्र
 ते एटले समर्थ पुरुष प्रते तथा असमर्थ प्रते न जाणे
 ॥८॥वस्तु प्रते एटले आचारजना स्वरूप प्रते॥९॥वलि
 ॥१०॥अवस्तु प्रते एटले सामान्य साधुना स्वरूप प्र
 ते॥११॥नहिजा॥१२॥जाणे॥४०३॥

पडिसेवणा'चउदा'॥अफडिपमायदणकल्पे'य॥
 नवि'जाणइ'अगीउ'॥पाच्छित'०'चैव'१'न'तथ'॥४०४॥

अर्थ॥१॥अगीतार्थ एटले नथी जाण्यो सिद्धातनो र

इस्य ते जेणे एहवो सतो॥२॥च्यार प्रकारे एटले द्रव्य
क्षेत्रकाल जावे करिने॥३॥प्रतिसेवना एटले निषेधक
रेलि वस्तुनु आचरवु ते प्रते॥४॥वलि॥५॥आकुटि प्रमा
द दर्प कल्प प्रते एटले जाणीने पाप करवु ते आकु
टि कहिये,निद्रादिक प्रमादे करिने पाप करवु ते प्रमा
द कहिये,दोडवे करिने तथा कुदवादिके करिने पाप
करवु ते दर्प कहिये,कोइक कारणे करिने पाप करवु ते
कल्प कहिए,ते च्यारे प्रते॥६॥नहिंज॥७॥जाणो॥८॥ते
च्यार प्रकारनी हिसाने विशे॥९॥जे आलोचनादि॥१०॥
प्रायश्चित प्रते एटले आपवा जोग्य एहवुं जे तप ते
प्रते जाणे नहि॥११॥निश्चे॥४०४॥

बह^१नाम^२कोइ^३पुरिसो^४॥नयणविहूणो^५अदेसकुसलो^६॥
कताराडवि^७भीमे^८॥मग्गपणठस्स^९स^{१०}स्स^{११}॥४०५॥
अर्थ॥१॥जेमा॥२॥नेत्रेकरिने रहित एहवो॥३॥वलि॥
४॥देशने विशे अकुशल एटले मारगनो अजाण एह
वो॥५॥कोइक॥६॥पुरुषा॥७॥निश्चे॥८॥विहामणी एह
वी॥९॥शुष्क अटवी एटले पारी^{१०}झाड रहित एहवी
अटविने विशे॥१०॥मार्गथकि^{११}पुकेलो एहवो॥११॥
प्रणा लोकनो समुह तेहने॥४०६॥

इच्छइय देसिपत्त॥ किं सो उ समथु देसिपत्तस्स॥

दुग्गइ॥ अजाणतो॥ नयणविहुणो रुहइ देसे॥ ४०६॥

अर्थ॥ १॥ ते आंधलो मारग देखाडवाने॥ २॥ इछे छे

एटले हु तेमने मारग देखाडु ए प्रकारे वछे छे॥ ३॥

निश्चे॥ ४॥ वलि॥ ५॥ ते आंधलो पुरुषा॥ ६॥ मारग देखा

डवाने॥ ७॥ शु॥ ८॥ समर्थ होय अपितु न होया॥ ९॥ आरूयो

ए करिने रहित एहवो॥ १०॥ विपमस्थानक प्रते॥ ११॥

न जाणतो सतो॥ १२॥ केम एटले गि रीते॥ १३॥ मारग

प्रते देखाडि शके अपितु न देखाडि शके॥ १४॥ पाच

मी छठी गाथानो सबध जेगोछे.

एवमगीयथोवे हु॥ जिणवयणपइवचस्सुपरिहोणो॥

दवाइ अयाणतो॥ उत्सगववाइय चैव॥ ४०७॥

अथन॥ ए प्रकारे॥ २॥ निश्चे॥ ३॥ जिनराजना वचनरु

पदिवो ते रूप चक्षुए करिने समस्त प्रकारे हिन एटले

जिनराजना वचन रूप देदिप्यमान चक्षुए करिने रहि

त एहवो एटले आंधलो एहवो॥ ४॥ द्रव्यादिकना स्वरूप

प्रते॥ ५॥ अने उत्सर्ग अपवाद प्रते॥ ६॥ न जाणतो एहवो

॥ ७॥ अगीतार्थ जे ते पण जाणवो एटले पूर्वं कहेला आप

ला पुरुष सरखो जाणवो एटले पोते मोक्षना मारगनो

अजाण सतो बीजा पुरुषोने मोक्षनो मारग शि रीते दे
खाडि शके अपितु नहिंज देखाडि शके ए भावा॥८॥निश्चे

कह १ सो १ जयउ २ अगीउ ३ । कह १ वा १ कुणउ ८ अगीयनिस्साए १ ।

कह १ १ वा १ करेउ १ १ गच्छ १ १ । सवालबुद्धाउल १ १ सोउ १ १ ४० ८ ।

अर्थ ॥ १ ॥ ते पूर्वे कह्यो एहवो ॥ २ ॥ अगीतार्थ एटले सि
द्धातनो अजाण सतो ॥ ३ ॥ शी रीते ॥ ४ ॥ जतना करे एटले
द्रव्य जाववे प्रकारे उपयोग सहित सजम पालिशके
अपितुन पालिशके ॥ ५ ॥ वालि ॥ ६ ॥ अगीतार्थनी निश्राये
करिने एटले अजाण पुरुषनि आज्ञाये करिने ॥ ७ ॥ शी
रीते ॥ ८ ॥ पोताना आत्मानु कल्याण करवाने समर्थ थाय
अपितुन थाय ॥ ९ ॥ वालि १ ० ॥ ते अगीतार्थ ॥ १ १ ॥ बालवृद्ध
साधुए करिने सहित एहवो १ २ ॥ साधुनो समुदायते
॥ १ ३ ॥ शी रीते ॥ १ ४ ॥ प्रवर्तन करावि शके एटले
जमने विशे उद्यम करावि शके अपितुन करावि शके

सुत्ते १ १ १ इम १ १ भणिय १ ॥ अपच्छित्ते १ १ १ देइ अपच्छित्त १ ॥

पच्छित्ते १ १ १ अइमत्त १ १ ॥ आसायण १ १ १ तस्स १ १ १ महईउ १ १ १ ४ ० १ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ वालि अगीतार्थ ॥ २ ॥ सूत्रने विशे एटले सि
द्धातने विशे ॥ ३ ॥ प्रसिद्धा ॥ ४ ॥ कह्यु छे ॥ ५ ॥ प्रायश्चित्तनी प्र
घटाव सते ॥ ६ ॥ प्रायश्चित्तप्रते एटले तप प्रते ॥ ७ ॥ अपितु

एटले पापकरचाविनाबीजा पुरुपनि पासे तप करावेछे
॥८॥वली श्रीगीतार्थ ॥९॥प्रायश्चित्त सते एटले थोडु पा
पसते ॥१०॥अधिक तप प्रते आपे एटले आविलने ठे
काणे उपवास आपे एकासणाने ठकाणे आविल आपे
ए रिते वधारे आपे ॥११॥त्यारे ते श्रीगीतार्थने ॥१२॥मो
होटी ॥१३॥आशातना लागे एटले मोहोटी एटले उत्कृ
ष्टि जिनराजनी आज्ञानि विराधना थाय एभाव ॥१४०९॥

आसायण १ मिच्छत्त १ ॥ आसायणवन्नना १ य १ सम्मत १ ॥

आसायणानिमित्त १ कुबर्द १ दीह १ च १ ससार १ ॥४१०॥

अर्थ ॥१॥हवे तेनो विपाक कहेछे आशातना एटले जि
नराजनि आज्ञानो जग तेज ॥२॥मिथ्यात्व कहिये ॥३॥
वलि ॥४॥आशातनानु वर्जवु एटले जिनराजनि आज्ञा
नु पालवु तेज ॥५॥समकित कहिये ॥६॥वली ॥७॥आशा
तना छे निमित्त ते जेहनु एटले आज्ञा जग करवे करि
ने ॥८॥लावा ॥९॥ससारप्रते ॥१०॥करे एटले घणा काल
चारगतिने विशे परिभ्रमण करेछे ॥४१०॥

ए १ दोसा १ जग्हा १ ॥ गीय १ जयतस्स १ गीयनिस्साए १ ॥ वद्वावेइ १ य १
गच्छस्स १ ॥ जो १ १ अ १ गण १ देइ १ अगीयस्स १ ॥४११॥

अर्थ ॥१॥जे कारण माटे ॥२॥तप सजमने विशे उद्यम

કરતો એહવોય પણ॥૩॥અગીતાર્થ જે તેને॥૪॥ત્રા પૂર્વેક
 હ્યા એહવા ॥૫॥દોષ લાગે છે॥૬॥અગીતાર્થની નિશ્રાયે
 કરિને એટલે અગીતાર્થના વચને કરિને તપ સજમને વિ
 શે ઉદ્યમ કરતો એહવો જે વીજો પુરુષ તેહને પણ તે પૂ
 ર્વે કહેલા દોષ લાગે છે ॥૭॥વલિ ॥૮॥ગચ્છને ॥૯॥પ્રવ
 ત્તવિતો એહવો જે અગીતાર્થ તેને પણ પૂર્વે કહેલા દોષ
 લાગે છે ॥૧૦॥વલી ॥૧૧॥જે પૂરુષ ॥૧૨॥અગીતાર્થને ॥૧૩॥
 ગચ્છ પ્રતે ॥૧૪॥આપે એટલે મૂરખને આચારજના પદ
 પ્રતે આપે તે પુરુષને પણ પૂર્વે કહેલા એહવા જિનરાજ
 ની આજ્ઞાનગાદિક દોષ લાગે છે ॥૪૧૨॥

अबहुस्सुउ^१ तवस्सी^२ ॥ विहरिउकामो^३ अजाणिऊण^४ पह^५ ॥

अवराहपयसयाइ^६ ॥ काऊणवि^७ जो^८ ५१ ॥ जाणेइ^९ ॥ ४१२ ॥

અર્થ ॥૧॥અવહુશ્રુત એટલે જિનમારગનો અજાણ એહ
 વો ॥૨॥તપસ્વી એટલે ઘાડ તપનો કરનારો એહવો ॥૩॥
 મોક્ષ મારગ પ્રતે ॥૪॥જાણ્યાવિના ॥૫॥વિહાર કરવાની
 એટલે વિચારવાની છે ઇચ્છા તે જેહને એહવો ॥૬॥જે નામ
 સાધુ ॥૭॥અપરાધના પદ એટલે સ્થાન તેમના શિક્કડો
 પ્રતે એટલે શિક્કડો દોષ પ્રતે ॥૮॥કરિને પણ એટલે
 શિક્કડો દોષ સેવતો સતો પણ ॥૯॥ના ॥૧૦॥જાણે કે

का॥१॥न॥१२॥होय एटले अज्ञान कष्ट तुल्य होय

अपरिच्छिद्यसुयनिहसस्स॥केवल१मभिन्नसुत्तचारिस्स॥

सबुद्धमेणवि०कय०॥अन्नाणतवे०बहु०पडइ०॥४१५॥

अर्थ॥१॥ नथि जाण्यो सूत्रनो सार ते जेणे एहवो

॥२॥एक॥३॥टिकादिके करिने रहित एहवु जे सूत्र

तेणे करिने चालतो एटले टीका जाण्यनिर्जुक्तिये

करिने रहित एहवु केवल एक सूत्र तेहने अनुसारे

चालतो एहवोजे पुरुष तेणे॥४॥सर्वउद्यमे करिने पण

एटले घणि मेहेनते करिने॥५॥करयु एहवु॥६॥घणु

क्रिया अनुष्ठानादि ते ॥७॥अज्ञान तपने विशे एटले

अज्ञान कष्टने विशे॥८॥पडेछे एटले अज्ञान कष्ट रूप

थायछे ए उपर दृष्टात कहेछे॥४१५॥

नह१दायमिवि०पहे१॥तस्स०विसेसे०पहस्स०थाणतो०॥पहिउ०

किलिस्सइ०धिय०॥तह१०लिंगायार१०सुआमित्तो१०॥४१६॥

अर्थ॥१॥जेम कोइक पुरुषे रस्ताना चालनार पुरुष

ने॥२॥मार्ग॥३॥देखाडे सते पण ॥४॥ ते॥५॥मार्गना

॥६॥विशेष प्रते एटलेआ जमणो मारगछे आ डानो

मारगछे ए प्रकारे॥७॥न जाणतो एहवो॥८॥रस्तानो

चालनार॥९॥क्लेश प्रते पामेछे एटलेमार्गथकि चूकि

ने मोहटा दुख प्रते पामेछे ॥१०॥ निश्चे ॥११॥ तेम ए
टले ए दृष्टाने करिने ॥१२॥ केवल सूत्रना अक्षर मा
त्रनो जाण एहवो ॥१३॥ माधुनो वेश अने आचार ए
टले क्रिया ते बेनो धारण करनार एटले सूत्रना पर
मारथनो अजाण एहवो सतो पोतानि मतिथे करिने
साधुनो वेश लेइने क्रिया करतो सतो कलेश प्रते पामेछे

कप्पाकण १ ए सण २ ॥ मणे सण १ चरण करणे १ सेहावेहि १ ॥

पाय चित्तविहिं पिय १ ॥ दबाइ गुणे सु १ अ १ समग १ ॥ १२१ ॥

अर्थ ॥१॥ कल्प अफलप्य प्रते एटले साधुने लेवा जो
ग्य अथवा अलेवा जोग्य प्रते ॥२॥ आहारानि श्रुद्धि प्रते
॥३॥ आहारना दोष प्रते ॥४॥ चरणसितरि करण सितरि
प्रते एटले मूल गुण उत्तर गुण प्रते ॥५॥ शीष्यना विधि
प्रते एटले नवा दिक्षित साधुने शिखामण देवाना विधि
प्रते ॥६॥ वलि ॥७॥ प्रायश्चित्तना विधि प्रते एटले आलो
चनादिक दश प्रकारना प्रायश्चित्त आपवाना विधि
प्रते पण ॥८॥ वलि ॥९॥ द्रव्यादि गुणने विशे एटले द्र
व्य क्षेत्रकाळ जावने विशे अने उत्तम मध्यम गुणोने
विशे ॥१०॥ समर्थ एटले सपूर्ण प्रते अजाणतो सतो एट
ले न जाणतो सतो (आपद सर्व ठेकाणे जोडवु) ॥१२१ ॥

પવાવળવિહિ^૧ મુદ્ધાવુળ^૨ ચ^૩ ॥ અઙ્ગાવિહિ^૪ નિરવસેસ^૫ ॥

ઉત્સર્ગાવવાયવિહિ^૬ ॥ અયાળમાળો^૭ કહ^૮ જયડ^૯ ॥ ૪૧૮ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ દિક્ષા આપવાના વિધિ પ્રતે એટલે પુરુષોને દિક્ષા આપવાના વ્યવહાર પ્રતે ન સતો ॥ ૨ ॥ વલિ ॥ ૩ ॥ ઉપસ્થાપના પ્રતે એટલે મહાવૃત્ત ચ્ચારણ કરાવવાના વિધિ પ્રતે ॥ ૪ ॥ નૂળ^{૧૦} ના વિધિ પ્રતે એટલે સાધ્વિને ચલાવવાના વ્યવહાર તે ॥ ૬ ॥ ઉત્સર્ગ અપવાદના વિધિ પ્રતે એટલે પુલ^{૧૧} પાલવો તે ઉત્સર્ગ કહિએ અને કારણ પડ્યે સતે જે વુ પડે તે અપવાદ કહિયે તે વે વ્યવહાર પ્રતે ॥ ૭ ॥ આ^{૧૨} ગાથાને વિશે કહ્યા એહવા સર્વ પ્રકાર પ્રતે ન સતો એટલે અવહુશ્રુત એહવો લિંગ ધારણ કરતો તો ॥ ૮ ॥ શિરિતે ॥ ૯ ॥ મોક્ષ મારગ આરાધવાને વિશે મ કરિ શકે અપિતુ ન કરિ શકે ॥ ૪૧૯ ॥

સીસાયરિયક્રમેળ^{૧૩} ચ^{૧૪} ॥ જળેળ^{૧૫} ગિહિઆડ^{૧૬} સિપ્પસપ્પાડ^{૧૭} ॥

નદ્વતિ^{૧૮} વહુવિહાડ^{૧૯} ॥ ન^{૨૦} ચલ્લુમિત્તાણુસરિયાડ^{૨૧} ॥ ૪૨૦ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ લોક જે તેણે ॥ ૨ ॥ શિષ્ય આચારજના

ક્રમે કરિને એટલે જેમ વિદ્યાનો અર્થિ વિનય સહિત કલાચાર્જાટિક પ્રતે પ્રસન્ન કરિને વિદ્યા પ્રતે ગૃહણ ક

रेछे ए प्रकारे विनय सहित गुरु पासै थकि एटले क
लाचारज पासैथि॥३॥ गृहण कर्या एटले शिस्व्या ए
हवा॥४॥ नाना प्रकारना एटले बहु प्रकारवाला एहवा
॥५॥ शिल्प शास्त्रादिक एटले चित्रामण वेपारादिकनि
कलाश्रो॥६॥ जाणिए छीए एटले लौकिकमा पण लो
कविनय सहित सिखे छे तो तेहने सम्यक प्रकारे जा
ण पणु थायछे॥७॥ निश्चे॥८॥ चक्षु दर्शन मात्रे करिने
अनुसर्या एटले पोतानी मेले शिस्व्या एहवा जे शा
स्त्र॥९॥ न शोभा पामे एटले गुण जणि थाय नहि जे
कारण माटे लौकिकमा पण ए प्रकारे छे तो लोकोत्त
र मारगनु शु कहैवु ए भाव॥४१९॥

नह उद्यमिउ जाणइ॥ जाणी तबसयमे उवायविउ ॥

तह चक्षुमे तदरिसण॥ सामा यारि न॥ याणति॥४२०॥

अर्थ॥१॥ जेमा॥२॥ उपायनो जाण एटले कर्म रहित

थवाना उपाय प्रते जाणतो एहवो॥३॥ ज्ञानी पुम्पा॥४॥

तप सजमने विगे॥५॥ उद्यम करवाने॥६॥ जांऐ छे ए

टले सिद्धातना जाण पणे करिने जेहवी रीते उद्यम क

रवो घटे छे ते प्रकारे जाणे छे॥७॥ नेम॥८॥ केवल च

क्षु वते देखवे करिने॥९॥ साधुनि समाचारि प्रते॥१०॥

न॥११॥ जाणे एटले पोताना ज
ने जेहवु ज्ञान थायछे तेहवुं केव
रिने जाणपणुं थाय नहि ए का
पासे पोताने जथार्थ जाणपणु
सिष्णाणि^२य^३सत्थाणि^४य^५॥ जाणतोवि^६
फल^१ न^{११}बुजइ^{१२}॥ इय^{१३}अजयतो^{१४}

अर्थ॥१॥ जे पुरुषा॥२॥ शिल्प प्र
प्रते॥३॥ वलि॥४॥ शास्त्रप्रते एट
प्रते॥५॥ जाणतो सतो पण॥६॥ न
प्रवर्त्तावे एटले ते शास्त्रमां कहे
रतो॥८॥ पादपूर्णे॥९॥ ते पुरुष ते
॥१०॥ फलधन लाजादिक रूप
जोगवे एटले न पामे॥१३॥ ए प्र
हवो॥१४॥ माधु॥१६॥ अजतना प्र
साधु थइने सिद्धातमा कह्या प्रम
सतो मोक्ष रूप फल प्रते न पामे
गारवतिपणडिबद्धा^{१५}॥ सयमकरणुझममि
निगनूष^{१६}गणाउ^{१७}॥ हिडति^{१८}पमायरन्नमि
अर्थ॥१॥ गारवनात्रिकने विशे

सगारव सातागारवरुप त्रिण गारवने विशे आशक्त
 एहवा॥२॥सजमनु करवु एटले छजीवनी कायनि रक्षा
 करवि तेहना उद्यमने विशे॥३॥सीजाता एटले सिथिल
 थाता एहवा॥४॥गच्छ थकि एटले साधुना समुदाय थ
 कि॥५॥निकलिने एटले न्यारा थइने॥६॥पछि प्रमादरूप
 अरण्यने विशे एटले अटविने विशे॥७॥हिडेछे एटले
 पोतानि खुशि प्रमाणे विचरे छे एटले प्रमाद सेवेछे
 नाणाहिउ^१वरतर^२॥हीणोवि^३हु^४पवयण^५पभावतो^६॥

नय^१दुक्कर^२करतो^३सुदूवि^४अणागमो^५पुरिसो^६॥४२३॥

अर्थ॥१॥जिनशासन प्रते॥२॥शोभावतो सतो॥३॥क्रि
 याये करिने रहित एहवोय पण॥४॥ज्ञाने करिने अ
 धिक एटले सम्यक ज्ञानवत सतो॥५॥श्रेष्ठ छे एटले
 क्रियाये करिने रहित एहवो जिनसासननोशोभावना
 रो ज्ञानि जेते वखाणवा जोग्य छे॥६॥निश्चो॥७॥अल्प
 श्रुति एटले सिद्धातनो अजाण एहवो॥८॥पुरुष॥९॥रु
 डे प्रकारे एटले मनमा कल्याणनीवाछाए करिने॥१०॥
 आकरो मासक्षमणादिक तप प्रते॥११॥करतो सतो
 ॥१२॥नहिज श्रेष्ठ एटले ज्ञान रहित एहवो जे पुरुष
 ते क्रियावान सतो पण नथिवखाणवा जोग्य॥४२३॥

नाणाहियस्स^१नाण^२पुब्जइ^३नाणा^४पवत्तए^५चरण^६॥ तस्स^७
पुण^८दुन्हइ^९क्कपि^{१०}नथि^{११}तस्स^{१२}पुब्जए^{१३}काइ^{१४}॥ ४२४ ॥

अर्थ॥ १॥ ज्ञाने करिने अधिक एटले सम्यकज्ञाने क
रिने पूरण एहवो जे पुरुष तेहनुं॥ २॥ ज्ञान॥ ३॥ पूजायछे
एटले ज्ञानि पुरुष सम्यकज्ञानवडे करिने पूजायछे॥ ४॥
जे कारण माटे ज्ञान थकि॥ ५॥ चारित्र॥ ६॥ प्रवर्तं छे ए
टले ज्ञानवान पुरुष चारित्र प्रते प्रवर्तावे छे॥ ७॥ वलि
॥ ८॥ जे पुरुषने॥ ९॥ वेनि मध्येथी एटले ज्ञान चारित्र ए
वे माहिथी एके पणा॥ १०॥ नथी॥ ११॥ ते पुरुष॥ १२॥ स्यु
॥ १३॥ पूजनीक थाय एटले स्यु पूजवा जोग्य होय॥
पितु कांइ नहि एटले ज्ञान चारित्र रहित एहवो जे पुरु
ष ते मानया पूजवा जोग्य न जाणवो ए भाय॥ ४२५ ॥

नाण^१चरित्तहीण^२॥ लिङ्गग्रहण^३च^४दसणविण^५च^६॥

मंयमहोण^७च^८तवं^९मो^{१०}चरइ^{११}निरथय^{१२}तस्स^{१३}॥ ४२५ ॥

अर्थ॥ १॥ जे पुरुष॥ २॥ चारित्रे करिने रहित एटले द्रव्य
जाव वे प्रकारे चारित्रे करिने रहित एहवु॥ ३॥ ज्ञान ए
टले द्रव्य ज्ञान ते प्रते॥ ४॥ आचरे छे॥ ५॥ वलि॥ ६॥
ज्ञान विना एटले समकित विना॥ ७॥ लिङ्गनु ग्रहण ते
प्रते एटले साधुना वेश प्रते धारण करेछे॥ ८॥ वलि॥ ९॥

सजमे करिने रहित एहवु॥१०॥तप प्रते आचरे छे ए
टले स्वदया परदया विना तप प्रते करेछे॥११॥ते पु
रुपने॥१२॥सर्व निरर्थक एटले निरुफल जाणवु एटले
ते पूर्वे कहा ज्ञान तपादिक, मोक्ष फलदायक थाय न
हिं ए भाव॥१३॥निश्चे॥४२५॥

जहा खरो चदनभारवाही॥भारस्स भागी नहु
चदनस्स॥एव खुनामि चरणे॥हीणो॥
नाणस्स भागी नहु सुगईए॥४२६॥

अर्थ॥१॥जेमा॥२॥चदनना जार प्रते वहन करनारो ए
हवो॥३॥गधाडो॥४॥जारनो॥५॥उपाडनार थायछे एट
ले केवल बोजानो उपाडनार होय॥६॥चदननो एट
ले चदनना सुगधनो॥७॥नहिज भोगी होया॥८॥ए प्र
कारो॥९॥निश्चे॥१०॥द्रव्यज्ञाव चारित्रे करिने॥११॥रहित
एहवो॥१२॥ज्ञानि एटले द्रव्य ज्ञान वाना॥१३॥ज्ञाननो
एटले द्रव्य ज्ञाननो॥१४॥जागी थायछे एटले केवल
द्रव्य ज्ञाननो जाण थायछे॥१५॥नहिज॥१६॥सुगति
नो एटले ज्ञाननो सुगध रूप मोक्ष गतिनो भागी था
य एटले केवल समकित रहित जाण पणाये करिने क
र्म रहित थाय नहि ए कारण माटे शुद्ध क्रिया सहि

त जे ज्ञान ते श्रेष्ठ कहिये॥४२६॥

संपागडपांडिसेवी१॥ काणसु१वाणसु१ जो न उडनमई१॥

पवयणपाडणपरमो१॥ समत्त१ कोमल१ तस्म१॥४२७॥

अर्थ॥१॥ लोकने देखते निषेध करेला आचारनो सेव
नारो एहवो॥२॥ छकायने विशे एटले छकाय पालवा
ने विशे॥३॥ वृत्तने विशे एटले वृत्तनी रक्षाने विशे॥४॥
नथी॥५॥ अद्यम करतो एटले प्रमाद सेवे छे एहवो॥६॥
जिनशासननी लघुना कराववाने विशे तत्पर एहवो॥७॥
जे पुरुष॥८॥ ते पुरुषनुं॥९॥ समकित॥१०॥ असार जा
णवु एटले तेहने मिथ्यात्वज होया॥४२७॥

चरणकरणपरिहीणो१॥ गइवि१ तव१ चरइ१ सुटु१ अइगुरुअ१॥

सो१ तिल१ विकिणतो१॥ कासिय१ बुडो१ मुण्यवो१॥४२८॥

अर्थ॥१॥ चरण एटले महाव्रतनुं आचरण, करण ए
टले आहारादिकनी शुद्धि करवी तेमणे करिने रहित ए
हवो सतो॥२॥ जोपण॥३॥ रुडि इच्छाये करिने॥४॥ अ
तिशय मोहटु एहवुं॥५॥ तप प्रते॥६॥ करेछे॥७॥ तोपण
ते पुरुष॥८॥ दर्पणे करिने॥९॥ तिल प्रते॥१०॥ आपतो
अने तेल ग्रहण करतो एटले उधा दर्पणने विशे तिल
जरिने आपतो अने समा दर्पणने विशे तेल लेतो स

तो घणा तिल प्रते हारे छे एटले जेम थोडु तेल पाम
वे करिने घणा तल हारचा तेम थोडो स्याय पण चा
रित्रना सिधल पणाये करिने घणा तप प्रते हारे छे॥१॥
योद्रगामनोरेहेनारोमूरखतेहनु॥१॥इहाद्रष्टातजाणवु

छज्जीवनिकायमहव्रतपाण॥प्रतिपालणा॥मद्रधम्मोमद्रधुण॥

ता॥न रस्त्वद॥॥भणाहि॥को॥नाम॥सो॥धम्मो॥॥४२९॥

अर्थ॥१॥छजीवनि काय एटले पृथवि अप तेउ वायु
वनस्पति त्रसकाय रुप महाव्रत एटले प्राणातिपात वि
रमणादि रुप तेमनि॥२॥प्रतिपालणा एटले सम्यक प्र
कारे रक्षण करवु तेणेकरिने, जति धर्म एटले साधु धर्म
होय॥३॥पलि॥४॥जो॥५॥ते छजीवनिकाय तथा महा
व्रत प्रते॥६॥न॥७॥रक्षा करे एटले पाले नहि तारे॥८॥
हे शिष्य तु केहे एटले बोल्या॥९॥ते॥१०॥शयो॥११॥धर्म
एटले ओ रीते धर्म कहिये अपितु महाव्रत पाल्या विना
धर्म होयज नहि ए भाव॥१२॥निश्चे॥४२९॥

छजीवनिकायदयाविवाजिउ॥नेव॥दिस्वित॥न॥गिही॥॥

मद्रधम्माउ॥धुको॥॥वुक्क॥गिहीदाणधम्माउ॥॥४३०॥

अर्थ॥१॥छजीवनिकायनी दयाए करिने रहित एहवो
वेपधारि॥२॥नहिज॥३॥दिक्षीत एटले साधु एटले तेने

साधु न कहियो॥४॥नहिज॥५॥ग्रहस्थ एटले तेने
 स्थ पण न कहिये केमजे माथु मूडेंलु छे ए कारण माटे
 ॥६॥जति धर्म थकि॥७॥भ्रष्ट थयो सतो एटले साधु ध
 र्म थकि चुक्यो सतो॥८॥ग्रहस्थना दान धर्म थकि॥९॥
 चूके छे एटले जो गृहस्थ होयतो कोइक वखत शुद्ध मु
 नियोने आहार पाणि वस्त्र पात्रादिक प्रते आपे,आतो
 तेटलाथी पण चुक्यो जे कारण माटे तेहनं आपेलुं शुद्ध
 मुनियोने कल्पे नहि॥४३०॥

सत्ताउगे^१जह^२कोइ^३॥अमच्चो^४नरवइस्स^५धितूण^६॥

आणाहरणे^७पावइ^८॥बहबंधणदवहरण^९च^{१०}॥४३१॥

अर्थ॥१॥जेंम॥२॥कोइक॥३॥प्रधान॥४॥राजा

सर्व वेपार प्रते एटले सर्व अधिकार प्रते॥५॥ग्रहण

रिने॥६॥पछी राजानि आज्ञा हरण करे सते एटले

गे सते एटले उलघन करे सते॥७॥वध एटले

यादिके करिने मारवु,वध एटले साकोल्यादिके

बांधवुं,द्रव्यनुं हरण करवुं एटले पडावी लेवु

ना प्रते॥८॥पामे॥९०॥मरण प्रते पामे॥४३१॥

तह^१छकायमहय^२॥मगनिबिसीठ^३गिन्हउण^४भइ^५॥

एगमवि^६विराहतो^७॥अमचरन्तो^८हणइ^९बोहि^{१०}॥४३२॥

याना जोग ते जेंमणे एहवा॥३॥केवल रजोहरण तथा
 वेपना वरवा वाला एहवा तेमनो॥४॥वालेला तिलनी र
 स्या सदृश एहवो॥५॥बहु असजमनो प्रवाह एटले
 घणा अनाचार थकि उत्पन्न थयुजे पाप तेहनो प्रवाह ए
 टले पूरा॥६॥अतिशयें करिने आत्मा प्रते॥७॥मलिन
 करेछे एटले ते वेप धारिनो अनाचार तेमना आत्मा प्र
 ते तथा तेमना सेवकना आत्मा प्रते अतिशे मलिन करेछे
 किं लिंगविदुरिधारणे॥कलामि॥अष्टि॥ठाणे॥
 राया॥न॥होइ॥सयमेव॥धारय॥चामराडोवे॥४३६॥

अर्थ॥१॥कार्ज एटले सजमनी जतना रूपकारजा॥२॥
 न रहे सते एटले सजमनी जतना रूप कार्य न थये स
 तो॥३॥लिंग एटले जतिनो वेप तेहनो आडवर तेहनु
 धारण करवु तेणे करिने एटले केवल वेपना आडवरे
 करिने॥४॥स्यु होय अपितु काइ नहि ज्यारे वृत लेइ
 ने मूल थकि पालतोजे नथि त्यारे वेपना आडवरे क
 रिने स्यु ते उपर दृष्टात कहेछे॥५॥स्थानने विपे एट
 ले रूडा सिहासनने विशे॥६॥वेठो एहवो एकलो पोता
 नी मेले॥७॥चामरना आटोप प्रते॥८॥धारण करतो ए
 टले पोतानी मेले चामर उडाडतो एहवो सतो॥९॥रा

॥૧॥ સસાર રુપ સમુદ્ર તેહને વિશે પડ્યો સતો ॥૧૦॥

મે છે એટલે સસારને વિશે ભમવા રુપ ફલ પ્રતે પામે છે

જદ્યા ^૧જેણ ^૨ચત્ત ^૩ ॥ અણ્ણય ^૪નાણદ સળ ચરિત્ત ^૫ ॥

તદ્યા ^૬તસ્સ ^૭પરેમુ ^૮ ॥ અણુરુપા ^૯નથિ ^{૧૦}જીવેમુ ^{૧૧} ॥ ૪૩૪ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ જ્યારે ॥ ૨ ॥ આ જાગ્ય રહિત એહવો જે જિવતે

એ ॥ ૩ ॥ પોતાના આત્માને હિતકારી એહવુ ॥ ૪ ॥ જ્ઞાનદર્શ

ન ચારિત્ર ॥ ૫ ॥ ત્યાગ કર્યુ એટલે જે અવસરે જે પુરુષ હિ

તકારિ એહવુ જ્ઞાનાદિક પ્રતે છાહે છે એટલે તેથી ઊલટો

વરતે છે ॥ ૬ ॥ ત્યારે એટલે તે અવસરે ॥ ૭ ॥ તે પુરુષને ॥ ૮ ॥

પર એટલે પોતાથી નિમ્ન એહવા ॥ ૯ ॥ જીવોને વિશે ॥ ૧૦ ॥

દયા ॥ ૧૧ ॥ નથિ એટલે પરજીવોની ઉપર દયા નહોય એ

ટલે જે પુરુષ પોતાનો હિતકારી ન હોય તે પુરુષ પરનું

હિત શી રીતે કરે કેમજે સ્વદયા સહિત પરદયા હોય

એ હેતુ માટે અને સ્વદયાના ઉપયોગ વિના જે પરદયા

તે પરમાર્થે કરિને દયા કહેવાયજ નહિ એ જાવ ॥ ૪૩૪ ॥

છકાયારિ ^૧અસજયાણ ^૨ ॥ લિંગાવસેસમિત્તાણ ^૩ ॥

વહુ ^૪અસ્સયમ ^૫પવહો ^૬ ॥ સ્વારો ^૭મદ્દલેદ્ ^૮સુટ્ટુ ^૯અર ^{૧૦} ॥ ૪૩૫ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ છકાયના શત્રુ એટલે છકાયના વિરાધક એ

હવા ॥ ૨ ॥ અસજત એટલે મોકલા મુક્યા છે મનવચનકા

याना जोग ते जेमणे एहवा॥३॥केवल रजोहरण तथा
वेपना धरवा वाला एहवा तेमनो॥४॥वालेला तिलनी र
ख्या सदृश एहवो॥५॥बहु असजमनो प्रवाह एटले
घणा अनाचार थकि उत्पन्न थयुजे पाप तेहनो प्रवाह ए
टले पूरा॥६॥अतिशयें करिने आत्मा प्रते॥७॥मलिन
करेछे एटले ते वेप धारिनो अनाचार तेमना आत्मा प्र
ते तथा तेमना सेवकना आत्मा प्रते अतिशे मलिन करेछे
किं लिंगविदुरिधारणे॥कदा मि० अङ्कित० टाणे॥
राया० न० होइ० सयमेव० धारय० चामराडोवे०॥४३६॥

अर्थ॥१॥कार्ज एटले सजमनी जतना रूपकारजा२।
न रहे सते एटले सजमनी जतना रूप कार्य न थये स
ते॥३॥लिंग एटले जतिनो वेप तेहनो आडवर तेहनु
धारण करवु तेणे करिने एटले केवल वेपना आडवरे
करिने॥४॥स्यु होय अपितु काइ नहि ज्यारे वृत लेइ
ने मूल थकि पालतोज नथि त्यारे वेपना आडवरे क
रिने स्यु ते उपर दृष्टात कहेछे॥५॥स्थानने विपे एट
ले रूढा सिंहासनने विशे॥६॥वेठो एहवो एकलो पोता
नी मेले॥७॥चामरना आटोप प्रते॥८॥धारण करतो ए
टले पोतानी मेले चामर उडाडतो एहवो सतो॥९॥रा

जा॥१०॥ना॥११॥होय एटले जेम प्रधान हाथि घोडा
सेनादिक विना राजा कहेवाय नहि तेम गुणविना सा
धु कहेवाय नहि॥४३६॥

जो सुत्तथाविणिच्छियकयागमो मूलोत्तरगुणोह॥

उबहइ सयाखलिउ॥सो गलिखवइ साहुलिखमि॥४३७॥

अर्थ॥१॥जे साधु॥२॥सूत्र अर्थने विशे विशेषे करिने
निश्चय एटले सत्यपणुं तेणे करिने करयुछे आगमते जेणे
एटले सूत्र अर्थनी प्रतिते करिने जाण्युछे सिद्धात तेजे
णे एहवो॥३॥मुल उत्तर गुणना समुह प्रते॥४॥निरंत
रा॥५॥अतिचार रुप दुपणे करिने रहित एहवो सतो॥६॥
वहन करेछे एटले धारण करेछे॥७॥ते॥८॥साधुना ले
खाने विशे एटले साधुनी गणतरिने विशे॥९॥गणिये
छिये एटले साधुनी पक्तिमां गणाय छे॥४३७॥

बहुदोससकिलिहो॥नवर१०मइलेइ११चंचलसहावो१॥

सुत्रविवायामतो॥काय३न करेइ१किंचि१गुण॥४३८॥

अर्थ॥१॥बहू राग द्वेष रुप दोषे करिने सक्लिष्ट ए
टले नरेलो एटले दुष्ट चित्त वालो एहवो॥२॥चंचलस्व
भाववालो एटले विषयादिकने विशे लुब्ध थयो छे अ
भिप्राय ते जेहना एहवो सतो॥३॥कायाये करिने॥४॥

अतिशय करिने पण ॥५॥परिपहादि दुख प्रते सहन
करतो॥६॥बोडोपणा॥७॥गुण प्रते॥८॥ना॥९॥करे एटले
कर्म क्षयादि रूप गुण प्रते न पामे॥१०॥केवल॥११॥
आत्मा प्रते मलिन करेछे॥१२॥

कोसि^१च^२वर^३मरण^४॥जीविय^५मन्नेसि^६मुभय^७मन्नेसि^८॥

ददुरदेविच्छाण^९॥अहिपं^{१०}कोसि^{११}च^{१२}उभयवि^{१३}॥४३९॥

अर्थ॥१॥दुर्दुराकनामे देवतानि इच्छा सते एटले अ
निप्राय सते जे प्रकारे कह्युं ते प्रकारे कहेछे॥२॥ससा
रने विशे केटलाएक पुरुपोनु॥३॥मरवु॥४॥श्रेष्ठ छे॥५॥
बलि॥६॥अन्य एटले बिजा केटलाएक पुरुपोनु॥७॥जी
ववु श्रेष्ठछे॥८॥केटलाएक बीजा पुरुपोनु॥९॥जीववुं म
रवु बेय श्रेष्ठछे॥१०॥बलि ॥११॥ केटलाएक पुरुपोनु
॥१२॥जीववु मरवु बे पण॥१३॥अहितकारिछे ए रीते
दुर्दुर देवतानोअनिप्राय सतेप्रनुए कह्यु एम जाणवु॥

कोसि^१चिय^२परलोगो^३॥अन्नेसि^४इत्थ^५होइ^६इहलोगो^७॥

कस्सवि^८दुन्नविलोगा^९॥दोवि^{१०}हया^{११}कस्सवि^{१२}लोगा^{१३}॥४४०॥

अर्थ॥१॥केटलाएक पुरुपोनो॥२॥परलोक रुडोछे॥३॥
निश्चो॥४॥अन्य केटलाएक पुरुपोनो॥५॥इहाजा॥६॥आ
लोक रुडो॥७॥होया॥८॥कोइक पण पुरुपना॥९॥बेय

॥४४१॥

पण लोक रुडा होय एटले कोडक पुन्यवत पुरुषने इ
हलोक परलोक वे वखाणवाजोग्य होय॥१०॥कोडक
पण पाप कर्मनो करनार एहवो जे पुरुष तेहना॥११॥
वे पण॥१२॥लोक एटले इहलोक परलोक॥१३॥हणा
या एटले नाश पाम्या एटले दगडया॥१४॥

छब्बीवकायविरड^१॥कायकिलेसेहि^२सुदुगुरुएहि^३॥

नहु^४तस्स^५इमो^६ल्लोगो^७॥हवइ^८स्सेगो^९परेल्लोगो^{१०}॥१४१॥

अर्थ॥१॥छ जीवनि कायनि एटले पृथव्यादिक जी
वोनि विराधनाने विशे विशेषे करिने रक्त एटले तत्पर
एहवोज पुरुषा॥२॥ते पुरुषनो॥३॥अतिशय करिने आ
करा॥४॥काय कलेशे करिने एटले पचाग्नि मास क्षम
णादिक कष्ट करवे करिने॥५॥आ प्रत्यक्ष वरततो ए
हवो॥६॥लोक॥७॥नहिज॥८॥रुडो होय एटले ते तप
कष्ट क्रियाना करनार तापसादिकनो आ नव रुडोन
होय॥९॥ते तापसादिकने एका॥१०॥परलोक रुडो होय
एटले राज्यादिक सुखनि प्राप्तियें करिने रुडो होय आ
पुद्गलिक सुखनि अपेक्षाए करिने व्यवहारिक वचन
जाणवु परमार्थे करिने तो ते पण दुखरूपज जाणवु

नरयनिरुद्धमईण^१॥दंडियमाइण^२जीविय^३सेय^४॥

बहुवायमि वि देहे ॥ विसृजमाणस्स वर १ मरण ॥ ४४२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ नरकने विशेष थापन करिछे मति ते जे मणे
एहवा ॥ २ ॥ मत्रि प्रमुख एटले राज्य नी चिताना करनारा
एहवा जे पुरुष तेमनु ॥ ३ ॥ जीववु ॥ ४ ॥ श्रेयछे एटले रु
डुछे केमजे पाप कर्म आचरवे करिने परजवने विशेष
नरकादिक दुखनि प्राप्तीछे ए हेतु माटे ॥ ५ ॥ यहु उत्प
न्न थयोछे रोग ते जेहने विशेष एहवो ॥ ६ ॥ देह सते एटले
वेदना सहन करवाने असमर्थ एहवु शरिर सते ॥ ७ ॥
पण ॥ ८ ॥ विशुद्ध मानछे ध्यान ते जेहने एहवो जे पुरुष
तेहनु ॥ ९ ॥ मरण ॥ १० ॥ श्रेष्ठछे जे कारण माटे ते पुरुष
ने परजवने विशेष सदगतिनि प्राप्ति थायछे ॥ ४४२ ॥

तवनियमसुठियाण १ ॥ कृत्वाण १ जीविअवि १ मरणावि १ ॥

जीवत १ व्रतति १ गुणा १ ॥ मयावि १ पुण १ सुगद १ ॥ वति १ ॥ ४४३ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ तप एटले वार भेदे तप, नियम एटले ग्रह
ण करेलु जे वृत्त तेमने विशेष अतिशये करिने दृढ एहवा
रुडा साधुओनु ॥ २ ॥ जीववु पण ॥ ३ ॥ मरवु पण ॥ ४ ॥ क
ल्याणकारि छे ॥ ५ ॥ जीवता सता ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शन चारीत्र
रूप गुणो प्रते ॥ ७ ॥ उपार्जन करेछे ॥ ८ ॥ बलि ॥ ९ ॥ मरण
पाम्या सता पण ॥ १० ॥ सद्गति प्रते एटले स्वर्ग मोक्षा

दि रुप गति प्रते॥११॥पामे छे ते कारण माटे
नियोनु जीववु मरवु वे श्रेष्ठ जाणवुं ॥४४३॥

अहिय^१मरण^२अहिय^३च^४॥जीवियं^५पावकम्मकारिण
तमसमि^६पडति^७मया^८॥वेर^९वढंति^{१०}जीवता^{११}॥४४४॥

अर्थ॥१॥पाप कर्मना करनारा एहवा केटल
पोनु॥२॥मरण॥३॥अहितकरि छे एटले रुडु न
लि॥४॥जीववु एटले प्राणनुं धारण करवु ते
अहितकारी एटले रुडु नथि केम अहितकारी छे
॥५॥मुवा सता॥६॥नरकने विशे॥७॥पडे छे॥८॥
ता सता॥९॥वैरभाव प्रते॥१०॥वधारे छे एटा
जीव मारवे करिने ते जीवोनी साथे वैरभाव प्रते
अवि^{१२}इच्छति^{१३}अ^{१४}मरण^{१५}॥नय^{१६}परपीड^{१७}करति^{१८}मणसा
सुविइअसुगइपहा^{१९}॥सोअरियसुउ^{२०}जहा^{२१}सुलसो^{२२}॥

अर्थ॥१॥बलि॥२॥भलि प्रकारे जाण्या छे स
मारग ते जेमणे एहवा॥३॥जे पुरुषा॥४॥पोता
प्रते॥५॥वछेछे॥६॥पणा॥७॥परजीवने पीडा प्र
मने करिने पणा॥८॥नहिज॥९॥करे एटले उप
वचन कायायेतो शीरीते उपजावे॥१०॥जेमा॥११॥
रिक्क एटले कालक शौकरिक कसाइ तेहनो सु

पुत्रा॥१३॥सुलस परजीवनी पीडा प्रते न करतो हवो तेम
एटले जेम सुलस जे तेणे परजीवनी पीडा न करितेम
बीजा उत्तम पुरुषो पण जीवने पीडा नथी उपजावता

मूलगकुदडगादामगाणि॥उच्छूलघटियाड॥५॥

पिंडेइ॥अपरितंतो॥चडप्पयानथि॥अ॥पसूवि॥४४६॥

अर्थ॥१॥पशु बाधवाने अर्थे मूलकिलक एटले मोह
टा खुटा, कुदडग एटले नाना वाछडा बाधवाने अर्थे
नाना खिला, दामग एटले पशुने बाधवाना दामण ते
प्रते॥२॥वलि॥३॥पशुने गले बाधवाना दोरडा तथा ग
टडीओ इत्यादिक पशुने जोग्य एहवा उपकरण प्रते
॥४॥खेद रहित सतो॥५॥एकटा करेछे एटले मेलवेछे
॥६॥पण घरने विपे गाय भेसादिक नथि ॥७॥ वलि
॥८॥बकरि घेटा पण नथि जेम पशु विना पशुना उप
करणनु मिलववु ते फोगट छे॥४४६॥

तह॥वथ॥पाय॥दडगडगारणे॥नयणकड॥मुडूत्तो॥जस्सडाए॥
किलिस्सइ॥त॥चिय॥मूदो॥नवि॥करेइ॥४४७॥

अर्थ॥१॥तेम अविवेकी पुरुषा॥२॥जतना करवाने अर्थे
॥३॥वस्त्र एटले कपडादिक॥४॥पात्रा॥५॥डाडोइत्यादि
उपकरणने विशेष एटले उपकरण मेलववाने विशेष॥६॥

उद्यमवत सतो उपकरण प्रते मेलवे छे॥७॥जेने अर्थ
 एटले जे जतना पालवाने अर्थे॥८॥क्लेश सहन करेछे
 एटले कष्ट पांમે छे॥९॥ते जतना प्रते॥१०॥मूर्ख सतो
 ॥११॥नहिजा॥१२॥करे एटले जतना प्रते नथि पालतो
 ॥१३॥निश्ચે॥१४॥

अरिहता^१ भगवतो^२ ॥ अहिय^३ વ^૪ હિય^૫ નવિ^૬ દહ^૭ કિંચિ^૮ ॥
 વારતિ^૯ કારવતિ^{૧૦} ય^{૧૧} ॥ ધિતૂણ^{૧૨} જણ^{૧૩} લા^{૧૪} હથે^{૧૫} ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ જ્ઞાનવત એહવા ॥ ૨ ॥ અરિહત એટલે રાગ રૂપ
 રહિત એહવા તિર્થકર મહારાજ જે તે ॥ ૩ ॥ આ સસારને
 વિશે અહિત આચરનારા પુરુષોનું ॥ ૪ ॥ થોડું પણ ॥ ૫ ॥
 અહિત પ્રતે એટલે અહિતકારી આચરણ પ્રતે ॥ ૬ ॥ નહિ
 જા ॥ ૭ ॥ નિવારણ કરે ॥ ૮ ॥ અથવા ॥ ૯ ॥ હિત આચરનારા પુ
 રુષોનાં પાસે હિત પ્રતે એટલે હિતકારી આચરણ પ્રતે
 ॥ ૧૦ ॥ નહિ કરાવે સ્યુ કરિને ન કરાવે તે કહેછે ॥ ૧૧ ॥
 બલાતકારે કરિને ॥ ૧૨ ॥ લોક પ્રતે ॥ ૧૩ ॥ રાજાની પઠમ
 હાથને વિશે ॥ ૧૪ ॥ ગૃહણ કરિને એટલે પકડિને એટલે
 જેમ રાજા લોકને પકડિને જોરાવરિથી અકારજ પ્રતે

૧. અને ૨. જ ૩. કરાવે તેમ તિર્થકર
 ૪. કરિને અકારજ પ્રતે નિવારે નહિ અને

रुडा कारज प्रतेकरावेनहि॥१५॥निश्चे॥१६॥पादपूर्ण

उवएसं^१पुण^१दिति^१॥जेण^१चरिण^१कित्ति^१निलयादा^१देवा
णावि^१हुति^१पहुया^१कि^१मग^१पुण^१मणुअमित्तण^१॥४४९॥

अर्थ॥१॥वलि त्यारे ते तिर्यकर महाराजस्यु करेछे
ते आ गाथामा कहेछे॥२॥उपदेश प्रते एटले तेहवाते
धर्म उपदेश प्रते॥३॥दे छे॥४॥जे उपदेश॥५॥आचरवे
करिने एटले जे उपदेश आचरे सते॥६॥कीर्तिना स्या
नक एटले कीर्ति करवा लायक एहवा॥७॥देवताओ
नो पण॥८॥स्वामि॥९॥होय एटले ठाकोर थायछे॥१०॥
वलि॥११॥हे शिष्य॥१२॥मनुष्य मात्रनो एटले मनु
ष्योनो स्वामि थाय तेहमा॥१३॥स्यु आश्रय॥४४९॥

वरमठडकिरीडधरो॥चिचदठ^१चवलकुडलाहरणो॥

सको^१हिउवएस^१॥ऐरावणवाहनो^१जाउ^१॥४५०॥

अर्थ॥१॥हितोपदेशथकि एटले हितकारि एहवा जि
नराजना उपदेशथकि॥२॥थेष्ट एहवोछे आगल्यो जा
ग ते जेहनो एहवो जे मुगट तेहनो धारण करनारो
एहवो॥३॥वाजुवधादिक आचरणे करिने शोचायमान
एहवो॥४॥कानने विशे देदिप्पमान कुडलरूप आच
रणछे जेहने एहवो॥५॥ऐरावण नामे हाथिछे वाहन

उद्यमवत सतो उपकरण प्रते मेलवे छे॥७॥जेने
 एटले जे जतना पालवाने अर्थे॥८॥केश सहन
 एटले कष्ट पामे छे॥९॥ते जतना प्रते॥१०॥मूर्ख
 ॥११॥नहिज॥१२॥करे एटले जतना प्रते नथि पा
 ॥१३॥निश्चे॥१४॥७॥

अरिहता^१ भगवतो^१॥अहिय^१ व^१ हिय^१ व^१ नवि^१ इह^१ किंचि^१॥
 वारति^१ कारवति^१ ०य^१ १॥घित्तूण^१ ४जण^१ २बला^१ १हथे^१ ३

अर्थ ॥ १॥ज्ञानवत एहवा॥२॥अरिहंत एटले राग
 रहित एहवा तिर्थकर महाराज जे ते॥३॥आ
 विशे अहित आचरनारा पुरुपोनु॥४॥थोडुय पण
 अहित प्रते एटले अहितकारी आचरण
 ज॥७॥निवारण करे॥८॥अथवा॥९॥हित आ
 रुपोनी पासे हित प्रते एटले हितकारी आचरण
 ॥१०॥नहि करावे स्यु करिने न करावे ते कहेछे॥१
 बलात्कारे करिने॥१२॥लोक प्रते॥१३॥राजानि
 हाथने विशे॥१४॥गृहण करिने एटले पकडिने एटले
 जेम राजा लोकने पकडिने जोरावरिथी अकारज प्रते
 निवारण करावे अने भला कारज प्रते करावे तेम
 देव बलात्कारे करिने अकारज प्रते निवारे नहि अने

अर्थ॥१॥प्रसिद्ध एहवो॥२॥कानने सुखकारि एहवो
॥३॥अमृतना बिंदु सरखो एहवो॥४॥जिनराजना व
चननो उपदेश ते प्रते॥५॥पामिने एटले जिन वचन प्र
ते साभलिने॥६॥पडित पुरुष जे तेणे पोताना आत्मानु
हिता॥७॥करवु एटले हितकारी धर्म अनुष्ठानादि करवु
॥८॥अहितनेविशे एटले अहितकारी पापोने विशे॥९॥
मनपण॥१०॥न॥११॥देवुतो वचन कायानुतो स्युकहेवु.

हिय १ मण्णो १ कारितो १ ॥ कस्स १ न १ होइ १ गुरुउ १ गुरु १ गन्नो १ ॥ अ
हिय १ १ समायरतो १ ॥ कस्स १ १ न १ विपद्यउ १ १ होइ १ ॥ ४५४ ॥

अर्थ॥१॥पोताना आत्मानु॥२॥हित प्रते ॥३॥करतो
एहवो जे पुरुषा॥४॥कोनो॥५॥प्रमान एहवो॥६॥गुरु ए
टले पुजनिक॥७॥ना॥८॥होय १ अपितु सर्वनो पुजनिक
होय अने बलि॥९॥पुछीने वात करवा जोग्य होय ए
टले सर्व लोकतेने पुछीने वात करे एहवो होय॥१०॥अ
हित प्रते एटले पाप प्रते॥११॥आचरतो एहवो जे पुरुष
॥१२॥कोने॥१३॥विश्वास रहित एहवो॥१४॥न॥१५॥हो
य १ अपितु सर्वने अविश्वास करवा जोग्य होय॥४५४॥

तो १ नियम सोळत व सयमेहिंनुत्तो १ करेइ १ १ मण्णहिय १ ॥

सो १ देवयव १ पुढतो १ ॥ सो १ से १ सिद्धयउव १ १ जणे १ ॥ ४५५ ॥

अर्थ॥१॥जे पुरुष॥२॥पचखाण,शील एटले सत आचार,तप छठ अठमादि,संजम एटले चारित्र,तेमणे करिने सहित एहवो सतो॥३॥आत्माना हित प्रते एटले धर्म अनुष्ठानादिक प्रते॥४॥करेछे॥५॥ते पुरुष॥६॥देवतानि पठमा॥७॥पुजनिक होय॥८॥लोकनि मध्ये॥९॥मस्तकने विशे॥१०॥धोला सरसव जेम धारण करिए छीए एटले जेम लोकनि मध्ये मंगलिकने अर्थे लोक मस्तकने विशे धोला सरसव धारण करेछे तेम आत्म हित करनार पुरुषनी आज्ञा सर्व लोक मस्तकने विशे वहन करेछे ए भाव॥४५५॥

सर्वो गुणेहिं गण्णे १॥ गुणाहियस्स नहं लोगवीरस्स ॥ स भंतमउडविडवो ॥ सहस्सनयणो सययमेइ १॥ ४५६॥

अर्थ॥१॥सर्व पण आजीव॥२॥गुणे करिने एटले सम्यक ज्ञानादिक गुणे करिने॥३॥पूजवा जोग्य होय॥४॥जेम॥५॥गुणे करिने एटले ज्ञानादिक गुणे करिने अधिक एहवा॥६॥लोकनि मध्ये प्रसिद्ध एहवा वीर आमि जे तेमने॥७॥चपल थयोछे मुगटनो प्रात भाग लब्धूने एहवो॥८॥हज्जार नेत्र छे जेहने एहवो इंद्र अणहियका अर्थे॥९॥निरतर॥१०॥आवेछे ए कारण

माटे गुणवानपणु छे ते पूजनिकपणानुकारण छे॥४५६॥

चोरिक्वचनाकूडकवटपरदारदारुणमदस्स॥तस्स॥

धिय॥त॥अहिय॥गुणोवि॥वेर॥जणो॥वहइ॥४५७॥

अर्थ॥१॥चोरि, परने ठगवु, जुठुं बोलवु, कपट एट
ले माया करवि, परस्त्रीनु सेववु ए पूर्वे कहा जे पाप
स्थान तेमने विशेष दारुण एटले मलिन छे मति एट
ले मननि प्रवृत्ति ते जेहनि एहयो जे पुरुषा॥२॥ते पुरुषने
॥३॥ते पूर्वे कहा जे आचरण॥४॥ अहितकारि एटले
नरकनु कारण जाणवु॥५॥ निश्चे॥६॥ बलि पण॥७॥
लोक जे ते तेनि उपर॥८॥ वैर प्रते एटले द्वेष प्रते
॥९॥ वहन करेछे एटले धारण करेछे ए कारण माटे
आत्मार्थि पुरुषोये चोरियादिक कर्म करवु नहि॥४५७॥

मइ॥सा॥तणकचणलडुरयणसरिसोवमो॥जणो॥माउ॥

तइया॥नणु॥बुचिउओ॥॥अहिलासो॥दबहरणमि॥४५८॥

अर्थ॥१॥ जो॥२॥ प्रथमा॥३॥ तण एटले घास, कंचन
एटले सोनु, लेष्टु एटले पाषाण, रत्न एटले रतन
एटलि वस्तुने विपे। सदश एटले सरखि छे उपमा ते
जेहने एटले जेहना मनने विशेष घास ने सोनाने विशेष
सरखापणु वर्तेंछे, पछपर ने रतनने विशेष सरखापणु वर्तें

छे एहवो॥४॥जन एटले लोका॥५॥ज्यारे थाया॥६॥त्यारे॥७॥निश्चे॥८॥पारका द्रव्यनु हरण करवु तेहने विशे॥९॥अभिलाषा॥१०॥त्रुटे एटले ज्यारे सर्व वस्तुने विशे समभाव प्रगटे त्यारे परवस्तु ग्रहण करवानो अभिलाष नाश पामे ए भाव॥४५८॥

आजीवगणनेया१॥रञ्जसिरि१पहिउण१य१जमाली१॥हिय१म
ण्णो१करितो८॥नय११वयणिञ्जे१०इह१पडतो१॥४५९॥

अर्थ॥१॥आजीविक गुणनेता एटले केवल वेपे करिने आजीविका करवानो छे स्वभाव ते जेमनो एहवा जे निहनव तेंमनो जे समुदाय तेहनो अधिकारी एटले गुरु एहवो॥२॥जे जमालि श्री माहावीरस्वामिनो ज माइ ते॥३॥राज्यनी लक्ष्मी प्रते॥४॥त्याग करिने॥५॥वली सिधात भणिने॥६॥जो पोताना आत्मानु॥७॥हित प्रते॥८॥करतो एटले जो तेणे जगवतनु वचन न उयाप्यु होत तो॥९॥आ लोकनि मध्ये॥१०॥लोकनि निंद्याने विशे॥११॥नहिज॥१२॥पडत एटले लोकनि निंद्या जोग्य न यात ए कारण माटे प्रथम श्री वीतराग वचननुं श्रयांन सारी रिते करवुं केम जे श्रयासहित सर्वे लेखे लागे ए उपदेश॥४५९॥

इन्द्रियकसायगारवमणहिं सयय किंलिङ्ग परिणामो ॥

कम्मघणमहाजाल ॥ अनुसमय भवद्विजीवो ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ इन्द्रिय एटले स्पर्श इन्द्रियादिक पाच इन्द्रियो,
कपाय एटले क्रोधादिक च्यार कपाय, गारव एटले रि
द्धि गारव रस गारव साता गारव, मद एटले जात्या
दिक आठ मद तेमणे करिने ॥ २ ॥ मलिन छे परिणाम
ते जेहनो एटले दुष्ट परिणामने विशे वरततो एहवो
सतो ॥ ३ ॥ आजीव एटले ससारि जीव ॥ ४ ॥ निरतरा ॥ ५ ॥
समय ममय प्रते ॥ ६ ॥ कर्म रूप मेघना मोटा समूह प्रते
॥ ७ ॥ बाधे छे एटले कर्म रूप मेघना समूहे करिने ज्ञा
नरूप चद्रमा प्रते ढाके छे ए जाव ॥ ४६ ॥

परपरिवायविशाल ॥ अणुगकदम्बविषयभोगेहि ॥ स

सारयाजीवा ॥ अरडाविणोअ करिते ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ पारको अवर्णवाढ बोलवे करिने एटले परनि
निदा करवे करिने विशाल एटले पुष्ट एहवा ॥ २ ॥ ससा
रने विशे रह्या जे जीव ॥ ३ ॥ अनेक प्रकारना कदर्प वि
षय जोगे करिने कदर्प एटले हास्यादिकनु करवु, वि
षय एटले शब्दादिक पाच विषय तेमनु सेवन करवे
करिने ॥ ४ ॥ अरति रूप विनोद प्रते एटले परने अरति

उपजावनार एहवો जे विनोद एटले विलास ते प्रते
॥५॥करेछे॥६॥ए प्रकारे परने परिताप उपजाववे करि
ने पोતાंना अत्माने सुख उपजावे छे ए अज्ञानि जीवो
नुं लक्षण जाणवु॥४६॥

आरંभपायनिरया॥१॥लोइयारिसिणो^१ तहा^२ कुलिंगीअ^३॥दुइ
उ चुक्का^४ नवर^५॥जीवतो^६ दरिह^७ जियलोए^८ ॥४६॥२॥

अर्थ॥१॥आरभ एટले પૃથવ્યાદિકનુ ઉપમર્દનકરવુ,
પાક એટલે રસોઈનિ ક્રિયા કરવી તે છે ક્રિયાને વિશે
નિરતા એટલે આસક્ત એટલે તત્પર એહવા॥૨॥લોકિક
રૂપિયો એટલે તાપસાદિક ॥૩॥ તથા ॥૪॥ કુલિંગીયા
આદિ શબ્દ વડે કરિને જૈનાભાષ પોતાને વિશે સાધુ
પણું માનિને નિરંતર આધાકર્મિ આહારના સ્વાનારા
ગ્રહણ કરવા તે જો તે॥૫॥ત્રે પ્રકારે એટલે જાતિ ધર્મ
થકિ અને આવક ધર્મ થકિ એ વે પ્રકારના ધર્મ થકિ
॥૬॥ચુક્યા એટલે ભ્રષ્ટ થયા સતા॥૭॥કેવલ એટલે એક
॥૮॥જીવલોકને વિશે એટલે સસારને વિશે॥૯॥દરિદ્ર
એટલે ધર્મરૂપ ધને કરિને રહિત એહવા સતા॥૧૦॥જીવે
છે તે કારણ માટે તેવા લિંગી લોકોને સાધુ ન જાણ્યા.

મઝો^૧ ન હિંસિયઝો^૨ ॥તહ^૩ મહીપાગે^૪ તહ^૫ ઉદયપાલો^૬ ॥

नय १०॥ अभयदानवदण्ड १॥ जणवेमाणण होयव १॥ ४६३॥

अर्थ ॥ १॥ मय जीव मात्र एटले कोइ जीव पण ॥ २॥ न
हि ॥ ३॥ मारवो एटले साधु मुनिराज कोइ पण जीवनि
हिंसा करे नहि कराव नहि करताने अनुमोदे नहि
॥ ४॥ जे मा ५॥ महीपाल एटले राजा ॥ ६॥ तथा एटले ते
मा ७॥ उदकपाल पण जाणे एटले राजा प्रते तथा रां
क प्रते समपणे गणे एटले मुनिराज वे जणने सरखा
गणे एके जणने पण पराभव न करो ॥ ८॥ अभयदान ब्र
तना धारक एहवा मुनिराज जे तेमणे ॥ ९॥ जन एटले
नीच लोक तेमना उपमाने करिने ॥ १०॥ नहिज ॥ ११॥
थयु एटले अभयदानना पालनार साधुओ नोच लो
कना सरखु न थयु ए जाव ॥ ४६३॥

पाविमह १॥ इह १॥ वसण १॥ जणेण १॥ छगलव १॥ असतुत्ति १॥

नय १॥ कोट १॥ सोणियवलि १॥ करे १॥ वसण १॥ देवाण १॥ ४६४॥

अर्थ ॥ १॥ आ समारने विशे क्षमानो करनारो जे जी
वा ॥ २॥ लोकोनी मध्ये ॥ ३॥ व्यसन एटले निंदारुप कष्ट
प्रते ॥ ४॥ पामेछे ॥ ५॥ ते क्षमाना करनार पुन्यने ॥ ६॥ आ
असमर्थ एहवो ॥ ७॥ बोकडो छे ए प्रकारे लोको तेनि
हासी करे छे बीजा लोकोए पीडवा माडयो सतो पण

ક્ષમા પ્રતે કરેછે એ કારણ માટે આ અસમર્થ એહવો બ
 કરિના પુત્ર તુલ્ય છે એ પ્રકારે લોકો કહેછે॥૮॥કોઈ
 પણ પુરુષ॥૯॥દેવનિ આગલ॥૧૦॥વાઘના॥૧૧॥રુધિ
 રની વલ્લિ એટલે લોહીની વલી એટલે લોહીનું છાટુ
 ॥૧૨॥નહીજ॥૧૩॥કરે એટલે નથીજ કરતો એ કારણ
 માટે અસમર્થજ હણાય છે સમર્થ હણાતો નથી એ પ્રકારે
 સાંભલીને પણ બલવાન એહવા સતા પણ મુનિરાજ
 ક્ષમા નથી મુક્તા એ જાવ॥૪૬૪॥

વચ્ચદ્વૃક્ષેણ જીવો ॥ પિત્તાનિલદ્વાડૃસિંખચત્તોર્ધિ ॥ ઉગ્ગ
 મહામાવસીઝહ ॥ તરતમયોગોદ્વમોદુલ્લહો ॥ ૪૬૫ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ આજીવ ॥ ૨ ॥ પિત્ત એટલે પિત્તવિકાર અનિલ
 એટલે વાયુવિકાર ધાતુવિકાર સિંજ એટલે શ્લેષ્મ એ
 ટલે સ્લેષ્મ વિકાર એમના ક્ષોજ એટલે વિકાર તેમ
 ણે કરિને એટલે પિત્તાદિકના વહુ પ્રકોપે કરિને ॥ ૩ ॥ ક્ષ
 માત્રમા ॥ ૪ ॥ વિકાર પ્રતે પામે છે તે કારણ માટે હે
 શિષ્યો ॥ ૫ ॥ ક્ષમાદિ ધર્મને વિશે ઉચ્ચમ કરો ॥ ૬ ॥ શીયલ
 આચારવાલા ન થાડા ॥ ૭ ॥ આ ॥ ૮ ॥ વૃધી પામતો એહવો
 ધર્મને સાંમગ્રિનો જોગ ફરિને પામવો ॥ ૯ ॥ દુર્લેજ છે એ
 કારણ માટે ધર્મસાધનને વિશે પ્રમાદ ન કરવો ॥ ૪૬૫ ॥

पंचिंदियत्तण १ माणुसत्तण १ आयरियज्जणे १ सुकुल ॥

साहुसमागमसुण्णा ॥ सहणारोगपवब्बा ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ पंचिंदियपणु पामवु दुर्लज्ज छे एटले कठिन छे पंचिंदियपणु पामे सते पण ॥ २ ॥ मनुष्यपणु एटले मनुष्यनो अवतार पामवो दुर्लज्ज छे मनुष्यपणु पामे सते पण ॥ ३ ॥ आरजदेशने विशे एटले मगधादिक देश ने विशे उत्पन्न थवु दुर्लज्ज छे आरजदेशने विशे उत्पन्न थये सते पण ॥ ४ ॥ उत्तमकुल पांमवु दुर्लभ छे उत्तमकुल पामे सते पण ॥ ५ ॥ उत्तमसाधुनो समागम पामवो दुर्लभ छे साधु सम्मगम पामे सते पण सूत्रनु साजलवु दुर्लभ छे सूत्र सांभले सते पण ॥ ६ ॥ अधान एटले तत्व नु अधान करवु दुर्लभ छे अधान करे सते पण आरोग्यपणु एटले निरोगीपणु पामवु दुर्लज्ज छे निरोगी पणु पांमे सते पण प्रवर्ज्या ग्रहण करवी दुर्लज्ज छे एटले द्रव्यभाव वे प्रकारे सावय योगथी वीराम पामवु कठिण छे केमके चारित्रावरणी कर्मना क्षयोपशम थया वीनाजावचारित्र आवेनहोमाटे चारित्र लेवु कठिण छे

आउ १ सविज्जतो १ सिद्धिज्जतो १ बधणाइ १ सवाइ ॥ देह

हिअ १ मुयतो ॥ आपइ १ कलुण १ बहु १ जीवो ॥ ४६ ॥

अर्थ॥१॥आउपु आउपा प्रते॥२॥ओछु करतो एटले
 पपावतो एहवो॥३॥सर्व॥४॥बधन एटले अग उपागा
 दि ते प्रते॥५॥सिथिल करतो एटले ढिला करतो एह
 वो॥६॥देहनि स्थिति प्रते एटले कायानि अवस्था प्र
 ते॥७॥मुकतो एहवो॥८॥जीव अतकालने विशे धर्म र
 हित एहवो सतो॥९॥दिनस्वर सहित॥१०॥बहु॥११॥
 विचारे छे एटले हाइति खेदे मे धर्म न करचो ए प्र
 कारे बहु शोच करेछे ए कारण माटे जेम शोच न कर
 वो पडे एम वर्तवु ए जाव॥४६७॥

इकपि नथि न सुख सुचारेय ॥ जह इह मरे ॥ मरु ॥
 को नाम ॥ दढकारो ॥ मरणते ॥ मदपुत्तस्स ॥ ४६८ ॥

अर्थ॥१॥पुन्य रहित पुरुपने॥२॥एके पण॥३॥जे॥४॥
 रुडु॥५॥सम्यक आचरण एटले त्रिकरणजोगे आचरेडु
 ॥६॥नथि॥७॥जे॥८॥माहरे॥९॥आ आचरण॥१०॥बल
 रुप छे एहवु काइ पण नथि॥११॥निश्च॥१२॥मरणका
 लने विशे॥१३॥कुण॥१४॥आधार थशे एटले पुन्य र
 हित पुरुपने रुडु आचरण करचा विना मरणने अव
 सरे आधार भुत काइ नथि॥४६८॥

सुखविषयअहिबिम्बदयपाणियसत्थगिगसभमेहि च ॥

देहतरसक्रमण ॥ करे १ जीवो १ मुहतेण ॥ ४६९ ।

अर्थ ॥ १ ॥ वलि ॥ २ ॥ आजीव ॥ ३ ॥ शुल एटले पेटमा पि
ड आवे करिने विप एटले जेर खावे करिने अहि
एटले सर्पना डसवे करिने विशुचीका एटले अजीरण
धवे करिने पाणिय एटले पाणिमा बुडवे करिने सध
एटले शस्त्र वागवे करिने अग्नि एटले अग्निमा बलवे
करिने सज्जमेहि एटले सभ्रम एटले नय स्नेहादिके
करिने हृदयने विशे मुझावु ए पुर्वे कह्या एटला प्रकारे
करिने ॥ ४ ॥ एक मुहुर्त्तमा एटले वेघडिनीमध्ये ॥ ५ ॥ अन्य
शरिरने विशे सक्रमण एटले जुदा जुदा शरिरने विशे
प्रवेश प्रते ॥ ६ ॥ करेछे एटले परजवने विशे जायछे केम
के प्राणियोनु आउखु अतिशे चपल छे ॥ ४६९ ॥

कत्तो चित्ता सुचरिअतवस्स गुणसुद्वियस्स साहुस्स ॥

सुगदगमपाडिहथो ॥ नो अथद निदमभरिअभरे ॥ ४७० ॥

अर्थ ॥ १ ॥ भलि प्रकारे आचरयो छे एटले क्षमा सहित
करयो छे तप ते जेणे एहवो ॥ २ ॥ वलि चारित्रादिक गु
णोने विगे अतिशे दृढ एहवो ॥ ३ ॥ साधु तेने मरणकाल
ने विशे ॥ ४ ॥ म्याथी ॥ ५ ॥ चित्ता एटले शोच होय अपितु
न होय ते साधु केहयो होय ते कहेछो ॥ ६ ॥ जे साधु ॥ ७ ॥

સદ્ગતીને વિશે જવાને સમર્થ એહવો॥૮॥ નિયમ એટલે અભિગ્રહ તેણે કરિને નરચો છે ધર્મરૂપ નડારનો ભાર એટલે સમુહ તે જેણે એહવો સતો॥૯॥ રહેછે તેવા સાધુને મરણને અવસરે ચિતા ન હોય॥૪૭૦॥

સાહંતિ^૧ અ^૨ ફુડાવિઅહ^૩ ॥ માસાહસ સઠળ સરિસયા^૪ નીવા^૫ ॥

નય^૬ કમ્મભાર ગુરુચત્તણે^૭ ॥ ત^૮ આયરતિ^૯ તહા^{૧૦} ॥ ૪૭૧ ॥

અર્થ ॥ ૧ ॥ માસાહસ નામે અચલ ગુફાનો રહેનારો એહવો જે પક્ષી તેહના સરસા જે ॥ ૨ ॥ જીવો એટલે જે પ્રાણી ॥ ૩ ॥ પ્રગટ એટલે ડગાડા છે અક્ષર તે જેને વિશે એહવા અને વિસ્તાર સહિત એહવા ઉપદેશ પ્રતે ॥ ૪ ॥ દેહે એટલે પરજીવોને પ્રગટપણે ઉપદેશ કરેછે ॥ ૫ ॥ વલિ બીજા લોકોને જેમ ઉપદેશ કરેછે ॥ ૬ ॥ તેમ ॥ ૭ ॥ કર્મના ભારના ગુરુપણે કરિને એટલે ભારે કર્મિપણે કરિને ॥ ૮ ॥ તે ઉપદેશ પ્રતે એટલે પોતાના ઉપદેશની પઠમા ॥ ૯ ॥ નથીજા ॥ ૧૦ ॥ આચરતા અને જે પુરુષ ઉપદેશ દેવાને કુશલ છે એટલે તત્પર છે પણ આચરણા કરવામા તત્પર નથી તે માસાહસ પક્ષી જેવા જાણવા ॥ ૪૭૧ ॥

વઘમુહામિ^૧ અદ્દગઠ^૨ મસ^૩ દત્તવરા^૪ ડકદેહ^૫ મા^૬ સાહસ^૭

તિ^૮ નપદ^૯ કરેદ^{૧૦} ॥ નહુ^{૧૧} ત^{૧૨} તહા^{૧૩} ભણિય^{૧૪} ॥ ૪૭૨ ॥

अर्थ॥१॥वाघना मुखने विशेष॥२॥पेठो एहवो मासा
हस नामे पक्षी॥३॥वाघना दात मधेथी॥४॥मास प्रते
॥५॥काढेछे एटले वाघना मुखमार्थी मसना ककडाने
ग्रहण करिने वृक्ष उपरे वेठो सतो मास पाइने॥६॥इ
ति ए प्रकारे॥७॥बोलेछे॥८॥रखे कोइ पण॥९॥साहस
प्रते करो एटले आहवो विस्वास कोइ करस्यो नहि ए
हवी रिते पोते बोलेछे पण॥१०॥ते पोताना बोलवा
प्रमाणे॥११॥नहीजा॥१२॥करे॥१३॥जेमा॥१४॥बोल्थो
तेम नथीज करतो एटले जेवु बोलेछे तेवु नथी करतो
एभाव ए प्रकारे अन्य बीजा पण फोगट साधु नामना
घरावनार जे प्रकारे पोते बोलेछे ते प्रकारे नथी क
रता ते पण पक्षीनी पठम विनाश पामेछे॥४७२॥

परियडिउण१गयधविधर१॥निहिसीउणधरमध१॥त१०

तट१करेइ११जह१त१॥न१होइ१सवापि११नडपदिअ११॥४७३॥

अर्थ ॥१॥ जे पुरुष अथ अर्थना विस्तार प्रते एटले
सूत्र अने सूत्रना अर्थना विस्तार प्रते॥२॥समस्त प्र
कारे जणिने॥३॥परमार्थ प्रते एटले तत्त्वना अर्थ प्रते
॥४॥सम्यक् प्रकारे परिक्षा करिने वोहोल कर्मि जी
वा॥५॥जेमा॥६॥ते भणेलु मोक्ष रुप कारजनु साधक॥७॥

ना॥८॥थाय॥९॥तेम॥१०॥ते नणेलु॥११॥करे
 नणेलु केवु थायछे ते केहेछे॥१२॥सर्वपण॥१३॥
 भणवा जेवुं थायछे एटले जेम नटनु नणेलु नि
 छे तेम मिथ्या द्रष्टिनुं सूत्रनु भणवु ते पण
 ॥१४॥एकारण माटे लघु कर्मि जिवनुं नणवुं

पढइ^१ नडो^२ विरग^३॥निविडिज्ज^४ उ^५ बहुजणो^६ नेण
 उण^७ त^८ तह^९ सढो^{१०} जालेण^{११} जल^{१२} समो अरइ^{१३}

अर्थ॥१॥जेम नट एटले नाटकियो॥२॥वैर
 वैराग्यनी वार्ताओ प्रत्ये॥३॥भणेछे एटले ल
 गल केहेछे॥४॥जे वैराग्यनां वचन बोलवे व
 घणा लोक॥५॥निर्वेद प्रते एटले वैराग्य प्र
 एटले ससार प्रते खोटो जांणेछे॥६॥ते नट
 वो सतो॥७॥नणिने पण पछि पांते॥८॥ते
 ले पोताना बोल्या प्रमाणे॥९॥ते आचरणा
 करतो एटलेज पोताने विशे जुठो फटा टोप
 ने लोकोनि पासेथी धन लेवानी लालचे व
 ला लोकोने धर्म देखाडिने रिझवेछे तेम चानि
 ए रहीत एहवो केवल वेश धारि पोताने वि
 पणानो मद धारण करतो सतो पोताना पूजा

ने अर्थे मुग्ध लोकोनि आगल वैराग्यनि वार्ताओ क
रिने ते लोकोने रिझवेछे ते केवि रिते करेछे ते कहेछे
॥११॥ जेम मछिगर जाल ग्रहण करिने एटले हाथमा
जाल लेइने मछ ग्रहण करवाने अर्थे एटले माछला
पकडवाने अर्थे ॥१२॥ जल प्रते एटले पाणि मध्ये
॥१३॥ उतरेछे एटले प्रवेश करेछे तेम फकत वेश
धारि एटले रजो हरण मुख बस्त्रिका रूप वेशनो धा
रणहार सिधातनो अजाण एहवो सतो विपरित आ
चरण करवे करिने एटले सिद्धातथी उलटु आचण क
रवे करिने एटले सुत्रनु जे नणवु ते प्रते व्यर्थ करेछे
एटले निष्फल करेछे केमके पोते सम्यक् प्रकारे चा
रित्र पाजतो नथी अने शुद्ध परुपणा करिने लोकोने
जथार्य मार्ग प्रतेदेखाडतो नथी एकारण माटे ॥४७४॥

कहकह^१ करोमि^१ कह^१वा^१ न^१ करोमि^१ ॥ कह^१ कह^१ कय^१

बहुकय^१ ॥ मे^१ ॥ तो^१ हिपइ बहुसपसार^१ ॥ करेइ

१५ सो^१ अइ^१ करेइ^१ हिप^१ ॥ ॥४७५॥

॥ आत्म हितवछक पुरुषोनु लक्षण ॥

अर्थ ॥१॥ हू केवी केवी रीते ॥२॥ धर्म अनुष्ठान प्रते
करु ॥३॥ बली ॥४॥ केवी रीते ॥५॥ न ॥६॥ करु अने ॥७॥

केवी॥८॥केवी रीते॥९॥धर्म अनुष्ठानादिकरघुसत्ता॥१०
 माहरे॥११॥बहू करेलु थाय एटले घणु गुणकारी था
 य ए प्रकारे॥१२॥जे पुरुषा॥१३॥रुदयने विशे बहु स
 प्रसार प्रते एटले आलोचन प्रते एटले विचार प्रते॥
 ॥१४॥करेछे एटले विचारेछे॥१५॥ते पुरुषा॥१६॥अति
 शये करिने॥१७॥पोताना हित प्रते॥१८॥करेछे एटले
 जे पुरुष नीरतरहेयज्ञेयउपादेयनो एटले आ माहरे
 करवा जोग्यछे आ नथी करवा जोग्य आ जाणवा जो
 ग्यछे ए रीते नीरतर विचार करेछे ते पुरुष आत्मही
 त करी शकेछे एटले पोताना आत्माने च्यार गतीकी
 उधरीने पाचमी गति पामवाने जोग्यकरेछे एउपदेश॥

सिद्धिलो^१अणायरकउ^२॥अवस्स^३वसकउ^४तहाकहावकव^५॥

सयय^६पमत्तसीलस्स^७॥सज्जमो^८कोरिसो^९हुज्जा^{१०}॥४७६॥

अर्थ॥१॥सीथल एटले संजम अनुष्ठान करवाने वि
 शे आलसु एटले पचमाहावृत पाच समिति त्रएगुप्ति
 पालवाने विशे आलसु एहवो॥२॥अनादरवालो एटले
 सजम पालवाने आदर रहीन एहवो एटले आदर बी
 ना काइक अनुष्ठानादिक प्रते करतो एवो॥३॥गुरुना
 परवशपणे करिने करतो एटले गुरुनी प्रेरणाए करी

ने पोताना उत्साह बिना धर्म अनुष्ठानादी उपर उ
परथी करतो एहवो॥४॥ काइक पोताना वशे करीने कर
तो एटले जो हू नही करतो लोक मने मानसे पूज
से नही एवु धारीने प्रतीक्रमण प्रतिलेपणादिक लो
क रीझववाने पोतानी मेले करतो एहवो॥५॥ ते प्रका
रे काइक अनुष्ठान सपुरण करतो अने काइक विराध
तो एटले धर्म अनुष्ठानादिकने वीशे गडबड सडबड
करतो एहवो जे पुरुष॥६॥ अने निरतर॥७॥ प्रमादी
एटले प्रमाद आचरवानो स्वभाव ते छे जेनी एटले
वीशयादीकनु चीतवन करतो एवो जे पुरुष होय ते
ने॥८॥ सजम एटले पाच आश्रवथी वीराम पामवु॥
॥९॥ ते केवु॥१०॥ होय एटले सीरिते होय अपितु स
र्वथा प्रकारे ते पूर्वे कहेला लक्षणोए करीने सहीत ए
वा पुरुषने सर्वथा प्रकारे चारित्रनज होय केमके प्रमा
दने विशेषे वर्ततो सतो पोताने विशेषे साधुपणु देखाड
तो सतो घणा लोकने प्रवाह मारगने विशेषे प्रवर्त्तावेछे
ए कारणने माटे॥४७६॥

चहुवृत्तकाल्पखत्वे॥ परिहाइ १५०० पण्णमायपरो तह॥ उग्वर०

विग्वरविनिरगणो०॥ अ० नय० इच्छिय० लहइ०॥४७७॥

अर्थ॥१॥कृष्णपक्ष सबधी एटले अधारा ॥१॥
 वंधी॥२॥चंद्रमा जेम॥३॥हानी पामेछे एटले जेम ॥
 रा पखवाडा सबंधी चंद्रमा नीरतर हानी पामतो जाय
 छे॥४॥तेमा॥५॥प्रमादने वीशे तत्पर एवो साधु॥६॥ प
 गले पगले हानी पामेछे एटले थोडे थोडे सजम रही
 त थायछे अने॥७॥ग्रहस्थपणानु घर मुकीने॥८॥ग्रहा
 दीक रहित सतो एवो॥९॥वली॥१०॥स्त्री प्रते मुकीने
 एटलेस्त्रीआदीक कुटुब रहित सतो॥११॥वाछित प्रते॥
 १२॥नहिज॥१३॥पामे एटले घरकुटुबादीक त्यागीने प
 ण प्रमादी एवो साधुवाछित सुख प्रते नथी पामतो ते माटे
 सजम रहित पुरुषनु घर कुटुबादीकनु त्याग करवुव्यर्थछे
 भीउ^१विग^२निलुको^३॥पागडपच्छन्नदोससयकारि^४

अपचय^५जणंतो^६॥जणस्स^७धी^८जीवीअ^९जअइ^{१०}॥४७८॥

अर्थ॥१॥व्हीनेलो एटले हवे केम थशे एम कल्पनाक
 रनारो एवो अने वली॥२॥मननी समाधि रहित एवो
 ॥३॥पोताना पापने ढाकनारो एवो अने वली॥४॥प्रग
 ट अने छानां दोपनु सैकडो तेनो करनारो एटले उघा
 डा अथवा छाना सैकडो दोपनो सेवनारो एवो अने
 वली॥५॥लोकोने॥६॥अविस्वास प्रते॥७॥उपजावतो

एवो सतो जे पुरुषा॥८॥जीवेछे तेना॥९॥जीवीत प्रते॥
॥१०॥धिकार पडो एटले पूर्वोक्त लक्षण सहीत पुरुष
नु जीववु निष्फल जाणवु एज॥४७८॥

न॥तहि॥दिवसा॥पखवा॥॥मासा॥वरिसावी॥सगणिज्जाति॥

जे॥मुलुउत्तरगुणा॥॥अखिखालियाते॥॥गणिज्जाति॥॥४७९॥

अर्थ॥१॥नही॥२॥ते॥३॥दीवस आनकार सर्वत्र जोड
वो॥४॥नही ते पखवाडीआ॥५॥नही ते महीना॥६॥
नहिते वर्ष पण॥७॥सम्यग् प्रकारे गणीए एटले ध
र्म रहीत एहवा ते दीवस पखवाडा महीना अने वर
स प्रमाण पणे करीने न गणीए एटले सुद्ध धरम रही
त दीवसादिक नीफल जाणवा॥८॥जे॥९॥मुल उत्तर
गुणोए करीने॥१०॥अस्खलीत एटले नीरआतिचार ए
हवा जे दिवसादिक ते दिवसादिक॥११॥गणीए एट
ले प्रयाणपणे करीने मानीए एटले सुद्ध धरमे
करीने आराधन कर्या एहवा दीवस पक्ष मासा
दीक जे तेज लेखे गणवा जोग्यछे ते कारण माटे
हे भव्य जीवो आलस्य प्रमाद छाडीने धर्मना श्रव
लबने करीने दीवस गमाववा पण वीकथाये करीने
दीवस गमाववा नही एभाव॥४७९॥

जो नवि दिणे दिणे संकले अ॥ के अब्जं १२

मि गुणा अगणेषु ११ अ० नऊ १२ खलिउ १३

१५ सो १६ अ० करिद्व १७ अप्यहिय १५॥ ४८॥

अर्थ॥ १॥ जे पुरुषा ॥ २॥ नीरतर ॥ ३॥ नहीज ॥
ना प्रते करे एटले विचार नथीज करतो ॥
आज ॥ ७॥ कीआ ॥ ८॥ गुण एटले ज्ञानादीक
उपार्जन कर्या एटले आज माहारे कीओ ज्ञान
नीरूपन थयो ए प्रकारे नीरतर जे सम्यग्
थी विचारतो अने ॥ १०॥ वली ॥ ११॥ प्रमाद अ
अवगुणोने विशेष ॥ १२॥ नहीज ॥ १३॥ खलना ए
द अतिचाररूप माहा चेष्टीतने विशेष तत्पर ए
प जे होया ॥ १४॥ ते पुरुषा ॥ १५॥ सीरिति ॥ १६॥
हीत प्रते ॥ १७॥ करे एटले आपितु नहीज क
जे पुरुषने काइ सम्यग् विचारणा नथी ते पुरु
त्महीत थइ शके नही ॥ १८॥ नीश्वे ए कारण
त्माधि पुरुषो ए उत्तम पुरुषोनी नीश्राए करि
र सारा सारा विचार करवा ए भाव ॥ ४८०॥

इय १ गणिअ २ इय ३ तुळिअ ४ ॥ इअं बहुता ५ दारि

नियमय १ च २ तइ ३ तहवि ४ न ५ डिमुअ ६ ११

किं१४कीरद१५नुण१६भवीषव१७॥४८१॥

अर्थ॥१॥आ प्रकारे करिने एटले पूर्वोक्त प्रकारे करी
ने श्रीरीखन्न तीर्थकरनी पठम धर्मने विशे उद्यम क
रवो ए रीते ॥२॥ प्रमाण करचु छे एटले रीखभ
वीर स्वामीनी पठम धर्मने विशे उद्यम करवो एज
प्रमाण छे ॥३॥ आ प्रकारे करिने एटले पूर्वोक्त
प्रकारे करिने॥४॥तुलना करिछे श्रवती सुकुमालादीक
नी पठम प्राणनो अत थये सते पण धर्मनो त्याग न
करवो ए प्रकारनी तुलना करवी एवी रितें पूर्वे जणा
व्युछे॥५॥ ए प्रकारे एटले पूर्वोक्त प्रकारे करिने आ
ज महागीरी प्रमुख पुरुषोनां द्रष्टांत कहेवे करिने॥६॥
बहु प्रकारे॥७॥देखाड्युछे॥८॥वली बहु प्रकारे करिने
॥९॥नियत्रीत कर्युछे एटले समिती कपायादिकना स्व
रुप देखाडवे करिने पूर्वे जणाव्युछे॥१०॥तोय पण॥
११॥जोआजीव॥१२॥नयी॥१३॥प्रतीबोध पामतो त्या
रे॥१४॥स्यु॥१५॥करीए॥१६॥नीश्चे ते जीवनी॥१७॥
जवितव्यता एटले जे जीव जे घणा काल ससारमां
परी भ्रमण करवु होय तेने सुद्ध धरमनो उपदेश ला
गे नही अने उलटो सुद्ध धरमना अनिलापी पुरुषो

उद्यम करवो ते घणोज कठणछे ए कारण माटे हीत
वाछक पुरुषोए प्रथमथीज सम्यग् प्रकारें सजम पा
लवाने वीशे आलसु न थवु ए उपदेश॥४८२॥

जइ^१सब^२उवलद^३॥जइ^४अप्पाभाविउ^५उवसमेण^६॥काय^७
वाय^८च^९मण^{१०}॥उप्पहेण^{११}जह^{१२}न^{१३}देही^{१४}॥४८३॥

आत्मार्थि पुरुष प्रते गुरुनो उपदेश कहेछे
अर्थ॥१॥ हे भव्य जीव जो ते पूर्वे कहेलु॥२॥ सर्व
॥३॥पाम्युछे एटले तने पाप थयुछे अने वली॥४॥जो
॥५॥ते उपसमे करीने॥६॥आत्मा जाव्योछे एटले जो
ते उपसमजावे करीने आत्मा वासीत कयों छे एटले
उपसमे करिने सहित कयों छे त्यारे तुं हे भव्य
जीव ॥७॥ काया प्रते ॥८॥ वली ॥९॥ वचन प्रते
अने ॥१०॥मन प्रते एटले मन वचन कायाना व्यापा
र जेने॥११॥उन्मारगे करिने एटले सिद्धातथी उलटा
मारगने विशे॥१२॥जेमा॥१३॥न जाय तेमा॥१४॥प्रवर्त्ता
व्य एटले मन वचन कायाना जोग सुध मारगने वि
शे जोड केमके सुध मारग पामवानु एज सारछे॥४८३॥

हथ्ये^१पाए^२निहिखवे^३॥काय^४चालिद्र^५तपि^६कब्जेण^७॥

कुमु^८व^९सएअगे^{१०}॥अगोवगाइ^{११}गोविद्वा^{१२}॥४८४॥

हवे मुनीना लक्षण कहेछे

अर्थ॥१॥हाथ॥२॥पग ते॥३॥कारजे करीने एटले प्र
योजने करीने॥४॥चलावे एटले मुनीराज जे ते कार
ण बीना हाथ पग न हलावे चलावे॥५॥जे काया जो
ग प्रते॥६॥चलावेछे॥७॥ते पण प्रयोजने करीने,प्रयो
जन विना काय जोग प्रते न चलावे इहां द्रष्टात कहे
छे ॥८॥जेम॥९॥काचवो॥१०॥पोताना अगने विशे एट
ले पोताना शरीरने विशे॥११॥अंगो पाग प्रते एटले
हाथ पग आरुयो प्रते॥१२॥गोपवी राखेछे एटले का
रजविना न हलावे चलावे तो मुनी पण द्रव्य थकी
शरीरादीक अंगो पाग प्रते गोपवी राखे अने जावथ
की मन प्रते गोपवी राखे ए भाव॥४८४॥

विकह^१विणोयभास^२॥अतरभास^३अवकभास^४च^५॥न^६नरस^७

अणिद^८१०मपुच्छिउ^{११}य^{१२}॥भास^{१३}न^{१४}भासिजा^{१५}॥४८५॥

अर्थ ॥१॥ सुसाधु एटले रुडा मुनीश्वर जे ते विकया
प्रते एटले स्त्री कथा,भक्त कथा,राज्य कथा,अने देश
कथा प्रते न बोले अने बली ॥२॥ वीनोदकारी जापा
प्रते एटले कालरुकारी जापा प्रते न बोले अने
बली ॥३॥ अतर भापा प्रते एटले बोलता एया

तहतह ॥ कम्मभरगुरु ॥ सजमनिवाहिरउजाउ ॥ ४८७ ॥

नारे करमी जीवनु लक्षण कहेछे

अर्थ ॥ १ ॥ जेम जेम ॥ २ ॥ सर्व पाम्यु एटले सर्व सीदात
नो रहस्य पाम्यो ॥ ३ ॥ अने जेम जेम ॥ ४ ॥ तपोधनने वि
शे एटले साधुजननी मध्ये ॥ ५ ॥ घणा काल सुधी ॥ ६ ॥ रहे
वुं थयु एटले ते साधुओंनी मध्ये नीवास कर्यो ॥ ७ ॥ ते
मतेम ॥ ८ ॥ कर्मना समुहे करीने नारे एवो सतो ॥ ९ ॥ सं
जमथकी बाहीर थयो एटले सजम पालवाने वीशे ढी
लो पड्यो, आ एक मोटी आश्वरजनी वारता के उत
म पुरुषो नो जोग मल्यो तोय पण उलटो धर्मथी वी
मुख थयो ए सर्व कर्मनो प्रपंच जाणवो ए कारण मा
टे नव्य जीवो ए कर्म न बाधवा ए रहस्य ते उपर
आगली गाथामा द्रष्टात जणावेछे ॥ ४८७ ॥

विज्जणो १ जहजह १ उसहाइ ॥ पिज्जे १ वाइयहरणाइ १

तहतह १ से १ अहियर १ ॥ वाएणा १ पुरिअ १ १ पुह १ ॥ ४८८ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ जेम जेम ॥ २ ॥ हीतकारि वैद्य ॥ ३ ॥ वायुने दूर क
रनारा एवा ॥ ४ ॥ औषध सुठ मरी आदीक प्रते रोगी पु
रुपने ॥ ५ ॥ पायछे ॥ ६ ॥ तेमतेम ॥ ७ ॥ ते असाध्य रोगी पु
रुपने ॥ ८ ॥ अति अधिक ॥ ९ ॥ वायुने करीने ॥ १० ॥ पेटा ॥

॥११॥ पुरायु एटले उलटो वायुनो रोग घणो थयो ते
म थी तीर्थकर रूप वैद्य जेने पण कर्म रूप वायुनो उ-
पसमावनार एवु बहू सीद्धातरूप औपध प्रते पायछे
तोपण असाध्य कर्मरूप वायु चट्ठी पामेछे तेथी एम
जाणयु के हालमा ते पुरुषने कर्म नारे दीसेछे तेथी सी
द्धातनी वारता जथारथ समजाती नथी अने उलटो
नोद्या करेछे एवो ते भारे करमी जीवछे ए जाय॥४८८॥

हृद्गजउमकन्नकर॥॥भिन्नसुखनहोद्वेषुणकरण॥॥लो

ह॥च९तवविद्र॥॥न१५॥इ१५परिकम्मण॥॥किचि१॥४८९॥

अर्थ॥१॥ वलेली एवी लाखा॥३॥ कांड कार्य न करी श
को॥४॥ अने नेदाएलो एटले फुटेलो एवो॥५॥ सुख ते
नुं॥६॥ फरिने सधाववु॥७॥ नही॥८॥ होय अने॥९॥ वली
॥१०॥ तावानी साथे मील्ले एटले एक रूप थइ गयु
एवु॥११॥ लोढु जे ते॥१२॥ किचित्मात्रा॥१३॥ परिक्रम
प्रते एटले साधवाना उपाय प्रते॥१४॥ नही॥१५॥ पामे
तेम बीजोय पण पुरुष असाध्य कर्मनी साथे मील्लो
सतो धर्मने बीजो जोडवो दूरलजछे एटले जे माणम
नारे करमी होय अने नीवड मीध्मात्पना उदयमा व
रततो होय ते पुरुष सुद्ध धरम पाली न सको॥४८९॥

को^१दाही^२उवएस^३॥चरणाळसयाण^४दुविअदृण॥

इदस्स^५देवळोगो^६॥न^७कहिज्जइ^८॥ज्ञाणमाणस्स^९॥४९०॥

अर्थ॥१॥चारित्र पालवाने विशे आलसु एहवा अने
॥२॥दुरवीदग्ध एटले हमने आ शु उपदेश देशे, हमे पो
तानी मेल्ले सर्व जाणीए छीए एहवा जे पुरुषो तेमने
॥३॥कोण॥४॥उपदेश प्रते॥५॥दे एटले वैराग्यना त
त्वनो उपदेश प्रते जणावे जेमा॥६॥देवलोकना स्वरुप
ने जाणतो एवो॥७॥इद्र तेनी आगल॥८॥देवलोकना
स्वरुप प्रते॥९॥नही॥१०॥कहेवाय एटले कोइपण क
हेवाने समर्थ नही थाय तेम जाणतो सतो एवो जे पु
रुप प्रमादी थायछे तेने कोण उपदेश देवाने समर्थ
थाय अपितु कोइ न थाय ए जावा॥४९०॥

देदोचेव^१जिणवरेहि^२॥जाइजरामरणविण्णमुक्केहि^३॥

लोगमि^४पहा^५भणिआ^६॥सुसमण^७सुसावउ^८वा^९वि^{१०}॥४९१॥

हवे जो चारित्र पालवाने समर्थ न होय तेने ती-
र्थकरदेव साधुनो तथा आवकनो तथा सवेग-
पक्षीनो स्वरुप जणावेछे.

अर्थ॥१॥जन्म जरा मरणे करिने रहित एहवा॥२॥

तीर्थकरदेव जे तेमणे॥३॥वे॥४॥मारगा॥५॥लोकने वि

शो॥६॥कह्याछे एटले लोकने विशे मोक्षमा जवाना वे
मार्गे तीर्थकर माहाराजे बताव्याछे ते कीया मारग
प्रथमा॥७॥रुडो साधुनो धर्म॥८॥अने वली बीजो॥९॥
भलो श्रावकनो धर्म बताव्योछे अने॥१०॥अपी एट
ले अपो शब्द थकी बीजो सवेग पक्षीनो पण मार्ग
ग्रहण करवो एटले सीद्धातने अनुसारे साधु मार्ग जो
न पळो शके तो श्रावकपणु अगीकार करवु अने जो
श्रावकपणु न अगीकार थइ शके अने वेश उपर द्रढ
राग होय तो सवेग पक्षीपणु अगीकार करवु ते सवे
गपक्षीनु स्वरूप आगल जणावशे पण जुठो फटा टो-
प एटले जुठु साधु नाम धराववु ते जुक्त नथी अने ए
ज जाणता सता जे साधुपणानु नाम धरावेछे ते अ-
जिनिवेशीक मीथ्यात्वनो उदय जाणवो अने एवा पु-
रूपने कोणउपदेश देइ शके ए माटे भवनाभीरुपुरुषो
ने आ वीशे पको वीचार करवो॥४९१॥

भावचण^१मुग्गाविहारया^२य^३॥दवचण^४नु^५मिणरूआ^६॥

भावचणाय^७भट्टो^८॥हविन्न^९दवचणु^{१०}जुत्तो^{११}॥४९२॥

भाव तथा द्रव्य पूजानु लक्षण.

अर्थ॥१॥उग्रवीहारीपणु एटले शुद्ध जती मारगनु

नो लान एटले आगामी जवने वीशे शुद्ध सम्पत्कव
सहीत धर्मेनी प्राप्ती॥८॥नही थाय अने वली॥९॥ते पु
रुपने सदगती॥१०॥नहीज थाय अने वली॥११॥ते पु
रुपने परलोकने वीशे एटले परभयने वीशे देवपणानी
तथा मनुष्यपणानी प्राप्ती पण न थाय एटले त्रीजच
नरकादीक गती प्रते पामे॥४९३॥

कचणमणि सोबाण॥१॥धमसहस्रमुस्तत्र सुवन्नतल॥

गो० कारिन्नत० निणहर०॥तउव० तवसयमो० अहिउ०॥४९४॥

(हवे द्रव्य पूजाथकी भावपूजानु अधिकपणु जणावेछे)
अर्थ॥१॥रुचन एटले सुवर्ण अने मणी चद्रकात्यादि
क तेमना सोपान कहेता पगथीआ छे जेने वीशे
एटले सोनाना मणिनाछे पगथीआ ते जेने वीशे एवु
अने॥२॥थजाओनु जे सहस्र तेणे करीने वीस्तीर्ण ए
टले हज्जारो थजाओएकरीने वीस्तारवत एवु अने॥३॥
सोनानुछे तळीयु ते जेने एटले सोनानीछे जुइ तेजेनी
एवु॥४॥जीन मदिर ते प्रते॥५॥कोइपण पुरुषा॥६॥क
रावे॥७॥आते थकी पण एटले तेवा जीन मदिरना करा
ववा थकी पण॥८॥तपनु करवु अने सजमनु पालवु ए
टलेतप सजम करवो ते॥९॥अधीकछे एटले वीशेशछे;

एकारण माटे द्रव्य पूजाथकी जावपूजाछे ते अर्थीकछे.

निच्छीए^१ दुभिख्खे^२ रत्ना^३ दीवतराउ^४ अन्नाउ^५॥

आणेउण^६ वीअ^७॥ इह^८ दिन्न^९ कासवन्नणस्स^{१०}॥४९५॥

आ पचम कालने वीशे धर्मनु दुर्लभपणु द्रष्टाते
करिने देखाडेछे -

अर्थ॥१॥ नीरबीज एटले बीज मात्र पण जेने वीशे
न मले एवो॥२॥ दुरभीक्ष एटले दुकाल तेने वीशे॥३॥
राजा जे तेणे लोकने अर्थे॥४॥ अन्य॥५॥ द्विपातरथकी
एटले बीजा द्विपो थकी॥६॥ बीज प्रते एटले धान्यना
बीज प्रते॥७॥ मगावीने॥८॥ पछी आ लोकने विशे॥९॥
करसीक लोकने एटले खेतीना करनार लोकोने॥१०॥
आप्युं एटले वाववाने अर्थे आल्यु॥४९६॥

कोहिंवि^१ सव्व^२ खइय^३॥ पइन्न^४ मन्नेहिं^५ सव्व^६ मइ^७ च^८॥

उत्तुगय^१ च^२ केइ^३॥०॥ खित्ते^४ खुढाति^५ सतवा^६॥४९६॥

अर्थ॥१॥ केटलाएक कसीबल जे तेमणे एटले केटला
एक खेडुतलोका॥२॥ सर्व पण ते बीजा॥३॥ खाइ गया अ
ने॥४॥ अन्य एटले बीजा केटलाएक खेडुतलोकोए॥
५॥ सर्व बीजा॥६॥ वावीने नीप्पन कर्णु एटले नीपजा
व्यु अने॥७॥ वली केटलाएक लोकोए॥८॥ अर्धु खाधु

एटले केटलाएक लोको अर्धु बीज खाइ गया अने अ
 डधु बीज वाव्यु॥९॥वली॥१०॥केटलाएक खेडुतलोके
 ॥११॥उगतु एवु जे धान्य ते प्रते॥१२॥खेत्रने विशेषेर
 लाववाने अर्थे॥१३॥कुटेछे एटले बीज नीप्पन थया
 विना काचु कुटी नाखेछे पछी॥१४॥घाश पाम्या सता
 एटले जय धात थया सता राजाना सेवको पकडे छे
 एटले राजाना सेवक ते काचा बीजना कुटनार लोक
 ने पकडीने सरकारमा लइ जायछे पछी तेमने घणो
 मार पडेछे अने ते लोक घणा कालखेद जोगवेछे,आ
 बे गाथानी मध्ये द्रष्टात जणाव्यु हवे आगली गाथा
 मध्ये तेनो उपनय कहेछे॥४९६॥

राया^१निणवरचदो^२॥निन्डीए^३धम्मविरहिउ^४काजे॥

खित्ताइ^५कम्मभूमि॥कासवगो^६य^७चत्तारि॥१०॥४९७॥

अर्थ॥१॥राजाने ठेकाणे तो॥२॥जीनवरचद्र ते जीन अय
 धीज्ञानी तेमनी मध्ये वरनाम श्रेष्ठ एवा सामान्य केव
 ली तेमनी मध्ये चद्रमा समान एवा तीर्थकर महारा
 ज एटले तीर्थकरदेव जाणवा अने कालने ठेकाणे॥
 ॥३॥धर्म करीने रहीत एटले शुद्ध तीर्थकर माहाराने

*रा हा था भव शु कपु हरे रामा बाचय तो हमने सु करघ एये एन
 जेदमा वरना सता

कहेलो एवो जे जाव धर्म तेणे करीने रहीत एवो॥
 ॥४॥काल एटले दुशमकाल॥५॥धर्मरुप बीज रहीत ए
 टले धर्मरुप बीजे करीने रहीत जाणवो॥६॥खेत्र॥७॥
 कर्म भुमी एटले पनरकर्म भुमी ते इहा खेत्र जाणवा
 ॥८॥वली॥९॥कर्पुकते लोकनो समुह एटले खेडुतलोक
 नो समुह ते॥१०॥चारजण जाणवा एटले असजत-स
 जत-देशवीरती अने पासथ्या ए रुप चार पुरुष कर्पुक
 एटले खेडुतलोकने ठेकाणे जाणवा॥४९७॥

अस्सजणहिं^१सव^२॥खइअं^३अद्व^४च^५देशविरणहिं^६॥

साहुहि^७दम्मत्रीअ^८॥वत्त^९नीअ^{१०}च^{११}निप्पत्ति^{१२}॥४९८॥

अर्थ॥१॥असंजत जे तेमणे एटले अवीरती लोकोए
 ॥२॥सर्व एटले धर्मरुप बीज सघलुए॥३॥खाधु एटले
 अवीरती लोकोए जीनराजनो उपदेशेलो मारग का
 इपण पाल्यो नही॥४॥वली॥५॥देशवीरती जे तेमणे
 एटले देशे करीने आश्रवभावथी वीराम पामेळा एट
 ले स्थूल प्राणातीपात वीरमणादीक वृत्तना धारण
 करनारा एवा जे थावकलोक तेमणे॥६॥अर्थु बीज न
 क्षण कर्पु अने अडधु बीज वाव्यु एटले जीनराज मा
 हाराजे वतानेलो एवो जे धर्म ते मध्येथी अर्थो पाल्यो

अने अर्धो न पाल्यो केमके जेटली पोतानी शक्ती
 देखी तेटलो अगीकारक्यों अने जे पोतायी पाली नश
 कायो तेनी जावना राखी अने॥७॥साधु जे तेमणे एट
 ले सम्यग् चारित्रना पालनार जे तेमणे॥८॥धर्मबीज
 एटले वीरतीरुप धर्म बीज॥९॥वाव्यु एटले आत्मरुप
 क्षेत्रने विशे वाव्यु अने वावीने एटले वीरतीरुप धर्म
 ने अगीकार करीने॥१०॥नीप्पत्ती प्रते॥११॥पमाड्यु ए
 टले जेवी रीते अगीकार कर्ण ते रीते सम्यग् प्रकारे
 जीनराजनी आज्ञा सहीत पालवे करीने सीद्ध कर्ण॥
 ॥१२॥नीश्चे॥१३॥

जे ते सव लोहिउ॥१४॥पच्छा खुदाते दुबळ दिइ आ॥

सवसयमपरितता॥१५॥ते उहरे असी नभरा॥१६॥४९५॥

अर्थ॥१॥जे पार्वस्थादिक एटले वीतराग आज्ञाधी
 उलटा चालनारा एवा जे पुरुषो॥२॥ते सर्वेजण पण
 ॥३॥सर्व एटले वीरतीरुप धर्म प्रते॥४॥पार्मिने एटले
 अगीकार करीने एटले प्रथम पचमाहावृत्तरुप धर्म प्र
 ते आदरीने॥५॥पछी॥६॥दुर्वलछे धीरज एटले धैर्य
 पण ते जेमनु एटले अतीशय चपल एटले चितना आ
 ठे दोष सहीत एवा अने॥७॥तप सजमपकी खेद पा

મેલા એટલે તપ સજમ પાલવાને વીશે પાકેલા એવા
 સતા આત્મરૂપ ક્ષેત્રનીમધ્યેજા॥૮॥ધર્મરૂપવીજપ્રતેકુટે
 છેએટલેધર્મરૂપવીજનો વિનાશ કરેછે એટલે આત્માને
 વિશે નાના પ્રકારના વિશયાદિકના વિકલ્પોએ કરીને
 સર્વ વીરતીરૂપ ધર્મ વીજનો વિનાશ કરેછે॥કેવા થયા
 સતા નાશ કરેછે તે કહેછે॥૯॥આ જીનશાસનને વિ
 શે॥૧૦॥તે પાસથ્યાદિક લોકા॥૧૧॥દુર કયોંછે સી
 લનો સમુહ તે જેમણે એટલે સજમ જાર તે જેમણે એ
 ટલે શ્રદ્ધાર હજાર સીલાગરથ તેણે કરીને રહીત સતા
 અને પોતાને વિશે જુઠુ સાધુપદ સ્થાપન કરતા સતા
 પામેલા ધર્મનો નાશ કરેછે એટલે નિન્હવ થાયછે॥૪૯૧॥

આળસજિણાળ ૧॥મમદ્ ૧૬દુર્વિહ ૧૫હ ૧અદ્વકતો ૧॥

આળ ચ ૧અદ્વકતો ૧॥મમદ્ ૧૧જરામરણદુર્ગમિ ૧॥૫૦૦॥

હવે જીનરાજની આજ્ઞા લોપનાર પુરુશોને શુ
 ફલ થાયછે તે દેખાડેછે -

અર્થા॥૧॥જે પુરુષ વેપ્રકારનો॥૨॥માર્ગ એટલે સાધુ ધ
 મે અને શ્રાવક ધર્મ પ્રતે॥૩॥ઓલઘન કરતો સતો શ્ર
 ને॥૪॥ત્વલી॥૫॥ગુરુ માહારાજની એટલે સમ્યગ્ જ્ઞાના
 ડીક ગુણ સહીત ગુરુ માહારાજની આજ્ઞા પ્રતે॥૬॥ઓ

लघन करतो सता॥७॥सर्व तीर्थकरोनी एटले अनता
तीर्थकरोनी॥८॥आज्ञा प्रते॥९॥भागेछे एटले लोपेछे
ते पुरुषा॥१०॥जरा मरणे करीने अतीशे गहन एटले
जनम जरा मरणे करीने अतीशे उडो एटले अनत स
सार तेने विशे॥११॥भमेछे एटले घणाकाल परीधम
ण करेछे एटले जे पुरुष उत्सूत्र बोलीने जीनराज
नी आज्ञा लोपेछे ते पुरुष अनताकाल सुधी ससार
मा रुलेछे एकारण माटे आत्मारथि पुरुशोए जीनराज
नी आज्ञाना रुचिवत थवु ए उपदेश॥५००॥

बह^१न^२तरसि^३धारेउ^४॥मुळगुणभर^५सउत्तरगुण^६च^७॥

मुत्तुण^८तो^९तिभूमि^{१०}॥सुखावगत्त^{११}वरतराग^{१२}॥५०१॥

जे पुरुशथी चारित्र न पली शके तेने सवेगपक्ष

पणु अर्गीकार करवु तेनो अधिकार

अर्थ॥१॥जो हे भव्यजीव॥२॥पाच समित्यादिकना

समुहे करीने सहीत एवो॥३॥मुळ गुणनो भार एटले

पचमहावृतनो नार ते प्रते॥४॥धारण करवाने एटले

वहन करवाने॥५॥नथी॥६॥समर्थ एटले धारण करवा

ने समर्थ नथी॥७॥त्यारो॥८॥त्रण भुमि प्रते एटले ज

न्म भुमि वीहारभोमी, दीक्षाजोमी, ए त्रण स्थान

प्रते ॥ ९ ॥ मूकीने ॥ १० ॥ सुश्रावकपणु एटले समकीत स
हीत देश वीरतीपणु ॥ ११ ॥ अतीशे करिने श्रेष्ठछे ॥ १२
नीश्वे एटले जो साधुपणु न पली शके तो श्रावकप
णु अगिकार करवु ते सारुछे पण जुठु साधुपणु धा
री राखवु ते आत्माने हीतकारी नथी एजाव ॥ ५० ॥

अरिहतचेइयाण ॥ मुसाहुपुआरउ १ ददायारो ॥

सुस्सावगो १ वरतर १ ॥ न १ साहुवेसेण १ चुअधम्मो १ ॥ ५०२ ॥

हवे साधुना गुण रहित एवो जे नाम साधु ते
थकी श्रावक श्रेष्ठछे तें देखाडेछे.

अर्थ ॥ १ ॥ अरिहतना चैतनी, एटले शुद्ध जीन बी
बोनी पूजाने विशे, तत्पर एवो अने ॥ २ ॥ सुसाधुनी पूजा
ने विशे एटले सत्कार सन्मानादीने विशे आशक्त ए
वो ॥ ३ ॥ द्रढछे आचार ते जेनो एटले अनुवृत्तादि पाल
वाने विशे कुशल एवो ॥ ४ ॥ शुश्रावक एटले जीन आ
ज्ञा सहीत श्रावक जे ते पण ॥ ५ ॥ श्रेष्ठछे परतु ॥ ६ ॥ अ
ष्ट थयोछे धर्म ते जेने एटले साधुना आचारथी धष्ट
थयेलो एवो जे पुरुष ते ॥ ७ ॥ साधुनावेशे करिने एट
ले साधुना चिन्ह राखवे करिने ॥ ८ ॥ नथी श्रेष्ठ एटले रु
डो नही; एकारण माटे साधुना आचारे करिने रहीत

वेश धारण करवे करिने शु^१अपीतु काइ नही एटले
आचार रहीत वेश निष्फल जाणवो एजावा॥५०२॥

सज्जते भाणिऊण॥ विरइ^१खलु^२जस्स^३साविथा^४नधि^५॥

सो^६सज्जविरइवाइ^७चुफइ^८देस^९च^{१०}सव^{११}च^{१२}॥५०३॥

हवे शिष्य पुछेछे के माहाराज साधुपणु पले नही
तो केवल एक वेश राखवे करिने श्यो अवगुणछे
वेश राखवायी काइकतो गुण थरो^१ एवो रीते आ-
शका थये सते गुरुमाहाराज आगली गाथाए क
रीने उत्तर कहेछे

अर्थ॥१॥जे पुरुश “सव्यसावज्जं जोगं पचस्स्वामि”

एटले सर्वपाप सहीत व्यापारनो त्याग करुछुए प्रकारे

॥२॥जणीने पण एटले सर्व सावय जोगनु पचखाण

करीने पण॥३॥जेने॥४॥सपुरण एटले द्रव्यभाव वे

प्रकारे ठए कायनी प्रतीपालना एटले रक्षा ते रुप॥

॥५॥वीरती॥६॥नयी॥७॥नीश्वे अने॥८॥ते पुरुष॥९॥

सर्व वीरती वालो एटले हू सर्ववीरती छु एटले जो

कोनी मध्ये साधु थइने पूजायछे एवो सतो॥१०॥सर्व

एटले सर्ववीरतीरुप साधुनो धर्म ते प्रते॥११॥गली

॥१२॥देश वीरतीरुप आयकनो धर्म ते प्रते॥१३॥हा

रेछे एटले श्रावकना धर्मथकी अने साधुना धर्मथकी
चुकेछे॥१४॥नीश्वे एभाव॥५०३॥

जो जह वायं न कुणइ॥मिच्छद्विद्वि॥तउ हुको अन्नो॥
बुद्धे॥अ॥मिच्छत्त॥परस्स॥सक॥जणेमाणो॥५०४॥

फरी शीष्य बोल्थो के शी रीते चुकेछे त्यारे गुरु मा
हाराज आगली गाथाए करीने उत्तर करेछे.

अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥जेम॥३॥बोलेछे तेमा॥४॥नथी॥

॥५॥करतो एटले जेवु वचन बोल्थु तेवु नथी पालतो

॥६॥ते पुरुषथकी॥७॥नीश्वे॥८॥कोण॥९॥बीजो॥१०॥

मीथ्याद्रष्टी एटले बोल्या प्रमाणे करे नही ते थकी

बीजो कोण मीथ्या द्रष्टी होय अपीतु कोइ नही एट

ले तेज मीथ्याद्रष्टी जाणवो वली ते शु करेछे ते क

हेछे॥११॥बीजा लोकोने॥१२॥संका प्रते॥१३॥उत्पन्न

करतो सतो एटले भोला लोकोने उतम मुनीआने वि

शे सदेह उपजावतो सतो एटले आ कालमा उतम

साधु कथाथी लावीए-जेवा होय तेवा खरा तेवी रीते

कहीने गुण रहीत पोताने विशेष साधुपणु मनावतो स

तो॥१४॥मीथ्यात्व प्रते॥१५॥वधारेछे एटले मीथ्यात्व

नी पुष्टी करेछे एटले देवगुरु धर्मरूप त्रण तत्त्वने उ

उपदेशमाला

लटावीने प्रवाह मार्ग ने वीशे धर्म स्थापन क
 द्ध धर्मथी वीमुख करेछे॥१६॥नीश्चे ए कारण म
 शीप्य जे पुरुषथी साधुपणु पले नहीअने शुद्धप
 पण थइ शके नही ते पुरुषने वेश राखवो जुक्तनथ
 ठामठाम शीद्धातोनी मध्ये कह्युछे त्यारे फरी श
 बोल्योके साहेब आपे उपर एवु फरमाव्यु के जेवी
 बोले तेवी रीते करे नही ते मीध्याद्रष्टी ते वात
 लता माहारामनमा ससय उठ्यो के भगवती सू
 वीशे सातमा सतकना पहैला उदेसाने वीशे तो
 कह्युछे के जे सरागी साधु होय ते उत्सूत्र चारिज
 य माटे तेनु शी रीते॥हे शिष्य तुमे प्रश्नतो घणु रुडु
 पुं पण तेनो उत्तर साभलो ए भगवति सूत्रमा कहे
 ते खरुछे पण ए नीश्चे नयनु वचनछे केमके जे
 रागी मुनी होयछे तेमने चारे कपायनि चोकडीं उ
 भावेहोयवा अथवा क्षायकभावे होय तेमनी अपे
 करीने सरागीमुनीने सजलनी चोकडींनो उदय
 तेपण सूत्रथी उलटोजछे एवी अपेक्षाए करी
 सूत्रछे, जो एम ना कहोए तो घणा सीद्धातोने
 अधिक आवशे केमके सीद्धातोमा तो एवु कह्युछे के

જે મુની હોય તે સૂત્રને અનુસારે ચાલે અને તે સૂત્ર અનુસારે ચાલવાને વાસ્તે દશવૈકાલીકાદી સૂત્ર રચ્યા છે તો તે વારતા કેમ મીલશે? તે માટે વ્યવહાર નયે કરીને તો જે ગીતારથ અને ગીતારથની નીશ્રાએ રહેલો અને સંજમ પાલવાનો કામી હોય અને કદાચિત્ અતીચારાદીક દૂષણ લાગી જાયતો તે પ્રાયશ્ચીત લેઈને શુદ્ધ થાય તો તેને સીદ્ધાંતને અનુસારે ચાલનારા મુની જ કહીએ અને એવાં નીશ્ચે નયનાં શ્રવલબન લેઈને શુદ્ધ વ્યવહાર મારગ જે ઉઠાવેછે એજ મીથ્યાદ્રષ્ટીનું લક્ષણ જાણવું તે માટે હે શિષ્ય આ ઉપરની ગાથા વ્યવહાર નયની અપેક્ષાએ હમને તો જાસન થાયછે પછે જેમ બહુ શ્રુત માહારાજ કહે તે સ્વરૂં ॥૫૦૪॥

આળાઈ^૧ચિત્ર^૨અ^૩ચરણ^૪ ॥ તમગે^૫જાણ^૬કિન્ન^૭ભગતિ^૮ ॥

આળ^૯ચ^{૧૦}અદ્રક્તો^{૧૧} ॥ કસ્તા^{૧૨}એસા^{૧૩}કુળદ્ર^{૧૪}સેસ^{૧૫} ॥ ૫૦૫ ॥

હવે જીનરાજની આજ્ઞાનું માહાતમ્યપણું જણાવતા સતા કહેછે -

અર્થ ॥ ૧ ॥ નીશ્ચે ॥ ૨ ॥ આજ્ઞાએ કરીને ॥ ૩ ॥ ચારિત્ર છે એટલે

જે જીનરાજની આજ્ઞાનું પાલવું એજ ચારિત્ર ॥ ૪ ॥ જીનરાજની આજ્ઞા જાગ્યે સતે હે શિષ્ય ॥ ૫ ॥ તુ સમજ કે ॥ ૬ ॥

शुना॥७॥नाग्यु एटले आज्ञानो जग करये सते सर्वे
ग्युज॥८॥वली॥९॥जीनराजनी आज्ञा प्रते॥१०॥ओ
घन करतो सतो॥११॥कोना आदेश थकी॥१२॥ओ
अनुष्ठानादीक प्रते॥१३॥करेछे एटले जो जीनराजन
आज्ञा लोपेछे तो कोना कहेवाथी बाकीना क्रीयाकल
प करेछे एकारण माटे आज्ञा विना जे क्रियाअनुष्ठ
नादीकिनु जे करवु ते सर्व वीटवना तुल्यछे एटले क-
लेश रूपछे ए भाव॥५०५॥

संसारोऽव'अणतो'॥भट्टचारित्तस्स'लिगजीवरस्स॥
पचमहवयतुगो'॥पागारो'भित्तिउ'मेण॥५०६॥

हवे आज्ञा रहीत पुरुष पीताने विशेषार्थिपणुस्था-
पन करेतो तेने वीपाक देखाडेछे -

अर्था॥१॥अष्ट थयुं छे चारित्र तेजेने एटले चारि
त्रयी पडेजो एवो अने॥२॥लीगे करीने छे आजीवीका
तेजेने एटले मुखवस्त्रीका रजोहरणादी रूप वेश
करीने आजीवीका चलायतो एवो अने पली॥३॥
पणे॥४॥पाच माहावृत्तरूप उचो एटले महोटो॥५॥की
ओ एटले कोटा॥६॥भेदघोछे एटले पाडी नास्वोछे
एले पचमाहावृत्त मध्येनु एकपण महावृत्त देखातु

नथी तेवा पुरुषने एटले पूर्वे कहा लक्षण सहीत पु
रुषने॥७॥अनंतो॥८॥ससार होय एटले अनंत ससा
रीपणु जाणवु॥९॥नीश्वे ए कारण माटे जीनराजनी आ
ज्ञानु पालवु एज चरित्र धर्म अने जीनराजनी आज्ञा
नु सदहवु ए समकीत धर्म जाणवो॥५०६॥

नकरोमिच्छि^१ भणिच्छा^२ ॥ तच्चेव^३ धनिसेव^४ ए पुणो^५ पाव^६ ॥

पञ्चखलमुसावाइ^७ भायानियडिपसगो^८ य^९ ॥५०७॥

हेस्वामिन् तेने अनंत ससारीपणु केम कहयु^१ एवी
आशकानो गुरु उत्तर कहेछे.—

अर्थ॥१॥जे पुरुष सावद्य जोग प्रते नही करु, नही
करावु, अने करता प्रते रुडो नही जाणु ए प्रकारे न
व कोटी सहीत पापना व्यापारना त्याग प्रते॥२॥न
णिने एटले कहीने पण॥३॥फरीने॥४॥तेज प्रते एटले
जे पाप व्यापारनु पचखाण कयुंछे तेज॥५॥पाप व्या-
पार प्रते॥६॥अतीशे करीने शेवेछे तें पुरुष ॥७॥प्रत्यक्ष
मृखावादी जाणवो केमके जेवु बोलेछे तेवु नथी करतो
ए कारण माटे॥८॥पली॥९॥माया नीकृतीनो छे प्रसग
ते जेने एटले माया शब्दे करीने अतरगनु असत्यप
णु अने निकृति शब्दे करीने बाहीरनु असत्यपणु ए

द्रव्यभाव वे प्रकारना असत्यपणानो छे प्रसंग तेजे-
 एवोजाणवो एटले वे प्रकारे जुठो जाणवो ए कार
 माटे हे शिष्य जे जुठु बोलवु ते अनत ससारमा
 रिभ्रमण करवानु कारण जाणवु हे स्वामिनाथ आ
 उपर फरमाव्यु के जे पाप त्यागीने फरी शेरछे ते
 टपावादीछे ते साजलता महारा मनमां सशय उत्प
 थायछे केमके सिद्धांतोने विशे एवं साजलवामा आ
 छे जे साधु तथा थावके जे वृत्त श्रगीकार करेला
 शीय तेमा जे दूषण लागे ते गुरु महाराज आगल आ
 जोवीने तेनु प्रायश्चित श्रगीकार करीने शुद्ध थायछे श्र
 वली फरीने कोइ वखत तेज पाप शैववामा थायेछे
 ते तेज प्रमाणे प्रायश्चितादीक श्रगीकार करेछे अने
 प्रायश्चितादीक श्रगीकार करीने साधु थायकना पद
 न रहेछे अने इहा तो मृखायादी कह्यो तेनु शीरीने
 छे? त्यारे गुरु माहाराजे कह्यु के हे शीष्य तने तर्क
 सो घणो सारो उत्पन्न थयो पण तेनो उत्तर धीर चि
 त राखीने साभल के जे पुरुषे प्रथम जे वस्तुनो त्या
 ग कर्यो होय अने फरीधी ते पाप शैवन करवानी इछा
 नथी अने चित्तमा घणी दास परतेछे के आकान ना

हारे घणु खोटु थयु हवेथी फरी आवु काम कदी नही
 करु एवी रीते जेना प्रणाम थायछे ते प्रायश्चित्त अ
 गिकार करेछे एम करता वली फरी कोइ वखत तेज
 पापनु शेवन थइ गयु तो फरी प्रायश्चित्त अगीकार
 करवाने अवसरे तेना तेवाज प्रणाम रहेछे के आकाम
 फरीथी हवे कदी नही करु एवी रीते आलोवण जे अ
 वसरे जेने वीरती प्रणाम थायछे तो तेने मृखावादी
 ना कहिए पण इहातो प्रथमथी पचखाणतो कयुंछे अ
 ने ते पाप सेववामा आवु अने तेथी वीरती प्रणाम
 तो थया नथी एटले फरीथी हू शेवन नही करु एवी
 अध्यसाय थयो नथी अने जे आलोवण करेछे ते
 मृखावादी जाणवो तो प्रथमथी पचखाण तो कयुंज
 नथी अने आथवथी वीरामपाम्योज नथी अने ते आ-
 लोवण लेइ बेसेछे तेनु तो शु कहेवु. ते तो माया मृ
 खावादीज होय एटले मीथ्या द्रष्टी जाणवो केम केस
 म्यग् द्रष्टी जे पुरुशोछे ते नीदा गृहातो करेछे पण आ
 थवथी वीराम पाम्या बीना तेना पचखाण करता न
 थो अने जुटी पार वृत्तनी आलोवण करता नथी जेम
 येषीरु माहाराना वली जेम आणद कामदेवादीक

उपदेशमाला.

श्रावकोए जेटला वृत पोते श्रागिकार कर्षादि
 नो मध्ये जे दोश लागेछे तेनी श्रालोवण क
 कोइ महावृतनी श्रालोवण करता नथी केमव
 जुठ आवेछे माटे एकारण माटे हे शीप्य श्रा
 जेना प्रणाम वीराम नथी पाम्या तेने श्राश्रीने
 १ श्रा गाथानो वीशेष वीस्तार अर्थ गीतार्थ मा
 नो समीपे धारण करवो हमने तो श्रावस्यक नी
 ने अनुसारे तथा ठाणागजीने अनुसारे तथा वृ
 प जाप्यने अनुसारे कोचित् जेवु जासन थयु त
 यु, आगल श्रतीशे ज्ञानी कहेते खरु॥५०७॥

१तो१समुग्गो१॥अलिअ१सहसा१न१भासए१किंचि१अह१
 उ१विअलिअ१॥भासइ१तो१कि१वि१दिख्त्वाए१॥

७ पुरुष जुठुबोलेछे तेनेदीक्षानु नीप्फलपणु देखाडेछे
 अर्थ॥१॥लोकने विशे पण॥२॥जे॥३॥शुके करीने स
 हीत होय एटले पाप थकी बीहीतो होय के रखे मने
 जुठुबोल्यानु पाप लागे ए प्रकारे डरतो होय ते पुरुष
 ॥४॥एकदम विचार्या विना॥५॥काइपण॥६॥जुठु॥७
 ना॥८॥बोले एटले पापथी बीहीतो एवो जे पुरुष ते वि
 चारीनेज बोले॥९॥अथ एटले श्रने वली॥१०॥जोदी

ક્ષીત એવો સતો પણ એટલે ગ્રહણ કર્યું છે ચારિત્ર તે જે
 એ એવો સતો પણ॥૧૧॥અસત્ય પ્રતે॥૧૨॥બોલે છે એ
 લે ચારિત્રીઓ થઈને પણ જુઠું બોલે છે॥૧૩॥ત્યારો॥૧૪
 દીક્ષા એ કરીને॥૧૫॥શુભ૥૧૬॥અપીતુ કાઝ નહીં એટલે
 જે જાપા સમીતી નથી જાણતો તેની દીક્ષા નીપ્પલ
 જાણવી એટલે કાયકેશરુપ જાણવી એ કારણ માટે છે
 ભવ્યજીવો જો ધર્મના અર્થિં હોતો પ્રથમથી સદગુરુ
 ની પાસે જાપા સમીતીનું જાણપણું કરવું જાપા સમિ
 તી આવ્યા વિના ધર્મ અનુષ્ઠાન લેશે લાગે નહીં॥૧૭

મહાપ્રજ્ઞાપાદ૧॥ઝડેડ૧જો૧તવ૧ચર૧॥

અન્ન૧સો૧અન્નાણો૧મુઢો૧નાવા૧બુઢો૧મુણેયજો૧॥૧૦૧

જે પુરુષ પોતાના લીધેલા વ્રત તેને વિશે દૂષણ

લગાડીને વીજા તપાદિક કરે છે તેનું મૂર્ખપણું

દેસાડતા સતા કહે છે -

અર્થે॥૧॥જે પુરુષ॥૨॥માહાવ્રત અણુવ્રત પ્રતે એટલે

સાધુના માહવ્રત અને શ્રાવકના અણુવ્રત તે પ્રતે॥૩॥

છાડીને એટલે ત્યાગ કરીને॥૪॥તે॥૫॥અજાણ એવો અ

ને॥૬॥નૂરમ્ એટલે સીદાતનો અજાણ અને ન્યાય ર

હીત એવો સતો॥૭॥વીજો॥૮॥તપ પ્રતે॥૯॥આચરે છે એ

टले प्राणातीपात वीरमणादिक पाच महाचूते करीने
 रहीत अने स्थुल प्राणातीपात वीरमणादिक पाच अ
 णुचूते करीने रहीत एवा तप कष्टादिक प्रते करेछे ए
 टले अज्ञान, कष्टकारी जाणवो अने वली केवो जाणवो
 ते कहेछे ॥१०॥ नावेकरिने एटले हाथमा आवेलु नावेक
 रिने पण ॥११॥ बुडयो एटले ससार समुद्रमा पडयो
 एहवो ॥१२॥ जाणवो एटले जेम कोइ मूरख पुरुष हा
 थमा आवेलु एवुय पण नाव ते प्रते भागीने तेना लो
 होडाना खीसाए करीने समुद्र प्रते तरवानी वाछा क
 रेछे तेम आ पुरुष पण ससार समुद्र तारवाने नाव स
 रीखा महावृत अणुवृतादीक, ते प्रते भागीने एटले
 ते वृतामांदुशण लगाडीने एटले आर्तध्यान रूद्रध्याना
 दीक करीने चाह्य तपे करीने ससार समुद्र तरवानी
 वाछा करेछे ते मूरख जाणवो. कत्यु छे के -

“तदेवहितप कार्यं-दुर्भ्यानिपन्नो जवेत्-
 येन योगानहीयते-क्षीयते नैन्द्रियाणि च”

अर्थ. तेज तप करवा जोग्य छे जे तप करे सते
 दुरध्यान एटले माठु ध्यान न धाय अने जे तप करे
 करीने सजमना व्यापार हानी न पामे अने वली जे

तप करवे करीने इद्रीओ क्षय न पामे एटले इर्या स-
मीत्यादीक पाळवाने विशे सीथळ न थाय तेज तप
आत्माने हीतकारी जाणवो ए कारण माटे हे नव्य
जीवो जेम जाव तप हानी न पामे तेम द्रव्य तपने वि-
शे उद्यम करवा जोग्य छे ए जावा॥५०९॥

सुबहु^१पासथ्यजन^२नाउण^३जो^४न^५होइ^६मध्यथो^७॥नय^८
साहेइ^९सकडज^{१०}॥काग^{११}च^{१२}करेइ^{१३}अपाणं^{१४}॥५१०॥

जे पुरुष पारकी नीद्या करे ते आत्मकारज
साधी न शके ते देखाडे छे-

अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥अतीशे बहु प्रकारे॥३॥पारश्व
स्थ जन प्रते एटले ज्ञान दर्शन चारीत्र रहीत पुरुषना
सीथीलपणा प्रते॥४॥जाणीने॥५॥मध्यस्थ एटले राग
द्वेश रहीता॥६॥ना॥७॥होय ते पुरुषा॥८॥पोताना कारज
प्रते॥९॥नहीज॥१०॥साधे एटले मोक्ष रुप पोताना का-
रज प्रते न करीशके॥११॥वली॥१२॥पोताना आत्मा
प्रते॥१३॥कागडातुल्या॥१४॥करेछे एटले पारको दूशण
देखीने जे राग द्वेशमा पडेछे ते पुरुष कागडा तुल्य जा-
णवो. जेम कागडानो स्वभाव उत्तम चिज मुकीने असुची
फेदवानोछे तेम उत्तम पुरुशोना गुणनी स्तवना मुकीने

मिथ्याद्रष्टीनो स्वप्नाव पारका दुशण देखवानोछे ते माटे
कागडा तुल्य कह्यो ए कारण माटे हे भव्य जीव
पारका दुशणमा पडवु नही ए तत्व बोधनु लक्षणछे
परिचितिउण १ निउण ५ ॥ जय १ नियमभरो १ न १ तीरए ॥

बोदु १ पराचिस्तर जणेण ८ ॥ न १ वेसमित्तेण १ साहारो १ ॥ ५ १ १ ॥

जे पुरुषे वृत्त अंगीकार कर्षा होय अने तेथी न पली
शकता होय अने लोकने रीझववाने अर्थे ते वृत्ती
नाम धरावेछे अने वृत्तनो फटाटोप मूकतो नथी
तेनु नीप्फलपणु जणावता सता कहेछे -

अर्थे ॥ १ ॥ निपुणपणे एटले सुक्ष्म बुद्धीए करीने एटले
झीणी बुद्धीए करीने ॥ २ ॥ समस्त प्रकारे चितवन करी
ने एटले जेम आत्महीसा न थाय तेम विचारिने ॥ ३ ॥
जो ॥ ४ ॥ नामिनो समुह एटले मुल उतर गुणोना समुह
प्रते ॥ ५ ॥ वहन करवाने एटले धारण करवाने ॥ ६ ॥ न
हो ॥ ७ ॥ समर्थ थडए एटले जावजीव सुधी ग्रहण करेला
वृत्त पाली न शकीए त्यारो ॥ ८ ॥ लोकोना चीतने रजन
करनार एवो एटले मुग्ध लोकोना चीतने प्रीती उपजा
वनार एवा ॥ ९ ॥ केवल शाधुना वेशे करीने एटले गुण
रहीत वेशे करीने ॥ १० ॥ नही ॥ ११ ॥ आधार एटले परम

वने विशे जता एटले दुरगतीने विशे पडता एवा जे
 पुरुषो तेमने आधाररूप न थाय एटले गुण रहीत वेश
 दुरगतीथी धारण करी शके नही एटले राखी शके न
 ही; ए कारण माटे आत्मार्थि पुरुषो ए सारी रीते विचा-
 र करवो जोइए के आ वृत माहाराथी पळेछे के नथी
 पळतु ए विशे नीरंतर उपयोग राखवो जोइए पण जु
 ठो फटाटोप राखवो ए श्रेष्ठ नथी ए रहस्य॥५११॥

निच्छयनयस्स^१ चरस्सुवघाण^२ नाणदसणवहोवि^३॥

ववहारस्स^४ उ^५ चरणे^६॥ हयमि^७ भयणाउ^८ सेसाण^९॥५१२॥

जीश्रयनयमते करीने चारीत्रनो नाश थये सते सर्व
 ज्ञानादीक गुणनो नाश थाय ते देखाडेछे -

अर्थ॥१॥ नीश्रयनयमते करीने एटले परमार्थ वृत्ती
 ए करीने॥२॥ चारीत्रनो उपघात थये सते एटले चारी
 त्रनो नाश थये सते ॥ ३ ॥ ज्ञान दर्शननो बीनाश
 पण थाय एटले नीश्रे चारीत्रनो नाश थये सते आ
 श्रव सेवन करवे करीने ज्ञान दर्शननो नाशज हो
 य-नीश्रय चारीत्र ते कोने कहीए जे सशुकपणु एटले
 अतरगने वीशे दाज्ञ सहीत पणु के आ काम मारे
 नथी करवा जोग्य अने माहारे त्यागवा जोग्य छे पण

कर्म वशे करीने हु त्यागी नथी शकतो एवो जे वीचा
र ते दाझ कहीये अने तेज नीश्चे चारीत्र कहीए एवी
वीचारणा रहीत आश्रवनु सेवन करेछे अने वली बो
लेछे के आमा अमने शु पाप लाग्यु एवा पुरुपने स
म्यग्ज्ञानदर्शननो नाशज थाया।४।वली।५।व्यवहारनय
मते करीने एटले बाह्यवृतीए करीने॥६॥चारीत्रनो॥७॥
नाशथये सते।८।वाकी रहेला एवा जे ज्ञान दर्शन तेगनो
।९।जजनाए करीने एटले भजनाए करीने नाश थाय ए
टले नाश थाय वा अथवा नथाय एटले व्यवहारमा चा
रीत्र नथी पाली शकतो एटले आश्रव नथी टाली श
कतो पण चीतने वीशे दाझ वरतेछे तो ते पुरुपने सम्यग्
ज्ञानदर्शन होय अने जे पुरुप अतरगने वीशे पण दाझ
रहीतछे अने उपरथी पण चारीत्र पाळतो नथी तेने तो
सम्यग् ज्ञान दर्शन होय ज नही एटले तेने तो समकीत
पण न होय केमके नीश्चय सहीत व्यवहारनुं चलपान
पणु छे अने नीश्चय वीना जे व्यवहार छे ते व्यर्थछे।

मुनइ नइ मुचरणो ॥ मुनइ मुसावगोरि गुणकाळिउ ॥

वसन्नचरणकरणो ॥ मुनइ सविगपस्तरुइ ॥ ५२३ ॥

जे द्रव्यभाव बे प्रकारे वीरतीवित होय ते

શુધ થાય તે દેખાડે છે -

અર્થા॥૧॥ મલુછે ચારીત્ર તેજેને દટલે દ્રવ્યજાવ બે પ્ર
કારે છે આશ્રવનોત્યાગ તેજેને એવો॥૨॥ જતો દટલે સા
ધુ॥૩॥ શુધ થાયછે દટલે નીરમઝ થાયછે દટલે કર્મરૂપ
કલકે કરીને રહીત થાયછે અને વલી॥૪॥ જ્ઞાનાદિક
ગુણે કરીને સહીત એવો॥૫॥ જલો શ્રાવક પણ દટલે વી
તરાગ આજ્ઞા સહીત શ્રાવક પણ॥૬॥ શુધ થાયછે દટ
લે નીરમઝ થાયછે અને વલી॥૭॥ સર્વોક્તપક્ષની છે રૂ
પો તે જેને એવો દટલે મોક્ષના અજિલાશી અને મોક્ષ
મારગમા પ્રાર્તેલા એવા મુનીરાજની ક્રીયાને વીશે છે રૂ
પો તે જેનો દટલે તેમની ક્રીયાની અનુમોદના કરતો એ
વો॥૮॥ સીધીલ છે ચરણ સીતરી અને કરણસીતરી તે
જેને દટલે મુદા ઉતર ગુણ પાલવાને સીધીલ એવો સ
તો પણ॥૯॥ શુદ્ધ થાયછે દટલે કર્મ રહીત થાયછે અ
ને તે પુનઃ સંયમપક્ષી જાણવો॥૧૦॥

• તેમના દિવ્યદ્રાવ્ય લક્ષણો મેળવે સમામત મળિય ॥

ઉન્નચરણ દરગાહી ॥ ૧૦ ॥ • દમયંતીમોક્ષી ॥ ૧૨ ॥

સંયમ પક્ષી શ્રી લક્ષણ વંડે કરીને જાણીએ એવો તં
યને સને ગુરુમાહારાજ સીદ્ધાંતને અનુસારે સંયમ

क्षीना लक्षण कहेवे करीने तेनु स्वरूप जणावेछे.
 श्रर्या॥१॥सवेगपक्षी पुरुशोनु एटले मोक्षना श्रा
 लाशी एवा मुनीराजनोछे पक्ष ते जेमने एटले तेमन
 क्रियाश्रनुष्ठानने विशे रक्त तेमनु॥२॥आ॥३॥लक्षण॥
 ॥४॥सक्षेपे करीने॥५॥तीर्थकरदेवे कहयुछे॥६॥जे लक्ष
 ण वडे करीने॥७॥सीथीलछे चरण करण ते जेमने ए
 टले मुल उतर गुण पालवाने विशे सीथील एवा सता
 पण॥८॥कर्म प्रते एटले ज्ञानावरणादीक कर्म प्रते॥
 ॥९॥विशेषे करीने शोधेछे एटले क्षण क्षण प्रते खपा
 वेछे॥१०॥नीश्वे फरी सवेग पक्षीनु लक्षण आगली गा
 थाश्रोमा प्रगट पणे जणावेछे॥११॥

मुद्र^१सुसाहुधम्म^२॥कहेइ^३निंदइ^४अ^५निय^६मायार^७॥
 सुतगस्सिआण^८पुरउ^९॥होइ^{१०}सबोमरायणीड^{११}॥५१५॥

श्रर्या॥१॥शुद्ध एटले जीनराजनी आज्ञा सहीत एवा
 ॥२॥सुसाधुना धर्म प्रते॥३॥कहेछे एटले लोकोनीश्रा
 गळ निरवद्य एटले पाप रहीत क्षात्यादि दश प्रकार
 नो जती धर्म ते प्रते परुपेछे एटले जणावेछे॥४॥वली
 ॥५॥जला तपस्वीश्रोनी एटले सुसाधुश्रोनी॥६॥आ
 गला॥७॥पोताना॥८॥आचार प्रते एटले सिथिल पण

દિક પ્રતે॥૧॥નીદેછે એટલે સાધુ મુનીરાજની આગલ
 એવું બોલેછે કે ધન્યછે આપને જે આપ શુદ્ધ ચારિત્ર
 ને વિષે વરતોછો અને હૂતો ચારિત્ર પાલવાને સીંચલ
 છુ માહારાથી પત્ની શકતુ નથી તે માટે હું અધન્યછુ
 એવી રીતે કહે છે અને વળી॥૧૦॥સર્વ મુનિઓ થકી
 લઘુ॥૧૧॥થાયછે એટલે એક દિવસના દિક્ષિત સાધુ
 થકી પણ પોતાના આત્માને નાનો માનેછે એટલે પોતા
 નું નીચત્વપણુ જાણેછે॥૫૧૫॥

વદઈ^૧ન^૨વદાવઈ^૩॥કિંઈકમ્મ^૪કુણઈ^૫કારવે^૬ખેય^૭॥

અત્તદ્વાએ^૮નવિ^૯દિલ્લિવઈ^{૧૦}॥દેઈ^{૧૧}સુસાહુણ^{૧૨}બોહેડ^{૧૩}॥૫૧૬॥

અર્થ॥૧॥વદન કરેછે એટલે મોક્ષાભિલાશી એવા પોતા
 થી નાહાના સાધુ પ્રતે પણ વદન કરેછે પરતુ॥૨॥નહી
 ॥૩॥વંદન કરાવે એટલે તે સાધુ મુનીરાજની પાસે પો
 તાને વદન કરાવે નહી અને વળી॥૪॥કૃતી કર્મ પ્રતે
 એટલે સર્વોચ્ચ સાધુઓની પોતે વીશ્રામણાદી એટલે વી
 આવચાદીક પ્રતે॥૫॥કરે॥૬॥નહીજા॥૭॥કરાવે એટલે
 તે સાધુઓને પોતે નીચતાનુભવ કરાવે નહી

तेने पोतानो शिष्य करवाने अर्थे पोते दीक्षा आपे न
ही त्यारे शु करे ते कहेछे॥११॥बोध पमाडीने एटले
शुद्ध उपदेशदेइने सम्यक्त्वादीक धर्म पमाडीने॥१२॥
जला मुनीश्रीनी समीपे॥१३॥दीक्षा लेवरावे पण पो
ते तेने दीक्षा आपे नही केमके चेला करवाथी शुद्धप
रुपणा रहे नही ए कारण माटे॥५१६॥

उसन्नो' अत्तठा' पर' मण्णाण' च' हणइ' दिख्खतो'॥

त' च्छूहइ' दुग्गइए'॥अहिअयर' बुडइ' सय' च'॥५१, ७॥

पोताने अर्थे चेलो करवाथी शु थाय तेनु फळ गुरुमाहा
राज आ नीचेनी गाथाए करीने जणावे छे--

अर्थ॥१॥अवसन्नो एटले चारित्र्य पालवाने सीथील ए
वो सतो॥२॥पोताने अर्थे एटले पोताने नीमीत्ते॥३॥बी
जा॥४॥आत्मा प्रते एटले बीजा पुरुष प्रते॥५॥दीक्षाआ
पतो एटले पोतानो शीष्य करतो सतो॥६॥हणे छे ए
टले जाव थकी पातना आत्मानो नाश करेछे॥७॥वली
ते शु करेछे ते कहेछे॥ ८ ॥ते शिष्य प्रते॥९॥दुरगतीने
विशे॥१०॥नाखेछे अने॥११॥वली॥ १२॥पोते॥१३॥अ
तिशे अधिका॥१४॥बुडे छे एटले पूर्व अवस्था थकी वि
पेश प्रकारे ससार समुद्र मध्ये बुडे छे केमके पोतानो

पासेतो महावृत नथी अने बीजाने महावृत उचरावे
 छे तेमा मृखावाद आवेछे ते कारण माटे बने जण बु
 डे छे. त्यारे शिष्येतर्क कर्यो के देनारतो मृखावादी थ
 यो माटे बुडे पण लेनारे श्यो अपराध कर्यो के तेपण
 बुडे! हे शिष्य तर्कतो घणी समजणनो कर्यो पण तेनो
 उतर सांजल, जेम कोइ पुरुष समुद्र तरवाने अर्थे रो
 गाने करीने सहीत एवी लोढानी नावने लाकडानी जा
 णीने माही बैठो अने तेना प्रणाम पण समुद्रतरवाना
 छे तो ते पुरुष समुद्र तरी शके नही तेम ज्ञानादी गुणे
 करीने रहीत पाच आश्रवनो सेवनार अने आगम र
 हीत जुठी कीरीआनो फटाटोप करनार तेने रुडो सा
 धु जाणीने ससार समुद्रतरवाने अर्थे अगीकार करे ते
 पण संसार समुद्रमा बुडेज वली जेम कोइ पुरुष सोम
 ल अने गोळ ते बेडनी परीक्षा कर्या बीना सोमलनेज
 गोळ जाणीने खाय तोते पुरुष नीश्चे मरेज तेम सीधा
 तनेअनुसारि गुरुकुगुरुनी परीक्षा कर्या बीना कुगुरुने गुरु
 जाणीनेज दीक्षा अगीकार करे अथवा आवकपणु अ
 गीकार करे अथवा सम्यक्त्व अगीकार करे तो
 ते बुडेज केमके पोताना प्रणामतो रुडु अगीका-

र करवाना छे पण जेवो पुरुष मीले तैवु आपे
ते माटे प्राये खोटाना ससर्गे तरी शकेजनही ए जाव.

बह^१सरण^१मुवगयाण^१॥ नीवाण^१निकित^१ए^१सिरे^१जोउ^१॥

एव^१आयरिउविहु^१॥ उस्सुत्त^१पन्नवितो^१०५^१॥ ५२८॥

उत्सूत्र प्ररूपक उपर द्रष्टात आ नीचेनी गा-
थामां जणावे छे.-

अर्थ॥ १॥ जेमा॥ २॥ सरणप्रते॥ ३॥ आवेला एवा॥ ४॥ जी
व तेमनु॥ ५॥ मस्तक प्रते॥ ६॥ जे पुरुष॥ ७॥ छेदेछे एटले
जे पुरुष पोताना शरणे आवेला एवा प्राणीओना मा
था प्रतेकापेछे॥ ८॥ ए प्रकारे॥ ९॥ उत्सूत्रप्रते एटले सू
त्रयी विरुद्ध प्रते॥ १०॥ प्ररूपणा करतो एटले भव्य प्रा
णीओने कुमारगने विशे प्रवर्तावतो एवो॥ ११॥ आचार
ज जे ते पण शरणे आवेला एवा भव्य जीवोनु माथु का
पेछे॥ १२॥ नीश्चे एटले नीश्चे वीश्वासघात करेछे. आ गा
थामा एटलो शब्द वाक्य शोभावाने अर्थेछे जेम ते
जुठु सुभट नाम धरावनारो पुरुष पोताने आधीने रहे
ला प्राणीओने पोताने वीशे वचने करीने वीश्वास उप
जावीने तेमनु माथु कापी नाखे छे जेम नाम मात्र ए
टले गुण रहीत एवो आचारज जे ते पण पोताने आ

श्रीने रह्या एवा भव्य प्राणीओने नाम मात्र धर्म देखा
 डवे करीने वीश्वास उपजाववे करीने जुठा धरमने वीशे
 एटले कपायादि सहीत धर्मने विशे प्रवर्तावीने भाव
 थी माथु कापेछे एटले दुरगतीने विशे परीधमण करा
 वे छे ए कारण माटे आत्मार्थी पुरुषोए तेवा पुरुषोनों
 ससर्ग करवो नही ए उपदेश ॥५१८॥

सावज्जजोगपरिवज्जणाउ^१॥सवुत्तमो^२जइधम्मो^३॥

वीउसावगधम्मो^४॥तइउसविग्गपख्खपहो^५॥५१९॥

॥मोक्षना त्रण मारगछे ते देसाडेछे॥

अर्थ॥१॥सावद्योग एटले पाप सहीत व्यापार ते
 मनु परीवर्जन एटले समस्त प्रकारे त्याग करवे करी
 ने एटले पाप सहीत व्यापार मुकवे करीने॥२॥सर्व
 नी मध्ये उत्तम एटले सर्व धर्मनी मध्ये थेटा॥३॥जती
 धर्म एटले साधुनों धर्म होय ए पहेलो मोक्षनो मार
 गा॥४॥तीजो श्रावकनो धर्म ए बीजो मोक्षनो मारग
 ॥५॥अने तीजो सवेग पक्षीनो मारग ए तीजो मोक्ष
 नो मारग ए त्रणे कर्म रहीत याना मारग जाणवा
 त्यारे शिष्य गेल्यो के स्वामीनाय वे मारगतो मोक्ष
 नाना समजायछे पण तीजो सवेग पक्षीनो मारग

ते मोक्ष मारग शी रीते कहेवाय केमके पोते तो सीध-
ला चारीछे अने एक शुद्ध उपदेश करवे करीने पोताने
शुं गुण थाय ए मारा मनमा सशयछे व्यारे गुरु मा-
हाराज बोल्वा के हे शिष्य तर्क तो घणो सारा कयों
पण तेनो उत्तर साभल! शिदातने विशे कहयुछे -

उसन्नोविविहारे॥कम्मसोहेइसुलहवोहिअ॥

चरणकरणविसुद्धा॥उचवुहितोपरुहितो॥

अर्थ-साधु मारगने विरो सीधलछे एटले मुनी मा
गं पाली शकतो नथी एवो सती पण कर्म प्रते मोंध
छे एटले क्षण क्षण प्रते कर्मनो नाग करेछे ते गु रर
तो सतो कहेछे के चरण सीतरी अने करण सीतरी तो
विशुद्धी प्रते एटले शुद्ध मुख उत्तर गुणो प्रते अनुभा
दना करतो सतो अने जव्यजीयोनी आगल प्ररूपणा
करतो सतो एटले जव्यजीयोनी आगल एवु रहेंछे
के मुनीराजनो मार्ग ए आसीदातमा कह्यो ए प्रगार
छे अने हुती ते मारग पालवाने असमर्थछु एरी रीते
बोलीने शुद्ध मारगने विशे थपा करावतो सतो पोता
ना पूर्व करेला ज्ञाना वरणादी कर्म प्रते टाटाछे एरा
रण माटे हे शिष्य जे शुद्ध प्ररूपणा करवी ए पण ए

उपदेशमाला

द्रव्यलिग एटले रजोहरण मुखवस्त्रिका रुप गुण
हित केवल वेशमात्रा॥७॥ग्रहण करचा एटले वारण
रचा॥८॥वलि॥९॥मूक्या एटले ग्रहण करि कारिने
क्या तोये पण काइ सिद्धि न थइ एटले आत्मानो
रज सरि नहि॥१०॥निश्च॥११॥एकारण माटे हे जव्य
जीवो प्रथम समकितनो उद्यम करो केमके समकित
सहित द्रव्यलिग आत्माने हितकारिछे एभाया॥५२१
अधगुरत्तो नो पुण॥॥न मुभइ वहुसो विपत्रविभक्तो॥
सविगपखितअत्त॥करिइ॥छभिहसि॥तेण॥पह॥५२२

हवे द्रव्यलिगोनु लक्षण कहेछे

अर्थ॥१॥वलि॥२॥जे पुरुष॥३॥अतिशय अनुरक्त एटले
परने दीक्षा देवाने आतिशे करिने आसक्त एहयो सतो
॥४॥महवार एटले घणीवार॥५॥जणाया माडयोस्त
तो एटले गीतारथ माहाराज जे तेमणे गुणदोपनीवि
वेचनाए करिने शिखामण देवा माडयो सतो॥६॥पण
॥७॥द्रव्यलिग प्रते नथि॥८॥मूकतो ते पुरुष प्रते ना
शरज माहाराज पोतेहिज उपदेश करेछे के जो तु वे
नथी छोडतो त्यारे॥९॥सविग्न पक्षिपणा प्रते एटल
क्षना अभिलापी एहया जे मुनीराज तेमना पक्षपा

क मोहोदो गुणछे तेनु लक्षण आगळ गाथाओथीत
ने सारी रीते समजण पडशे एजावा॥५१९॥

सेसामिच्छद्विष्टी॥गिहेलिगिकुलिंगदवलिगेहि॥

बह॥तिन्निउ॥मुखपहा॥ससारपहा॥तहा॥तिन्नि॥५२०

हवे ससारना त्रण मारग देखाडेछे -

अर्थ॥१॥तेथी न्यारा उटले आ पुर्वे कहा जे त्रण
मारग तेथी जुदा शेश एटले बीजा पण मीथ्या द्रष्टी
जाणवा ते कीया॥२॥गहीर्लागना धरवा वाला एटले
ग्रहस्थ लोको अने कुर्लांग एटले द्रव्य थकी जती वेश
ना धारवावाला ए त्रणे मीथ्या द्रष्टी जाणवा॥३॥जेम
॥४॥मोक्षना मारग॥५॥त्रण कहा॥६॥तेम॥७॥त्रण
॥८॥ससारना मारग जाणवा एटले पूर्वे कहा एवागृ
हस्थर्लागादीक त्रण ए ससारमा परीभ्रमण करवाना
मारग जाणवा ॥५२०॥

ससारसागर॥मिण॥परिभ्रमतेहि॥सर्वजीवेहि॥

गहियाणि॥अ॥मुक्ताणि॥य॥॥अणतसो॥दवलिगाइ॥५२१॥

अर्थ॥१॥आ॥२॥ससाररूप समुद्र प्रते॥३॥परिभ्रमण
करता एटले जन्मजरा मरणकरता एहवा॥४॥सर्वजीव
जे तेमणे एटले सर्व प्राणियोए॥५॥अनतिवार ॥६॥

द्रव्यलिग एटले रजोहरण मुखवस्त्रिका रुप गुण र
हित केवल वेशमात्रा॥७॥ग्रहण करचा एटले धारण क
रचा॥८॥वलि॥९॥मूक्या एटले ग्रहण करि करिने मू
क्या तोये पण काइ सिद्धि न थइ एटले आत्मानी ग
रज सरि नहि॥१०॥निश्चे॥११॥एकारण माटे हे जव्य
जीवो प्रथम समकितनो उद्यम करो केमके समकित
सहित द्रव्यलिग आत्माने हितकारिछे एभावा॥५२१

५२१ (को०११) दे० गो ४ एट
अद्यणुरत्तो१ जो१ पुण१॥न० मुअइ वहुसो१ वि१ पत्रविज्जतो१॥

सविगपखित्त१ करिइ१ लभिहसि१ वेण१ पह१५२२

हवे द्रव्यलिगीनु लक्षण कहेछे

अर्थ॥१॥वलि॥२॥जे पुरुष॥३॥अतिशय अनुरक्त एटले
परने दीक्षा देवाने अतिशे करिने आसक्त एहयो सतो
॥४॥बहूवार एटले घणीवार॥५॥जणावा माड्योस
तो एटले गीतारथ माहाराज जे तेमणे गुणदोपनी वि
वेचनाए करिने शिखामण देवा माड्यो सतो॥६॥पण
॥७॥द्रव्यलिग प्रते नथि॥८॥मूकतो ते पुरुष प्रते आ
चारज माहाराज पोतेहिज उपदेश करेछे के जो तु वे
श नथी छोडतो व्यारे॥९॥सविग्न पाक्षिपणा प्रते एटल
मोक्षना अभिलाषी एहया जे मुनीराज तेनना पक्षपा

तिपणा प्रते॥१०॥करय एटले साधु मुनिराजनो शेव
 क थइने निर्दभपणे करिने विशुद्ध एवि जे चरण सि
 तरि करण सितरितेहनिजथारय प्ररूपणा करय॥११॥
 ते संविग्न पाक्षिकपणाए करिने एटले जेवो छे तेहवो
 वीतरागनो बतावेलो मारग प्ररूपवे करिने१२॥आगा
 मि भवने विशे मोक्ष मार्ग प्रते॥१३॥पामिश ए कारण
 माटे जो सम्यक् प्रकारे साधुपणु नहि पालि शके तो
 सुद्ध प्ररूपणा करवि घटीत छे पण साधुपणानोदज रा
 खिने चेला चेलि करवा ते घटित नथि ए उपदेश५२२

कताररोहमडाणउम' गेलत्तमाइकज्जेसुसवायरेण१

नयणा१॥कुणइ१ज१साहुकरणीझ१ ॥ ५२३ ॥

हवे साधुनुं लक्षण कहिए छीए

अर्थ ॥१॥ माहा अटवि एटले पाणि छाया रहित
 मोटि अटवि, रोध एटले राजादिकनि लढाइने विशे
 कोटे करिने रोकावु विषम मार्गने विशे चालवु दु
 निक्ष काल एटले दुकाल ग्लानिपणु ए आदिक
 एटले पुर्वे कह्युं ते आदिक कायोंने विशे एटले पूर्वे
 कह्या एहवा कारण पडे सते ॥२॥ सर्व आदरे करिने
 एटले जेटलि पोतानि शक्ति होय तेटलि फोरववे करि

ने॥३॥जल्नाए करिने एटले पूर्वे कहेलि एवि जल्ना
हित॥४॥जे॥५॥साधुश्रोने करवाजोग्य होय ते प्रतोद
करे एटले साधुमुनिराज कारण पडे सते पण साधुश्रो
ने जे करवाने उचित होय ते जतना सहित करो॥५२३॥
आयरतरसमाण॥सुदुकर॥माणसकडे॥जोए॥
सविगपस्त्रिअत्त॥उसनेण॥फूड॥काउ॥५२४॥

हवे सवेगपक्षपणानु दूलभपणु देखाडेछे
अर्थ॥१॥माने करिने एटले श्रहकारे करिने साकडो
एटले भरेलो एहवोजे॥२॥लोक एटले ससार तेने वि
शे॥३॥आतिशे श्रादरे करिने उत्तम साधुश्रोनु सन्मान
करवु एटले उत्तम साधु श्रावे सते उजा थवु सामा ज
तेमना गुणनी प्रसस्या करवी इत्यादिका॥४॥आति
दुष्करछे एटले आतिशे करिने दुर्लजछे॥५॥शिथी
चारि जे तेने॥६॥सवेग पक्षपणु॥७॥प्रगट एटलेनि
पणे॥८॥करवाने दुर्लजछे एटले पोते शिथीजाचा
इने मुनीराजनु बहू मान करवु श्रने कपट रहि
तपण शुद्ध प्ररुपणा करवि ए कठणछे ए कारण नाटे
सवेग पक्षि पुरुष जे ते पण आत्मार्थि पुरुषोने ना
नवा ज्योगछे ए भाव॥५२४॥

सारनवेदकः वेगच्छानिमग्नः परोदयति पामप्या ॥

वित्तमन्त्रादेराधिवशने अमानः ॥ १० ॥ काया ॥ १५२५

अयो ॥ ३ ॥ जे पुरुषा ॥ २ ॥ सारणा एटले भुलि गपेटानु

सन्तारनु एटले आ काम गारिते करो आ काम गारिते

करो ए प्रकारे वारवार शिरामण देने करिने उ

दंग पाव्या एह्या अने ॥ ३ ॥ गच्छ थकि निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

उठे उन्नम मा गीना सम दायक निहार निकटोटा ए

हवो एटले शुद्ध वीतराग देवनी मार्ग देखाडनार॥३॥
 सवेगी मुनियोनो पक्षपात करनार एटले मोक्षना अ
 निलापि मुनियोनि साहाज्य करनारो एहवो जे पुरु
 प तेनि॥४॥जे॥जे॥६॥जतना एटले बहु दोषवालि व
 स्तुनु वर्जवु अने अल्प दोष वालि वस्तुनु लेवु ते रुप
 ॥७॥जतना॥८॥होया॥९॥ते॥१०॥ते पुरुषनो॥११॥कर्म
 नोक्षय करनारि एटले कर्मनो नाश करनारि॥१२॥था
 पछे ए कारणमाटे जथार्थ चारित्र पलि शके नहि तो
 पण शुद्ध प्ररुपणा करवि ए उपदेश॥५२६॥

मुक्ताइयपरिमुद्धे॥सद॥लाभे॥कुण्ड॥वाणिउ॥चिद्ध॥

एमेव॥प॥गीय॥धो॥आय॥दु॥समायरद॥॥५२७॥

आत्मार्षि पुरुष लान्न खराजातनो विचार करे ते कहे
 अर्थ॥१॥वाणिक् एटले व्यापारि॥२॥शुल्कादिके करिने
 एटले राजाने आपवा जोग्य द्रव्यादिके करिने परिशु
 द्ध एटले समस्त प्रकारे शुद्ध एटले राजाने दाण भर
 वे करिने पछी॥३॥लान्न॥४॥सते एटले लान्न रहे सते
 ॥५॥चेष्टा प्रते एटले वेपार प्रते॥६॥करे छे॥७॥वालि
 ॥८॥एज प्रकारे॥९॥गीतार्थ एटले सम्यक् प्रकारे शास्त्र
 नो जाण एहवो पुरुष पण॥१०॥लान्न प्रते॥११॥देखि
 ने एटले विचारिने॥१२॥सम्यक् प्रकारे आचरे छे ए

टले जे वस्तुमा दोष थोडो होय अने लाभ घणो हो
य एहवु काम जतनाए करिने करे ए कारण माटे आ
त्मार्वि पुरुषोने लाभ टोटानो विचार करिने जेमा ला
ज धारे होय ते काम जतनाये करि करवाजोग्यछे
आमुक्खजोगिणु^१धिय^२॥हवइ^३थोवा^४वि^५तस्स^६जीवदया^७॥

सवेगगरुखनयणा^{११}॥तो^{१२}दिडा^{१३}साहुगगस्स^{१४}॥५२८॥

सवेगपक्षिनि जतनानु प्रमाण पणु कहेछे.

अर्थ॥१॥समस्त प्रकारे मूक्याछे सजमना जोग एट
ले व्यापार ते जेणे एवो जे पुरुष॥२॥तेना मनने वि
शे॥३॥निश्च करिने जो॥४॥थोडि॥५॥पणा॥६॥जीवनी
दया एटले जीवनि दया॥७॥छे॥८॥तेजीव दया॥९॥
साधु वगंसमरिनि एटले साधुना समूह मध्येनि॥१०
नोयकर माहाराजे दिटिछे एटले कहाँछे एकारण मा
टे॥११॥सवेग पक्षीनी जतना प्रमाणछे केमके तेने मो
तनु अनिलापिपणुछ माटे, ए कारण माटे कोइ चारित्रा
वर्णोना उदयउडे करिने सजमपालिशके नहीतोचित्तनं
विशे सजमनिजतनानो भाव राखयो तेपण गुण कारिछे॥

किं^१मुन्यान^२अपेण^३किं^४वा^५आमाण^६कणमनाटा^७॥

बोइ^१उरु^२वे^३आण^४॥किं^५क^६अ^७मुणमनाटा^८॥५२९॥

आ उपदेशमाला अजोग्य पुरुषने आपाये

उपदेशमाला

३५

अजोग्यछे ते कहेछे -

अर्थ॥१॥उदराआने॥२॥अर्थ करिने एटले सुगण
क अर्थ करिने ॥३॥ शु एटले शु प्रयोजनछे अपि
काइ प्रयोजन नथि॥४॥गलि ॥५॥ कागडाआने॥६॥
सोनानि मालाए करिने ॥७॥ शु अपितु काइ नहि
ए द्रष्टाते करिने ॥८॥ मिथ्यात्वादि कर्म रुप मले क
रिने लेपाएला एहवा जे पुरुषो तेमने॥९॥उपदेशमा
त्राए करिने एटले उपदेशनी परपराए करिने॥१०॥
॥११॥कारज थाय एटले नारि कर्म जीवने आ उ
देशमाला पण काइ कारजनि करनारि नथि॥५२९॥
रणकरणाखण ॥अविणयवहुलाण ॥सयययोग ॥मिण ॥
मणी ॥सयसहस्सो ॥अविज्ञा ॥कुच्छुभासरस ॥५३०॥

जोग्य पुरुषने आ उपदेश माला आपवा
जोग्य छे ते कहेछे -

अर्थ॥१॥चरणसितरि करणसितरि ने पिपे एटले प
हा व्रतादिकने विशे अने पिड विपुष्या दिकने विशे
तस वाला एहवा अने॥२॥विनये करिने भरेला एट
निय गुणेकरिने रहित एहवा जे पुरुषो तेमने॥३॥
उपदेशमाला रुप प्रकरण॥४॥निरतर अजोग्य छे
तमने आपवा जोग्य नथि॥५॥स्वादि छे ज्ञास ते

जेनि एहवा जानवरने एटले कागडाने॥६॥लाखमुल्य
 नुं॥७॥रत्न॥८॥नथि॥९॥पेहेरावा जोग्य नथि एटले जे
 म कागडाने रत्न पेहेराववा जोग्य नथि तेम अविनि
 तने पण उपदेशमाला आपवा जोग्य नथि ए कारण
 माटे विनितने ज शास्त्र जणाववु केमके अविनितने शास्त्र
 जणावता घणा दोषनु कारण छे माटे; ए उपदेश.

नाउण^१ करत लगया मल^२ सभा^३ उ^४ प^५ ह^६ सब^७ ॥

धर्म^१ मि^२ नाम^३ सोइ^४ ज^५ र^६ ग^७ ति^८ क^९ म्मा^{१०} इ^{११} ग^{१२} रु^{१३} आ^{१४} इ^{१५} ॥५३१॥

हये नारे कर्मि पणानो स्वरुप कहु छे -

अर्थ॥१॥रुत टाने विपे एटले हाथेलिने विपे आम
 टानि पठेमा२॥सदभावथकि एटले सत्यबुद्धि करिने३॥
 सयें ज्ञानादि रुप एहयो॥४॥मार्ग एटले मोक्ष मार्ग प्र
 ते॥५॥नाणिने पण आजीवा॥६॥धर्मने विपे॥७॥सिमा
 य छे एटले शुद्ध धर्म करवाने विपे प्रमादि थापजे॥८॥
 निश्चे॥९॥होया शु कारण छे एहवि रिते शिष्य प्रश्न
 करे सते गुरु महाराज उत्तर कहेछे ते प्राणिने॥१०॥कर्म
 एटले ज्ञाना वर्णादि कर्म॥११॥गुरु वतें छे एटले या
 जीव जाणतो मतो पण नारे कर्म पणे करिने शुद्ध
 मनो उद्यम नथि करतो॥५३१॥

धर्म^१ प^२ दान^३ मु^४ ल^५ डे^६ नु^७ ॥ १३१॥ भा^८ गो^९ ना^{१०} दि^{११} ना^{१२} दि^{१३} र^{१४} म^{१५} इ^{१६} ॥

वैराग्येन रसं ॥ न ॥ इमं सर्वं मुहावेद ॥ ५३२ ॥

अर्थ ॥ १ ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष ए चार पुरुषार्थोनि मध्ये ॥ २ ॥ जे प्राणिनो ॥ ३ ॥ मननो अग्निप्राय ॥ ४ ॥ जे ॥ ५ ॥ जे पदार्थोने विशेष एटले जुदाजुदा पदार्थोने विशेष ॥ ६ ॥ रमेछे एटले वरतेछे ते प्राणिने ॥ ७ ॥ वैराग्यनो एकांत रसेछे जेने विशेष एवु एटले एकांत वैराग्य रसमय एवु ॥ ८ ॥ आ ॥ ९ ॥ सर्व उपदेशमाला प्रकरण ॥ १० ॥ नहि ॥ ११ ॥ सुखकारि थाय ए कारण माटे आ उपदेशमाला रूप प्रकरण सर्व प्राणियोने सुखने उपजावनार नथि केमके समकित हित वैरागवत प्राणियोने सुखने उपजावनारछे ए भाव ॥ ५३२ ॥

सयमतवालसाण ॥ वैराग्य रुहा ॥ न ॥ होइ ॥ कर्ममुहा ॥

सविगपस्त्रियण ॥ हुन्न ॥ व ॥ कोसि ॥ व ॥ नाणिण ॥ ५३३ ॥

वैराग्यनी वार्ता सर्वने सारी नथि लागति ते कहेंछे ॥

अर्थ ॥ १ ॥ सत्रे प्रकारना सजमने विशेष अने तप विशेष आलसवाला एटले प्रमादि एवा जे पुरुषो तेनने ॥ २ ॥

वैराग्यनि वारता एटले मिथ्यात्यादि भाव दूर करवा नी वारता ॥ ३ ॥ कानने सुखकारि ॥ ४ ॥ ना ॥ ५ ॥ होय एटले प्रमादिलोकोने समकित सहित वीतिपणानि वारता ॥

पण रुचे नहि।६।निश्चो।७।सवेग पक्षि पुरुषोने एटले मो
क्षना अभिलाशी पुरुषोने वैराग्यानि वारता कानने सु
खकारि॥८॥होय॥९॥बलि॥१०॥केटलाएक॥११॥ज्ञानि
पुरुषोने एटले सम्यग् ज्ञानवत पुरुषोने वैराग्यानि वा
रता एटले समकितसहित वीरतिपणानि वारता मुख
कारि होय एटले सारी लागे॥५३३॥

सोडण^१ पगरण^२ मिण^३ ॥ धम्मे^४ जाउ^५ न^६ हुझमो^७ जस्स^८ ॥

न^१ ॥ य^२ ज्ञणिय^३ वेत्तम^४ ॥ ज्ञाणिज्ज^५ अनतससारि^६ ॥ ५३४

अर्थ॥१॥या॥२॥उपदेशमालारूप प्रकरण प्रते॥३॥सा

भलिने॥४॥जे पुरुषने ॥५॥शुद्ध धर्मने विशे एटले सम

कित पूर्ण वस्तुधर्मने विशे॥६॥उद्यम एटले प्रवर्तन

॥७॥नयिना॥८॥यपो एटले नयि उत्पन्न थयो॥९॥बलि

॥१०॥वैराग्य एटले ससारयी उदासि जाय॥११॥ना॥१२॥

उत्पन्न यपो एटले पाचइद्रिना विषयना त्याग रूप वै

राग्य न आद्यो त्यारे॥१३॥ज्ञाणपुके आजीवा॥१४॥अनत

मसारिक अनतमसारि वर्तते केमके अनतससारि जी

वोने बहु उपदेश देवे करिने पण वैराग्य न थाय॥५३४॥

इम्मं ता^१ सुवहु माणु^२ ॥ मनेण उतागच्छ^३ इमं म^४ ॥

इम्मं न^५ विविक्खि^६ ता^७ ॥ य^८ मनेण च मत्त^९ ॥ ५३५ ॥

अर्थ॥१॥कर्मना॥२॥अतिशे बहू उपसमे करिने एटले
ज्ञानावर्णादि कर्मना क्षयोपसमवडे करिने॥३॥आ
प्रत्यक्षा॥४॥सर्वे उपदेशमालारूप तत्व अर्थना समुह प्र
ते॥५॥पामेछे एटले जे प्राणिने ज्ञानावर्णादि कर्मनो
क्षय उपसम थायछे ते प्राणि तत्व वस्तु प्रते जाणेछे
॥६॥कर्मरूप मले करिने अतिशे लेपायेला एहवा जे
पुरुषो तेमनि आगला॥७॥केहेवामाड्यु एहवु आ उप
देशमाला प्रकरणा॥८॥पडखे थइने॥९॥जायछे एटले
नारे कर्मिजीवोना हृदयने विशेषे नथि प्रवेश करतु॥१०॥

उपसमालमे १५॥जो १पद २सुण ३कुण ४वा ५हिय ॥

सो १जाण २अणहिय ३नाउण ४सुह ५समाइर ६॥५३६॥

अर्थ॥१॥जे पुरुषा॥२॥आ॥३॥उपदेशमाला प्रते॥४॥
भणेछे॥५॥अथवा॥६॥साभलेछे॥७॥हृदयने विशेषे॥८॥
करेछे एटले ते उपदेशमालाना अर्थ प्रते हृदयने वि
शे विचारेंछे॥९॥ते पुरुषा॥१०॥आत्माना हित प्रते ते ए
टले इहलोक परलोकना साधन प्रते ॥११॥जाणेछे॥
॥१२॥आत्माना हित प्रते जाणिने॥१३॥शुभ प्रते एट
ले सम्यक् प्रकारे आत्माना कल्याण प्रते॥१४॥आच
रेछे एटले करेछे॥५३६॥

जला शिष्यनासमुहनी आगला॥६॥ कहि एटले शिष्यो
 ने भणवाने अर्थे आ उपदेशमाला कहिछे ते उपदेश
 माला केहवि छे॥७॥ नाना प्रकारना उपदेश रुप अक्ष
 र ते रुपछे फुल ते जेने विशे एटले फुलनी मालाने
 विशे नाना प्रकारना फुल होय अने उपदेशमाला
 रुपमालाने विशे नाना प्रकारना उपदेश रुप अक्षर
 ते रुप फुल होया॥८॥ पाठपुर्ण करवाने विशे॥५४०॥

सति करी वृद्धि करी॥ कलाण करी सुमगल कारि॥ ५४१॥

होइ कहगस्स परिसाए॥ तहय निवाण फलदाइ॥ ५४२॥

अर्थ॥१॥ केहेनार पुरुपने एटले उपदेशक पुरुपने अने
 ॥२॥ परखदाने विशे साजलनार पुरुपने॥३॥ आ उपदे
 शमाला शातिनि करनारि एटले क्रोधादिकनि दूर क
 रनारि छे॥४॥ अने ज्ञानादिक गुणनि वृद्धि करनारि छे
 ॥५॥ अने कलाणनि करनारि छे एटले इहलोक परलो
 कने विशे सुखनी आपनारि॥६॥ बलि॥७॥ जलामगलि
 कनी करनारि॥८॥ छे॥९॥ अने तिमज ॥१०॥ परलोकने
 विगे निर्वाण फलने एटले मोक्षरुप फलने आपनारि
 छे एटले आ उपदेशमाला केहेया थकि अन साजल
 या थकि मोटु फल वायछे॥५४३॥

उपदेशमाला

इत्थं समप्यइ इणमो॥ माता तु उपगरणे पगय॥
गाहाण सव्वाण॥ पयसं च॥ चालिसा॥ ५४२॥

आ उपदेशमालानी गाथानि सख्या केहेछे
अर्थ॥ १॥ अ॥ २॥ आ उपदेशमाला प्रकरण ।

कत्तु ते॥ ४॥ हिया एटले आ स्थलने विरो॥ ५॥ स
ण करिए ओण एटले प्रथमयकि आरजिने हिया

धि पूरि करिछे ज्वारे आ उपदेशमालानि सख्या
णि एण त्वारे॥ ६॥ सर्व॥ ७॥ गाथात्रोनु॥ ८॥ पाचसं

१॥ चालिस अधिक॥ १०॥ निश्चे एटले आ उपदेश
मालाने निरो सर्व गाथात्रो मलिने पाचसंने चालिस

अन उपरली चार गाथा बिजा शास्त्रनिछे॥ ५४२॥
विषय॥ वणसमुद्रो॥ नावय॥ नख्यत्तमडिउ॥ मेरु॥

१॥ रइया॥ माला॥ जयमि॥ विरपावरा॥ होइ॥ १॥ ५४३॥
१॥ १॥ ज्या सुधि॥ २॥ लवणसमुद्र शास्वतो वतें छे

त्या सुधि॥ ४॥ नक्षत्रे करिने सोभायमान एहयो॥ ५॥
लि एहवि आ॥ ९॥ उपदेशमाला॥ १०॥ विर द्रव्यनि पे

ठे एटले शास्वता द्रव्यनि पेठे छि॥ ११॥ धात्रो एटले
सदाकाल अविचलपणे वते॥ ५४३॥



अद्वैतरमत्ताहेण ॥ न चिद्विद्युपदिश्य अज्ञानभावेण ॥
 तत्त्वमसि ॥ मम सत्त्वं ॥ जिनाय गणिनिगम्य ॥ नागो ॥ १४४ ॥
 अर्थ ॥ १ ॥ जिनराजना वचनर्थकि एटले जिनराजना
 मुखथकि विपये करि निकलि एहनि ॥ २ ॥ श्रुतदेनि जे
 ते ॥ ३ ॥ अजाण एहजो हुं जे तेणे ॥ ४ ॥ जे ॥ ५ ॥ अक्षर क
 रिने अथवा मात्राए करिने हीन उपलक्षणवी अधि
 क एटले ओछु वतु ॥ ६ ॥ कह्यु एटले आ अथने गिसे
 ने काइ मे ओछु वधारे जण्यु होया ॥ ७ ॥ निश्चे ॥ ८ ॥ ते
 एटले हीन अतिरूपणानोदूपण ॥ ९ ॥ माराससधि ॥ १० ॥
 नरे एटले समया ॥ ११ ॥ राम एटले रामजो ए प्रकारे
 जि रामदास गणि निरचित उपदेशमाला प्रकरणनो
 अष्टावसं ॥ संपूर्ण

